पूजा संग्रह



प्रकाशक
श्री जैन श्वेताम्बर उपाश्रय कमेटी
कलकत्ता

वीर सं० २४८७] [मूल्य २)५०

ग्रन्थ प्राप्तिस्थान :—

(१) श्री जैन श्वे० पंचायती मन्दिर
१३९, काटन स्ट्रीट,
कलकत्ता-७

(२) श्री जैन भवन,
पी-२५, कालाकार स्ट्रीट,
कलकत्ता-७

मुद्रक—
सुराना प्रिण्टिंग वर्क्स
४०२, अपर चितपुर रोड,
कलकत्ता-७

प्रकाशकीय

दूपसकाल मे भव्य प्राणियों को शीघ्र आत्म साक्षात्कार के लिए भक्ति-मार्ग से बढकर दूसरा कोई सुगम साधन नहीं है। इसमे मन वचन और काया-त्रियोग का एकत्व हो जाने से भावोल्लास द्वारा कर्म शत्रुओं का नाश और स्वरूप-सिद्धि सहज सुगम हो जाती है। भक्ति-योग भारतीय संस्कृति का प्राण है और वीतराग दर्शन मे इसकी उपयोगिता अनिवार्य है। प्रति-वासुदेव रावण ने केवल जिन-भक्ति द्वारा ही अष्टापद महातीर्थ पर तीर्थंकर नाम-कर्म उपार्जन किया था। जैनागमो मे जिन पूजा के पर्याप्त प्रमाण विद्यमान हैं और जो भी प्राणी सशय रहित होकर अपने को जिन-भक्ति मे तदाकार कर देता है वह अवश्य ही सिद्धि-सौध का मधुर फल सप्राप्त करता है। जिनेश्वरों के जन्मोत्सव के प्रसग मे अभिषेक-कलश विधि तथा ज्ञाता सूत्रादि मे द्रौपदी के प्रसग से सतरह भेदी आदि पूजाओं के विधानको तत्समय प्रचलित भाषाओं में गुंफन करके विभिन्न मुनि महात्माओं ने भव्यजनों के हितार्थ प्रसादित किए है। पूजाओं मे शास्त्रीय विभिन्न तत्वज्ञान भरने के साथ-साथ राग-रागिणी व सगीतकला को भी प्रशसनीय प्रोत्साहन प्राप्त हुआ है।

प्राचीनकाल मे पूजाएँ प्राकृत भाषा मे थीं फिर अपभ्रंश व देशी भाषाओं मे हुई। जेसलमेर भडारादि की स्वाध्याय प्रतिया मे कई "वोली" और "कलशाभिषेक" संज्ञक पूजा परक

कृतियाँ उपलब्ध हुई हैं। वर्त्तमान प्रचलित पूजाओं में श्री साधुकीर्ति गणि कृत सतरह भेदी पूजा सबसे प्राचीन है जिसे आज चार सौ वर्ष हो गये पर आज भी बड़े भारी उल्लास के साथ गायी जाती है।

श्रीमद् देवचन्द्रजी महाराज कृत स्नात्रपूजा में तो भक्तिका वह अद्भुत चमत्कार है कि शब्द-शब्द में हृदय की उर्मियों को परमात्मतत्व में संलग्न करने की अपूर्व क्षमता है। श्री नवपद जी की पूजा का तो कहना ही क्या ? वह तो महोपाध्याय यशोविजयजी, श्री ज्ञानविमलसूरिजी व श्रीमद् देवचन्द्रजी महाराज तीन शीर्ष स्थानीय महापुरुषों की प्रसादी है। दूसरी पूजाएँ भी गीतार्थ विद्वानों की रचनाएँ हैं।

प्रस्तुत ग्रन्थ पूजासंग्रह का प्रथम संस्करण आज से ३२ वर्ष पूर्व बीकानेर से श्री दानमलजी शंकरदानजी नाहटा ने प्रकाशित किया था। अब वह पुस्तक अप्राप्य है, अतः हमने उसमें संघपूजा व समयसुन्दरजी कृत चौवीसी व स्तवनादिबाद देकर तथा दो पूजाएँ और बढ़ाकर प्रकाशित की हैं एवं द्वितीय खण्ड में परमपूज्य जैनाचार्य श्रीमद्विजयानंदसूरिजी एवं श्रीमद्विजयवल्लभसूरिजी कृत चार पूजाएँ जो विशेष प्रचलित हैं, समाविष्ट कर दिया गया है।

पूजाओं को हस्तलिखित प्रतियों से मिला कर यथासाध्य संशोधन करने का ध्यान रखा गया है फिर भी यदि दृष्टिदोष से अशुद्धियाँ रह गई हों तो पाठकगण उसे शुद्ध कर पढ़ने की कृपा करें।

परमपूज्य साध्वीजी श्रीऋद्धिश्रीजी चन्द्रश्रीजी महाराज ने रायपुर सघको उपदेश देकर पच प्रतिक्रमण व राइदेवसी प्रतिक्रमण की पुस्तक का प्रकाशन करवाया था, जिसके फण्ड मे से बची हुई रकम से २०० पुस्तकें रायपुर सघ ने ली है एव परमपूज्य जैनाचार्य श्रीजिनआनन्दसागरसूरिजी के स्वर्गवास निमित्त पूजाफड मे बचे हुए १२१) ११ तथा कलकत्ता की तपस्विनी बहिनों द्वारा प्राप्तज्ञान द्रव्य से १२५ पुस्तकें ली गई है। एतदर्थ कमेटी परमपूज्य साध्वीजी महाराज की अभारी है।

आशा है हमारा यह प्रयास पूजा प्रेमी भक्तो को पसन्द पडेगा और विशेष प्रचारित होकर भविष्य मे हमे उत्तमोत्तम ग्रथ प्रकाशन का सुयोग प्राप्त होगा। कहना न होगा कि इसका प्रकाशन उपाश्रय के ज्ञान खाते से हुआ है और इसकी लागत मूल्य द्वारा जो भी आमदनी होगी ज्ञान प्रकाशन मे लगायी जायगी।

युग प्रधान
जिनचन्द्रसूरि जयन्ती
आश्विन कृष्ण २
वीर स० २४८७

निवेदक
मन्त्री
श्री जैन श्वेताम्बर उपाश्रय कमेटी
कलकत्ता

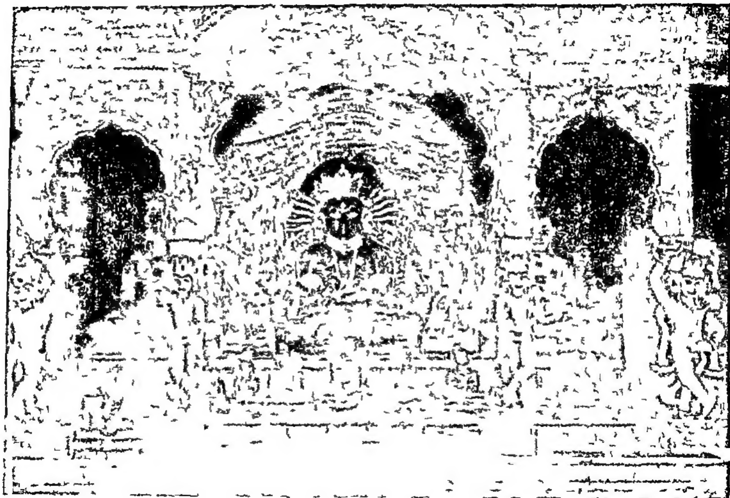
श्री लब्धिचन्द्रसूरि कृत

द्वितीय भूमौ

कलकत्ता मंडन ऋषभ जिन स्तवनम्

जिनेसर मूरतें मन मोह्यो, मन मोह्यो सयल दुख खोयो; जिने०
जिन भेट्या मन उलसाय, अति आनंद अंग न माय ;
प्रभु ध्यातां अखय पद थाय ; जिने० ॥ १ ॥
प्रभु मूरति मोहनगारी, निरखंतां लागै प्यारी ;
निज सेवक ने हितकारी ; जिने० ॥ २ ॥
निज आतम अनुभव साखें, वचनामृत सम जिन भाखें ;
भवि सव मिल ते रस चाखें, जिने० ॥ ३ ॥
तव मोह विकलता जाय, सुध समकित अनुभव थाय ;
अगणित पण गिणत गिणाय, जिने० ॥ ४ ॥
इत्यादिक गुण नो धाम, दायक शिव वंछित काम ;
सेवो रिसहेसर स्वाम ॥ जिने० ॥ ५ ॥
कलकत्तै मण्डण देवा, दुख दोहग दूर हरेवा ;
सुख संपति संघ करेवा ; जिने० ॥ ६ ॥
श्रीजिन प्रतिमा नो आधार, होज्यो भव-भव एह उदार;
कहै लब्धिचंद्रसूरि सार ; जिने० ॥ ७ ॥

॥ इति श्री कलकत्तै मंडन ऋषभ जिन स्तवनम् संपूर्णम् ॥



श्री पार्श्वनाथ स्वामी (मधुवन—सम्मेतशिखर)

॥ अर्हम् ॥

पूजा संग्रह



श्रीदेवचन्द्रजीकृत स्नात्रपूजा

प्रथम हाथमें कुसुमाजलि लेकर नमोऽर्हते कहकर पढे

॥ दोहा ॥

चउतीसे अतिशय जुओ, वचनातिसय जुत्त।
सो परमेसर देखि भवि, सिंघासण संपत्त ॥१॥

॥ ढाल ॥ १ ॥

सिंघासण बेठा जग भाण, देखि भवियण गुणमणि खाण। जे दीठे तुझ निरमल झाण, लहिये परम महोदय ठाण ॥१॥ कुसुमांजलि मेलो आदि जिणंदा, तोरा चरणकमल (सेवे

चोसठ इंदा) चोवीस, पूजोरे चोवीस, सोभागी चोवीस, वैरागी चोवीस, जिणंदा ॥ कु० ॥१॥

ऐसा कह कुसुमांजलि चढ़ाना तथा प्रभुके चरणों पर पूजा करना, फिर हाथमें कुसुमांजलि लेकर नमोऽर्हत् कहकर ये गाथा कहना।

॥ गाथा ॥

जो नियगुण पज्जवरम्यो, तसु अनुभव एगत्त।
सुहपुग्गल आरोपतां, जो तसु रंग निरत्त ॥

॥ ढाल ॥ २ ॥

जो जिन आतमगुण आणंदी, पुग्गल संगे जेह अफंदी। जे परमेसर निजपद लीन, पूजो प्रणमो भव्य अदीन ॥ कुसुमांजलि मेलो शांति जिणंदा ॥ तो० ॥कु० ॥२॥

ऐसा कह प्रभुके जानुपर पूजा करिये।

॥ गाथा ॥

निम्मल नाण पयास कर, निम्मल गुण संपन्न।
निम्मल धम्मोवएसकर, सो परमप्पा धन्न ॥३॥

॥ ढाल ३ ॥

लोकालोक प्रकाशक नाणी, भविजन तारण जेहनी वाणी। परमानन्द तणी नीसाणी, तसु भगतें मुझ मति ठहराणी ॥ कुसुमांजलि मेलो नेमीजिणंदा ॥ तो० कु० ॥ ३ ॥

ऐसा कहकर प्रभुके दोनों हाथोंपर पूजा करिये।

॥ गाथा ॥

जे सिज्झा सिज्झंति जे, सिज्झिसंति अणंत।
जसु आलंबन ठवियमण, सो सेवो अरिहंत ॥४॥

॥ ढाल ॥ ४ ॥

शिव सुख कारण जेह त्रिकाले, सम परिणामें जगत निहाले। उत्तम साधन मार्ग दिखाले, इंद्रादिक जसु चरण पखाले ॥ कुसुमांजलि मेलो पास जिणंदा ॥तो०॥कु०॥४॥

ऐसा कर प्रभुके कधोंपै पूजा करिये।

॥ गाथा ॥

सम्मद्दिट्ठी देस जय, साहु साहुणी सार ॥
आचारिज उवज्झाय मुणि, जो निम्मल आधार ॥

॥ ढाल ॥ ५ ॥

चउविह संघे जे मन धार्यों, मोक्ष तणों कारण निरधार्यो । विविह कुसुम वरजाति गहेवी, तसु चरणे प्रणमंत ठवेवी । कुसुमांजलि मेलो वीर जीणंदा ॥ तो० ॥५॥

ऐसा कह प्रभुके मस्तकें पूजा करिये ।

॥ वस्तुछंद ॥

सयल जिनवर सयल जिनवर, नमिय मनरंग । कल्लाणक विहि संठविय करिसुधम्म सुपवित्त सुंदर ॥ सय इग सत्तरि तित्थंकर, इग समय विहरंति महियल । चवण समय इगवीस जिण, जम्म समय इगवीस ॥ भत्तिय भावे पूजिया, करो संघ सुजगीस ॥१॥

॥ ढाल ॥ २

चाल—एक दिन अचिरा हुलरावती ॥

भव तीजे समकित गुण रम्या । जिनभक्ति प्रमुख गुण परिणम्या ॥ तजि इन्द्रिय सुख

आसंसना । करी थानक वीशनी सेवना ॥१॥
अति राग प्रशस्त प्रभावता । मनभावना एहवी
भावता ॥ सविजीव करूं शासन रसी । एसी
भावदया मन उल्लसी ॥ २ ॥ लही परिणाम
एहवुं भलूं । निपजावी जिनपद निरमलुं ॥
आउ बंध विचे एकभवकरी । श्रद्धा संवेग
ते थिर धरी ॥ ३ ॥ तिहां चविय लहे नरभव
उदार । भरते तिम ऐरवतेज सार ॥ महा-
विदेह विजय परधान । मध्यखंडे अवतरे जिन
निधान ॥ ४ ॥

॥ ढाल ॥

पुन्यें सुपनाए देखै । मनमां हरष विसेषै ॥
गजवर उज्जल सुन्दर । निरमल वृषभ मनो-
हर ॥ १ ॥ निरभय केशरी सीह । लखमी
अतिहि अबीह ॥ अनुपम फूलनी माला ।
निरमल शशि सुकुमाला ॥ २ ॥ तेज तरणि
अति दीपे । इन्द्रधजा जगजीपे ॥ पूरण कलस

पड्डूर । पद्मसरोवर पूर ॥८॥ इग्यारमें रयणायर। देखै माताजी गुणसायर॥ बारमें सुवन विमान, तेरमें रतन निधान ॥४॥ अगनि शिखा निरधूम। देखे माताजी अनोपम ॥ हरखी रायनें भापे ॥ राजा अरथ प्रकासे ॥ ५ ॥ जगपति जिनवर सुखकर । होसे पुत्र मनोहर ॥ इन्द्रादिक जसु नमसे । सकल मनोरथ फलसे ॥ ६ ॥

॥ वस्तुछंद ॥

पुन्य उदय २ । ऊपना जिननाह ॥ माता तब रयणी समें। देखि सुपन हरखंत जागीय ॥ सुपन कही निज कंतने । सुपन अरथ सांभलो सोभागीय ॥ त्रिभुवन तिलक महागुणी । होसे पुत्र निधान ॥ इन्द्रादिक जसु पाय नमी । करसे सिद्धि विधान ॥ १ ॥

॥ ढाल ॥ ४ ॥

(चंद्रा उल्लालानी ।) सोहमपति आसन कंपीयो । देइ अवधे मन आणंदीयो ॥ मुज

आतम निरमल करण काज। भवजल तारण प्रगट्यो जिहाज ॥ १ ॥ भव अडवी पारग सत्थवाह। केवल नाणाईअ गुण अगाह ॥ शिव साधन गुण अंकूर जेह। कारण उलट्यो आसाढ मेह ॥ २ ॥ हरखै विकसे तव रोम-राय। वलयादिकमां निज तनु न माय ॥ सिंहासणथी ऊठ्यो सुरिन्द। प्रणमंतो जिन आणन्द कन्द ॥ ३ ॥ सगअड पय समुहा आवि तत्थ। करी अंजली प्रणमिअ मत्थ सत्थ ॥ मुख भाखे ए क्षण आज सार। तियलोय पहू दीठो उदार ॥ ४ ॥ रे रे निसुणो सुरलोय देव। विषयानल तापित तनु समेव ॥ तसु शान्तिकरण जलधर समान। मिथ्याविष चूरण गरुड़वान ॥ ५ ॥ ते देव जगत्तारण समत्थ। प्रगट्यो तसु प्रणमी हुवो सनत्थ। इम जंपी सक्रस्तव करेवी। तव देव देवी हरखे सुणेवि ॥ ६ ॥ गावे तव रंभा गीतगान। सुरलोक हुवो मंगल निधान। नरक्षेत्रे आरज

वंसठास ॥ जिनराज वधे सुर हर्ष धाम ॥ ७ ॥ पिता माता धरे उच्छव अलेख । जिन शासन मंगल अति विशेष ॥ सुरपति देवादिक हरख-संग । संयम अरथी जननें उमंग ॥ ८ ॥ सुभ-वेला लगनें तीर्थनाथ । जनम्या इन्द्रादिक हर्ष साथ ॥ सुखपाम्यां त्रिभुवन सर्वजीव । वधाई वधाई थई अतीव ॥ ९ ॥

फूल अक्षतसे वधावे तीन प्रदक्षिण देवे । फिर शक्रस्तव ठाणं संपावियुं कामस्स, तक कहे । फिर रोली तथा केसरका हाथमें साथिया करे । धूप खेवे ।

॥ ढाल ॥ ५ ॥

चाल—श्री शांति जिननो कलश कहिशुं० ।

श्रीतीर्थपतिनो कलस मज्जन, गाइये सुख-कार । नरखित्त मंडण दुह विहंडण, भविक मन आधार ॥ तिहां रावराणा हर्ष उच्छव । थयो जग जयकार ॥ दिशीकुमरी अवधि विशेष जाणी । लह्यो हरख अपार ॥ १ ॥ निअ अमर

अमरी संग कुमरी । गावती गुण छंद ॥ जिन जननी पासे आय पहुती । गहकती आणंद ॥ हे माय तें जिनराज जायो । शचि वधायो रम्म ॥ अम्हजम्म निम्मल करण कारण । करिस सूईअ कम्म ॥ २ ॥ तिहां भूमिशोधन दीप दरपण वाय विंजणधार । तिहां करिय कदली गेह जिनवर । जननी मज्जनकार ॥ वर राखड़ी जिनपाणि वांधी । दीये इम आसीस ॥ युग कोड़ कोड़ी चिरंजीवो । धर्मदायक ईस ॥ ३ ॥

॥ ढाल ॥ ६ ॥

उल्लालानी । जिन रयणीजी दश दिशि उज्जलता धरे ॥ सुभ लगनेजी ज्योतिस चक्र ते संचरे । जिन जनम्याजी जिण अवसर माता घरे ॥ तिण अवसरजी इन्द्रासण पण थरहरे ॥

॥ त्रोटक ॥

थरहरे आसण इन्द्र चिंते. कौन अवसर ए बन्यो । जिन जन्म उच्छव काल जाणी. अतिहि

गुरु, एम दै आसीसए। अम्हत्राण शरण आधार जीवन, एक तूं जगदीश ए ॥४॥

॥ ढाल ॥

सुरगिरिवर जी, पांडुक वनमें चिहूं दिसै। गिरिसिल पर जी, सिंहासण सासय वसै॥ तिहां आणोजी, शक्रें जिन खोले ग्रह्या॥ चउसट्ठ जी, तिहां सुरपति आवी रह्या ॥

॥ त्रोटक ॥

आविया सुरपति सर्व भगतें, कलश श्रेणि बणाव ए। सिद्धार्थ पमुहा तीर्थ औषधि, सर्व वस्तु अणाव ए॥ अच्चुयपति तिहां हुकम कीनो, देव कोडा कोडिने। जिन मज्जनारथ नीर ल्यावो, सवे सुर कर जोडिने ॥५॥

सर्व स्नात्रिया जलका कलश हाथमें लेकर खड़ा रहे और मुखसे नीचे मुजब पढ़े ॥

॥ ढाल ॥

चाल—शातिने कारणै इन्द्र कलशा भरै ।

आत्म साधन रसी देव कोड़ी हसी । उल्लसीने धसी खीरसागर दिशी ॥ पउमदह आदि दह गंग पमुहा नई । तीर्थजल अमल लेवा भणी ते गई ॥ १ ॥ जाति अड कलश करि सहसअठोत्तरा । छत्र चामर सिंहासणे सुभ-तरा ॥ उपगरण पुष्फचंगेरि पमुहा सवे । आगमें भाषिया तेम आणी ठवे ॥२॥ तीर्थ जल भरिय करी कलश करि देवता । गावता भावता धर्म्म उन्नतिरता ॥ तिरिय नर अमरने हर्ष उपजा-वता । धन्य अम्ह सगति सुचि भगति इम भावता ॥३॥ समकित बीज निज आत्म आरो-पता । कलश पाणी मिसे भक्ति जल सींचता ॥ मेरुसिहरोवरे सर्व आव्या वही । शक्र उच्छंग जिन देख मन गह गही ॥४॥

॥ गाथा ॥

हंहो देवा २ अणाई कालो अदिठ्ठपुव्वो। तिलोयतारणो। तिलोयबंधू। मिच्छत्तमोहविद्धंसणो। अणाई तिन्ना विणासणो ॥ देवाहि देवो दिठव्वो २ हिअय कामेहिं ॥१॥

॥ ढाल तेहज ॥

एम पभणंति वण भुवन जोईसरा। देव वेमाणिया भत्ति धम्मायरा। केवि कप्पट्ठिया केवि मीत्ताणुगा। केई वररमणि वयणेण अइ उच्छगा ॥५॥

॥ वस्तु छन्द ॥

तत्थ अच्चुय २ इन्द्र आदेश। कर जोड़ी सर्व देवगण। लेइ कलश आदेश पामीय। अद्भुत रूप सरूप जुय। कवण एह पुछन्त सामीय। इंद्र कहै जगतारणो। पारग अम्हपरमेस। नायक दायक धम्मनिहि। करीये तसु अभिषेक ॥ १ ॥

॥ ढाल ॥

चाल–तीर्थ कमल वरउदक भरीने । पुष्कर सागर आवै ।

पूर्ण कलश सुचि उदकनी धारा । जिनवंर अंगे न्हामें । आतम निर्मल भाव करंता वधते शुभ परिणामें । अच्चुयादिक सुरपतिमज्जन लोकपाल लोकांत । सामानिक इन्द्राणी पमुहा इम अभिषेक करंत ॥ १ ॥ पू० ॥

॥ गाथा ॥

तव ईसान सुरिंदो । सक्कं पभणेइ करिहु सुपसाओ ॥ तुह्म अंक महनाहो । खिणमित्तं अह्म अप्पेह ॥ १ ॥ तासक्किन्दो पभणई । साह मीय वच्छलंमि वहू लाहो ॥ आणा इवं तेणं गिण्ह होउ कयत्था भो ॥ २ ॥

इतना कहकर सर्व स्नात्रिया, भगवान ऊपर कलश ढालें और मुखसे पढ़ें ॥

॥ ढाल ॥

सोहम सुरपति वृषभ रूप करि । न्हवण करें प्रभु अंगे । करिय विलेपण पुष्फ माल

ठवि, वर आभरण अभंगे ॥ सो० ॥ १ ॥ तब सुरवर बहु जय जय रव करि । नच्चे धरी आणंद ॥ मोक्ष मारग सारथपति पाम्यो । भांजिसु हिव भवफंद । सो० ॥ २ ॥ कोडि-बत्तीस सोवन्न उवारी । वाजंते वरनाद ॥ सुरपति संघ अमर श्रीप्रभुने । जननीने सुप्रसाद ॥ ३ सो० ॥ आणी थापी एम पयंपे, अह्म निसतरिया आज ॥ पुत्र तुम्हारो धणीय अह्मारो । तारण तरण जिहाज ॥ ४ ॥ सो० ॥ मात जतन करि राखजो एहने, तुह्म सुत अह्म आधार । सुरपति भगति सहित नंदीसर । करे जिन भगति उदार ॥५॥ सो० ॥ निय निय कप्प गया सवि निज्जर । कहितां प्रभु गुणसार ॥ दीक्षा केवलज्ञान कल्याणक, इच्छा चित्त मझार ॥ सो० ॥ ६ ॥ खरतर गच्छ जिन आणारंगी । राजसागर उवज्झाय ॥ ज्ञानधरम दीपचंद सुपाठक । सुगुरु तणो सुपसाय ॥सो० ७ ॥ देवचंद जिन भगते गायो । जनम महोच्छव

छंद ॥ बोधबीज अंकूरो उल्लस्यो ॥ संघ सकल आणंद ॥ सो० ॥ ८ ॥

॥ ढाल ॥ राग वेलाउल ॥

इम पूजा भगतै करो। आतमहित काज ॥ तजिय विभाव निजभावना। रमतां शिवराज ॥ १ ॥ इ० ॥ काल अनंतै जे हुवा। होसे जेह जिणंद। संपई सीमंधर प्रभु। केवल नाण दिणंद ॥इ०॥२ ॥ जनम महोछव इणि परे। श्रावक रुचिवंत। विरचै जिन प्रतिमा तणो। अनुमोदन खंत ॥इ०॥३॥ देवचंद जिन पूजना। करता भवपार। जिन पडिमा जिन सारखी। कही सूत्र मझार ॥ ॥ इम० ४ ॥

अष्टप्रकारी पूजा ।

जल पूजा ।

॥ दोहा ॥

गंगा मागध क्षीरनिधि, औषध मिश्रित सार ।
कुसुमे वासित शुचि जलें, करो जिन स्नात्र उदार ॥

॥ ढाल ॥

मणि कनकादिक अड़विध, करि भरि कलस सफार । शुभ रुचि जे जिनवर नमें, तसु नहीं दुरित प्रचार ॥ मेरु शिखर जिम सुरवर, जिनवर न्हवण असमान । करता वरता निज गुण, समकित वृद्धि निधान ॥२॥

॥ छंद ॥

हर्ष भरि अपसरावृन्द आवे । स्नात्र करि एम आसीस भावे । जिहां लगे सुरगिरि जंबु दीवो । अमतणा नाथ जीवो तु जीवो ॥३॥

॥ श्लोक ॥

विमल केवलभासनभास्करं, जगति जन्तु महोदयकारणं। जिनवरंवहुमान जलौघतः, शुचि मनः स्नपयामि विशुद्धये ॥१॥ ॐ ह्रीँ परम परमात्मने अनंतानंत ज्ञानशक्तये जन्मजरामृत्यु-निवारणाय श्रीमज्जिनेन्द्राय जलं यजामहे स्वाहा ॥ १ ॥

चन्दन पूजा ।

॥ दोहा ॥

वावना चन्दन कुमकुमा । मृगमदने घनसार ॥
जिन तनु लेपे तसु टले । मोह सन्ताप विकार ॥१॥

॥ ढाल ॥

सकल सन्ताप निवारण तारण सहु भवि-चित्त ।
परम अनीहा अरिहा तनु चरचो भवि-नित्त ॥
निज रूपे उपयोगी धारी जिन गुण-गेह ।
भाव चंदन सुह भावथी टाले दुरित अछेह ॥२॥

॥ चाल ॥

जिन तनु चरचतां सकल नाकी । कहे

कुग्रह ऊष्णता आज थाकी ॥ सफल अनिसे-
षता आज म्हांकी । भव्यता अम्ह तणी आज
पाकी ॥ ३ ॥

॥ श्लोक ॥

सकल मोह तमिस्र विनाशनं, परमशीतल
भावयुतं जिनं । विनयकुंकुम चंदनदर्शनैः, सहज
तत्वविकाशकृतेर्चये ॥१॥ ॐ ह्रीँ परमपरमात्मने
अनन्तानन्तज्ञानशक्तये जन्मजरामृत्युनिवारणाय
श्रीमज्जिनेंद्राय चंदनं यजामहे स्वाहा ॥२॥

नवांगी भाव पूजा

॥ दोहा ॥

पर उपगारी चरणयुग, अनंत शक्ति स्वयमेव ।
यातें प्रथम पूजिये, आतम अनुभव सेव ॥ १ ॥
जानु पूजा दूसरी, समाधि भूमिका जान ।
आतम साधन ज्ञान ले, शुद्ध दशा पहिचान ॥२॥
कर पूजा जिनराजकी, दिये सम्वच्छरी दान ।
ते कर मुक्ष मस्तक ठवूं, पहुँचे पद निर्वाण ॥३॥

भुजवल शक्ति जानके, पूजा करूं चित लाय ।
रागादिमल हटायके, आतम गुण दरशाय ॥४॥
सिर पूजा जिनराजकी, लोक शिरोमणि भाव ।
चउगति गमन मिटायके, पंचम गति समभाव ॥
लिलवट पूजा सार है, तिलक विधि विश्राम ।
वदन कमल वाणी सुनें, पहुँचे निज गुण धाम ॥६॥
कंठ पूजा है सातमी, वचनातिशय वृंद ।
सप्त भेद पंचविश श्रुत, अनुभव रस नो कंद ॥७॥
हृदय कमलनी पूजना, सदा वसो चितमांह ।
गुण विवेक जागे सदा, ज्ञान कला घट छाय ॥८॥
नाभी मंडल पूजके, षोड़श दलको भाव ।
मन मधुकर मोही रह्यो, आनन्दघन हरषाय ॥९॥

॥ दोहा ॥

जल भरि संपुट पत्रमां, युगलिक नर पूजंत ।
ऋषभ चरण अंगूठड़ो, दायक भवजल अन्त ॥१॥
जानु वले काउसग रह्या, विचर्या देश विदेश ।
खड़ा खड़ा केवल लह्या, पूजा जानु नरेश ॥२॥

लोकांतिक वचनें करी, वरस्या वरसीदान ।
करकांडे प्रभु पूजना, पूजो भवि बहुमान ॥३॥

मान गयूं दो अंशथी, देखी वीर अनन्त ।
भुजा बले भवजल तर्या, पूजो खंध महंत ॥४॥

रत्नत्रय गुण ऊजली, सकल सुगुण विश्राम ।
नाभि कमलनी पूजना, करता अविचल धाम ॥५॥

हृदय कमल उपशम बले, बाल्यो रागनें रोष ।
हेम दहै वनखंडनें, हृदय तिलक सन्तोष ॥६॥

सोल पहर देई देशना, कंठ विवर वरतूल ।
मधुर ध्वनी सुरनर सुनें, तिम गले तिलक अमूल ॥७

तीर्थंकर पद पुन्य थी, त्रिभुवन जन सेवंत ।
त्रिभुवनतिलक समाप्रभु, भाल तिलक जयवंत॥८॥

सिद्धशिला गुण ऊजली, लोकांतिक भगवंत ।
वसिया तिण कारण वही, शिर शिखा पूजंत ॥९॥

उपदेशक नवतत्वना, तिम नव अंग जिणंद ।
पूजो बहुविध भाव थी, कहे सहु वीर मुनिन्द॥१०॥

पुष्प पूजा ॥

॥ दोहा ॥

शतपत्री वर मोगरा, चम्पक जाइ गुलाव ।
केतकी दमणो वोलसिरि, पूजो जिन भरि छाव॥१॥

॥ ढाल ॥

अमल अखण्डित विकसित सुभसुमनी घनजाति,
लाखीणो टोडर ठवो आंगी रचो बहुभांति ।
गुण कुसुमें निज आतम मण्डित करवा भव्य,
गुणरागी जड़त्यागी पुष्प चढ़ावो नव्य ॥ २ ॥

॥ चाल ॥

जगधणी पूजतां विविध फूलै, सुरवरा ते गिणें क्षण अमूलै । खन्ति धर मानवा जिन पद पूजे, तसुतणा पाप संताप धूजे ॥ ३ ॥

॥ श्लोक ॥

विकचनिर्मलशुद्ध मनोरमैः विशदचेतन-भावसमुद्भवैः । सुपरिणाम प्रसूनघनैर्नवै:, परम तत्वमयं हि यजाम्यहं ॥ १ ॥ ॐ ह्रीँ परम परमात्मने० पुष्पं यजामहे स्वाहा ॥ ३ ॥

धूप पूजा ।

कृष्णागर मृगमद तगर, अम्बर तुरक लोबान ।
मेल सुगन्ध घनसार घन, करो जिनने धूपदान ॥

॥ ढाल ॥

धूपघटी जिम महमहै, तिम दहै पातिक वृन्द ।
अरति अनादिनी जावे, पावे मन आनन्द ।
जे जिन पूजै धूपे, भवकूपे फिर तेह ।
नावै पावै ध्रुवघर आवै सुक्ख अछेह ॥ २ ॥

॥ चाल ॥

जिनघरे वासतां धूप पूरै, मिच्छत दुर्गन्धता जाई दूरै । धूप जिम सहज उर्द्ध गत स्वभावे, कारिका उच्चगति भाव पावे ॥ ३ ॥

॥ श्लोक ॥

सकलकर्म्ममहेंधनदाहनं, विमलसंवरभावसुधूपनं । अशुभ पुद्गल संगविवर्जितं, जिनपतेः पुरतोस्तु सुहर्षितः ॥१॥ ॐ ह्रीँ परमपरमात्मने० । धूपं यजामहे स्वाहा ॥ ४ ॥

दीप पूजा ।

॥ दोहा ॥

मणिमय रजत ताम्रना, पात्र करी घृत पूर।
वत्ती सूत्र कसुंबनी, करो प्रदीप सनूर ॥ १ ॥

॥ ढाल ॥

मंगल दीप वधावो, गावो जिन गुणगीत।
दीप तणी जिम आलिका, मालिका मंगलनीत॥
दीपतणी शुभज्योती, द्योती जिन मुखचन्द।
निरखी हरखो भविजन, जिम लहो पूर्णानन्द॥२

॥ चाल ॥

जिने गृहे दीप माला प्रकासे, तेहथी तिमिर अज्ञान नासै। निज घटे ज्ञानज्योती विकासें, तेहथी जग तणा भाव भासें ॥ ३ ॥

॥ श्लोक ॥

भविक निर्म्मलबोध विकाशकं, जिनगृहे शुभदीपकदीपनं। सुगुणराग विशुद्धसमन्वितं, दधतु भावविकाश कृते जनाः ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं परमपरमात्म० दीपं यजामहे स्वाहा ॥५॥

अथ अक्षत पूजा ।

॥ दोहा ॥

अक्षत अक्षत पूरसुं, जे जिन आगे सार ।
स्वस्तिक रचतां विस्तरै, निजगुण भर विस्तार ॥

॥ ढाल ॥

उज्जल अमल अखण्डित, सण्डित अक्षत चंग ।
पुञ्जत्रय करो स्वस्तिक आस्तिक भावे रंग ॥
निज सत्ताने सन्मुख उन्मुख भावे जेह ।
ज्ञानादिक गुणठावे भावे स्वस्तिक एह ॥२॥

॥ चाल ॥

स्वस्तिक पूरतां जिनप आगै, स्वस्ति श्रीभद्र कल्याण जागै । जन्म जरा मरणादि अशुभ भागै, नियत शिव सर्व रहे तासु आगै ॥३॥

॥ श्लोक ॥

सकल मंगलकेलि निकेतनं, परम मंगलभावमयं जिनं । श्रयति भव्यजना इति दर्शयन्, दधतु नाथपुरोक्षतस्वस्तिकं ॥ १ ॥ ॐ ह्रीँ परमपरमात्मने० अक्षतं यजामहे स्वाहा ॥ ६ ॥

नैवेद्य पूजा ।

॥ दोहा ॥

सरस शुचि पकवान वहु, शालि दालि घृतपूर ।
धरे नैवेद्य जिन आगलै, क्षुधा दोष तसु दूर ॥

॥ ढाल ॥

लपनश्री वर घेवर मधुलर मोतीचूर, सिंह-केसरिया सेविया दालिया मोदक पूर । साकर द्राख सींघोड़ा भक्ति व्यञ्जन घृतसद्य, करो नैवेद्य जिन आगले जिम मिले सुख अनवद्य ॥२॥

॥ चाल ॥

ढोवतां भोज्य परभाव 'त्यागे, भविजना निज गुण भोज्य मांगे । अम्हभणि अम्हतणो सरूप भोज्य, आपजो तातजी जगत पूज्य ॥३॥

॥ श्लोक ॥

सकल पुद्गगल संग विवर्जनं, सहज चेतन भावविलासकं । सरस भोजन नव्य निवेदनात्, परमनिर्वृतिभागमहं स्पृहे ॥ १ ॥ ॐ ह्रीँ परम-परमात्मने० । नैवेद्यं यजामहे स्वाहा ॥ ७ ॥

फल पूजा ।

॥ दोहा ॥

पक्व बीजोरूं जिन करे, ठवतां शिव पद देइ ।
सरस मधुर रस फल गिणें, इह जिन भेट करेइ ॥

॥ ढाल ॥

श्रीफल कदली सुरंग नारंगी आंबा सार,
अंजीर बंजीर दाड़िम करणा पट्बीज सफार ।
मधुर सुस्वादिक उत्तम लोक आनन्दित जेह,
वर्ण गन्धादिक रमणीक बहुफल ढोवै तेह ॥२॥

॥ चाल ॥

फलभर पूजतां जगत स्वामी, मनुज गति ते लहे सफल पामी । सकल मनुष्येय गतिभेद रंगे, ध्यावतां फल समाप्ति प्रसंगे ॥ ३ ॥

॥ श्लोक ॥

कटुककर्म विपाक विनाशनं, सरसपक्वफल-व्रजढौकनं । वहति मोक्षफलस्य प्रभोः पुरः, कुरुत सिद्धिफलाय महाजना ॥ १ ॥ ॐ ह्रीँ परम परमात्मने० फलं यजामहे स्वाहा ॥ ८ ॥

अर्घ पूजा ।

॥ दोहा ॥

इम अड़विधि जिन पूजना, विरचे जे थिर चित्त ।
मानवभव सफलो करे, वाधे समकित वित्त ॥

॥ ढाल ॥

अगणित गुणमणि आगर नागर वन्दित पाय,
श्रुतधारी उपगारी श्रीज्ञानसागर उवझाय ।
तासु चरणकज सेवक मधुकर पय लयलीन,
श्रीजिन पूजा गाई जिनवाणी रसपीन ॥२॥

॥ चाल ॥

सम्वत गुण युग अचल इन्दु, हर्ष भरी गाइयो श्रीजिनेंदु । तासु फल सुकृत थी सकल प्राणी, लहे ज्ञानउद्योत धन शिव निसाणी ॥

॥ श्लोक ॥

इति जिनवरवृन्दं भक्तितः पूजयन्ति, सकल गुणनिधानं देवचन्द्र स्तुवन्ति । प्रतिदिवसमनन्तं तत्वमुद्भासयन्ति, परमसहजरूपं मोक्ष-

सौख्यं श्रयन्ति ॥ १ ॐ ह्रीँ परमपरमात्मने० अर्घं यजामहे स्वाहा ॥

वस्त्र पूजा ।

शक्रो यथा जिनपतेः सुरशैलचूला, सिंहासनोपरि सितस्नपनावसाने । दध्यक्षतैः कुसुमचन्दन गन्धधूपैः, कृत्वार्चनन्तु विदधाति सुवस्त्रपूजां ॥ १ ॥ तद्वत् श्रावकवर्ग एष विधिनालङ्कारवस्त्रादिकं, पूजां तीर्थकृतां करोति सततं शक्त्यातिभक्त्याहृतः । नीरागस्य निरञ्जनस्य विजितारातेस्त्रिलोकीपतेः, स्वस्यान्यस्य जनस्य निर्वृतिकृते क्लेशक्षयाकांक्षया ॥ ॐ ह्रीँ परमपरमात्मने० वस्त्रं यजामहे स्वाहा ॥

नमक उतारण पूजा ।

अह पडिभग्गापसरं, पयाहिणं मुणिवयं करिऊणं । पड़इ सलूणत्तण लज्जियंच, लूणंहू अवहरन्ति ॥ १ ॥ पिक्खेविणु मुह जिणवरह दोहर नयण सलूण । न्हावइ गुरु मच्छह भरिय; जलण पइस्सइ लूण ॥२॥ लूण उतारिह

जिणवरह; तिन्नि पयाहिणि देव। तड़ तड़ शब्द् करन्तिये; विज्जा विज्जजलेण ॥ ३ ॥ जं जेण विज्जव थुई; जलेण तं तहइ अत्थसद्दस्स। जिणरूवा मच्छरेणवि; फुट्टइ लूणं तड़ तड़स्स॥४॥

यह कहकर लूण अग्निशरण करे पीछे लूण पाणी लेकर, मुखसे गाथा कहे।

गाथा

सव्ववि मुणवई जलविजल, तंतह भमणइ पास। अहवि कयन्तस्स निम्मलउ, निग्गुण वुद्धि पयास ॥५॥ जलण अणेविणु जलणहि पास, भरवि कयज्जल भावहि पास। तिन्नि पयाहिणि दिन्निय पास, जिम जिय छूटइ भव दुहपास ॥ ६ ॥ जल निम्मल कर कमलेहि लेविणुं, सुरवड भावहि मुणिवई सेवणुं। पभणइ जिणवर तुहपड सरणं, भय तुट्टड लब्भइ सिद्धि गमणं ॥७॥

पुष्पमाला पहरावण पूजा ॥

उन्नय पयय भत्तस्स, नियठाणे संठिय कुणंतस्स। जिण पासे भमिय जणस्स, पिच्छतुह

धरीने ॥ सदा आठ महापाडिहारे समेता, सुरेशे नरेशे स्तव्या ब्रह्मपूता ॥४॥ कर्या घातिया कर्म चारे अलग्गा, भवोपग्रही चार छे जे विलग्गा ॥ जगत्पंच कल्याणके सौख्य पामें, नमो तेह तीर्थंकरा मोक्ष कामें ॥ ५ ॥

॥ ढाल ॥

तीरथपति अरिहा नमुं, धरम धुरंधर धीरोजी ॥ देसना अमृत वरसता, निज वीरज वड वीरो जी ॥ ती० ॥ उल्लालो ॥ वर अखय निर्मल ज्ञान भासन सर्व भाव प्रकासता, निज शुद्ध श्रद्धा आत्म भावे चरण थिरता वासता ॥ जिन नामकर्म प्रभाव अतिशय प्रातिहारज शोभता, जगजंतु करुणावंत भगवंत भविकजन ने थोभता ॥६॥

॥ ढाल ॥

(श्रीसीमंधर साहिब आगे ॥ ए-देशी ।)

तीजे भव वर थानक तप करी, जिन बांध्युं जिन नाम ॥ चउसठ इंद्रे पूजित जे जिन,

कीजे तास प्रणाम रे भविका सिद्धचक्र पद वंदो रे ॥ भ० ॥ जिम चिरकाले नंदो रे ॥भ०॥ उपशम रसनो कंदो रे॥ भ० ॥ रत्नत्रयीनो वृंदो रे ॥ भ० ॥ सेवे सुरनर इंदो रे ॥ भ० सि० ॥ ७ ॥ ए आंकणी ॥ जेहने होय कल्याणक दिवसे, नरके पिण उजवालूं ॥ सकल अधिक गुण अतिशय धारी, ते जिन नमि अघ टालूं रे ॥ भ० सि० ॥ ८ ॥ जे तिहुं नाण सम्मग्ग उप्पन्ना, भोग करम क्षीण जाणी ॥ लेइ दीक्षा शिक्षा दिये जगने, ते नमिये जिन नाणी रे ॥ भ० सि० ९ ॥ महागोप महामाहण कहिये, निर्यामक सत्थवाह ॥ उपमा एहवी जेहने छाजे, ते जिन नमिये उच्छाह रे ॥ भ० सि० ॥ १० ॥ आठ प्रातीहारज जसु छाजे, पैंतीस गुणयुत वाणी ॥ जे प्रतिबोध करे जगजनने, ते जिन नमिये प्राणी रे भ० सि० ११ ॥

॥ ढाल ॥

(चाल–सीमंधर सामी उपदिशे)

अरिहंतपद ध्यातो थको, दव्वह गुण पर्याये रे ॥ भेद छेद करी आतमा अरिहंत रूपी थायेरे ॥ १२ ॥ वीर जिणेसर उपदिसे, सांभलजो चित लाई रे ॥ आतम ध्याने आतमा, ऋद्धि मिले सब आई रे ॥ वी० १३ ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ परमात्मने, अनंतानंत ज्ञान शक्तये ॥ जन्म जरा मृत्यु निवारणाय, श्रीसत्सिद्धचक्राय अरिहंत पदे अष्ट द्रव्यं यजामहे स्वाहा ॥१॥

द्वितीय श्रीसिद्धपद-पूजा ॥

॥ दोहा ॥

दूजी पूजा सिद्धकी, कीजे दिल खुसियाल ।
अशुभ करम दूरे टले, फले मनोरथ माल ॥१॥

॥ काव्य ॥

सिद्धाण माणंद रमालयाणं, नमो २ णंत चउक्कयाणं ॥ समग्ग कम्मक्खय कारगाणं,

जम्मजरा दुक्ख निवारगाणं ॥१४॥ करी आठ कर्म्म क्षय पार पाम्या, जरा जन्म मरणादि भय जैण वाम्या ॥ निरावरण जे आत्मरूपे प्रसिद्धा, थया पार पामी सदा सिद्धबुद्धा ॥ १५ ॥ त्रिभागोन देहावगाहात्मदेशा, रह्या ज्ञानमय-जातिवर्णादिलेसा ॥ सदानन्तसौख्याश्रिता ज्योतिरूपा, अनावाध अपुनर्भवादि स्वरूपा ॥१६

॥ चाल ॥

सकल कर्ममल क्षय करी, पूरण शुद्ध स्वरूपो जी ॥ अव्यावाध प्रभुतामयी, आतम संपत भूपो जी ॥ उह्लाला ॥ जे भूप आतम सहज संपति, शक्ति व्यक्तिपणें करी । स्वद्रव्यक्षेत्र स्वकालभावे, गुण अनंता आदरी ॥ स्वस्वभाव गुणपर्याय परणति, सिद्धसाधन परभणी, मुनिराज मानसर हंस समवड, नमो सिद्ध महा गुणी ॥ १७ ॥

॥ ढाल ॥

समय पएसंतर अणफरसी चरम तिभाग

विशेस । अवगाहन लही जे शिव पुहता, सिद्ध नमो ते असेस रे ॥ १८ ॥ म० ॥ पूर्व प्रयोगने गति परणामे, बंधन छेद असंग । समय एक ऊरधगति जेहनी, ते सिद्ध प्रणमो रंग रे ॥ म० १९ सि० ॥ निरमल सिद्धशिलाने ऊपर जोयण एक लोकंत । सादि अनंत तिहां थिति जेहनी, ते सिद्ध प्रणमो संत रे ॥ २० म० सि० ॥ जाणे पिण न सके कही पुर गुण प्राकृत तिम गुण जास । ओपमा विण नाणी भवमांहे, ते सिद्ध दिओ उल्लास रे ॥ म० ॥ २० ॥ सि० ॥ ज्योतिसुं ज्योति मिली जसु अनुपम, विरमी सकल उपाधि । आतमराम रमापति समरो, ते सिद्ध सहज समाधि रे ॥ म० ॥ २१ ॥ सि० ॥

॥ ढाल ॥

रूपातीत स्वभाव जे, केवल दंसण नाणी रे । ते ध्याता निज आतमा, होय सिद्ध गुण खाणी रे ॥ वी० ॥ ॐ ॥ ह्रीँ ० सिद्ध पदे० ॥

तृतीय आचार्य पद-पूजा ॥

॥ दोहा ॥

हिव आचारज पदतणी, पूजा करो विशेष ।
मोहतिमिर दूरे हरे, सूझे भाव अशेष ॥ १ ॥

॥ काव्य ॥

सूरीणदूरीकयकुग्गहाणं, नमो २ सूरसमप्पहाणं । सद्दंसणा दाणसमायराणं, अखंड छत्तीस गुणायराणं ॥ नमूं सूरिराजा सदा तत्वभाजा, जिनेंद्रागमें प्रौढ साम्राज्यभाजा । षट् वर्गवर्गित गुणे शोभमाना, पंचाचारने पालवे सावधाना ॥२ भविप्राणिने देशना देशकाले, सदा अप्रमत्ता यथा सूत्र आले । जिके शासनाधार दिग्दन्तकल्पा, जगत्ते चिरंजीवजो शुद्ध जल्पा ॥ ३ ॥

॥ ढाल ॥

आचारज मुनिपति गणी, गुणछत्तीसेधामो जी । चिदानंद रसस्वादता, परभावे निक्कामो जी ॥ उल्लालो । निक्काम निरमल शुद्ध चिद्घन, साध्य निज निरधारथी ॥ वरज्ञान दरशन

गुणीगच्छसंधारणे स्थंभपूता, उपाध्यायने वंदिये-
चित्प्रसूता ॥ ३ ॥

॥ चाल ॥

खंतिजुआ मुत्तीजुआ, अज्जव मद्दवजुत्ताजी ॥
सच्चंसोयंअकिंचणा, तवसंयम गुणरत्ताजी ॥
उल्लालो॥ जे रम्या ब्रह्मसुगुप्तिगुप्ता,सुमति सुमता
श्रुतधरा । स्याद्वाद वादइं तत्वसाधक, आतम-
परविभंजनकरा ॥ भवभीरुसाधन धीरशासन,
वहनधोरीमुनिवरा । सिद्धान्तवायनदान समरथ
नमो पाठक पदधरा ॥ ३ ॥

॥ ढाल ॥

द्वादशअंगसिज्झाय करे जे, पारगधारग
तास । सूत्र अरथ विस्तार रसिक ते, नमो उव-
ज्झाय उल्लास रे ॥ भ० ॥ ३४ ॥ सि० ॥ अर्थ-
सूत्रने दानविभागे, आचारज उवज्झाय । भव
त्रीजे जे लहे शिवसंपद, नमिये ते सुपसाय रे ॥
भ० ॥ ३५ ॥ सि० ॥ मूरख शिष्यनीपाये जे

प्रभु, पाहण पल्लव आणे । ते उवझाय सकल-जन पूजित, सूत्रअर्थ सवि जाणे रे ॥भ०॥३६॥ सि० ॥ राजकुमर सरिखा गणचिंतक, आचारज-पद योग, ते उवझाय सदा ते नमतां, नावे भवभय सोग रे ॥ भ० ॥ ३७ ॥ सि० ॥ बावनाचंदनरस समवयणे, अहित ताप सवि टाले ॥ ते उवझाय नमिजे जे वलि, जिन-शासन उजवाले रे ॥ भ० ॥ ३८ ॥ सि० ॥

॥ ढाल ॥

तप सज्झाये रत सदा, द्वादश अंगनो ध्याता रे । उपाध्याय ते आतमा, जगबंधव जग-त्राता रे ॥ वी० ॥ ३९ ॥ ॐ ह्रीँ० श्रीपाठक-पदे अष्ट द्रव्यं यजामहे स्वाहा ॥४॥

पाचमी साधुपद पूजा ॥

॥ दोहा ॥

मोक्षमारग साधनभणी, सावधान थया जेह ।
ते मुनिवर पद वंदता, निरमल थाये देह ॥

स्यु' लोचे रे वी० ॥ ४६ ॥ ॐ ह्रीं० साधु पदे अष्ट द्रव्यं यजामहे स्वाहा ॥

छट्ठी दर्शनपद-पूजा ॥

॥ दोहा ॥

जिनवर भाषित शुद्ध नय, तत्वतणी परतीत ।
ते सम्यग्दर्शन सदा, आदरिये शुभ रीत ॥१॥

॥ काव्य ॥

जिणुत्त तत्ते रुइ लक्खणस्स, नमो २ निम्मल दंसणस्स। मिच्छत्त नासाइ समुग्गमस्स, मूलस्स सधम्ममहा दुमस्स ॥विपर्यासहोवासना-रूप मिथ्या, टले जे अनादी अछे जे कुपथ्या । जिनोक्ते हुइ सहजथीशुद्धध्यानं,कहियेदर्शनंतेह-परसंनिधानं ॥ ५० ॥ विनाजेहथीज्ञान मज्ञान-रूपं, चरित्रंविचित्रं भवारण्यकूपं । प्रकृति-सातने उपसमे क्षय तेह होवे, तिहां आपरूपे सदा आप जोवे ॥ ५१ ॥

॥ ढाल ॥

सम्यग् दरसण गुण नमो, तत्व प्रतीत

सरूपीजी । जसु निरधार स्वभाव छे, चेतन गुण जे अरूपी जी ॥

॥ चाल ॥

जे अनूप श्रद्धा धर्म प्रगटे, सयल पर ईहा टले, निजशुद्ध सत्ता भाव प्रगटे, अनुभव करुणा उछले। बहु मान परणितवस्तु तत्वे अहव सुखकारण पणे, निज साध्य दृष्टे सरव करणी तत्वता संपति गिणे ॥ ५२ ॥

॥ ढाल ॥

शुद्धदेव गुरु धर्म परीक्षा, सद्दहणा परिणाम । जेह पामीजे तेह नमीजे, सम्यग्दर्शन नाम रे ॥ भ० ५३ सि० ॥ मल उपशम क्षय उपशम जेहथी, जे होइ त्रिविध अभंग। सम्यग्दर्शन तेह नमीजे, जिनधरमें दृढ़ रंग रे ॥ भ० ५४ सि० ॥ पांच वार उपशम लहीजे, क्षयउपसमीय असंख। एक वार क्षायक ते सम्यक्, दर्शन नमीये असंख रे ॥ भ० ॥ ५५ सि० ॥ जे विण नाण प्रमाण न होवे, चारित्र

॥ ढाल ॥

भक्ष अभक्ष न जे विण लहिये, पेय अपेय विचार। कृत्य अकृत्य न जे विन लहिये, ज्ञानते सकल आधार रे ॥ भ० ॥ ६२ सि० ॥ प्रथम ज्ञान ने पछे अहिंसा, श्रीसिद्धान्ते भाख्युं ज्ञानने वंदो ज्ञान म निंदो, ज्ञानीये शिवसुख चाख्युं रे ॥ भ० ६३ ॥ सि० ॥ सकल क्रियानु मूल ते श्रद्धा, तेहनुं मूल जे कहिये। तेह ज्ञान नित नित वंदीजे, ते विन कहो किम रहिये रे ॥ भ० ॥ ६४ सि० ॥ पंच ज्ञानमांहे जेह सदागम, स्वपरप्रकाशक तेह। दीपकपर त्रिभुवन उपगारी, वलि जिम रवि शशि मेह रे ॥ भ० ॥६५सि० ॥ लोक ऊरध अधतिर्यग्ज्योतिष, वैमानिकने सिद्ध। लोक अलोक प्रगट सब जेहथी, ते ज्ञाने मुझ शुद्धि रे ॥भ० ॥६६॥सि०॥

॥ ढाल ॥

ज्ञानावरणी जे कर्म छे, क्षय उपशम तसु थाये रे। तो होइ एहिज आतमा, ज्ञान अबो-

धता जाये रे ॥ त्री० ॥ ६७ ॥ ॐ ह्रीं प० ज्ञानपदे अष्ट द्रव्यं यजामहे स्वाहा ॥

आठवीं चारित्रपद पूजा ॥

॥ दोहा ॥

अष्टम पद चारित्रनो, पूजो धरी उमेद ।
पूजत अनुभवरस मिले, पातिक होय उच्छेद ॥

॥ काव्य ॥

आराहियाखंडिअ सक्कियस्स, नमो नमो संजमवीरिअस्स । सब्भावणसंग विवट्टिअस्स, निव्वाणदाणाइ समुज्जयस्य ॥ वलि ज्ञानफलते धरिये सुरंगे, निरासंसता द्वार रोधे प्रसंगे ॥ भवांभोधि संतारणे यान तुल्यं, धरु तेहचारित्र-अप्राप्तमूल्यं ॥६८॥ होइ जास महिमाथकी रंक-राजा, वलि द्वादशांगी भणी होय ताजा । वलिपापरूपोपि निष्पाप थाये, थई सिद्ध ते कर्मने पार जाये ॥ ६९ ॥

॥ चाल ॥

चारित्रगुण वलि वलि नमो, तत्वरमण-

जसु मूलो जी। पर रमणीयपणो टले, सकल सिद्धि अनुकूलो जी ॥

॥ उल्लालो ॥

प्रतिकूल आश्रव त्याग संजम तत्व थिरता दममयी, शुचिपरम खंति मुनींद संपद पंच संवर उपचयी ॥ सामायिकादिक भेद धरमें यथाख्याते पूर्णता, अकषाय अकुलुस अमल उज्वल काम कसमल चूर्णता ॥ ७० ॥

॥ ढाल ॥

देशविरत ने सर्वविरत जे, ग्रही यतिने अभिराम। ते चारित्र जगत जयवंतो कीजै तास प्रणाम रे ॥ भ० ॥ ७१ ॥ सि० ॥ तृण परे जे षट्खंड सुख छंडी, चक्रवर्त पिण वरियो, ते चारित्र अखय सुखकारण, ते में मनमांहि धरिओ रे ॥ भ० ॥ ७२ ॥ सि० ॥ हुआ रंक पणे जे आदर, पूजत इन्द-नरिंद ॥ अशरण शरण चरण ते वारू, वरिओ ज्ञान आनन्द रे ॥ भ० ॥७३॥ सि० ॥ बार मास पर्याये तेहने, अनुत्तर सुख

अतिक्रमिये । शुक्ल शुक्ल अभिजात्य ते ऊपर, ते चारित्रने नमिये रे ॥ भ० ॥ ७४ सि० ॥
चय ते आठ करमनो संचय, रिक्त करे जे तेह ॥ चारित्र नाम निरुक्ते भाख्युं, ते वंदू गुणगेह रे ॥ भ० ॥ ७५ सि० ॥

॥ ढाल ॥

जाणि चारित्र ते आतमा, निजस्वभावमांहि रमतो रे । लेस्या शुद्ध अलंकर्यो, मोहवने नवि भमतो रे ॥ वी० ७६ ॥ ॐ ह्रीँ प० चारित्रपदे अष्ट द्रव्यं यजामहे स्वाहाः ॥

नवमी तपपद-पूजा ॥

॥ दोहा ॥

करमकाष्ट प्रति जालवा, परतिख अगनि समान ।
ते तपपद पूजो सदा, निर्मल धरिये ध्यान ॥

॥ काव्य ॥

कम्मद्दुमोन्मूलन कुंजरस्स, नमो नमो तिव्वतवोवरस्स । अणेगलद्धीण निबंधणस्स, दुसज्झअत्थाणय साहणस्य ॥ ७७ ॥ इय नवपय-

सिद्धीं, लद्धि वीज्जासमीद्धं, पयमीय सरवग्गं ह्रीं तिरेहसमग्गं । दिसिवइ सुरसारं खोणिपीढावयारं, तिजय विजयचक्कं सिद्धचक्कं नमामि ॥ ७८ ॥ त्रिकालिकपणे कर्मकषाय टाले, निकाचितपणे बांधिया तेह बाले । कह्यो तेह तप बाह्य अभ्यंतर दुभेदे, क्षमायुक्ति निर्हेत दुर्ध्यान छेदे ॥ ७६ ॥ होइ जास महिमा थकी लब्धि सिद्धि, अवांछकपणे कर्म आवर्ण शुद्धि । तपो तेह तप जे महानंद हेते, होई सिद्ध सीमंतनी जिम संकेते ॥ ८० ॥ इम नवपद ध्यावे परम आनंद पावे, नव भव शिव जावे देव नर भवज पावे । ज्ञानविमल गुण गावे सिद्धचक्र प्रभावे, सवि दुरित समावे विश्व जयकार पावे ॥ ८१ ॥

॥ ढाल ॥

इच्छारोधन तप नमो, बाह्य अभ्यन्तर भेदे जी । आतम सत्ता एकत्वता, पर परणति उछेदे जी ॥ १ ॥

॥ उल्लालो ॥

उच्छेद कर्म अनादि संतति. जेह सिद्धपणो वरे। शुभ योग संग आहार टाली, भाव, अक्रियता करे। अंतरमुहूरत तत्व साधे सर्व संवरता करी। निज आतमसत्ता प्रगट भावे, करो तपगुण आदरी ॥ ८२ ॥

॥ ढाल ॥

इम नवपद गुणमंडलं, चउ निक्षेप प्रमाणे जो ॥ सात नये जे आदरे, सम्यग्ज्ञाने जाणेजो ॥

॥ उल्लालो ॥

निरधारसेती गुणे गुणनो, करइ जे बहुमानए। जसु करण ईहा तत्व रमणे थाये निरमल ध्यान ए ॥ इम शुद्धसत्ता भलो चेतन सकल सिद्धि अनुसरे, अक्षय अनंत महंत चिदघन परम आनंदता वरे ॥ ८३ ॥

॥ कलश ॥

इम सयल सुखकर गुणपुरंदर सिद्धचक्र-पदावली, सविलद्धिविज्जा सिद्धि मंदिर भविक

पूजो मन रली। उवझाय वर श्रीराजसागर ज्ञानधर्मसु राजता, गुरु दीपचंद सुचरण सेवक देवचन्द्र सुशोभता ॥ ८४ ॥

॥ ढाल ॥

जाणंता त्रिहुं ज्ञाने संयुत, ते भवसुगति जिनंद। जेह आदरे कर्मखपेवा, ते तपसुरतरु कंद रे ॥ भ० ॥ ८५ ॥ सि० ॥ करम निकाचित पिण क्षय जाये, क्षमासहित जे करतां, ते तप नमीये तेह दीपावे, जिनशासन उजमंता रे ॥ भ० ॥ ८६ ॥ सि० ॥ आमोसही पमुहा बहु लब्धि, होवे जास प्रभावे। अष्ट महासिद्ध नवनिध प्रगटे, नमीये ते तप भावे रे ॥ भ० ॥ सि० ॥ ८७ ॥ फल शिव सुख मोटुं सुरनरवर संपति जेहनूं फूल। ते तप सुरतरु सरिखो वंदू, शम मकरंद अमूल रे ॥भ० ॥८८॥ सि०॥ सर्व्व मंगलमाहि पहलो मंगल, वर्णवियो जे ग्रंथे। ते तप पद तिहुं काले नमिये, वरसहाय शिवपंथे रे ॥ भ० ॥ ८९ ॥ सि० ॥ इम नवपद

थुणतो तिहां लीनो, हुओ तनमय श्रीपाल। सुजस विलासे चौथे खंडे, एह इग्यारमी ढाल रे ॥ भ० ॥ ६० ॥ सि० ॥

॥ ढाल ॥

इछारोधन संवरी, परिणित समता योगे रे। तप ते एहिज आतमा, वरते निजगुण भोगे रे ॥ वी० ॥६१॥ आगम नोआगम तणो, भाव ते जाणो साचो रे ॥ आतमभावे थिर हुओ, परभावे मत राचो रे ॥ वी० ॥ ६२ ॥ अष्ट सकल समृद्धिने, घटमाहे ऋद्धि दाखी रे। तिम नवपद ऋद्धि जाणजो, आतमराम छे साखी रे ॥ वी० ६३ ॥ योग असंख्य छे जिन कह्या, नवपद मुख्य ते जाणो रे। एहतणे अविलंबिने आतम ध्यान प्रमाणो रे ॥ वी० ॥ ६४ ॥ ढाल वारमी एहवी, चोथे खंडे पूरी रे। वाणी वाचक जसतणी, कोइय न रही अधूरी रे ॥ वी० ६५ ॥ ॐ ह्रीं प० तपपदे अष्ट द्रव्यं यजामहे। इति नवपद-पूजा ॥

प्रथम ध्वजा लेई करी, चढो गिरिवर शृंग।
विजय सदा जगमें हुवे, दिन दिन अधिक सुरंग॥६॥

॥ ढाल ॥

(चित्त हरख धरी, अनुभव रंगे, वीस परम पद सेविये, ए चाल)

गिरिराज जयो, श्रीसिद्धाचल तीरथ, रयणे पूजीये। महाराज जयो, श्रीरिसहेसर, भविजन भावे पूजीये॥ वर मोहन ध्वज पूजा करीये; चित चोखे जगमें जस चरिये, जिनराज सरण भवि अनुसरिये ॥गि०॥१॥ इहां पुंडरिक गणधर आया छे, तिण पुंडरिक नाम कहाया छे, सिद्ध-क्षेत्र नमी सुख पाया छे ॥गि०॥२॥ विमलाचल गुणमणि दरियो छे, सुरगिरि महागिरि गुण भरियो छे, वलि पुण्यरास मन धरियो छे ॥ गि० ॥ ३॥ वलि श्रीपत परवत सुखकारी, वलि इंद्रप्रकास ते चित्त धारी, सास्वत ए गिरिवर वलिहारी ॥ गि० ॥४॥ दृढसक्ति मुक्तिनिलो कहिये, अरु पुष्फदंत मन सरदहिये, महापद्म सुठाम सदा कहीये ॥ गि० ॥ ५ ॥ वलि पृथ्वीपीठ सुभद्र

वारु, कैलासगिरि कहिये सुखकारु, पातालमूल भविक तारु॥ गि० ॥ ६ ॥ वलि अकरम नामे एह जाणो, सर्वकामद वलि मनमें आणो, गिरि गुण गातां मन हुलसाणो ॥ गि० ॥ ७ ॥ ए इकवीस गिरंद नामा,ध्यावो भविजन तुमे सुख कामा, कहे सुमति सदाए अभिरामा ॥गि०॥८॥

॥ काव्य ॥

देवासुरेन्द्र नरनागरमर्चितेभ्यः, पापः प्रणाशकरभव्यमनोहरेभ्यः । घंटाध्वजादि परिवार विभूषितेभ्यः, नित्यं नमो सिद्धगिरीन्द्रजिनालयेभ्यः ॥१॥ ॐ ह्रीं श्रीपरमात्मने अनन्तानन्तज्ञानशक्तये जन्मजरा मृत्युनिवारणाय श्रीविमलाचल तीर्थस्थित जिनेन्द्राय ध्वजां यजामहे स्वाहा ॥

॥ द्वितीय जल पूजा ॥

॥ दोहा ॥

निर्मल जल कलसा भरी, पूजो श्रीजिनराय ।
पूजत अनुभव गुण लहे, पाप पंक मल जाय ॥

॥ ढाल ॥

(आज आयोरे उच्छाह, जीवडा नाच जिणंद आगे ए चाल)

आज हरख धरी, गिरिवर पूजन करिये रे ॥आ०॥ कलस अठोतर सो मनरंग, निरमल जल भरिये अति चंग ॥ आ० ॥ गंगादिक तीरथना जाण ॥ अवर सुजल पूजो जगभाण ॥आ०॥१॥ इण पर न्हवण करो जिनराज, भवियण सारो वंछितकाज ॥ आ० ॥ इण गिरि ऊपर ऋषभ जिणंद, समवसरया भवियण सुखकंद ॥ आ० ॥ २ ॥ महियल मोटो ए गिरि जाण, भवियण भेटो सुखनी खाण ॥ आ० ॥ कंकर कंकर साधु अनंत, सिद्ध थया भाख्यो भगवंत ॥ आ० ॥ ३ ॥ हिव सुणज्यो सगलो अधिकार, चित थिर राखी करो गुण धार ॥ आ० मन तन उलसे सुणतां एह, ततखिण पावे करमनो छेह ॥ आ० ॥ ४ ॥ पातिक टाली पूजो देव, जिम सुख पावो नित्य अछेह ॥ आ० ॥ महियल मोटो ए गिरि राय, श्रीमुख भाखे श्रीजिनराय

॥ आ० ॥५॥ प्रथम अजित सोलम प्रभु ध्यान, करके पूजो गिरिराजान ॥ आ० ॥ इण पर सुमति कहे हित आण, जिनपद सेव्यां कोड कल्याण ॥ आ० ॥ ६ ॥

॥ काव्य ॥

देवासुरेन्द्र नरनागरमर्चितेभ्यः, पापः प्रणासकर भव्यमनोहरेभ्यः। घंटाध्वजादि परिवारविभूषितेभ्यः, नित्यं नमो सिद्धगिरींद्र जिनालयेभ्य ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं श्रीपरमात्मने अनंतानंतज्ञानशक्तये जन्मजरामृत्युनिवारणाय श्रीविमलाचलतीर्थाय जलं यजामहे स्वाहा । २ ॥

॥ तीजी चन्दन पूजा ॥

॥ दोहा ॥

निरमल चंदन चंदसे, पूजो श्री जगदीस ।
प्रेम धरी पूजा करो, सुख पावो निस दीस ॥१॥
नगर अजोध्यानो धणी, श्रीजितसत्रु नरेस ।
विजया राणी शीलनी, सोभा करे सुरेस ॥२॥

जिण जायो सुत जग धणी, जीत्या रिपुदल जास।
अजिय कुंवर राजा कीयो, नामजिसो परकास॥३॥

॥ ढाल ॥

(श्रीचद्राप्रभु जिनवर साहिब, सुणियो अरज हमारी। मै वारी जाऊँ सु० ए चाल)

अजित जिनेसर जग परमेसर, तुम हो पर उपगारा। मैं वारीजाउं तु०॥ बावनचंदन केसर घोली, कस्तुरी घनसारा॥ मैं०॥ भाव भगतसुं प्रभु गुण गावो, पूजो जग भरतारा॥ मैं० अ० ॥१॥ मिथ्या तम भर दूर निवारी, सेवो प्रभु अविकारा॥ मैं०॥ राज राजेसर जगपति जिनवर, चक्री अजित उदारा॥ मैं० अ० ॥ २ ॥ पर उपगारी तू परमेसर, भेट्या जय जयकारा॥ मैं०॥ जिम जिम परिमल पसरे तेहथी, सोभा अधिक उदारा॥ मैं० अ० ॥ ३ ॥ भूमंडल विचरंता प्रभुजी, वहु चेतन समझाया॥ मैं०॥ पुंडरीक पर अजित जिनेसर, चौमासे तिहां आया॥ मैं० अ० ॥ ४ ॥

सिंहसेनादिक गणधर थापी, पंचाणू हितकारा ॥ सैं० ॥ एक लाख मुनि मुद्राधारी, भरीया गुण मणि धारा ॥ सैं० अ० ॥ ५ ॥ चौथा आराने मध्यज भागे, अजित हुवा अविकारा ॥ सैं० ॥ बोहत्तर लाख पूरवनो आऊ, कीधा जग जयकारा ॥ सैं० अ० ॥६॥ सोलम जिन-वर शांति जिनेसर, अचिरा नंद उदारा ॥सैं०॥ विमलगिरिन्द पर कर चौमासो, करम कलंक निवारा ॥सैं० अ० ॥ ७॥ विश्वसेन कुल भाण विराजै, जगजीवन हितकारा ॥सैं०॥ श्रीहथणापुर मंडन स्वामी, सुमति सदा दातारा ॥सैं०अ०॥८॥

॥ काव्य ॥

देवासुरेंद्र नरनागर मर्चितेभ्य,पापः प्रणासकर भव्यमनोहरेभ्यः। घंटाध्वजादि परिवार विभूषि-तेभ्यः, नित्यं नमो सिद्धगिरींद्रजिनालयेभ्यः ॥१॥ ॐ ह्रीं श्रीपरमात्मने अनंतानंतज्ञान शक्तये जन्मजरामृत्युनिवारणाय श्री विमलाचलतीर्थाय चन्दनं यजामहे स्वाहा ॥ इति चंदन पूजा ॥३॥

॥ चौथी पुष्प पूजा ॥

॥ दोहा ॥

पूज चतुर्थी इण परे, कुसुम सुगंधसु जोय ।
भव्य मनोरथ पूरवे, घर घर मंगल होय ॥

॥ ढाल ॥

(चाल–जिनराज नाम तेरा, हो महाराज नाम तेरा हो रा०)

विमलगिरि नाम तेरा, हो कनकगिरि नाम तेरा हो सेवो रे, उजलगिरि रसमें ॥हो०उ०॥ मचकुन्द कुन्द जाणो, चंपो गुलाव आणो, पूजो जिनन्द भाणो ॥ हो० उ० ॥१॥ विमलावसी जु राजे, जिनबिंव वहोत छाजे, जोतां मिथ्यात भाजे ॥ हो० उ० ॥२॥ मोतीवसी जुहारो, मन कामना जु सारो, दिल माहे एहि धारो ॥ हो० उ० ॥ ३ ॥ वालावसी जिणदा, निरख्याहि सुक्खकंदा, अढार चैत्य सोहंदा ॥ हो० उ० ॥४॥ पेमावसीजु प्यारा, भेटो जिनंद सारा, वंद्यांथी सुक्खकारा ॥ हो० उ० ॥५॥ हेमावसीजु वदो, अजितादि सुक्खकंदो, सेवो जिनंद चन्दो

॥६॥ उजुमवसीजु राजे, नंदीश्वर भाव छाजे, सेवो थे सुक्ख काजे ॥ हो० उ० ॥७॥ साकर वसीजु भावे, भेट्यासुं पाप जावे, देख्यासुं सुक्ख थावे ॥ हो० उ० ॥ ८ ॥ छींपावसीजु ध्यावो, वंछित सुक्ख पावो, मनमाहि भाव लावो ॥हो० उ० ॥६॥ खरतरवसीजु सोहे, जिनराज मन्न मोहे, निरख्यासुं सुख होवे ॥ हो० उ० ॥१०॥ इत्यादि भाव जाणो, गुरु ज्ञान मन्न आणो, संकादि चित्त नाणो ॥ हो० उ० ॥ ११ ॥ सुमतादि ध्यान ध्यावो, गुण नाथनाजु गावो, मन भाव एहि भावो ॥ हो० उ० ॥१२॥

॥ काव्य ॥

देवासुरेन्द्र नरनागरमर्चितेभ्यः, पापः प्रणाशकर भव्य मनोहरेभ्यः घंटाध्वजादिपरिवार विभूषितेभ्यः, नित्यं नमो सिद्धगिरीन्द्र जिनालयेभ्यः ॥१॥ ॐ ह्रीं श्री परमात्मने अनंतानंत ज्ञानशक्तये जन्मजरा मृत्यु निवारणाय श्रीविमलाचल तीर्थाय पुष्पं यजामहे स्वाहा ॥४॥

॥ पांचमी धूप पूजा ॥

॥ दोहा ॥

धूप पूज ए पंचमी, करता भवि सुखदाय।
धूप घटी जिम महमहे, तिम तिम पातिक जाय॥

॥ ढाल ॥

(चाल—जात्रा निनाणु करिये विमलगिरि, जात्रा०)

इण विध पूजन करिये, विमलगिरि ॥इ०॥ कृष्णागरने मृगमद अंबर, गंधवटी अनुसरिये ॥ वि० इ० ॥१॥ चीड सेल्हारस तुरक भलेरो, इण विध धूपज करिये ॥ वि० इ० ॥ केसर चन्दन मृगमद कुंकम भाव भले अनुसरिये वि० इ० ॥२॥ उज्जल अमल अखंडित तंदुल, दीप अखंड ज धरिये ॥ वि० इ० ॥ पुष्प सुगंध गुलावना लेइ, पुजो इण गिरिवरिये ॥ वि० इ० ॥३॥ साधु साहमी भगत करीने, आतम निरमल करिये ॥वि० इ०॥ पांचे पांडव इण गिरि-पूजो, नवनारद मुनिवरिये ॥ वि० इ० ॥ ४ ॥

गिरिवर ऊपर पांचे ठामे, पूज करी अघ हरिये ॥ वि० इ० ॥ कलस अठोतरसो लेई ने, न्हवण भली विध करिये ॥ वि० इ० ॥५॥ मूलनायक श्रीआदि जिनेसर, इण गिरिपर समोसरिये ॥ वि० इ०॥ भाव भगत सुं जिननी पूजा, करता सहु सुख वरिये ॥ वि० इ० ॥६॥ लहि अवतार ए गिरि नहि फरसे, तो किम भवजल तरिये ॥ ॥ वि० इ० ॥ पुंडरगिरिनो ध्यान धरीने, पुण्य खजानो भरिये ॥ वि० इ० ॥ ७ ॥ ए गिरिनी आसातना टाली, जात्रा करी निसतरिये ॥ वि० इ० ॥ सगत छता जो संघ लेइने, आवे इण गिरिवरिये ॥ वि० इ० ॥ ८ ॥ द्रव्य भावसुं पूजन करिने, पाप पंक अपहरिये ॥ वि० इ० ॥ सुमति कहे धन धन ए गिरिवर, पूजो भवि सुख करिये ॥ वि० इ० ॥ ९ ॥

॥ काव्य ॥

देवासुरेन्द्र नरनागरमर्चितेभ्यः, पापः प्रणासकर भव्यमनोहरेभ्यः । घंटाध्वजादि परिवार

विभूपितेभ्यः, नित्यंनमो सिद्धगिरीन्द्र जिनालयेभ्यः ॥१॥ ॐ ह्रीं परमात्मने अनंतानंत ज्ञानशक्तये जन्मजरामृत्युनिवारणाय श्रीविमलाचलतीर्थाय धूपं यजामहे स्वाहा ॥ ५ ॥

॥ छट्ठी दीप-पूजा ॥

॥ दोहा ॥

छट्ठी पूजा दीपनी, करो भविक सुखकार।
विमल बोध पावो तुमें, ज्ञान दीप सुविचार ॥१॥

॥ ढाल ॥

(चाल-पास जिनदा प्रभु मेरे मन वसिया)

आदि जिनंदा प्रभु सेवो सुखकारी ॥आ०॥ निरमल बोध विकासक दीपक, दिन दिन जोत अधिक सुखकारी ॥ आ० ॥१॥ अनुभव दीपक प्रगट भयो है, सकल चराचर भाव विचारी ॥ आ० ॥ केवलज्ञानी प्रथम तीर्थंकर, समोवसर्या भवियण हितकारी ॥ आ० ॥ २ ॥ फागण

सुदि आठमने दिवसे, ऋषभदेव आया सुवि-
चारी ॥ आ० ॥ भरतपुत्र चैत्रीपुनम दिन,
इण गिरि आया भवि मनधारी ॥ आ० ॥ ३ ॥
नमि विनमी राजा विद्याधर, पुंडरगिरि सेवे
इकतारी ॥ आ० ॥ पोतरा प्रथम तीर्थंकर केरा,
द्रावडने वारिखिल्ल विचारी ॥ आ० ॥४॥ कातो
सुद पुनम दिन सीधा, दस कोडी मुनि साथ
उद्धारी ॥ आ० ॥ पांचे पांडव इण गिरि सीधा,
नव नारद निज काज सुधारी ॥ आ० ॥ ५ ॥
सांब प्रद्युम्न गया इहां मुगते, आठ करम दल
दूर निवारी ॥ आ० ॥ नेम विना तेवीस तीर्थं-
कर, समवसर्या भवियण उपगारी ॥ आ० ॥६॥
ए गिरिराजना गुण गण गाता, सफल हुवे आतम
सुविचारी ॥आ०॥ ए गिरिराजनी पूजा जगमें,
भवजल पार उतारणहारी ॥ आ० ॥ ७ ॥ द्रव्य
भावसुं पूजन करिये, कुमति कुटिलता दूर
निवारी ॥ आ० । कहे सुमति सेवो इकतारी,
इण तीरथनी जाऊं बलिहारी ॥ आ० ॥ ८ ॥

॥ काव्य ॥

देवासुरेंद्र नरनागरमर्चितेभ्यः, पापः प्रणा-
सकर भव्यमनोहरेभ्यः । घंटाध्वजादि परिवार
विभूपितेभ्यः, नित्यंनमो सिद्धगिरीन्द्र जिनाल-
येभ्यः ॥१॥ ॐ ह्रीं परमात्मने अनंतानंत ज्ञान-
शक्तये जन्मजरामृत्यु निवारणाय श्रीविमला-
चलतीर्थाय दीपं यजामहे स्वाहा ॥ ६ ॥

॥ सातमी अक्षत पूजा ॥

॥ दोहा ॥

उज्जल तंदुल लेइने, पूजो दीनदयाल ।
स्वस्तिक करतां विस्तरे. घरघर मंगल माल ॥१॥

॥ ढाल ॥

(चाल—तुम बिन दीनानाथ दयानिधि कौन खबर ले मेरी रे)

गिरिवर भेटण भविजन आवे, मन वंछित
फल पावे रे । उज्जल तंदुल थाल भरीने वधावो
गिरिराया रे ॥ अष्टमंगल प्रभु आगल धरिये.
निरमल शुद्ध सुहाया रे ॥ गि० ॥१॥ ए गिरि
महिमा जिन मुख सुणके, चक्री मन हुलसावे रे ।

भरतराय षट्खंडको नायक, संघ लेई इहां आवे रे ॥ गि० ॥ २ ॥ सोनानो प्रासाद करावे, रयणनी सूरत ठावे रे । भाव भगतसुं पूजा रचावे प्रभु चरणे चित्त लावे रे ॥ गि० ॥ ३ ॥ भरत तणे अष्टम पट सोहे, दंडविरज महाराजा रे । संघ लेई उद्धार करावे, संचे सुभ फल ताजा रे ॥ गि० ॥ ४ ॥ ईसानेंद्र करायो तीजो, चोथो माहेंद्र करावे रे । पांचमों उद्धार ब्रह्मइंद्रनो सुरनर मिल जस गावे रे ॥ गि० ॥५॥ छठो उद्धार भवनपतीनो, सातमो सगरनो जाणो रे । आठमो व्यंतर इंद्र करावे, भविजन मनमें आणो रे ॥ गि० ॥ ६ ॥ चंद्रजस राय उद्धार करावे, नवमो भवि सुखकंदा रे। सन्तनाथ सुत दसमो भावे, उद्धार रचे आनंदा रे ॥ गि० ॥ ७ ॥ दसरथ राय सुतन गुण आगर, रामचंद्र भल भावे रे । उद्धार इग्यारमो एह करायो, बारमो पांडु करावे रे ॥ गि० ॥८॥ तेरमो उद्धार जावडसाहनो, चौदमो बाहडदेनो रे । समरे-

साह करायो भावे, पंदरमो सहु सुख दीनो रे ॥ गि० ॥६॥ संवत पनरेसे सित्यासी, वैशाख वदि शुभ वारो रे। करमे डोसी करायो भावे, ए सोलम उद्धारो रे ॥ गि० ॥ १० ॥ तिण कारण ए तीरथ मोटो, सहु तीरथ सिर राजा रे। कहे सुमति पूजो भल भावे, पावो ज्युं सुख ताजा रे ॥११॥

॥ काव्य ॥

देवासुरेंद्र नरनागर मर्चितेभ्य,पापः प्रणासकर भव्यमनोहरेभ्यः। घंटाध्वजादि परिवार विभूषितेभ्यः, नित्यं नमो सिद्धगिरींद्रजिनालयेभ्यः ॥१॥ ॐ ह्रीं श्रीपरमात्मने अनंतानंत ज्ञानशक्तये जन्मजरा मृत्यु निवारणाय श्रीविमलाचल तीर्थाय अक्षतं यजामहे स्वाहा ॥७॥

॥ आठमी नैवेद्य पूजा ॥

॥ दोहा ॥

मोदक मोतीचूरना, सिंहकेसरीया सार।
इत्यादिक नैवेद्य ले, पूज करो सुखकार ॥

॥ चाल ॥

(चाल—सिद्धचक्र पद वंदो रे भविका)

श्री सिद्धाचल पूजो रे, भविका । इण सम गिरि नहीं दूजो रे, भविका रे ॥ श्री० ॥ मोदक मोतीचूरना लेइ, नैवेद्य पूजा करिये ॥ भ० ॥ सिंहकेसरिया दालीया केइ, मोदक इण विध धरिये रे ॥ जा० ॥ श्री० ॥ १ ॥ ललितसरोवर पेखो भावे. वलि सत्तानी वाव रे ॥भ०॥ तिहां विसरामो भविजन लेवे, वडने चोतरे आव रे ॥ भ० श्री० ॥ २ ॥ सेत्रुंजानी पाजै चढ़तां, आनंद अंग न मावे रे । भ० दूर थकी सेत्रुंजो दीसे, सूंदर रूप सुहावे रे ॥ भ० श्री० ॥ ३ ॥ हिंगलाजहडे चढ़के पूजो, कलिकुंड पास कुमार रे । भ० बारी मांहें पैसी भविजन, भेटो आदि दीदार रे ॥ भ० श्री० ॥४॥ मरुदेवो टूंक मनोहर दीसे, गजपर बैठा सोहे रे ॥भ०॥ संत-नाथ सोलम उपगारी, भविजनना मन मोहे रे ॥ भ० श्री० ॥ ५ ॥ वंस पुरवाडे जगत वदीतो,

सोमजी साह मल्हार रे ॥ भ० ॥ रूपजी साह करायो भावे, चोमुख मूल उद्धार रे ॥भ० श्री० ॥६॥ नेमनाथ चवरी देखीने, देखो धरम दुवाररे ॥भ०॥ आदीसरना चरण पखाली, पूजो विविध प्रकार रे ॥ भ० श्री० ॥ ७ ॥ भमती माहे बिंब विराजे, कहतां नावे पार रे ॥ भ० ॥ पुंडरीक गणधर गुरु पूजो, शांतिनाथ सुखकार रे ॥भ० श्री० ॥८॥ चेलणतलाई सिद्धसिलाने, सिधवड जूनो कहिये रे ॥ भ० ॥ पुंडरगिरिनी भमती माहे, एह सहू सरदहिये रे ॥ भ० श्री० ॥ ९ ॥ उलका झोलने भाडव डुंगर,भेट्यां सहु सुख लहिये रे ॥भ०॥ महिमा मोटी ए गिरिवरनी, पार न कोई पइये रे ॥ भ० श्री० ॥ १० ॥ घर बैठा जो भाव करीने, मन सुध भावना भावे रे ॥भ० सुमति कहे ते धन धन कहिये, जात्रानो फल पावे रे ॥ भ० श्री० ॥११॥

॥ काव्य ॥

देवासुरेन्द्र नरनागरसर्चितेभ्यः, पापः प्रणा-सकर भव्यमनोहरेभ्यः । घंटाध्वजादि परिवार-विभूषितेभ्यः, नित्यं नमो सिद्धगिरींद्र जिनाल-येभ्य ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं श्रीपरमात्मने अनंतानंत-ज्ञानशक्तये जन्मजरामृत्यु निवारणाय श्रीविमला-चलतीर्थाय नैवेद्यं यजामहे स्वाहा ॥ ८ ॥

अथ नवमी फल पूजा ॥

॥ दोहा ॥

निर्मल फल पूजा करो, उत्तम फल सुख काज ।
भविजन पूजो भावसु, सरे सहु सुभ काज ॥

॥ ढाल ॥

(चाल—रामत रमवा मैं गई थी, मोरी सहीयर कै०)

आदिसर पूजा करो, एतो सिद्धगिरीनो रायो हे माय । सदगुरुने परसाद थी, एतो दरसण देवनो पायो हे माय ॥ आ० ॥१॥ आंबा दाडिम लेइने, एतो फल पूजा इम कीजे हे

माय ॥ श्रीफल पुंगीफल भला, एतो भेट करी फल लीजे हे माय ॥ आ० ॥ २ ॥ कुगुरु कुदेव कुधरमनी, एतो सेवा थी चित लायो हे माय। मिथ्या मत राचे थके, एतो काल अनंत गमायो हे माय ॥ आ० ॥ ३ ॥ हिव सेवा प्रभु ताहरी, एतो चाहुं देव सवायो हे माय। सिद्धाचल गिरिरायनो, एतो मंडण आदि कहायो हे माय ॥ आ० ॥ ४ ॥ धन दिवस धन ते घड़ी, एतो धन मरुदेवी जायो हे माय। पूरव निनाणु समोसर्या, एतो आदीसर महारायो हे माय ॥ आ० ॥ ५ ॥ अष्टोत्तर सत नाम छे, एतो शास्त्र थकी तेजाणो हे माय। ए सहु नाम जप्यां थकां, एतो प्रगटे परम कल्याणो हे माय ॥ आ० ॥६॥ सुकराजा इहां आइने, एतो ध्यान धरे षटमासी हे माय। चंद्रनृपति गिरि भेटतां, एतो पाम्यो सुखनी रासी हे माय ॥ आ० ॥८॥ ध्याता ध्येय स्वरूपनो. एतो भेद लहे सुखकारी हे माय। गिरिवर दरसण देखतां. एतो मोह

सहु नरनारी हे माय ॥ आ० ॥ ६ ॥ धन धन ए गिरिरायना, एतो गुण गावो सुखदायो हे माय । सुमति कहे जिनराजनी, एतो सेवाथी सुख पायो हे माय ॥ ६ ॥

॥ काव्य ॥

देवासुरेन्द्र नरनागरमर्चितेभ्यः, पाप प्रणासकर भव्यमनोहरेभ्यः । घंटाध्वजादि परिवारविभूषितेभ्यः, नित्यं नमो सिद्धगिरीन्द्रजिनालयेभ्यः ॥१॥ ॐ ह्रीं श्रीपरमात्मने अनन्तानन्तज्ञानशक्तये जन्मजरामृत्यु निवारणाय श्रीविमलाचलतीर्थाय फलं यजामहे स्वाहा ॥६॥

॥ दशमी गुलाब जल पूजा ॥

॥ दोहा ॥

निर्मल जल कुसुमे करी, वासित सरस सुगंध ।
पूजो जिनवर जगधणी, दूर करो दुख धंध ॥

॥ ढाल ॥

(चाल–सिद्धचक्र पद वदो रे, भविका)

श्रीविमलाचल पूजो रे भविका। तीरथ एहवो न दूजो रे, भविका ॥ श्री० सुरभि गंधोदक लेई भावे, छिडको जिनवर अंग रे ॥भ०॥ कुसुमे वासित उत्तम जलनी, वृष्टि करो मनरंग रे॥ भ० श्री० ॥ १ ॥ आदीसरना चरण पखाली, पूजो उठ परभात रे ॥ भ० ॥ गुणनो लख नवकार गुणीजे, दोय अट्ठम छठ सात रे। भ० श्री ॥२॥ रथजात्रा परदक्षणा दीजे, पूजा विविध प्रकार रे॥ भ० ॥ धूप दीप फल नैवेद्य मूकी, नमीये नाम हजार रे॥ भ० श्री० ॥ ३ ॥ आठ अधिक शत टूंक भलेरी, मोटी तिहां इकवीस रे ॥भ०॥ सेत्रुंजय गिरि टूंक ए पहेलुं, नाम नमो निसदीस रे॥ भ० ॥ श्री० ॥४॥ सहस अधिक अठ मुनिवर साथे, बाहुबली शिव ठाम रे ॥ भ० ॥ तिण कारण ए गिरिवर कहिये, त्रीजो मरुदेवी नाम रे ॥

४ ॥ वस्त्रनी चोरी रे जेणे, किनी भोले भाव ॥ मु० ॥ वर सात आंबल करीये, भवियण सुभ मन भाव ॥ मु० ॥ ५ ॥ रतनली चोरी कीनी, ते जन सुध इम होय ॥ मु० ॥ गिरिपर तपस्या कीजै, आतम निरमल होय ॥ मु० ॥ ६ ॥ पितलादि चोरी कीनी, ते सुद्ध थाये केम ॥मु०॥ पुरमड्ढ सात जु करीये, धरीये मनमें प्रेम ॥मु० ॥ ७ ॥ मोतीनी चोरी जु कीनी, आंबिल कर भवि तीन ॥ मु० ॥ धानादि चोरी कीनी, देते वस्तु प्रवीण ॥ मु० ॥ ८ ॥ देवादिधन जो वंछे, ते सुध थाये एम ॥ मु० ॥ अधिक वित्त जो खरचे, मुनि पोषे बहु प्रेम ॥ मु० ॥ ९ ॥ चौपद चोरी कीनी, देते वस्तु दान ॥ मु० ॥ सरधासु तपस्या कीजे, दीजे मुनि सनमान ॥ मु० ॥१०॥ पुस्तक पारका देखी, लिखे जो आपणो नाम ॥ मु० ॥ षट्मासी तपस्या कीजे, सामायक तिण ठाम ॥ मु० ॥ ११ ॥ कन्या परिव्राजका जाणो, सधव अधव गुरुनार ॥ मु० ॥ तिन संग

व्रत जो भाजे, छ मासी तप सार ॥ मु० ॥१२॥ गो स्त्री बालक ऋषिनी, आसातन जै कीन ॥ मु० ॥ वस्त्र पात्र मुनिने दीजे, भाव धरी लय लीन ॥ मु० ॥ १३ ॥ श्रीजिनपूजन कीजे, क्षोम जुगल अति चंग ॥ मु० ॥ इण विध पूज रचावो, सुमति कहे मनरंग ॥ मु०॥ १४ ॥

॥ काव्य ॥

देवासुरेन्द्र नरनागरमर्चितेभ्यः, पापः प्रणासकर भव्यमनोहरेभ्यः । घंटाध्वजादि परिवारविभूषितेभ्यः, नित्यं नमो सिद्धगिरींद्र जिनालयेभ्य ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं श्रीपरमात्मने अनंतानंतज्ञानशक्तये जन्मजरामृत्यु निवारणाय श्रीजिनेंद्रेभ्यः वस्त्रं यजामहे स्वाहा ॥ ११ ॥

॥ अथ कलश ॥

(राग—धनाश्री चाल—तेज तरण मुख राजे)

प्रभुजी की पूजा रची सुख काजे, हां ओ सुख काजे । श्रीसिद्धाचल गिरिवर ऊपर, मंडण

॥ ढाल ॥

(चाल—इक सुन ले नाथ अरज मेरी इ०)

बलिहारी आबू गिरिवरकी ॥ ब० ॥ आबू गिरिपर अदभुत सोहे, सूरत आदि जिनेसरकी ॥ ब० ॥ आस पास वहु झाड़ी जंगी, माँहि गुफा जोगीसरकी ॥ ब० ॥१॥ देस देसके जात्री आवे, पूजा रचे परमेसरकी ॥ब०॥ विमले मन्त्री बस कर लीनी, पातसाही वारे घरकी ॥ ब० ॥२॥ तिण ए बिंब भराया भावे, महिमा आदि जिनेसरकी ॥ ब० ॥ आठसे बहुतर जिनवर छाजे, नदिया नीर सजल भरकी ॥ ब० ॥ ३ ॥ कोरणी खूब वणी अति सुन्दर, दिल भर दरसण सुखकरकी ॥ ब० ॥ देरांणी जेठाणीरा आला, कोरणी करी हद वेसरकी ॥ ब० ॥ ४ ॥ अंगी चंगी अजब बनी है, सोवन वरण रतनवरकी ॥ ब० ॥ सुमति कहे ए तीरथ उत्तम, इनकुं ओपम सुरगिरकी ॥ ब० ॥ ५ ॥ ॐ ह्रीं श्री

आबू गिरीन्द्राय श्रीआदीश्वराय तीर्थशिरोमणाय जलादि अष्टद्रव्यं यजामहे स्वाहा ॥

॥ अथ चदन पूजा ॥

॥ दोहा ॥

बावन चंदन चंदसे, पूजो श्री गिरिराज ।
पूजत अनुभव गुण लहे, तारण तरण जिहाज ॥
अचलगढे जिनराजनो, अति उतंग प्रासाद ।
देख भविक हरखित हुवे, पावे परम आल्हाद ॥

॥ ढाल ॥

(चाल—कुद किरण समि उजलो रे देवा, एँ)

आबू तीरथ पूजिये रे वाल्हा, तीरथ महिमा वंतो रे, आछो । जिनवर सहू भवि सेविये रे, वा० आणी भाव अनंतो रे आछो ॥ आ० ॥ १ ॥ वस्तुपाल तेजपालजी रे, वा० लीनो लखमीनो लाहो रे, आछो । मुद्रा बहु खरची करी रे, वा० जस लीनो जगमाहे रे, आछो ॥आ० ॥ २ ॥ कोरणी भीणी सुंदरु रे, वा०

कीधी धर मन रंगे रे, आछो। सुरगुरु पिण नहि कही सके रे, वा० ॥ महिमा अधिक सुरंगे रे, आछो ॥ आ० ॥ ३ ॥ वारे कोड ऊपर सही रे, वा० लागा तेपन लाखो रे, इतनो धन खरच्यो सही रे, वा० श्रीसंघ केरी साखो रे, आछो ॥ आ० ॥ ४ ॥ मूलनायक नेमीसरू रे, वा० ब्रह्मचारी सिरदारो रे, आछो। च्यारसे अडसठ सुंदरू रे, वा० जिनवर विंव उदारो रे आछो ॥ आ० ॥ ५ ॥ सुमति सदा इम वीनवे रे, वा० तीरथनी वलिहारो रे, आछो। मन वंछित सगला फले रे, वा० पूजत गिरि सिरदारो रे आछो ॥ आ० ॥ ६ ॥ ॐ ह्रीं आवू गिरीन्द्रा० श्रीआदि० तीर्थेशि० जलादि अष्ट द्रव्यं० ॥

॥ तीजी पुष्प-पूजा ॥

॥ दोहा ॥

ब्रह्मचारी जोगीसरु, जगपति नेम जिणंद।
वावीसमा जिन पूजतां, नित प्रति होत आणंद॥१॥

चंपक केतकि केवडो, वउलसिरी मचकुंद।
मोगर मालती कुसुमसे, पूजो भवि सुखकंद॥२॥

॥ ढाल ॥

(चाल-सेत्रुजानो वासी प्यारो लागे, म्हारा राजिंदा)

आवू तीरथ भेटो, मोरा राजिंदा ॥ भे० आ० ॥ इण सम तीरथ और न कोई, मिथ्यातम सव मेटो ॥ मो० ॥ अमीझरो महाराज कहावै, देख्यां अति सुख पावे ॥ मो० ॥ आ० ॥ १ ॥ मन सुद्ध जात्रा करो भवि प्राणी, सुर नर मुनि गुण गावे ॥ मो० सुंदर सूरत मूरत सोहे, देख्यां प्रीत लगावे ॥मो० आ०॥२॥ अवर अनेक जिन विंव कहावे, दरस करत दुख जावे ॥ मो० ॥ ए गिरि सहु सिरदार कहावे, जोगीसर वहु ध्यावे॥ मो० ॥ आ० ॥३॥ दूर थली ए गिरिवर निरखी, मोतियन थाल भरावे ॥ मो० । दानमान सनमान करीने, तीरथ महिमा गावे ॥ मो० आ० ॥ ४ ॥ विधिसेती गिरिवर नित पूजे, लाभ अनंत उपावे ॥ मो० ॥ संघपति संघ लेके जावे, धन

धन तेह कहावे ॥ सो० आ० ॥ ५ ॥ पुष्पमाल गुंथी भवि भावे, जिनवर पूज रचावे ॥ सो० ॥ सुमति कहे गिरिराजकुं ध्यावे, वंछित सफल लहावे ॥ सो० आ० ॥ ६ ॥ ॐ ह्रीं आबूगिरींद्राय तीर्थशिरोम० श्रीआदीश्वराय पुष्पं यजामहे स्वाहा ॥ ३ ॥

॥ चौथी धूप पूजा ॥

॥ दोहा ॥

धूप दशांग लेई करी, पूजो तीरथ राय।
सुरभि सुगंधी महमहे, इम भाखे जिनराय ॥१॥
विमल अश्व वाहन धरी, सेव करे जिनराज।
अंबादेवी पूजतां, सफल करे सब काज ॥ २ ॥

॥ ढाल ॥

(चाल—मैं निरख्या गुरु महाराज छतियाँ ह०)

दिलमें हरख धरी, भवि पूजो गिरिवर सार ॥ दि० ॥ धूप दशांग लेई करी रे, पूजो जग भरतार। बोध बीज निरमल करो, रे, सफल

करो अवतार ॥ दि० भ० ॥ १ ॥ संघ करी संघवी घणा रे, भेटे श्रीगिरि सार ॥ अष्ट द्रव्य लेई करी रे, पूजे जिन इकतार ॥ दि० भ० ॥ २ ॥ अचलगढ जिनराजनारे, मोहन मंदिर च्यार । विमलेसाह कराविया रे, धन धन तसु अवतार ॥ दि० भ० ॥३॥ सुंदर मूरत गुण भरी रे, चोमुख प्रतिमा च्यार । साजन म्हारा थे सुणो रे, भाखुं गिरि गुणधार ॥ दि० भ० ॥४॥ चवदेसे चौमालनी रे, मूरत गुण भंडार । हेम-मयी जिनराजनी रे, सोभे अधिक दीदार ॥ दि० भ० ५ ॥ धन जेहना माता पिता रे, धन जेहनो कुल सार ॥ द्रव्य प्रवल खरची करी रे, लीनो लाभ अपार ॥ दि० भ० ॥ ६ ॥ इण परे ए गिरिरायनी रे, महिमा अधिक अपार । सुमति सदा करजोडने रे, प्रणमें वारंवार ॥ दि० भ० ॥ ७ ॥ ॐ ह्रीं आवूगिरीद्राय तीर्थशिरोमणाय श्रीआदीश्वराय धूपं यजामहे स्वाहा ॥ ४ ॥

मंगल आठ करो सही, प्रभु आगे धर प्रेम।
अडसिध नवनिध संपजे,सुजसहुवे नित तेम ॥२॥

॥ ढाल ॥

(चाल–तुम तो भले विराजो जी, सांवलिया महाराज)

सिखर पर भले विराजो जी, आबूके सिरदार, सिखर पर भले विराजो जी ॥ तु० ॥ नाभिरायके नंदन कहिये, तीन भवन विसरामी, केसर चंदन मृगमद घोली, पूजो अंतरजामी ॥ तु० ॥ १ ॥ विखम पहाडां विचमे राजे, साहिब तुं सिरनामी । आदीसर जोगीसर पूजो, वंछित सगला पामी ॥तु०॥ द्रव्य भावसे पूजा रचावो, मनमें आणंद पावो । भर मुगताफल थाल वधावो, तीरथ महिमा गावो ॥ तु० ॥ ३ ॥ आबूगिरिको ध्यान धरावो, तपस्यासे फल पावो । घर सारू वलि दान दिरावो, संघ भगत करवावो ॥ तु० ॥ ४ ॥ अचलगढे जिन दरसण करवा, संघ सकल मिल आवे । आदीसर नेमीसर पूजो, मन वंछित सब पावे ॥तु० ॥५॥

तीरथ महिमा भविजन करिये, दिलमें भावज धरिये । सुमति कहे तन मन कर उज्जल, पुण्य खजानो भरिये ॥तु० ॥६॥ ॐ ह्रीं आबूगिरीन्द्राय तीर्थ शिरोमणाय श्रीआदीश्वराय अक्षतं यजामहे स्वाहा ॥

॥ अथ सातमी नैवेद्य पूजा ॥

॥ दोहा ॥

मोदक मोतीचूरना, और सुगंध रसाल ।
पूजो तीरथरायने, भाव करी गुण माल ॥ १ ॥
नैवेद्य पूजा सातमी, करो भविक धर प्रेम ।
तीरथनी महिमा करो, गुण गावो धर नेम ॥२॥

॥ ढाल ॥

चाल—श्रीचंद्राप्रभु जिनवर साहिब, सुणिये अरज हमारी मैं वा०

श्रीआदीसर जिनवर साहिब, तुम पर जाउं बलिहारा ॥ मैं वारी जाउं तु० ॥ आबू गिरिपर आप विराजो, साहिब पर उपगारा ॥ मैं० श्री० ॥१॥ तुंहि जिनेसर तुं परमेसर, अंतर प्राण आधारा ॥ मैं० ॥ जोगीसर तेरी लय जाणे,

परमातम अविकारा ॥ सैं० श्री० ॥२॥ मनमोहन तुं नाथ निरंजन, जगजीवन हितकारा । सैं० सुरनर किन्नर सेव करत है, जय जय जग भरतारा ॥ सैं० श्री० ॥३॥ तेरी महिमा अधिक विराजै, सब जीवन सुखकारा ॥ सैं० ॥ अनंत ज्ञान दरसणको स्वामी, मनमोहन सब प्यारा ॥सैं० श्री० ॥४॥ लोक उचित व्यवहार प्रवर्त्यों, बोध बीज दातारा ॥ सैं० ॥ तुमकुं जो तन मनसे ध्यावे, पावे वंछित सारा ॥सैं० श्री० ॥५॥ भविक लोकको तुम उपगारी, मिथ्यातम वन वारा ॥ सैं० सुमति कहे गिरि पूजा रचावो, ए गिरि सब सिरदारा ॥ सैं० श्री० ॥ ६ ॥ ॐ ह्रीं आबू गिरीन्द्राय तीर्थ शिरोमणाय श्रीआदीश्वराय नैवेद्यं यजामहे स्वाहा ॥७॥

॥ आठमी ध्वजा, फल अष्टमंगल पूजा ॥

॥ दोहा ॥

प्रभु पूजा ए आठमी मंगल आठ कराय ।
पंच वरण ध्वज मोहनी, पूजा करो सुखदाय ॥

आंबा दाडम आदि ले, विविध भांत मनरंग।
प्रभु आगल ढोवो सही, भाव धरी उछरंग॥
सव सुन्दरी आवो सही, सज सोले सिणगार।
रतन जडत कंचुक धरी, पेहरी नवसर हार॥

॥ ढाल ॥

(चाल—पनरम पद गुण गाना हो ॥ भ० प० ए)

जिनगुण मंगल गाना हो भवि, ॥ जि० ॥ फल पूजा ए गिरिकी करके, जगमें सुजस वधाना हो ॥ भ० ॥ मंगल आठ रचो प्रभु आगल, चंदमुखी मन भाना हो ॥ भ० जि० ॥१॥ पंच वरणकी ध्वजवर कहिये, हित चितसे करवाना हो ॥ भ० ॥ सुन्दर नारी सव सिण-गारी, प्रेम धरी सव आना हो ॥ भ० जि० ॥ २ ॥ कंचू कसिया हरख उलसिआ, आभूषण पहराना हो ॥ भ० ॥ रतन जडत सव सुन्दर चूडो, हाथे वहु सोभाना हो ॥ भ० जि० ॥३॥ थेई थेई तान करे प्रभु आगल, मधुर स्वरे गुण गाना हो ॥ भ० ॥ इंद्राणी मिल मंगल गावे,

तिस तुमे भगत कराना हो ॥ भ० जि० ॥४॥ इत्यादिक गुण जिनके गावत,बोधिबीज उपजाना हो ॥ भ० ॥ सुमति कहे भवि पूजन करिये, मनवंछित फल दाना हो ॥ भ० जि० ॥ ५ ॥

ॐ ह्रीं आबू गिरीन्द्राय तीर्थ शिरोमणाय श्रीआदीश्वराय फलं, ध्वज, अष्ट मंगल यजामहे स्वाहाः ॥ ८ ॥

॥ नवमी वस्त्रयुगल पूजा ॥

॥ दोहा ॥

वस्त्रयुगल लेई करी, पूजो दीनदयाल ।
सुजस सुगंधी विस्तरे, बोध बीज गुण माल ॥
रथयात्रा प्रभुनी करो, महिमा भगत कराय ।
लाभ अनंतो ऊपजे, समकित निरमल थाय ॥

॥ ढाल ॥

(चाल—दरसण के लोभी नैना दर०)

हो पूजनके लोभी सेणा, लोभी० हो पू० ॥ पूजनकुं जिया नित नित चाहे, कुगुरु वचन तज देना ॥ हो पू० ॥ १ ॥ या पूजा समकितकी

करणी, सुगुरु वचन सुण लेना ॥ हो० ॥ गिरिवर गढ गिरनार विराजै, नेमकुमर सुख देना ॥ हो० ॥ २ ॥ वस्त्र युगलकी पूजन करिये, तन मन उज्वल वेना ॥ हो० ॥ मिथ्यातम सव दूर निवारी, सुमति रमण संग रहना ॥ हो० ॥३॥ सरधा केसर रंग घोलके, जिन आतम रंग लेना ॥ हो०॥ विमलगिरी अष्टापद पूजो, आदीसर सुख देना ॥ हो० ॥ ४ ॥ सिखरसमेत वडो जगमाहे, वीस प्रभु हित देना ॥ हो० ॥ आवूगिरिकी महिमा अदभुत, मानो हमारा केना ॥ हो० ॥ ५ ॥ रथजात्रा जिनवरकी करके, पाप पडल हर लेना ॥ हो० ॥ कुगुरु कुमतिको संग छोड़के, जिन गुणमें दिल देना ॥ हो० ॥ ६ ॥ आदीसर अलवेसर कहीये, जगतारक जगसेना ॥ हो० ॥ सुमति सदा प्रभुके गुणगावत, वोधवीज मुझ देना ॥ हो० ॥ ७ ॥ ॐ ह्रीं आवू गिरीन्द्राय तीर्थ शिरोमणाय श्रीआदीश्वराय वस्त्रं यजामहे स्वाहाः ॥ ६ ॥

॥ दशमी गुलाबजल पूजा ॥

॥ दोहा ॥

समकित निरमल कारणे, सुरभी सुगंधी लेह ।
छिरको श्रीगिरिराजकुं, भाव धरी गुण गेह ॥
गिरिवर भावे भेटिये, दीजे वंछित दान ।
गीत गान भल गाइये, ज्युं पावो वहुमान ॥

॥ ढाल ॥

(चाल—थारी गइ रे अनादि नींद, जरा टुक जोवो तो सही जोवो० ए)

तुम करो रे सुमति को संग, रंगीला सेवो तो सही । सेवो तो सही, म्हारा चेतन, सेवो तो सही ॥सेवो० म्हा० तु०॥ मुनिवरकी करणी हितवरणी, लेवो तो सही । मिथ्या तम करणी दूर हियामें, देखो तो सही ॥दे० म्हा०तु०॥१॥ आतम करणी निज गुण धरणी, देवो तो सही ॥ तुं कह्यो रे हमारो मान सुज्ञानी, वेवो तो सही ॥ वे० म्हा० तु० ॥ २ ॥ समकित सुध

करणी भवहरणी, लेवो नो सही ॥ द्रौपदी जिम जिनराज भगतिकर, सेवो तो सही ॥ म्हा० तु० ॥३॥ राग कतरणी जग जस भरणी, जोवो तो सही ॥ अकलंकित गुण होय भरम सब, धोवो तो सही ॥ धो० म्हा० तु० ॥ ४ ॥ सब मनहरणी गुणमणि धरणी, पावो तो सही ॥ कूड कपट कर दूर हियामें, लावो तो सही ॥ ला० म्हा० तु० ॥ ५ ॥ आवूगिरिनी पूजन करणी, ध्यावो तो सही ॥ तनमन प्रीत लगाय जिणंद गुण, गावो तो सही ॥ गा० म्हा० तु० ॥ ६ ॥ अनुपम सुखकरणी अघहरणी, भावो तो सही ॥ तुम करो रे सुगंधी पूज, भविक सुख पावो तो सही पा० म्हा० तु० ॥ ७ ॥ इम गुण वरणी पूजन करणी, गावो तो सही । सुमति रंगीला सेण हियामे, लावो तो सहो ॥ ला० म्हा० तु० ॥ ८ ॥ ॐ ह्रीं आवुगिरींद्राय तीर्थ सिरो० श्री आदीश्वराय सुगंधिजलं ढोकयामि ॥ १० ॥

वरणी सुर मन हरणी, मोहनी रूप अनूप धरी रे ॥म०॥ चंपकवरणी मन वसकरणी, प्रभु आगे गुण गावे खरी रे ॥ म० सु० ॥ ३॥ जिन गुण गावत हरख वधावत, थेई थेई नाचत भाव धरी रे ॥म०॥ असरण सरण तुहिं जगदीपक, तुहिं निरंजन सुखकरी रे ॥ म० सु० ॥४॥ भविजन ध्यावत हरख उपावत, गावत गुण सुभ राग करी रे ॥म०॥ गजगति गामनी सब मिल भामनी, ठम ठम नाचत सुर महरी रे ॥ म० सु० ॥५॥ अष्टापद गिरि रावण राजा, मंदोदरी जिम भगति करी रे ॥म०॥ सुमति सदा जिनके गुण गावत, लुल लुल जिनजी के पाय परी रे ॥म० सु० ।६॥ ॐ ह्रीं आबूगिरींद्राय तीर्थ शिरोमणाय आदीश्वराय गीत गुण वर्णन पूजा ॥१२॥

॥ कलश ॥

(राग रेखता, चाल—जिनंद जस आज मैं गायो)

गिरींद जस आज मैं गायो, भैटतां हरख अति पायो ॥गि०॥ आबू गिरींद सुखदायो,

सघन घन रूपसे छायो। खरा जिनचंदसूरि-
राजा, तपे जग भाण ज्युं ताजा ॥गि० १॥ क्षमा-
कल्याणके पाजा, विविध गुण ज्ञानके भाजा।
धर्मविशाल तसु नंदा, कहे युं सुमति सुखकंदा॥
गि० ॥२॥ संवत उगणीस चालीसे, प्रेम धर
अधिक सुजगीसे। भजो तुम देव जगदीसे,
फले सब आस निस दीसे ॥गि०॥ देवांके देव
मन भाया, पूजतां संपदा पाया। वीकानेर सहर
में राजे, जगत जस ताहरो गाजे ॥ गि० ॥४॥
आदि जिन पूज सुख काजे, नमत प्रभु पाप
सहु भाजे। कुशल मुनि भावसे ध्यावे, सकल
जन (मोहन मुनि) प्रेमसे गावे ॥गि० ५॥

॥ द्वितीय केशर चंदन पूजा ॥

॥ दोहा ॥

नेमिजिणंद दिणंदसम, शिवसुख तरुनोकंद ।
रेवतगिरिवर मंडणो, पूजनकरो अखंड ॥१॥
घस केशर मृगमद वलि, बावनचंदन संग ।
अम्बर घनसार मेलवी, करो विलेपन अंग ॥२॥

॥ रागिनी भैरवी ॥

विलेपन करिये, प्रभुजीके अंग ॥ वि० ॥ जिनवरको तनु फरसन सेती, पामेजिन गुण संग ॥ वि० ॥ पारस फरसत लोहा कंचन, तिम होवे कीटक भृंग ॥वि० २। शिवादेवी अंगज हो प्रभु, श्यामवरण द्युति चंग ॥ वि० ३ ॥ चरण युगल कच्छप सम प्रभुना । कर पंकज जल संग ॥वि० ४॥ वदनचंद्र अकलंकित कीनो। भालअर्ध शशि अंग ॥ वि० ५ ॥ निलोत्पलसम नेत्रयुगल फुनि, कामराग थयो भंग ॥ वि० ६॥ केशरचंदन मृगमद अम्बर । प्रभुपूजा मनरंग । वि० ७॥ ॐ ह्रीं केशरचंदनं यजामहे स्वाहाः २

॥ तृतीय पुष्प पूजा ॥

॥ दोहा ॥

तृतीय पूजा जिनवरतणी, करे भविक उजमाल।
फूल सुगंधी लेइने, चाढे भरि भरि थाल॥
समवसरणमां सुरकरे, पुष्पवृष्टि धरि भक्ति।
तिम श्रावक शुभ भावथी, पूजा करे यथाशक्ति॥

॥ रागनी वृन्दावनी सारंग ॥

प्रभु अरचा रचो मिल भविजना। नाना-विधना फूल सुगंधी, लेई तुम थावो इकमना प्रभु० ॥ १ ॥ त्रिकरण योगकरी प्रभुपूजो, चित्तधरी शुभ भावना ॥ प्रभु० ॥ २ ॥ च्यार-निक्षेपे जिनवर जाणी, मनमंदिरमें लावना ॥ प्रभु० ॥ ३ ॥ अनुयोगद्वार आवश्यकसूत्रे, वेद-निक्षेप सुहावना ॥ प्रभु० ॥ ४ ॥ ठवणा समव-सरण त्रिहु दिशिमां, प्राची भाव कहावना ॥ प्रभु० ॥ ५ ॥ द्रव्येजिनवर श्रेणिक पमुहा, नाम ऋषभादि सुहावना ॥ प्रभु० ॥ ६ ॥ इनविधि

प्रभुकी भक्ति करिये, शमरस अमृत भावना ॥ प्रभु० ॥ ७ ॥ कृपा करिने साहिब मुझने, कीजे कृतार्थ पावना ॥ प्रभु० ॥ ८ ॐ ह्रीं पुष्पं यजा० ॥ ३ ॥

॥ चतुर्थी धूप पूजा ॥

॥ दोहा ॥

यादव कुलनो चन्दलो, ब्रह्मचारी शिरमोड ।
बावीसमा जिनवरतणी, पूजा करो कर जोड ॥

॥ सोरठा ॥

अगर चन्दन घनसार, सेल्हारस मांहि मेलिये ।
मृगमद अम्बर सार, धूपघटा करिपूजिये ॥ २ ॥

॥ रागनी सोरठ ॥

सेवो भवि नेमि जिणंद सुखकारा, करि धूप धूम मनुहारा, सेवोभवि० ॥१॥ गिरिनार गिरि मंडण दुख खंडण, भविजन बोध सुधारा । कर्म प्रबल दल दाह करन मिस, धूप दहो सुविचारा । सेवो भवि० ॥ २ ॥ सोरीपुरमें जन्म प्रभुनो,

समुद्रविजय कुल भाणा । शिवादेवी उदर शुक्ति मुक्ताफल, चित्रानक्षत्र वखाना । सेवोभवि० ॥ ३ ॥ च्यवन जन्म कल्याणक प्रभुना, सोरीपुरमें जाना । गिरनार गिरि पर सहसावनमें, दीक्षाग्रही सुख खाना ॥ सेवोभवि० ॥ ४ ॥ चोसठ इन्द्र करे उछरंगे, जिन सेवा मनुहारा । कृपाचन्द्र ए प्रभुने जाणो, निश्रेयस दातारा । सेवोभवि० ॥६॥ ॐ ह्रीं धूपं० यजामहे स्वाहा ।

॥ पांचमी दीपक पूजा ॥

॥ दोहा ॥

पांचमी पूजा दीपनी, प्रकटे ज्ञान उद्योत ।
करो भविक जगनाथनी, मनवांछित सुख होत ॥
शिवादेवीनो लाडला, अतुल वली वडवीर ।
श्याम सलुणो नाहलो, नेमिनाथ सुखसीर ॥

॥ रागनी कल्याण ॥

अहो प्रभु पूजा रचो चित्त चंगे ॥ अहो० ॥ रेवतगिरि पर नेमि जिनेश्वर, केवल लह्यो

सुखसंगे अहो प्रभु० ॥ १ ॥ च्यार निकायके सुरसुरी मिलके, त्रिगडो रचे अतिरंगे अहो प्रभु० ॥ २ ॥ समवसरणामें राजे प्रभुजी, देशना दे भवसंगे अहो० ॥ ३ ॥ साधु साधवी वेमानिक देवी, अग्निकूण उसंगे ॥ अहो० ॥४॥ ज्योतिषि भवनपति व्यन्तर सुरी, रहे नैरित जिन संगे ॥ अहो० ॥ ५ ॥ वायव विदिशे एहिज देवो, जिनवाणी सुणे रंगे ॥ अहो० ॥ वैमानिक सुर मानव-स्त्रीजन, ईशान दिशिसें संगे ॥अहो०॥७॥ बार-पर्षदा जिनवाणी सुण, मगन हुवे मन रंगे । अहो ॥८॥ गोघृत भरि मणिपात्र अनूपम, दीपक करो मन चंगे । अहो० ॥ ९ ॥ ॐ ह्रीं० दीपं यजामहे स्वाहा ॥ ५ ॥

॥ छठी अक्षत पूजा ॥

॥ दोहा ॥

अक्षत अक्षत लेईने, स्वस्तिक रचो विशाल ।
ज्ञानादिक त्रण पुंज थी, पामो मंगल माल ॥१॥

राजिमतीको छोडके, नेमि चढ्या गिरनार।
रथनेमि राजीमती, लीधो संयमभार ॥ २ ॥

॥ रागनी माड ॥

नेमि जिन पुजो तो सही, प्रभु रैवतगिरि सिणगार। नेमि जिन० आंकणी। उत्तम शालि प्रमुख बहुअशनं, चाढो तो सही ॥ अक्षयसुख कारण जगतारण, जिनवर शरण ग्रही। प्रभु० ॥ १ ॥ आधेय थी आधार अनोपम, जगमें सोभ लही। श्रीगिरनार नेमि फरशनते, कीर्त्ति-व्याप रही। प्रभु०॥ २ ॥ भरत नरेश्वर संघ लेई ने, शेत्रुंजे यात्रा लही। चैत्यनिर्माण नवीन करीने, रेवत मार्ग ग्रही। प्रभु० ॥ ३ ॥ स्वर्ण-गिरि पर नेमि जिणंदनो, मणि कनकादि मयी। देरासर नवीन रचीने, नेमि नी पडिमा ठही ॥ प्रभु० ॥ ४॥ कोड देवसे ब्रह्मेन्द्र आयो, भरत-नो सुजस कहो। पहिलो उद्धार प्रथम चक्रीनो, एम अनेक लहो ॥ प्रभु० ॥ ५ ॥ गिरिवर मंडण नेमि जिनेशर, भेटो भाव लही। सिद्धि

सौध चढ़वा अन्तरंगे, सोपानपंक्ति कही ॥ प्रभु०
॥ ६ ॥ ॐ ह्रीं० अक्षतं यजामहे स्वाहा ॥

॥ सप्तमी नैवेद्य पूजा ॥

॥ दोहा ॥

सातमी पूजा साचवे, श्रावक शुचि शुभभावे ।
भांत भांत नैवेद्यना, थाल भरि भरि लावे ॥
नेम नगीना नाथने, आगल धरो मन रंग ।
अक्षय सुख वरवा भणी, पूजा करो चितचंग ॥

॥ राग सारंग ॥

(चाल—ल्हहर रामत रमवा मैं गई)

नेमि जिनेसर पूजीये, एतो रेवतगिरिनो रायो हे माय ॥ नेमि० ॥ समवसरणमें वेसिने, एतोवचनामृत वरसायो हे माय । भव्य हृदय भू-सींचीने, एतो बोध बीज निपजायो हे माय ॥ नेमि० ॥१॥ मेघध्वनि जिम गाजता, एतो संघ चतुरविध ठायो हे माय । देश विदेशमां विचरता, एतो शिवमारग दरसायो हे माय नेमि०

॥ २ ॥ सेत्रुँजे गिरिवर फरशने, एतो गिरनार नाथ कहायो हे माय। अढार सहस वाचंयमी, एतो वरदत्तादि गणरायो हे माय। नेमि० ॥३॥ चालीस सहस्र श्रमणी भली, एतो यक्षणी प्रमुख सुहायो हे माय। एक लाख गुणोत्तर सहस, एनो श्रावक नो समुदायो हे माय। नेमि० ॥ ४ ॥ त्रण लक्ष अढार सहस वली, एतो सुजश श्राविका पायो हे माय। भोज्य-पदारथ थी प्रभु पूजो, एतो अनाहार नाम कहायो हे माय। नेमि० ॥ ५ ॥ ॐ ह्रीं० नैवेद्यं यजामहे स्वाहा।

॥ अष्टमी फल पूजा ॥

॥ दोहा ॥

परम पुरुप परमातमा, परमानन्द प्रधान।
परमेश्वर प्रभु पूजिये, परम विज्ञान निधान॥
अष्टमी पूजा जिन तणी, अष्टमी गतिदातार।
फल पूजा करो भावसुं, जिम लहो सुख अपार॥

॥ रागणी काफी त्रिताल ॥

उज्जयंतगिरि गुण गावो । तुमें मणि माणिकसे बधावो । उज्जयंत० नेमिजिनेसर जगअलवेसर, मन मंदिरमां लावो । जिनवर चरण नो शरण ग्रहीने, समरणमां लयलावो ॥ मणि० ॥ १ ॥ तीर्थपती वावीसमा स्वामी, नेमि निरंजन ध्यावो । भविक जीव सुखकारण तारण, जिनदरशन मन भावो ॥ मणि० ॥ २ ॥ दोय भेद दरशनना जाणो, शुद्धाशुद्ध स्वभावो । शुद्ध दरशनथी निज गुण प्रकटे, आतमगुणहुलसावो । मणि० ॥ ३ ॥ काल अनादि भववनमें भटकता, कर्मरिपु गण दहवो । कृपाकरी मुझ दरशन दीजे, अनुभव अमृत पावो ॥ मणि० ॥४॥ नाना जातोना फल लेईने, आगल प्रभुजीने ठावो । कृपाचंद्र फल पूजासे यह, मनवांछित फल पावो । मणि० ॥ ५ ॥ ॐ ह्रीं० फलं यजामहे स्वाहा ॥

॥ अथ नवमी ध्वज पूजा ॥

॥ दोहा ॥

नवमी ध्वजनी पूजना, लावो जिन दरबार ।
सधवस्त्रो लेई करी, करे प्रदक्षणा सार ॥
धवल मंगल गातां छतां, वाजित्र विविध प्रकार ।
कैलासगिरिना शिखरपर, आरोपो सुविचार ॥

॥ राग—श्री ॥

(चाल–जिनगुणगान श्रुत अमृत)

ध्वजपूजन करो सुख सदनं ॥ध्वज०॥ सहस्र योजन दंड मनोहर, सुवरणमय जन मन हरणं ॥ ध्व० ॥ १ ॥ किंकिणी रणकत शब्द मनोहर, दिव्यध्वनि सुखकर श्रवणं ॥ध्व०२॥ एक हजार के अष्ट ऊपर वलि, सोहे पताका पंचवरणं । ध्व०॥३॥ मंद समीर प्रचारे लहकति, मानो स्वर्ग श्री अवतरणं ॥ ध्व० ॥४॥ मनमोहन ए ध्वज-निरखीने, भविने परमानन्द करणं । ध्व० ॥५॥ इण गिरिके षट् नाम सुहंकर, नन्दभद्रगिरि

सुखकरणं ॥ ध्व० ॥६॥ आषाढ सुदी अष्टमी दिनकीनो, शिवरमणीको कर ग्रहणं । ध्व०॥७॥ पांचसे षट्त्रिंशत मुनि साथे, सादिअनन्त स्थिति वरणं । ध्व० ॥ ८ ॥ ॐ ह्रीं० ध्वजं यजामहे स्वाहा ॥

॥ दशमी अष्ट मंगल पूजा ॥

॥ दोहा ॥

दशमी मंगल पूजना, अष्टमंगल लिखसार ।
रजतना तंदुल लेईने, अखंड उज्वल मनुहार ॥
पुष्पवृष्टि करें सुरगणा, पंचवर्ण सुविसाल ।
योजन भूमंडल प्रमित, पूजो जगत दयाल ॥

(चाल—पास जिनंदा प्रभु, मेरे मन वसिया)

चालो भविकजन यात्रा करिये, यात्रा करि-शिव संपदा वरिये । चालो० । जीर्णदुर्गना चैत्य जुहारी, तलहट्टिये जइ रात्रि रहिये ॥चालो०॥ १॥ श्रेणी सोपान चढी शुभ भावे, नेमिजिनंदको ध्यान जो धरिये । चालो० ॥२॥ प्रथम टूँकमें

विम्ब प्रभुना, अद्भुत आदि प्रलंब मन धरिये ॥ चालो० ॥ ३ ॥ मेरुवसी पमुहा जिनमन्दिर, निरख निरख भवि मनमां ठरिये ॥चालो०॥४॥ यहाँ अनेक जिनचैत्य नमीने, बीजो टूंक जिन-चरणकुं करिये । चालो० ॥ ५ ॥ रथनेमीजीको दरस सरसकरी, तृतीय शिखर शासन सुरि सरिये । चालो० ॥६॥ चौथी नेमि वीर जिनेसर, पंचमी टूंक नमो दुख हरिये । चालो० ॥७॥ सहसावन जिनचरण नमोने, चैत्यप्रवाड को इन परि करिये । चालो० ॥८॥ गजपद कुंडनो नीर लेईने, स्नात्रमहोत्सव करि सुख वरिये । चालो० ॥९॥ मंगल पूजनारिष्ट निवारक, कृपा-चन्द्र शिवपद अनुसरिये । चालो० ॥१०॥ ॐ ह्रीं० अष्टमगलं यजामहे ।

॥ कलश ॥

॥ रागनो धन्याश्री ॥

प्रभुजीको सुयश अम्बर घन गाजे । रैवत गिरिवरको प्रभु मंडण, नेमिजिनन्द विराजे ।

तीर्थपतिना गुणगावंतां, रसना सफल कहाजै प्रभु० ॥१॥ श्रीखरतरगण नायक लायक, जिन-चारित्रसूरि राजे। गिरनारगिरिनी स्तवना कीनी, श्रीसंघभक्तिने काजे । प्रभु० ॥२॥ पंचतीर्थनी रचना रंगे, कीनी भविक हित काजे । दरशन देखत अनुभव प्रकटे, जिमसाक्षात गिरि छाजे प्रभु० ॥३॥ भगवद्ग अंगे लालबागमें, सांभल्यो संघ सुकाजे। मुंबई बंदर रहि चोमासो, संपूरण हित काजे। प्रभु० ॥४॥ सम्वत उगनीसे उपर बहोत्तर, पोषधवल भृगु छाजे । दशमी दिन गिरिना गुण गाया, भावभले सुसमाजे ॥प्रभु०॥५॥ श्रीजिनकीर्त्तिरत्न शाखाधर, युक्तिअमृतगुरु-राजे । कृपाचन्द्र जिनस्तवना कीनी, निजगुण निर्मल काजे प्रभु०॥६॥ इति श्रीगिरनारपूजा ।

॥ आरती ॥

जय जय जिनराया ॥ श्री नेमिजिनेश्वर राया, भवि मिल गुण गाया ॥जय० ॥१॥ मंगल

आरति पूजा करता भविने सुख छाया । मोक्ष मारग दीपाया, राजुलपतिराया ॥ जय० ॥ २ ॥ शिवादेवी नंदन जग वंदन, समुद्रविजय राया ॥ सोरीपुरमें जाया, द्वारिकापुरी आया ॥ जय०३॥ रैवतगिरिके सहसा वनमें, दीक्षा सुरराया। केवल रमणी पाया । शिवनगरी धाया ॥ जय० ॥ ४ ॥ इन विध पूजा आरती करीने, सुख संपति पाया । मुम्बईपुरमें सुहाया, पंचतीरथ राया ॥ जय जय० ॥५॥ भाव भले जिन भक्ति करतां, भविजन मन भाया। कृपाचन्द्सूरिराया, मंगल वरताया ॥ जय० ॥६॥

बालचन्द्रोपाध्याय कृत ।
समेतशिखरगिरि पूजा ।



॥ प्रथम पूजा ॥

॥ दोहा ॥

चौवीसे जिनवर तणा, प्रणमी भावे पाय ।
समेतशिखर गिरिरायनी, पूज करुं मन लाय ॥
शिखरसमेत सिरोमणी, ए गिरवर कैलास ।
अति उत्तंग मनोहरु, ए जोगीन्द्र विलास ॥
वीस प्रभु मुगते गया, कर अणसण इह ठोर ।
ताते सुर किन्नर सवै, वंदत है कर जोर ॥
महिमा जाकी महियले, कह न सके कवि कोय ।
मुक्ति महलनी श्रेणिकी, ए तीरथ जग होय ॥
मिथ्यामत राची रह्या, तिनकुं ए न सुहाय ।
घूक तणे मन किम गमे, दिनकर सव सुखदाय ॥
अजित जिणंद जिनंद सम, दुसम सुखमा काल ।
कुशल करण भव भयहरण, प्रगट भए प्रतिपाल ॥

॥ ढाल ॥

(चाल–हाँ हो रे देवा बावन चन्दन घस कुमकुमा)

हां हो रे देवा, समेतशिखर गिररायना, गुण गावो मन धर प्रेम ए ॥ हां हो० सुरगुरु पिण ए गिरि तणी, वहु महिमा वरणे केम ए ॥ १ ॥ हां हो० वीस प्रभु मुगते गया, अजितादिक श्रीजिनचन्द ए ॥ हां हो० इण कारण ए गिरवरू, निश्रेयस सुरतरु कंद ए ॥२॥ हां हो० कोडाकोडी मुनिवरू, सीधा वहु इण गिर आय ए ॥ हां हो० ए गिर फरस्यां भावथी, पापी पिण पावन थाय ए ॥ ३ ॥ हां हो० श्रावक सुध समकित धरे, ते विधि पूर्वक धर प्रेम ए ॥ हां हो० वाल कहै जिनचन्द्रनी, करि भक्ति सदा निज खेम ए ॥ हां हो० ॥ ४ ॥

॥ ढाल वीजी ॥

(राग–देशाख, चाल–पूर्व मुख सावनं, करि दशन पावन)

अजित जिनचन्द्र सुरवृन्द सेवित सदा, सुभग पदकज तणी सेवना ए ॥ हांरे अइयो

से० जगत दुर्ल्लभ मणी रत्नपर जीवकुं, पूजिये चरण जिनदेवना ए ॥ हांरे अ० दे० ॥ १ ॥ तरण तारण भवोदधि भविक जीव केइ, परम उपगार कर निस्तर्या ए ॥ हां रे अ० ॥ शिखर गिरिराय पर पाये निर्वाण पद, सिद्ध निज रूप गुण संवर्या ए ॥ हांरे अ० नि० ॥ २ ॥ अष्ट विध पूजना द्रव्य भावे करे, भाव मन सौं धरै जे नरा ए ॥हांरे अ० जे०॥ ते सिखर तीर्थ शिव सौख्य संपद वरे, बाल जिन भक्त वत्सल करा ए ॥ हांरे अ० व० ॥ ३ ॥ ॐ ह्रीं श्रीपरमा० श्रीअजितजिनेंद्राय अष्टद्रव्यं यजामहे स्वाहा ॥

॥ बीजी पूजा ॥

॥ दोहा ॥

श्रीसंभव भव दव अनल, जलधर सम जिनराज।
पर उपगारी परमगुरु, भए भविक सुख काज ॥

॥ ढाल ॥

(राग वेलाउल, चाल—विलेपन कीजे श्री जिनवर अंगे)

पूजिये जिन मन रंगे, जिनेसर॥ पू० ॥ जल

कुंकुमाक्षत धूप दीप करि, नेवज फल मन चंगे ॥ जि० पू० ॥१॥ सेना मात जितारी तात सुत, श्रीसंभव जिन अंगे। हार मुगट कुंडल वर भूषण, चाढो भवि शुभ ढंगे ॥ जि० पू० ॥२॥ शिखर २ पर शिखर भए हैं, अनंत चतुष्क सुरंगे। बालचन्द्र प्रभु अधमउधारन, प्रभुता परम प्रसंगे ॥ जि० पू० ॥ ३ ॥ ॐ ह्रीं श्रीप० संभव जिनेन्द्राय अष्ट द्रव्यं यजामहे स्वाहा ॥२॥

॥ अथ तीजी पूजा ॥

॥ दोहा ॥

अभिनन्दन जिनचंदकी, महिमा वरणी न जाय।
परम रूप परमात्मा, सदानंद सुखदाय ॥

॥ ढाल ॥

(राग सारग, चाल—साँझ समे जिन वंदो)

अभिनंदन जिन वंदो, भविजन अ० । संवर तात सिद्धारथ माता, जाके कुल नभ चंदो ॥ भ० अ० ॥१॥ अधम उधारण भवदुख वारण,

दागी । बालचन्द्र निज नाथ निहारत, कुमति कुटलता त्यागी रे ॥प्र०॥२॥ ॐ ह्रीं परमा० श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय अष्टद्रव्यं यजामहे स्वाहा ।

॥ छठी पूजा ॥

॥ दोहा ॥

लोह धातु सम आतमा, परमातम चिद्रूप ।
कंचन रूप करे प्रगट, श्रीसुपास जिन भूप ॥
श्रीसुपास जग जीवके, पारस सम जिनराज ।
अणघड आतम लोहकूं, कंचन करे सुकाज ॥

॥ ढाल ॥

(राग वसंत, चाल—दादा कुशल सुरिंद, तुम दरसणतें परमानंद)

भवि पूजो श्री जिनवर सुपास, सहुनी मन वंछित पूरे आस ॥ भ० ॥ जाको कमल सम सुगंध सास, आहार निहार अदृश्य हे जास ॥ ॥ भ० ॥ १ ॥ न घटे न वधे नख केश पास, मांसासृग् उज्वल वर्ण तास ॥ भ० ॥ अतिसय चोतीस तणो प्रकास, तरण तारण जग जस

सुवास ॥ भ० ॥ २ ॥ समेतशिखर पर करके निवास, प्रभु पायो मुक्ति महल सुवास ॥भ०॥ प्रभुके समरणसे कर्म नास, कहे बाल सदा में प्रभुको दास ॥ भ० ॥ ३ ॥ ॐ ह्रीं परमा० श्रीसुपार्श्वजिनेंद्राय अष्टद्रव्यं यजामहे स्वाहा ॥

॥ सातमी पूजा ॥

॥ दोहा ॥

चंद्राप्रभुकी चंद्र सम, मुख शोभा मनुहार।
देखत दृग आनंद लहे, सूरत अति सुखकार ॥

॥ ढाल ॥

(चाल–मल्लि मनोहर तुज ठकुराइ ॥ म० ॥)

श्रीचंद्राप्रभु अरज सुणीजे। श्रीचं०। त्रिभुवन नाथ गरीबके ऊपर, दीनदयाल निवाजस कीजे॥ श्रीचं० ॥ १ ॥ अधम उधारण बिरुद तुमारो, मोसो अधम न और कहीजे ॥ श्रीचं० ॥ इह संसार अपार अगाधमें, साहिब सरणागत रख लीजे ॥ श्रीचं० ॥ २ ॥ मो पतितन कूं पार

श्रीशी० ॥३॥ ॐ ह्रीं परमा० श्रीशीतल जिनेंद्राय अष्ट द्रव्यं यजामहे स्वाहा ॥६॥

॥ दशमी पूजा ॥

॥ दोहा ॥

श्रीश्रेयांस जिणंदना, चरण सरण सुखकार।
पुण्य प्रसाद मिल्यो मुझे, भवर सुख दातार ॥

॥ ढाल ॥

(चाल—दादा चिरंजयो, सेवकजन सुखदाई दरसण सदा दियौ)

भवि भाव धरी, श्रीश्रेयांस जिनेसर पूजो मनरली ॥भ०॥ ए प्रभु सम अवर न को देवा, जाकी चौसठ इन्द्र करे सेवा, ते लहे सुरसुख शिवसुख मेवा ॥ भ० ॥ १ ॥ प्रभु परतिख सुरतरु सम स्वामी, जाकी पुण्य प्रसाद सेवा पामी, प्रभु जगजीवन अन्तरयामी ॥ भ० ॥२॥ प्रभु दीनदयाल परम दाता, जगवत्सल जगबंधव त्राता, कहे बाल सकल दायक साता ॥भ० ॥ ३ ॥ ॐ ह्रीं श्रीपरमात्मने अ० श्री श्रेयांस जिनेंद्राय अष्ट द्रव्यं यजामहे स्वाहा ॥१०॥

॥ इग्यारमी पूजा ॥

॥ दोहा ॥

परमातम परमेसरू, श्री तेरम जिनराज ।
ध्यावो सेवो भविक जन, ज्युं पावो सुख साज ॥

॥ ढाल ॥

(राग—कानडो, चाल—मेरी लागी लगन जिन चरणे हो मे०)

मन मोह्यो री मेरो जिन चरणे, हो म०॥ दुख दोहग सब हरणे हो म० ॥ विमल जिणंदकी अद्भुत तनु छवी, सोभत सोवन वरणे ॥ हो मन० ॥ १ ॥ दीनदयाल दयानिधि दाता, सब जीवन सुख करणे ॥ हो म० ॥ परमातम प्रभु परम परमगुरू, प्रभु भये तारण तरणे ॥हो म० ॥२॥ पुण्य प्रसाद लह्यो प्रभु दरसन, शास्वत शिव सुख धरणे ॥ हो मन० ॥ बाल कहे प्रभु सेवक जाणी, रख लीजे मोहे सरणे ॥ हो म० ॥ ३ ॥ ॐ ह्रीं परमात्मने० श्रीविमल जिनेंद्राय अष्टद्रव्यं यजामहे स्वाहा ॥११॥

॥ बारहवीं पूजा ॥

॥ दोहा ॥

श्रीअनंत जिनदेवकी, सेव करो मन लाय।
मनवंछित सुख जिम लहे, दुरगति दूर पलाय ॥

॥ ढाल ॥

(राग—मालवी गौडी, चाल—सव अरति मथन मुदार धूपं करतगं)

ध्यावो सेवो भविजन भक्ते, अनंत जिनंद महाराज रे देवा ॥अनं०॥ ए सुरतरु सम जगमें जिनवर, तारणतरण जिहाज रे देवा ॥ ता० ध्या० ॥ १ ॥ कृपासिंधु भगवान परमगुरु, तीन भुवन सिरताज रे देवा ॥ ती० ॥ जिन सेवा तैं शिवसुख पावे, सफल होय सब काज रे देवा ॥ स० ध्या०॥२॥ इह संसार असार भजन विन, कैसे रहे निज लाज रे देवा ॥ कै० ॥ बालचन्द्र प्रभु पर उपगारी, दायक अविचल राज रे देवा ॥ दा० ध्या० ॥ ३ ॥ ॐ ह्रीं परमा० श्रीअनंत जिनेंद्राय अष्ट द्रव्यं यजामहे स्वाहा ॥१२॥

॥ तेरहवीं पूजा ॥

॥ दोहा ॥

धर्म जिनेसर परमगुरु, पर उपकारी देव ।
परमातम प्रभु चरणकी, कीजे नित प्रति सेव ॥

॥ ढाल ॥

(राग भैरवी, चाल—पाच वरणी अंगी रची कुसुमकी जाती)

सुखकारी रे देवा सु० ॥ धर्म जिनंद सेवो सुख-कारी ॥ध०॥ तीन भुवनके स्वामी शिरोमणि, सब जीवनको है हितकारी ॥ हि० देवा० ध०॥ १॥ जगजीवन जगबंधव जगगुरु, परम पुरुष प्रभु उपगारी ॥ अकल सकल अघहर पर अनुपम अचल अविकारी । अ० देवा० ध० ॥ २ ॥ भव संताप निवारण तारण, जिनसेवा मोहि अति प्यारी । सुरतरु सम प्रभु चरण सरणकी, बाल-चन्द्र कहे बलिहारी ॥ ब० देवा० ध० ॥३॥ ॐ ह्रीं० परमा० श्रीधर्म जिनेंद्राय अष्ट द्रव्य यजा-महे स्वाहा ॥१३॥

॥ चौदहवीं पूजा ॥

॥ दोहा ॥

शांतिकरण सब दुख हरण, शांति जपो सुखकार।
शिवसुख दायक जगगुरु, परमातम अविकार ॥

॥ ढाल ॥

(चाल–राग धन्याश्री गौडी । तेजतरण मुख राजै, केसरीयाने जिहाजको लोक तिरायो ॥ ए)

शांति जिनेसर ध्यावो, भविजन शां० ॥ तरण तारण भव सागर जिनको, तीन जगत जस चावो ॥ शां० ॥१॥ शान्ति सुधारस नाम प्रभुको, समरण कर मन भावो । कर्म काठ सत खंड हुवे तब, शुद्ध सरुपी थावो ॥ भ० शां० ॥ २ ॥ भक्ति करो मन सुध भगवन्तकी, मन सुध प्रभु गुण गावो । बाल कहे भवि प्रभु सेवनसे, मनवंछित फल पावो ॥ भ० शां० ॥३॥ ॐ ह्रीं श्रीपरमा० श्रीशांति जिनेन्द्राय अष्टद्रव्यं यजामहे स्वाहा ॥ १४ ॥

॥ पनरमी पूजा ॥

॥ दोहा सोरठा ॥॥

कुंथु जिनेसर देव, भविजन पूजो भावसे।
चरण कमलकी सेव, इंद्रादिक नित प्रति करे॥

॥ ढाल ॥

(राग–सोरठा, चाल—कुंद किरण शसि उजलो जी देवा)

चंद्र किरण जैसो ऊजलो रे देवा, जग जस प्रभु विस्तारो जी आछो। अनंत गुणे करी सोभता रे देवा, कुंथु जिनन्द जग सारो जी आछो ॥ १ ॥ कामितदायक सुरतरु रे देवा, सर्व जीवन प्रतिपालो जी आछो। भविजन पूजो भावथी रे देवा, ए प्रभु परम आधारो जी आछो ॥ २ ॥ शिवसुख दायक साहिबा रे देवा, पतित उधारणहारो जी आछो। बाल-चंद्र जिनचंद्नो रे देवा, सरण गह्यो सुखकारोजी आछो ॥ चं० ॥ ३ ॥ ॐ ह्रीं श्रीपरमा० श्रीकुंथु जिनेन्द्राय अष्ट द्रव्यं यजामहे स्वाहा ॥१५॥

॥ सोलहवीं पूजा ॥

॥ दोहा ॥

श्री अरनाथ जिनंदनी, पूजा अष्ट प्रकार।
करिये मन सुध भावसुं, भव भव सुख दातार ॥

॥ ढाल ॥

(राग—कालिंगडो, चाल—मना रे जिनचरणां चित लावो)

श्रीअरनाथकुं ध्यावो, मनारे श्री० । त्रिभुवनपति गुण गावो, मनारे त्रि० । एसो अवर न देव जगतमें, जाको जग जस चावो ॥ म० त्रि० ॥ १ ॥ सूर नरेसर नंदन प्रभुजी, मात प्रभावती छावो । तन मन लगन लगावो प्रभुसे, नरक निगोद न जावो ॥ म० त्रि० ॥ २ ॥ परम पुरुष परमेसर प्रभुको, चरण सरण मन भावो । दीनदयाल दयानिधि पूजत, बाल परम सुख पावो ॥म० त्रि०॥ ३ ॥ ॐ ह्रीं श्रीपरमा० अरनाथ जिनेन्द्राय अष्टद्रव्यं यजामहे स्वाहा ॥

॥ सतरहवी पूजा ॥

॥ दोहा ॥

कुंभ समुद्भव जगधणो, मल्लि जिनेसर देव।
जसु पद पंकजकी करे, इन्द्र चन्द्र नित सेव ॥

॥ ढाल ॥

(राग–कल्याण, चाल–तेरी पूजा वणी ते रसमें ॥ते०॥ ए)

मेरी लगन लगी जिन चरणे ॥ हो मे० ॥ मल्लि जिणंद सुख करणे हो मेरी० ॥ त्रिभुवन नायक सब सुख दायक, ए प्रभु अशरण शरणे ॥ हो मे० ॥ १ ॥ अनुपम रूप विराजित प्रभुजी, सोभत सोवन वरणे ॥ हो मे० ॥ अकल अगोचर प्रभु उपगारी, ध्यावो सब दुख हरणे ॥ हो मे० ॥ २ ॥ जो निज आतमकुं सुख चाहो, लावो चित्त समरणे ॥ हो मे० ॥ बाल कहे प्रभु अधम उधारण, रख लीजे मोहे शरणे ॥ हो मे० ॥ ३ ॥ ॐ ह्रीं परमा० श्रीमल्लि जिनेन्द्राय अष्टद्रव्यं यजामहे स्वाहा ॥१७॥

॥ अठारहवीं पूजा ॥

॥ दोहा ॥

विंशतितम जिनवर नमुं, मुनिसुव्रत जिनचंद।
भावे भविजन भेटिये, दूर टले भव फंद ॥

॥ ढाल ॥

(राग–मल्हार, चाल–चिहुं ओर वदरिया वरसे)

मुनिसुव्रत स्वामी दरसे, आज आनंद घन वरसे हो ॥ मु० ॥ समेतशिखर पर प्रभु पद पंकज, पुण्य प्रसादे फरसे हो ॥ मु० ॥ प्रभु दरसन घनघोर घटा लख, मोर नयनयुग तरसे हो ॥ मु० ॥ भविजन चातक प्रभु गुण गावत, भावत भावन झरसे हो ॥ मु० ॥ २ ॥ धर्म ध्यान जाके उपजत खेती, कर्म निरस होय निरसे हो ॥मु०॥ बाल प्रसाद प्रभुजीके आतम, परमातम प्रभु सरसे हो ॥ मु० ॥ ३ ॥ ॐ ह्रीं श्रीपरमा० श्रीमुनिसुव्रत जिनेन्द्राय अष्टद्रव्यं यजामहे स्वाहा ॥ १८ ॥

॥ उन्नीसवीं पूजा ॥

॥ दोहा ॥

नमि जिन पूजो भावसों,भविक भक्ति मनलाय।
सुध भावे जिन पूजतां, दुरगति दूर पलाय ॥

॥ ढाल ॥

(राग—माल्वी गौडी, चाल—सच अरतिमथन मुदार धूपं)

नमि जिनेसर जगत दिनेसर, पूजो भविजन भाव रे॥ जगतपति जिनराज साहिब, भव-समुद्रनो नाव रे॥ न० ॥१॥ इन्द्र चन्द्र सुरेन्द्र नर सुर, पूजनको जसु चाव रे। तरण तारण कृपासागर, सेवनको अब दाव रे॥ न०॥ २ ॥ पुण्य उदय प्रभु दरसन पायो, आनंदकंद सुभ भाव रे। बाल कहे प्रभुके चरणको, सरण मोहे सुहाव रे ॥न०॥३। ॐ ह्रीं श्री परमा० श्रीनमि-जिनेंद्राय अष्टद्रव्यं यजामहे स्वाहा ॥१६॥

॥ वीसवीं पूजा ॥

॥ दोहा ॥

पारस पारसनाथका, गुण गाता गहगट्ट ।
कष्ट टले संपति मिले, मनवंछित फल थट्ट ॥

॥ ढाल १ ॥

(चाल—सांवरिया स्वामीजी अब मोही तारो)

सांवरिया साहिबकी बलिहारी ॥ सां० ॥ अश्वसेन तात वामादेवी माता, पास जिणंद हे सुखकारी ॥सां०॥१॥ जाके गुणको पार न पावे, इन्द्र नरिंद नमे नर नारी ॥ सां० ॥ भव भव भमतां प्रभुजी मैं पाया, दुरगति दूर निवारी ॥ सां० ॥ २ ॥ अब मैं प्रभु बिन और न चाहुँ, यही मुझ मन इकतारी ॥सां०॥ बाल कहे प्रभु साहिब मेरे, शिवसुख दो हितकारी ॥सां०॥३॥

॥ ढाल २ ॥

(राग चाल—तेज तरणि मुखराजे, हो प्रभु थारो ते०)

भविजन शिखर समेत वधावो ॥भ०॥ वीस जिनेसर मुगति सिधाए, ए तीरथ जग चावो ॥

भ०॥१॥ द्रव्य भाव करी पूजा रचावो, त्रिभुवनपति गुण गावो ॥ समकित पुष्टालंबन कारण, ए सम और न भावो ॥ भ० २ ॥ सकल संघ मकसूदाबादमें, आनंद अधिक वधावो ॥ भक्ति भावसे प्रभुजोकुं पूज्यां, मन वंछित फल पावो ॥ भ० ३॥ संवत सिधि नभनिधि वसुधा सुभ, कार्त्तिक सुदि पण चावो। जिनसौभाग्यसूरीसर गुण निधि, खरतर गच्छपति चावो ॥ भ० ॥४॥ अमृत लाभ समुद्र पसाये, पूज रची मन भावो। बालचंद्र परमातम प्रभुका, हरख हरख गुण गावो ॥भ० ५॥ इति ॐ ह्रीं० श्रीपरमा० श्रीपार्श्वजिनेन्द्राय अष्ट द्रव्यं यजामहे स्वाहा।

॥ अथ कलश ॥

॥ रागनी कहरवो ॥

शिखरगिरि तीर्थंकर वीस जिनवर मुदा, भक्तिभर भविक वर पूज करिये। अष्टविधि विविध धर सिद्धि नवनिधि सही, सुघट घटसंपदा प्रगट वरिये ॥शि०॥१॥ विकट वट कर्म-

की जोट दूरे करी, विबुध बुध आतम निज सुद्धि धरिये । चरण जिन शरण गहि भवतरण जन लहे, चरण दरशन लही ज्ञान चरिये ॥ शि०॥२॥ धन्य दिन आज जिनराज गिरिराज चढ, दरस लहि सरस संसार दरिये । धरम धर मगन जिन भक्ति पूरण ग्रही, दुरति गति दुक्खसे दूर टरिये ॥ शि० ३ ॥ अष्ट नवनिधि सदा सिद्धि सुद माघमें, पूज कर शक्ति निज भक्ति भरिये । बाल प्रतिपाल सुविशाल गुण गावतां, धार भव वारि निधि पार तरिये ॥ शि० ४ ॥

इति श्रीसमेतशिखर गिरि पूजा संपूर्णम् ॥

श्री बालचंद्रोपाध्याय कृत

पंचकल्याणक पूजा ।

॥ प्रथम च्यवन कल्याणक पूजा ॥

॥ दोहा ॥

ज्योतिरूप जगदीशनुं, अदभुत रूप अनूप ।
प्रवचन प्रभुता प्रगट पण, जय जय ज्योति सरूप॥
चौवीसे जिनवर नमी, पंच कल्याणक रूप ।
शासननायक वरणवुं दर्शन ज्ञान सरूप ॥
कल्याणक ओच्छव करे, इन्द्रादिक जे देव ।
ते भावे भविजन करे, श्रीजिनवरनी सेव ॥

॥ राग सरपदो ॥

जोति सकल जगदीसनी । हां रे जगदीसनी ए ॥ चार निक्षेप प्रमाण । नाम जिनादिक जिन कह्या, आगम मांहि प्रधान ॥ १ ॥

॥ गाथा ॥

नाम जिणाजिण नामा, ठवण जिणाओ जिणंद् पडिमाओ। 'द्व्वजिणा जिण जीवा, भावजिणा समवसरणत्था ॥ १ ॥

॥ ढाल ॥

विन कारण कारज नहीं, हां रे का० ए ॥ ए सब लोक प्रसिद्ध। भाव निक्षेप प्रधानता, कारज रूपे सिद्ध ॥ १ ॥ विण आकारे द्रव्यनो ॥ हां ॥ द्र० ए ॥ नाम न होय विशुद्ध ॥ नाम विना आकारनो, प्रगटपणो नवि बुद्ध ॥ २ ॥ नामादिक कारण सही ॥ हां० ॥ का० ए ॥ इन विन भाव न होय। भाव विशुद्धे जिनतणी, पूज करो सहु कोय ॥ ३ ॥ व्यवहारे निश्चय लहे ॥ हां० ॥ नि० ए० ॥ कारण कारज होय॥ पावडशाला क्रम करी, सौध चढे सहु कोय ॥४॥

॥ दोहा ॥

ज्ञानकला कलितातमा, लोकालोक प्रकाश।
व्यापकभावे थिर रह्यो, शुद्ध विकास विभास ॥

राग—सारंग

हांहो रे देवा जोति सकल जिनराजनी, सहु लोकालोक प्रकाश ए। हांहो रे देवा राजत श्रीजिनराजजी, वाणी प्रवचन शुभवास ए ॥१॥ हांहो रे देवा मात नमुं नित शारदा, गुरु पंच कल्याणक सार ए। हांहो रे देवा तीर्थंकरना वरणवुं, गुण शास्त्र परंपर धार ए। २॥

॥ दोहा ॥

शासननायक जगधणो, तिभुवन पति परमेस।
पर उपगारी प्रभु तणा, गुण गावत सहु वेस ॥

॥ ढाल ॥

हांहो रे देवा वीशथानक करि सेवना, बांध्युं जिन नाम प्रधान ए॥ हांहो० दिव्य अमर सुख अनुभवे, प्राये प्रभु पुण्य प्रमाण ए ॥१॥ हांहो० निरमलतर वरज्ञानना, धारक कारक शुभयोग ए॥ हांहो० शब्द वरण रस गंधना, शुभ फरस तणा वर भोग ए॥ २॥ हांहो०

शाश्वत सिद्धायण तणा, नित उत्सव करत सुरंग ए ॥ हांहो० बालचन्द्र पाठक कहे, नित मंगल होय सुचंग ए ॥३॥

॥ दोहा ॥

पुण्य पूर्वभव प्रभु तणो, प्रगट्यो प्रगट प्रभाव ।
सुरकुमरी नित प्रति करे, नाटक नव नव भाव ॥

चाल—पूर्व मुख सावनं ।

शुद्ध निज दर्शने, करिय गुणकर्षना, जिन-चरण सेवना विविधकारी । हे अईयो विविध-कारी ॥ ए आं० ॥ एक जिन धर्ममय परम लय लीनता, दीनता सकल तज, रज निवारी ॥ हे अई० ॥ र० १॥ आतमगुण अन्तरातमपणे वृत्तिता तजिय बहिरातमाजिन आण धारी ॥हे अई०॥आ० ॥२॥ शुद्ध सम्यक्तगुण, संपदा निज लही, सहीय शुद्ध धर्म रुचि, भास सारी ॥ हे अ० ।भा०॥३॥ भानुजिम भलहले तेजपुंजेकरी, प्रवर वपु भूषणे शोभ भारी ॥हे अ०॥जि०॥ विविध मणि रत्ननी जोती झगमग जगे, चन्द्रिका भास भासित

करारी ॥ हे अ० ॥ भा० ४ ॥ प्रवर कुल शुद्ध राजन्य प्रमुखें मुदा, आयुकर बंध नर भव सुधारी ॥हे अ० ॥न०॥ गर्भ अवतार निज मात उदरें लहे, चाल शुभ लग्न शुभ योगचारी ॥ हे अ० ॥ शु० ॥ ५ ॥

सुपारी ५ पान ५ पुष्प अतर चढावे ।

॥ दोहा ॥

शुभदिन शुभ मुहूरत घड़ी, शुभ ऊँचे ग्रह चार ।
देवलोक चवि प्रभु लहे, मात उदर अवतार ॥
सुन्दरवर प्रासाद महि, मध्यनिशा जिनमात ।
स्वप्न देख सुख सेजमें, जागत अति हरखात ॥

॥ राग काफी, घाटो चैंति ॥

चाल–जिनजी हमें कछु दीजे ।

जिनजी भजो भवि प्यारा, याते आनंद अधिक अपारा ॥ जि० ॥ १ ॥ सुख सेज सूती जिन माता, देखे सुपना मन भाता । चित्त हरखित हुव तिण वारा ॥ जि० ॥२॥ गज वृषभ-सिंह सुरदेवी, वर पुष्प चन्द्र रवि सेवी । ध्वज

कुम्भ पद्मसर सारा ॥जि० ॥३॥ वर क्षीरसमुद्र विमानं, रयणोच्चय मेरु समानं, निर्धूम पावक सुखकारा ॥जि० ४ ॥ शिव धान्य मंगल श्रियकारी, जाणी अर्थ हृदय कसधारी, शुभसूचक पुण्य संभारा ॥जि० ॥५॥ सुन्दर वर सखियन संगे, करिधर्म जागरिका रंगे, निशि शेष गई तिणवारा ॥ जि० ॥ ६ ॥

ए भणी दो पुष्पमाला चढ़ाइयें ।

॥ दोहा ॥

परम पुरुष परमातमा, भावि भगवन भास ।
प्रवचन प्रगट करण प्रभु, पुण्य तणे सुप्रकाश ॥

॥ राग सारंग ॥

चाल—पूजा सतर प्रकारी ।

आज आनंद वधाई, भई त्रिभुवनमें । चौद सुपन सूचित गुण जेहनां, अवतरे माता उदरनमें ॥ आ० १ ॥ नृपति सदन बहु सपन शास्त्रविद, अथ विचार करि निज मनमें । पुत्र रतन फल वदत नृपति कुल, परम कल्याण होत

जननमें ॥आ० ॥२॥ प्रफुल्लित हरख भरत हिय उलसत, जिन जननी तात सुनी तनमें। दिन दिन बढ़त प्रवर धन जन मन, अधिक उत्साह घर घरनमें ॥आ० ॥३॥ रूप्य रजत मणि माणक मोतियें, शंख प्रवाल शिल वरसनमें। धनद धनदसुर इन्द्र हुकमते, भरत भंडार नृपसदनमे। आ० ४॥ ताल कंसाल मधु वीण वजावत, गावत गीत तान तननमें। दुन्दुभि मुरज मृदंग घन गरजत, गरज गरज मानु जैसे घनमें ॥ आ०॥ ५ ॥ सुर नर लोक मांहे अधिक उत्साह वाह, निशिदिन होत जन जनपदनमें। इन्द्र इन्द्राणी नृप दोहद पूरत, मनोरथ होत जो जो मातु मनमें ॥आ०॥६॥ परम कल्याण शुभ योग संयोग भयो, शुभ घरि शुभ ग्रह शुभ दिनमें। वरण सके न ताहि कवि अवसरको, आनंद छायो तीन भुवनमें ॥ आ० ॥ ७ ॥ इति श्रीच्यवण-कल्याणके ॐ ह्रीं श्री परमात्मभ्योऽनंतानंतज्ञान शक्तिभ्यो जन्मजरा मृत्यु निवारणकारणेभ्यो

अष्ट द्रव्यं यजामहे स्वाहा ॥ इति प्रथम च्यवन कल्याणक पूजा ॥१॥

हीरा चढ़ावे पुष्प गुलाबजल वर्षा करे।

॥ द्वितीय जन्मकल्याणक पूजा ॥

॥ दोहा ॥

प्रगटे पतित पावन प्रभु, अधम उधारण काज।
नृपकुलमांहें अवतरे, त्रिभुवनके शिरताज ॥

॥ राग सोरठी ॥

आज अधिक आनन्द भयो रे वाला, आज सुरंग वधाई रे। आछो जगपति जिनवर जनमिया रे वाला, सुरवधु वन मिल आई रे ॥ १ ॥ आछो आंज आनन्द घन उमट्योरे देवा, दिशि कुमरी हरखाई रे। आछो दशदिश निर्मलता थई रे देवा, फूल रही वनराई रे ॥२॥ आछो फूले फूली वनलता रे वाला, मधु मालती महकाई रे। आछो शालि प्रमुख सहु धान्यनो रे वाला, निपजी राशि सवाई रे ॥ ३ ॥ आछो

नारकी जीवे नरकमां रे वाला, क्षण इक शाता पाई रे। आछो सब जन मन हरपित भयो रे वाला, भूमंडल छवि छाई रे ॥४॥ आछो शुभ-मुहूरत शुभ घड़ी रे वाला, शुभ ग्रह शुभ पल आई रे। आछो जन्म थयो जिनराजनो रे वाला, प्रगटी पूर्व पुण्याई रे ॥५॥

ए भणी पुष्प तथा गुलाबजलनी वर्षा करे।

॥ सोरठो ॥

त्रिभुवन मांहि सुरुप, जन्म समय जिनराजने।
वाजित्र वाजत अनूप, सुरनर कृत उत्सव हुवे ॥

॥ राग सोरठ ॥

चाल—रावण निरत बणावे हो भला।

आज आनंद वधाई रे, देखो आज आनंद वधाई। जय जयकार भयो जिनशासन, सुर-कुमरी हरखाई रे ॥ दे० ॥ १ ॥ घरघर गोरी मंगल गावत, मोतियन चोक पुराई रे। ईति उपद्रव भय सव भागे, खार समुद्रे जाई रे ॥दे०

आ० ॥ ४ ॥ काली घटा वरदामनी चमकत, दादुर मोर सुहायो रे। अतिहि सुगंध पुष्पव्रज वरसत, मोतियनकी झर लायो रे ॥ दे० ॥ आ० ॥ ५ ॥

॥ दोहा ॥

शक्र जाय जिनवर गृहे, जिनजननी जिनराज।
प्रणमी श्रीमहाराजनी, भक्ति करे सुरराज ॥

॥ राग कालिंगडो ॥

चाल—सुन्दर नेमि पियारो माई।

तुम सुत प्रान पियारो माई तु० ॥ आंकणी। जगवत्सल जगनायक निरख्यो, धन धन भाग्य हमारो माई ॥ तु० ॥१॥ धन जगजननी तुम सुत जायो, अधमउधारण हारो माई। धन धन प्रगट भयो जगदिनकर, त्रिभुवन तारनहारो माई ॥ तु० ॥ २ ॥ सब सुर चाहत स्नात्र करनकुं, सुरगिरि प्रभुजी पधारो माई ॥ कर जोडी प्रभु अरज करत हुँ, सब जन-

काज सुधारो माई ॥तु०॥३॥ मैं सेवक तुम सुत चरननको, आयो हूं अधिकारो माई ॥ इंद्र कहे पदपंकज प्रणमुं, भय सब दूर निवारो माई ॥ तु० ॥ ४ ॥ पांच रूप करी प्रभुजीकुं लावे, पांडुगवन सिणगारो माई ॥ चोसठ इंद्र महोत्सव करी हे, पूजन अष्ट प्रकारो माई ॥तु० ५॥

प्रभु प्रतिमा पचतीर्थी अन्दर से लावे, सिंहासण उपर स्थापन करे, फिर स्नात्र पूजा करावे ।

॥ दोहा ॥

पंचरूप कर इन्द्र जिन, पंडुग वन ले जाय ।
सिंहासन उछरंग गहि, स्नात्र करे सुरराय ॥

चाल–इतनो गुमान न करिये छबीली राधा हे ।

जिनजीको पूजन करिये, हाँ रे हो रंगीले श्रावक हो ॥जि०॥ द्रव्य भाव बेहु भेदें करतां, भवसागर निस्तरिये ॥ जि० १॥ गंगाजल चंदन पुष्पादिक, अडविध मंगल धरिये ॥ भाव विशुद्धे जिन गुण गावो, नाटक नवनव चरिये ॥ जि०॥ २॥ बहुविध प्रभुकी भक्ति रचावत, वर्नन कर-

नन तरिये । वो आनन्द देखे सोई जाने, दुःख सब दूरे हरिये ॥जि० ३॥ पूजन करी प्रभुकुं घर ल्यावे, आतम पुण्यें भरिये ॥ करी अठाई महोत्सव आवत, सब सुर मिल निज घरिये॥ जि० ॥४॥ ॐ ह्रीं श्रीप० अ० ज० जन्मकल्याणके अष्टद्रव्याणि यजामहे स्वाहा ॥२॥

॥ तृतीय दीक्षा कल्याणक पूजा ॥

॥ दोहा ॥

सुरकृत उत्सव अति अधिक, भये अनंतर प्रात ।
मात पिता उत्सव करे, निज कुलक्रम विख्यात ॥
पार नही धनको जहाँ, अगणित भरे भंडार ।
दान मनोवंछित दिये, दयावंत दातार ॥

॥ राग रामगिरी ॥

चाल—गात्र लूहे० ।

जिन जन्म महोत्सव रंगसुं रे, भये प्रात करत उछरंगसुं रे ॥ हां रे देवा रंगसुं । नृप-उत्सव करे अति घणो ॥१॥ पुत्रजनम कुलक्रम

करे रे देवा, जगजस कीरत विस्तरे ॥वि०॥ घर घर उत्सव रंगमें ॥२॥ सुरवधु मिल सुरसंगशुं रे ॥सु०॥ करे नाटक नवनव रंगसुं रे ॥ रंग ॥ हारे बाललीला जिन संगमें ॥ ३ ॥ रूपातिशये शोभता रे ॥ दे० ॥ इन्द्रादिक मन मोहता रे बाला ॥मो०॥ विद्याप्रभु विस्मयवता ॥४॥ परम-प्रमोद प्रवीणता रे देवा, सुर क्रीडा अतिशयवता रे ॥अ०॥ वैक्रिय शक्ति समेलसुं रे ॥५॥ गावत गीत उमंगसुं रे देवा, वाजित्र नवनव रंगसुं रे ॥रं०॥ वजित अहोनिशि सगसुंरे ॥६॥

॥ दोहा ॥

तीन ज्ञान अतिशय धरे, अतिशय कला सुधाम ।
सुर सुसंग क्रीडातिशय, अतिशय गुण अभिराम ॥

॥ राग भैरवी ॥

। चाल—पच वरणी अंगी रची ।

वरणो न जाती रे ॥व०। जिनजीकी शोभा व० ॥ चित्रजात नर सुरासुर निरखत, ओर न एसो जग भाती । जि० १ । अनत गुणें करि

शोभित प्रभुजी, शुद्ध संवेग सोवन जाती। शिव मारग शुध सेवत निशिदिन, पुण्यपुरुष पायाराती ॥ जि० २॥ पर उपगारी परम पुरुषो-त्तम, अद्भुत अनुभव रस पाती। कामभोग वर विबुध प्रकारे, प्राप्त भये सुख संवाती ॥जि०३॥ जसु जस ख्यात प्रगट त्रिभुवनमें, कुल राजन्यो-त्तम जाती। धन धन तीन भुवनके साहिब, श्याम हमारो वरगाती ॥जि० ४॥ इन्द्र अहोनिश भावन भावत, देख दरस अति हरखाति। दुन्दुभि प्रमुख वाजित्र वजत नित, सुरवधु वन मंगल गाती ॥जि०॥

ए भणी प्रभुने पुष्प वासक्षेप चढ़ावे।

॥ दोहा ॥

प्रवरभोग प्रभु पुण्यते, प्रगटे प्रगट प्रधान।
गुणग्राहक गृहवासमें, दर्शन ज्ञान निधान॥

चाल—तुम बिन दीनानाथ दयानिध।

प्रभुविन दीनानाथ दयाविन, कोन कहावत कोई रे ॥प्र०॥ गृहवासे शध संयमधारी, शुद्ध

सुभावे होई रे॥ १ ॥ सम्यगदर्शन भवनिर्वेदे, सप्तनकी जर खोई रे। प्रभुता प्रभुकी को कहि वरने, सुर नरनारी मोही रे। प्र० २॥ शुभ लेश्या शुभ ध्यान रमे नित, आतम निरमल धोई रे। आतम रूप निहारत निजघर, संग सुमति जह जोइ रे ॥प्र० ३। प्रगट प्रकाश आतम उजियारे, साम कहावत सोइ रे। गृहवासे शुद्धसंयम रागी, लागी लगन सवाई रे ॥प्र० ४॥ निज प्रभुता प्रभुभीनो लीनो, अन्तरशत्रु विगोइ रे। विषय-वासना छीण भइ लख, आतम शक्तिसुं ढोइ रे। प्र०॥५॥

एम कही फूल चढावे ॥

॥ दोहा ॥

दाता दीनदयाल प्रभु, देत संवत्सरि दान।
दूर करे दारिद्र जग, त्रिभुवन माहि प्रधान॥

चाल—मरुदेवा नन्दनकी क्या छवि लागत प्यारी

जगपति जिनवरकी, क्या छवि मोहनगारी। ज० ॥ मोहत प्रभुके मोहन रूपे, निरख निरख

नरनारी ॥ क्या० ॥१॥ भोग कर्म अन्तरायकर्म कछु, क्षीण भये निरधारी। दावसंवत्सर घन जिम वरसत, पृथ्वी प्रमुदितकारी ॥ क्या० ॥२॥ नव-लोकांतिक देव सवे मिल, हाजर होय सुचारी। जय जय मंगल शब्द उचारत, धर्म गहो सुख-कारी ॥क्या०॥३॥ दान धर्म शिवमारग प्रभुजी, प्रगट कियो हितकारी। दाता दीनदयाल जगतमें, जिन सम को सुविचारी ॥क्या०॥४॥ इन्द्रादिक सुरसुरी नर नारी, दीक्षोत्सव अति भारी। गान दान सनमान तान करी, प्रभुगति सकल सुप्यारी क्या०॥५॥ तजि संसार लियो शुभयोगे, संयम सतर प्रकारी। मनपर्यव वर ज्ञान भयो तव, विहरत परउपगारी ॥क्या० ॥६॥ ॐ ह्रीं र० अ० ज० श्री० दी० अष्टद्रव्यं यजामहे स्वाहा ॥३॥

॥ चतुर्थ केवलज्ञान कल्याणकपूजा ॥

॥ दोहा ॥

गजवर अश्व समूह रथ, पायक कोडाकोड ।
जिन दीक्षा महोत्सव समें,हाजर होय तिन ठोर ॥

इंद्रादिक सुर असुर नर, प्रभुकुं करे प्रणाम ।
नरनारी आशीष दे, जय जय त्रिभुवन साम ॥
तजि आश्रव संवर गहे, संयम भाव निधान ।
सब संसार तजी करी, भए अणगार प्रधान ॥

राग—कल्याण, चाल—तेरी पूजा बणी तेरस में ।

धारी धारी धारी, जिन भये संयमपद धारी। चरन कमल बलिहारी ॥ जि० ॥ पंच सुमतिधर तीन गुपतिकर, सब जीवां सुखकारी । जि०॥१॥ जीत लिये उपसर्ग परिसह, शत्रुसेना गणभारी। भयभैरवते निःप्रकंप भए, निर्मम निरहंकारी ॥ जि० ॥ २ ॥ क्रोध मान माया लोभ अकिंचन, आकिंचन ब्रह्मचारी। पुष्करसम निरलेप जगतगुरु, निरंजन अविकारी ॥जि० ॥३॥ चेतन पर प्रभु अप्रतिघाती, खेसम निराश्रयारी । खड्गी शृंग परे एकाकी, अप्रतिबंध विहारी ॥जि० ।४॥

॥ दोहा ॥

रत्नत्रय परिग्रह करी, मुक्तिमार्ग अभिराम ।
निशिदिन करत विहारक्रम,प्राप्तुकाम निजधाम ॥

चाल—सद्गुरुजी सुनो मेरी अरजी ।

जिनवरजी जगतहितकारी ॥ जि० ॥ जग वत्सल जगबंधु जगतगुरु, जगनायक जय-कारी ॥१॥ कुर्मतणी परे गुप्तइंद्रिया, प्रभु अप्रमाद भारंडसुचारी । अतिशय धाम धाम निज वीरज, वृषभ परे सुविहारी ॥जि०॥ २ ॥ शूर वीर प्रभु सिंहतणी परे, कुंजर करम विदारी । अतिगंभीर सायरसम शोभित, सौम्यलेश्या सुखकारी ॥ जि० ॥३॥ तेज पुंज दिनकर सम दीपत, हेम वरण मनुहारी । सर्व सहन कारक धरणी परे, स्वच्छ हृदयकजधारी ॥ जि० ॥४॥

॥ दोहा ॥

अनुत्तर धर संयमक्रिया, कल्पातीत जिणंद ।
वीतराग विचरे प्रवर, रत्नत्रय जगचंद ॥

राग—मल्हार, चाल—कुँवरीने जादू डारा ।

जाके रागद्वेष भया न्यारा रे, सोई श्याम सकल सुखकारा ॥जा०॥ बासी चंदन सम प्रभु

जगमें, अपकारें उपकारा रे ॥सो० ॥१॥ कंचन काष्ठ समान हे जाके, सुख दुःख सम उपचारा। कोऊ निंदत कोऊ पूजत, जिनजी है अविकारा रे ॥सो० ॥जा०॥२॥ शिवसुख अरु भवसुख हू न वंछे, वीतराग प्रभु प्यारा। शूरधीर प्रभु क्षपकश्रेणि चढ, मोहन मल्ल पछारा रे ॥सो०॥ जा०॥३॥ क्षायिक सयमने शुभ योगे, अनुत्तर गुणगणधारा। पाठक विजयविमल कहे प्रभुके चरणकमल वलिहारा रे ॥सो०॥ जा०॥४॥

॥ दोहा ॥

घनघाती चउ कर्मको, क्षयकर क्षायिकज्ञान।
दर्शन लोकालोकको, प्रगट प्रकाशी भान ॥

॥ राग ठुमरी ॥

चाल—वस मन खितरीकुंडके तीर, भजले श्रीमहावीर।

पायो प्रभु भवजलनिधिको तीर, अतुली वल वड़वीर ॥पा०॥ अनुत्तर जाके सुमति गुपति हे, अनुत्तरक्षमा सुधीर ॥पा०॥१॥ मार्दव आर्दव

अनुत्तर जाके, रोक्यो आश्रव नीर। संवरजोग क्रिया सब विणठी, रही ईर्यासुख सीर ॥पा०॥२ घनघाती सब शत्रुविनाशी, केवलज्ञान सुधीर। पूरन दर्शन प्रकट भयो है, निज आतम गुण-क्षीर ॥पा०॥३॥ प्रातिहार्य अतिशय जिन संपद् भयो अनुकूल समीर। दे उपदेश भविक प्रति-बोधत, वचनातिशय गंभीर ॥पा०॥४॥ लोका-लोक प्रकाश परमगुरु, कहि न सके मति सीर। पाठक विजयविमल परमातम, प्रभुता परम सुधीर ॥पा० ॥५॥ ॐ ह्रीं परम० अ० ज० श्री केवलज्ञानकल्याणके अष्टद्रव्यं यजामहे स्वाहा॥

वासक्षेप चढ़ावे

पंचम निर्वाण कल्याणक पूजा

॥ दोहा ॥

इंद्रादिक सुर सब मिली, तीन भुवन सिरदार।
सब दरसी सर्वज्ञनी, महिमा करे अपार॥

राग–वसन्त, चाल–अतुल विमल मिल्या अखड गुणे मिल्या।

अतुल विमल प्रभुता प्रभुका लख, चोसठ इन्द्र उच्छव धरे रे। चार प्रकार के सुर सब मिल कर, समवसरण रचना करे ए ॥अ०॥१॥ रजत कनकवर रत्न प्राकारे, कनक रत्नमणि कंगुरे ए। वृक्षअशोक सिहासन शोभित, तीन छत्र चामर ढुरे ए ॥ अ० ॥ २ ॥ दुंदुभि प्रमुख श्रवणसुख दायक, गहिर सुरे वाजित्र घुरे ए। जानुप्रमाण पुष्पघन वरसत, जलज थलज विकसित सुरे ए॥ अ०॥३॥ साधु साधवी श्रावक श्राविका, इंद्रादिक सुरी सुरवरे ए। नरनारी तिर्यंग विद्याधर, द्वादश विध परिषद् भरे ए ॥अ०॥४॥ भविजन धर्म तणे उपदेशे, योजनगामि मधुरगिरे ए। प्रतिवोधत चोमुख श्रीजिनवर, निज निज भाषा अनुसरे ए ॥अ०॥५॥

॥ दोहा ॥

प्रगटपणे प्रभुकी प्रभा, प्रगट प्रकाशक रूप।
प्रगटी प्रभुता परमसम, परमातम पद भूप॥

चाल—बिगरी कौन सुधारे नाथ बिन ।

भूमंडल भविकमल विबोधन, दिनकर सम जिनराया रे ॥भू०॥ अणहुंते इक कोडि अमरपद, पंकज भमर लुभाया रे ॥भू० ॥१॥ ग्राम नगर पुर पट्टण विचरत, त्रिभुवननाथ कहाया रे । चोसठ इन्द्र करे जाकी सेवा, तन मन से लय लाया रे ॥भू०॥२॥ इन्द्राणी मिल मंगल गावत, मोतियन चोक पुराया रे। सर्व जीव हितकारक प्रभुजी, निःश्रेयस सुखदाया रे ॥भू०॥३॥ भव जलनिधि निर्यामक जगगुरु, तारक सकल कहाया रे । शासननायक संघ सकलकुं, प्रवचन तत्त्व सुनाया रे ॥भू०॥४॥ अनंतगुणाकर प्रभुजी की महिमा, वरने को कविराया रे। पर उपकारक प्रभुके पाठक, विजयविमल गुण गाया रे॥ भू० ॥ ५ ॥

॥ दोहा ॥

निज निज भाषा भविकजन, तृपत न सुनतहि श्रोत
मीठी अमृत सम गिरा, समझत श्रम नहिं होत ॥

॥ राग कहरवो ॥

जिनंदवा मिल गयो रे, दोय चरणुं पर ध्यान शुकल मन गहगह्यो रे ॥ जि०॥ ज्ञायक ज्ञेय अनंतनो रे, सव दरसी जिनचंद। सुरतरु सम जग वालहो रे, सेवत सुरनर इन्द। धर्म में लहलहो रे ॥ दो० ॥१॥ चौदम गुण थानक करे रे, आतम वीर्य अनंत। योग निरोधनकी क्रिया रे, सूखम वादरकंत। वंध सव टर गयो रे, सरव संवरभयो रे॥दो०॥२॥ घन कर आत्मप्रदेशनो रे, कर शैलेशी कर्ण। कर्म सकल दूरे किया रे, जोर्णवृक्ष जिम पर्ण, मुक्ति पद जिन लह्यो रे ॥दो०॥ ३ ॥ ज्ञान क्रिया कर कर्मकोरे क्षय कर पर अनुवंध। निजआतम रूपे लह्यो रे, शाश्वत सुख संवंध, सिद्ध शुद्ध बुध थयो रे ॥ दो० ॥ ४ ॥

॥ दोहा ॥

अकल अगोचर अगमगम, सिद्ध भए सुविशुद्ध।
परमातम प्रभु परमपद, चिदानंद अविरुद्ध ॥

॥ राग धन्याश्री ॥

चाल—तेज तरणिमुख राजे ।

तेज तरणिसम राजे, प्रभुजीको ॥ ते० ॥ एक समय प्रभु ऊरध गतिकर, मुक्तिमहल सुविराजे ॥ प्र० ॥ ते० ॥१॥ सादि अनंत सदा शाश्वतवर, अनंत महासुख छाजे । अचल अगोचर प्रभु अविनाशी, सिद्ध सरूप विराजे ॥ प्र०॥ ते० ॥२॥ निरुपाधिक निरुपम सुख प्रभुके, कहि न सके कविराजे । अजर अमर अक्षय अविकारी, सकलानंद सहाजे ॥ प्र० ॥३॥ संवत ओगणीसे तेरोत्तर (१९१३), श्रावण शुदि पख राजे। श्रीजिनराजतणा गुण गाया, पंचमी दिवस समाजे ॥प्र०॥ते०॥४॥ श्रीविक्रमपुर नगर मनोहर, श्रीसंघ सकल समाजे । पंच कल्याणक पूजा प्रभुकी, कीनी हित सुख काजे ॥ प्र० ॥ते०॥५॥ श्रीखरतरगच्छ नायक लायक, युगप्रधान पद छाजे । जंगमगुरु भट्टारक वर श्री, जिनसौभाग्य सुराजे ॥प्र०॥ते०॥६॥ प्रीतिविलास धर्म्मसुन्दर

गणि, अमृतसमुद्र सुभ्राजे। पाठक विजयविमल प्रभुके गुण, गावत घन जिम गाजे॥ प्र० ॥७॥ हंसविलास प्रवरगणिवरकी, प्रेरणया सुसमाजे। श्रीजिनवरकी स्तवना कीधी, धर्म्म प्रभावन काजे ॥प्र०॥ते०॥८॥ ॐ ह्रीं प० अ० जन्मजरा-मृत्युनिवारकेभ्यः श्रीमज्जिनेन्द्रेभ्यो निर्वाण-कल्याणके अष्टद्रव्यं यजामहे स्वाहा॥

पचकल्याणक पूजाकी आरती

॥ राग मालवी गोडी ॥

शुभ आरती प्रभुकी उदारचित्ते, करो भविक रसाल रे। प्रथम धूप सुगंध जिनकूं, उखेवो जिननाल रे ॥ शु०॥१॥ भाल निजकर तिलक सुन्दर, पहरपुष्प सुमाल रे। दक्षिणकर जिनराज जीके, कर आवर्त्त सुथाल रे ॥शु०॥२॥ यथासगते शुद्धभगते, करो दिल खुशियाल रे। द्रव्यभावे द्विविध पूजा, भविक भाव विशाल रे ॥शु०॥३॥ गुण अनन्त महन्त गावो, प्रभु परमदयाल रे। जन्म सफलो करो भविजन, कहे पाठक बाल रे ॥ शु० ॥ ४ ॥

दिलमें गहिये, एज्ञानथी अनुपम सुख लहिये ॥
म०॥७॥ ॐ ह्रीं परमा० श्रीमतिज्ञानधारकेभ्यो
जलं यजामहे स्वाहा ॥१॥

द्वितीय श्रुतज्ञान अष्टद्रव्य पूजा

॥ दोहा ॥

श्रुतधारक पूजन करो, भाव धरी मनरंग ।
उपगारी सिर सेहरो, भाखे जिन उछरंग ॥
मृगमद चंदन वाससुं, जो पूजे श्रुतअंग ।
अनुभव सुद्ध प्रगटे सही, पावे सौख्य अभंग ॥

॥ ढाल ॥

चाल—नाभिजीके नंदाजीसे लग्या मेरा नेहरा ना० ।

श्रुतज्ञानकी पूजाकर सीखो भवि सेहरा ॥
श्रु०॥ विनय सहित गुरु वंदन करके, लुल लुल
पायनमें गुरुदेवरा ॥श्रु०॥ तीन तीस आसातन
टाली, भगत करे भवि गुणगण गेहरा ॥श्रु०॥१॥
श्रीगुरु ज्ञान अखंडित वरसे, ज्यूँ पावस रुत वरसे
मेहरा ॥श्रु०॥ दश विध विनय करे श्रुत गुरुको,

सेवे ज्युं अलि फूलने नेहरा ॥श्रु०॥२॥ गुण मणि रयण भर्यो श्रुतसागर, देख दरस हरखावे मेरा जियरा ॥श्रु०॥ पूछन वायन वलि वलि करिये, सीखे वंछित ज्युं मुनि सेवरा ॥ श्रु० ॥३॥ गुरु भगती जैसी गणधरकी, वीर कहे सुण गौतम सेहरा ॥ श्रु० ॥ ऐसे गुरु भक्तिसे सीखो, ए श्रुतज्ञान सकल सुख देहरा ॥ श्रु० ॥४॥ गुरु विन और न को उपगारी, श्रीगुरुदेव नित गुण-मणि जैहरा ॥श्रु०॥ ऐसे गुरुकी कीरत करके, सुमति धरो दिलमें गुण गेहरा ॥श्रु०॥५॥

॥ ढाल वीजो ॥

चाल— नित नमिये थिवर मुनीसरा नि० ।

नित नमिये श्रुतधर मुनिवरा, नि० अरथे श्रीजिनराज वखाणे, सूत्रे श्रीगुरु गणधरा ॥ नि०॥१॥ मेघधुनी जिम भवि जन सुणके, हरखे ज्यूं केकीवरा । अंग इग्यारे गुणमणि धारक, बारे उपांग उजागरा ॥नि०॥ जगत उद्धारण तूं परमेसर, सकल विमल गुण आगरा। छेद पयन्ना

नंदी सेवो, मूल सूत्र भवि गुणकरा ॥नि०॥३॥ श्रुतधारी गौतम गुरु दीवो, पूरवचौद विद्याधरा। पहिलो आचारांग वखाणे, चरण करण गुण सुखकरा ॥ नि० ॥४॥ दूजो सूयगडांग सुणीजे, भेदतिसय तेसठ खरा। तीजो ठाणांग सूत्र विराजे, सुणता पाप मिटे परा ॥ नि० ॥५॥ चौथो समवायांग सुहावे, अर्थ अनेक करीवरा। पांचमे भगवइ महिमा करिये, सहस छतीस प्रश्नधरा ॥ नि०॥६॥ छट्ठो ज्ञाता अंग सुध्यावो धर्मकथा कहै जिनवरा। सातमो अंग उपासक कहिये, दश श्रावक प्रतिमाधरा ॥ नि० ॥ ६ ॥ आठमे अंगे जिनवर दाखे, अंतगड़ केवली मुनिवरा। नवमे अंगे भवि सुन धारो, अनुत्तरवाइ शुभकरा ॥ नि० ८ ॥ प्रश्नविचार कह्या जिन दशमें, अंगुष्ठादिक शुभ तरा। अंग इग्यारमें जिनवर दाखे, कर्मविपाक विविध परा ॥ ॥६॥ बारमो अंग जिणिंद वखाणे, अतिशय गुण विद्याधरा। अक्षर श्रुत वलि सन्नी कहिये,

सम्यक् भेद अधिक तरा ॥नि०॥१०॥ सादि भेद सपरजव लहिये, गम्यक् भेद सुणो नरा । अंग प्रविष्ट कहे जिनवरजी, भेद चौद सुणजो खरा ॥नि० ॥११॥ इम जो श्रीश्रुतज्ञान आराधे, भाव भगत कर वहु परा । सुमति कहे गुरु ज्ञान आराधो, वंछित पूरण सुरतरा ॥नि० ॥१२॥ ॐ ह्रीं श्रीपर० श्रीश्रुतज्ञानधारकेभ्यः अष्टद्रव्यं यजामहे स्वाहा ॥

तृतीय अवधिज्ञान अष्टद्रव्य पूजा

॥ दोहा ॥

अगर सेल्हारस धूपसे, पूजो अवधि उदार ।
बोध बीज निरमल हुवे, प्रगटे सुक्ख अपार ॥
नवल नगीने सारखो, ज्ञान वडो संसार ॥
सुरनर पूजे भावसुँ, महियल ज्ञान उदार ॥

॥ ढाल ॥

चाल—निरमल हुय भज ले प्रभु प्यारा, सब ससार० ।

अवधिज्ञानको पूजन कर ले, ज्यूं पावो भव पार सलूणा ॥अ०॥ ज्ञान वडो सुख देण जगतमें,

उपगारी सिरदार सलूणा ॥अ०॥१॥ भेद असंख कहे जिनवरजी, मूल भेद षट सार ॥स०॥ अ०॥ वड्ढमाण हियमांण वखाणै, सूत्रे श्रीगणधार, स० ॥अ०॥२॥ सुरनर तिरी सहु अवधि प्रमाणे, देखे द्रव्य उदार ॥स०॥ अवधि सहित जिनवर सहु आवे। थाये जग भरतार ॥स०॥३॥ ज्ञान विना नर मूढ कहावे। ढोर समो अवतार ॥स०॥ज्ञानी दीपक सम जग मांहे, पूजै सहु नरनार ।स०।४। ज्ञानतणी महिमा जग मांहे, दिन दिन अधिकी सार ॥स०॥ मूलमंत्र जग वस करवाको, एहीज परम आधार, स० ॥अ०॥५॥ ज्ञाननी पूजा अहनिस करिये, लीजे वंछित सार, स० ॥ ज्ञानने वंदी बोध उपावो, करम कलंक निवार, स० ॥ अ०॥६॥ इत्यादिक महिमा भवि सुणके, पूजो अवधि उदार, स०। सुमति कहे भवि भाव धरीने, सेवो ज्ञान अपार, स० ॥अ० ॥७॥ ॐ ह्रीं परमा० श्रीअवधिज्ञान धारकेभ्यः अष्टद्रव्यं यजामहे स्वाहा ॥

चतुर्थ मनपर्यव ज्ञान अष्टद्रव्य पूजा

॥ दोहा ॥

केतकी-दमणो मालती, अवर गुलाव सुगंध ।
भाव धरी पूजन करो, हरे कुमति दुरगंध ॥
मनपर्यव पूजा करो, विविध कुसुम मनरंग ।
महके परिमल चिहुं दिसे, पांमे सुजस अभंग ॥

॥ ढाल ॥

चाल—सेत्रुजानो वासी प्यारो लागे मोरा राजिंदा ।

जिनजीरो ज्ञान सुहावे म्हांरा राजिंदा । जि० ॥ जिनजीरो ज्ञान अनंतो सोहे, कहतां पार न आवे ॥म्हां० जि० ॥१॥ सन्नी नर मन परजव जाणे, ते मुनि ज्ञान कहावे ॥ म्हा० ॥ विपुलमतिने ऋजुमति कहिये, ए दुय भेद लहावे । म्हा० जि०॥२॥ अंगुल अढिए ऊणो देखे, ते ऋजु नाम धरावे ।म्हां०। संपूरण मानव मन जाणे तेही विपुल कहावे म्हा०॥३॥ मनगत भाव सकल ए भाषे, ते चोथो मन भावे ।म्हां०। एहनी महिमा

नित नित कीजै, तिम भवि नाम धरावे ॥म्हा० जि० ॥४॥ जगजीवन जगलोचन कहिये, मुनिजन ए नित ध्यावे ।म्हां०। दीक्षा ले जिनवर उपगारी चोथो ज्ञान उपावे ॥ म्हा० जि० ॥५॥ मनका संसा दूर करत है, सुणतां आण मनावे ।म्हां०। तनमन सुचिकर पूजन करले, जनम जनम सुख पावे ॥ म्हा० जि० ॥६॥ विविध कुसुमसे पूजा करतां, बोध लता उपजावे ।म्हां०।सुमति कहे भवि ज्ञान अराधो, श्रीजिनदेव बतावे ॥ म्हा० जि० ॥७॥ ॐ ह्रीं श्रीपरमा० श्रीमनपर्यवज्ञानधारकेभ्यः अष्टद्रव्यं यजामहे स्वाहा ॥

पांचमी केवलज्ञान अष्टद्रव्य पूजा

॥ दोहा ॥

प्रभु पूजा ए पंचमी, पंचम ज्ञान प्रधान ।
सकल भाव दीपक सदा, पूजो केवलज्ञान ॥
फल दीपक अक्षत धरी, नैवेद्य सुरभि उदार ।
भाव धरी पूजन करो, पावो ज्ञान अपार ॥

॥ ढाल ॥

चाल—तुम बिन दीनानाथ दयानिधि कोन खबर ले ।

तुं चिद्रूप अनूप जिनेसर, दरसणकी बलिहारी रे ॥तुं०॥ निरमल केवल पूरण प्रगट्यो, लोकालोक विहारी रे। केवलज्ञान अनंत-विराजे, क्षायक भाव विचारी रे ॥ तुं० ॥ १ ॥ ज्योत सरूपी जगदानंदी, अनुपम शिव सुख धारी रे। जगत भाव परकाशक भानू, निज गुण रूप सुधारी रे ॥ तुं० ॥२॥ सकल विमल गुण धारक जगमें, सेवत सब नरनारी रे, आतम सुद्ध सरूपी भविजन, गुण मणिरयण भंडारी रे ॥ तुं० ॥३॥ केवल केवलज्ञान विराजे, दूजो भेद न धारी रे। आतम भावे भविजन सेवो, जगजीवन हितकारी रे ॥ तुं० ॥ ४ ॥ अवर ज्ञान सब देश कहावे, केवल सरव विहारी रे। सर्व प्रदेशी जिनवर भाखे, साखे श्रीगणधारी रे ॥ तुं० ॥ ६ ॥ भए अयोगी गुणके धारक,

श्रेणी चढ़ी सुखकारी रे। अष्ट कर्मदल दूर करीने, परमातम पद धारी रे ॥ तु० ॥६॥ ऐसे ज्ञान वडो जगमांहे, सेवो शुद्ध आचारी रे ॥ सुमति कहे भविजन शुभभावे, पूजो कर इकतारी रे तु० ॥७॥ फल अक्षत दीपक नैवेद्यसे, पूजो ज्ञान उदारी रे। पूजत अनुभव सत्ता प्रगटे, विलसे सुख ब्रह्मचारी रे ॥ तु० ॥ ८ ॥ ॐ ह्रीं श्रीपरमात्म० श्रीकेवलज्ञानधारकेभ्यः अष्ट द्रव्यं यजामहे स्वाहा ॥

॥ कलश ॥

चाल---केसरियाने जिहाजको तिरायो,

असरण सरण कहायो, प्रभु थांरो ज्ञान अनन्त सुहायो ॥अ०॥ मति श्रुति अवधि अने मनपर्यव, केवल अधिक कहायो। भव्य सकल उपगार करत है, श्रीजिनराज बतायो ॥प्र०॥१॥ खरतर गच्छपति चंद्रसूरीश्वर, राजत राज सवायो। तेजपुंज रवि शशि सम सोहे, देखत दिल उलसायो ॥प्र०॥२॥ प्रीतसागर गणि शिष्य

सुवाचक, अमृतधर्म सुपायो। शिष्य क्षमा-कल्याण सुपाठक, सद्गुरु नाम धरायो ॥प्र०॥३॥ धरमविशाल दयाल जगतमें, ज्ञान दिवाकर ध्यायो। ज्ञान क्रियानो मूल जे कहीये, तत्वरमण मन भायो ॥प्र०॥४॥ बीकानेर नगर अति सुंदर, संघ सकल सुखदायो। शुद्धमति जिन धर्म आराधक, भगति करे मुनिरायो ॥प्र०॥६॥ उगणीसे चालीसे वरसे, आसु सुदि वरदायो। ज्ञान विजयकारक सब जगमें, नित प्रति होत सहायो ॥प्र०६॥ सुमति सदा जिनराज कृपासे, ज्ञान अधिक जस गायो। कुशलनिधान[१] मोहनमुनि भावे, ज्ञान तणो गुण गायो ॥प्र०॥७॥

१—तत्वदीपक।

॥ राग सारंग तथा मल्हार ॥

पूजा सतर प्रकारी, सुणियोरे मेरे जिन-(वर)की। परमानंद तिण अति छल्योरी सुधारस, तपत बुझी मेरे तनकी हो ॥ पू० ॥१॥ प्रभुकु विलोकि लमि जतन प्रमार्जित, करत पखाल शुचिधार वनकी हो। न्हवण प्रथम निजवृजिन पुलावत, पंककुं वरष जैसे घनकी हो ॥पू०॥२॥ तरणि तारण भवसिंधु तरणकी, मंजरी संपद्-फल वरधनकी। शिवपुर पन्थ दिखावण दीपी, धूमरी आपद् वेल मरदनकी हो ॥पू०॥३॥ सकल कुशल रंग मिल्योरी सुमति संग, जागी सुदशा शुभ मेरे दिनकी। कहे साधुकीरत सारंग भरि करताँ, आस फली मेरे मनकी हो ॥पू०॥४॥

द्वितीय विलेपन पूजा

॥ राग रामगिरी ॥

गात्र लूहे जिन मनरंगसुं हो देवा। गा० सखर सुधूपित वाससुं हांरे देवा वाससुं। गंध

कसायसुं मेलिये, नंदन चंदन चंद मेलीये रे देवा ॥१॥नं०॥ मांहे मृगमद कुंकम भेलीये, कर लीये रयणपिंगाणी कचोलीये ॥२॥ पग जानु कर खंधे सिरे रे देवा, भाल कंठ उर उदरंतरे। दुख हरे हारे देवा सुख करे, तिलक नवे अंग कीजिये ॥ ३ ॥ दूजी पूजा अनुसरें श्रावक, हरि विरचें जिम सुरगिरे। तिम करे जिणपर जन मन रंजीये ॥ ४ ॥

॥ राग ललित ॥

॥ दोहा ॥

करहुँ विलेपन मुखसदन, श्रीजिनचंद शरीर।
तिलक नवे अंग पूजतां, लहे भवोदधि तीर ॥
मिटे ताप तसु देहको, परम शिशिरता संग।
चित्त खेद सवि उपसमे, सुखमें समरसी रंग ॥

॥ राग विलावल ॥

विलेपन्न कीजे जिनवर अंगे। जिनवर अंग सुगंधे ॥वि०॥ कुंकुम चंदन मृगमद यक्षकर्द्दम,

॥ १ ॥ वास दशोदिशि वासते, पूजे जिन अंग उवंगु ए ॥ हां० ॥ लाछि भुवन अधिवासियो, अनुगामिकी सरस अभंगु ए ॥२॥

॥ राग गौडी तथा पूर्वी ॥

मेरे प्रभुजीकी पूजा आणंद मेले ॥ मे० । वास भुवन सोह्यो सब लोए, संपदा मेलेकी ॥ पूजा०॥१॥ सतर प्रकारी पूजा, विजय देवा तत्ता थेई । अप्रमत गुण तोरा चरण सेवाकी ।पू०।२। कुंकुम चंदनवासे, पूजीये जिनराज त्ताथेई । चतुर्गति दुख गौरी चतुर्थी धनकी ॥पू०॥३॥

पंचम पुष्पारोहण पूजा

॥ दोहा ॥

मन विकसे तिम विकसतां, पुष्प अनेक प्रकार।
प्रभुपूजा ए पंचमी, पंचमि गति दातार ॥

॥ राग कामोद ॥

चंपक केतकी मालती हां रे अ० ए, कुंद किरण मचकुंद। सोवन जाइ जूईका, बिउलसिरी

अरविंद ॥ १ ॥ जिनवर चरण उवरि धरे ए
हां रे अ०, मुकुलित कुसुम अनेक । शिव रमणीसे
वर वरे, विधि जिन पूज विवेक ॥२॥

॥ राग कानडो ॥

सोहेरी माई वरणे मन मोहेरी माई वरणे ।
विविध कुसुम जिनचरणे ॥सो०॥ विकसी हसी
जंपे साहिवकुं, राखि प्रभु हम सरणे ॥सो०॥१॥
पंचमि पूज कुसुम मुकुलितकी, पंचविषय दुख
हरणे॥सो०॥ कहे साधुकीरति भगति भगवंतकी,
भविक नरा सुखकरणे ॥सो०॥२॥

॥ छठी माल्यारोहण पूजा ॥

॥ राग आशावरीमां दोहा ॥

छठी पूजा ए छती, महा सुरभि पुफमाल ।
गुण गूंथी थापे गले, जेम टले दुखजाल ॥

॥ राग रामगिरी गुर्जरी ॥

हे नाग पुन्नाग मंदार नव मालिका, हे
मल्लिकासोग पारिध कली ए । हे मरुक दमणक

अष्टम गंधवटी पूजा

॥ दोहा सोरठो रागमां ॥

अगर सेल्हारस सार, सुमति पूजा आठमी।
गंधवटी घनसार, लावो जिन तनु भावशुं ॥१॥

॥ राग सोरठ ॥

कुंद किरण शशि ऊजलो जी देवा, पावन घन घनसारोजी। आछो सुरभि शिखर मृग नाभिनो जी देवा, चन्नरोहण अधिकारोजी ॥आ०॥१॥ वस्तु सुगंध जब मोरियो जी देवा, अशुभ करम चूरीजै जी ॥ आ० ॥ अंगण सुरतरु मोरियोजी देवा, तब कुमति जन खीजै जी (पाठांतरे) तब सुमतो जन रीझैं जी ॥२॥

राग सामेरी

पूजोरी माई, जिनवर अंग सुगंधै ॥जि०॥ पू० ॥ गंधवटी घनसार उदारे, गोत्र तीर्थंकर बांधै ॥ पू० ॥ १ ॥ आठमी पूजा अगर सेल्हारस, लावे जिन तनु रागै। धार कपूर भाव घन वरषत, सामेरी मति जागै ॥ पू० ॥२॥

नवमी ध्वज पूजा

॥ दोहा ॥

मोहन ध्वज धर मस्तके, सूत्र्व गीत समूल ।
दीजे तीन प्रदक्षिणा, नवमी पूज अमूल ॥

राग मेघ गोडी वस्तु छंद

सहस जोयण सहस जोयण हेममय दंड ।
युतपताक पंचे वरण, घुम घुमंत घूघरी वाजे ।
मृदु समीर लहके गयण, जाण कुमति दल सयल भाजे ॥ सुरपति जिम विरचे धजा ए, नवमी पूज सुरंग ॥ तिण पर श्रावक ध्वज वहन, आपे दान अभंग ॥१॥

॥ राग्र नट्टनारायण ॥

जिनराजको ध्वज मोहना, ध्वज मोहना रे ध्वज मोहना ॥ जि० ॥ मोहन सुगुरु अधिवासियो, करि पंच सबद त्रिप्रदक्षिणा। सधव वधू शिरसोहणा ॥ जि० ॥१॥ भांति वसन पांच वरण बन्यो री, विध करि ध्वजको रोहणां ॥

साधु भणत नवमी पूजा नव, पाप नियाणां खोहणां ॥ शिव मंदिरकुं अधिरोहणा, जन मोह्यो नहनारायण ॥ जि० ॥ २ ॥

दशमी आभरण पूजा

॥ राग केदारा दोहा ॥

दशमी पूजा आभरण, रचना यथा अनेक ।
सुरपति जिम अंगेरचे, तिम श्रावक सुविवेक ॥
शिर सोहे जिनवर तणे, रयण मुकुट झलकंत ।
तिलक भाल अंगद भुजा, श्रवण कुंडल अतिकंत॥

॥ राग अधभास वा गुंडमल्हार ॥

पांच पिरोजा नीलू लसणीया, मोती माणक लाल रसणीया, हीरा सोहे रे, मन मोहे रे धुनी चुनी पुलक करकेतना, जातरूप सुभग अंक अंजना, मन मोहे रे ॥ १ ॥ मौलि मुकुट रयणे जड्यो, काने कुंडल हांरे अति जुगते जुड्यो । उरहारू रे मनवारू रे ॥ २ ॥ भाल तिलक बांहे अंगदा, आभरण दशमी पूजा मुदा । सुखकारू रे, दुखहारू रे ॥ ३ ॥

॥ राग केदारो ॥

प्रभु शिर सोहे, मुकुट मणि रयणे जड्यो। अंगद बांह तिलक भालस्थल, येहु नीको कोन घड्यो ॥ प्र० ॥ १ ॥ श्रवण कुंडल शशि तरणि मंडल जीपे, सुरतरुसम अलंकर्यो। दुखके दार चमर सिंहासण, छत्र शिर उवरि धर्‍यो, अलंकृत उचित वर्‍यो ॥ २ ॥

एकादश फूलघर पूजा

॥ दोहा ॥

फूलघरो अति शोभतो. फूंदे लहके फूल।
महके परिमल फलमहा, ग्यारमो पूज अमूल ॥

॥ राग रामगिरी कौतकिया ॥

कोज अंकोलरायचेलि नव मालिका, कुंद मचकुंद वर विचिकलू हांरे ॥ अड० वि० ए ॥ तिलक दमणक दलं मोगरा परिमलं, कोमला पारिध पाडलू हां रे अ० पा० ए ॥१॥ प्रमुख कुसुमे रचं त्रिभुवनकुं रुचं, कुसुम गेहे विच तोर

णूं, हां रे अ० तो० ए ॥ गुच्छ चंद्रोदयं झुंबका उन्नयं, जालिका गोख चित्त चोरणूं हां रे अ० चो० ए ॥ २ ॥

॥ राग रामगिरी ॥

मेरो मन मोह्यो माईरी, फूलघर आणंद झिलै। असत उसत दाम वघरी मनोहर, देखत तबही सब दुरित खिलै ॥ फू० ॥ १ ॥ कुसुम मंडप थंभगुच्छ चन्द्रोदय, कोरणि चारु विनाण सझै। इग्यारमी पूज भणीहे रामगिरी विबुध विमाण जैसे त्रिपुरि भजै। फू० ॥२॥

द्वादश पुष्पवर्षा पूजा

॥ दोहा मल्हार रागमां ॥

वरषै बारमी पूजमें, कुसुम बादलिया फूल।
हरण ताप दुख लोकको, जानु समा बहु मूल ॥

(राग भीममल्हार गुंढमिश्र, देशी कड़खानी)

मेघ बरसै भरी, पुप्फ वादल करी, जानु परिमाण करि कुसुम पगरं। पंच वरणे बन्यो,

विकच अनुक्रम चण्यो, अधोवृंते नहीं पीड पसरं ॥ मे० ॥ १ ॥ वास महके मिले. भमर भमरी मिले, सरस रसरंग तिण दुख निवारी। जिनप आगे करे, सुरप जिम सुख वरे, बारमी पूज तिण पर अगारी ॥ मे० ॥ २ ॥

॥ राग भीम मलार ॥

पुप्फ वादलीया वरसे सुसमां ॥अहो पु०॥ योजन अशुचिहर वरसे गंधोदक. मनोहर जानु समा ॥ पु० ॥ १ ॥ गमन आगमनकी पीर नहीं तसु, इह जिनको अतिशय सुगुणे। गुंजत गुंजत मधुकर इम पभणे, मधुर वचन जिन गुण थुणे ॥पु० ॥२॥ कुसुम सुपरि सेवा जो करे, तसु पीर नही सुमणे। समवसरण पंचवरण अधो-वृंत, विबुध रचे सुमना सुसमा ॥पु०॥३॥ वारसी पूज भविक तिम करें. कुसुम विकसी हसी उच्चरे। तसु भीम बंधण अधरा हुवे. जे करे जं जे जिन नमा ॥ पु० ॥ ४ ॥

त्रयोदशाष्ट मंगलिक पूजा

॥ दोहा राग कल्याणमें ॥

तेरमी पूजा अवसरे, मंगल अष्ट विधान ।
युगति रचे सुमते सही, परमानन्द निधान ॥

॥ राग वसन्त ॥

अतुल विमल मिल्या, अखंड गुणे भिल्या सालि रजत तणा तंदुला ए । श्लषण समाजकं, पंचविध वर्णकं, चन्द्रकिरण जैसा ऊजला ए ॥१॥ मेलि मंगल लिखे, सयल मंगल अखे, जिनप आगे सुथानक धरे ए । तेरमी पूजविधि ते रमी मन मेरे, अष्टमंगल अष्टसिद्धि करे ए ॥२॥

॥ राग कल्याण ॥

हांहो पूजा बणी तेरी रसमें । अष्ट मंगल लिखे, कुशल निधान हे, तेज तरणके रसमें ॥ हां० ॥१॥ दप्पण भद्रासण नंद्यावर्त्त पूर्णकुंभ, मच्छयुग श्रीवच्छ तसुमें । वर्धमान स्वस्तिक पूज मंगलकी, आनंद कल्याण सुखरसमें ॥हां०॥२॥

चतुर्दश धूप पूजा

॥ दोहा ॥

गंधवटी मृगमद अगर, सेल्हारस घनसार।
धरि प्रभु आगल धूपणा, चउदमि अरचा सार ॥

॥ राग वेलावल ॥

कृष्णागर कपूरचूर, सोगंध पंचे पूर। कुंदरुक्क सेल्हारस सार, गंधवटी घनसार॥ गंधवटी घनसार चंदन मृगमदा रस भेलिये, श्रीवास धूप दशांग अंबर, सुरभि बहु द्रव्य मेलियै ॥ वेरुलिय दंड कनक मंडित, धूपधाणो कर धरे। भवबृत्ति धूप करंति भोगं, रोग सोग अशुभ हरै ॥ १ ॥

॥ राग मालवी गौडी ॥

सब अरति मथनमुदार धूपं, करति गंध रसाल रे ॥ देवा, कर० ॥ धास धूमा वलीय धूसर. कलुप पातिक गाल रे ॥ देवा, स० ॥१॥ ऊर्ध्वगति सूचंति भविकुं, मघमघे करनाल रे

॥ दे० ॥ चौदमी वामांग पूजा, दीये रयण विशाल रे। आरती मंगल माल रे, मालवी गौडी ताल रे ॥ दे० स० ॥ २ ॥

पंचदश गीत पूजा

॥ दोहा ॥

कंठ भले आलाप करि, गावो जिनगुण गीत।
भावो अधिकी भावना, पनरमी पूजा प्रीत ॥

॥ श्री रागे आर्यावृतं ॥

यद्वदनंतकेवल मनंत, फल मस्ति जैनगुणगानं।
गुणवर्णतान्वाद्यै, र्मात्राभाषालयैर्युक्तं ॥ १ ॥
सप्त स्वरसंगीतैः स्थानैर्जयतादि तालकरणैश्च ॥
चंचुरचारी चारै, गीतं गानं सुपीयूषं ॥ २ ॥

॥ श्री राग ॥

जिनगुण गानं श्रुत अमृतं। तार मंद्रादि अनाहत तानं, केवल जिम तिम फल अमृतं ॥ जि० ॥१॥ विबुध कुमार कुमरी आलापे, मुरज उपंग नाद जनितं। पाठ प्रबंध धुआप्रतिमानं,

आयति छंद सुरति सुमितं ॥ २ ॥ शब्दसमान रुच्यो त्रिभुवनकुं, सुर नर गावे जिन चरितं। सप्तस्वर मान शिवश्री गीतं, पनरमी पूजा हरे दुरितं ॥ जि० ॥३॥

पोडश नृत्य पूजा

॥ दोहा ॥

कर जोडी नाटक करे, सजि सुन्दर सिणगार।
भव नाटक ते नवि भमे, सोलमी पूजा सार ॥

॥ राग शुद्ध नट्ट ॥

काव्यं। शार्दूलविक्रीडित वृत्तं।

भावा दिप्पिमणा सुचारु चरणा, संपुन्न चंदानना,
सप्पिम्मासम रूव वेस वयसो. मत्तेभ कुंभत्थणा।
लावण्णा सगुणा पिकस्स रवई. गगाइ आलावणा,
कुम्मारी कुमगवि जिनपुरओ. नच्चंति सिंगारणा।

॥ गद्यं ॥

तएणं ते अट्ठसयं कुमार कुमरीओ सूरियाभेणं देवेणं संदिट्ठा रंग मंडवे पविट्ठा जिणं नमंता गायंता वायंता नच्चंतेत्ति ॥

॥ रागनट्ट त्रिगुण ॥

नाचंति कुमार कुमरी, द्रागडदि तत्ता थेइय, द्रागडदि द्रागडदिकि थोंग थोंगनि मुखे तत्ता थेइय ॥ ना० ॥१॥ वेणु वीणा मुरज वाजे, सोलही सिणगार साजे, तनन्न न्नन्नानेइय, घणण घणण घूघरी घमके, रणंणणंणं णा णेइय ॥ ना० ॥ २ ॥ कसंती कंचुकी तरुणी, मंजरी झंकार करणी, सोभंति कुमरीय, हस्तकृत हावादि भावे, दद्दंति भमरीय ॥ ना० ॥ ३ ॥ सोलमी नाटक्क पूजा, सुरीयाभे रावण्ण कीनी । सुगंध तत्ता त्थेईय, जिनप भगते भविक लीणा, आणंद तत्ता थेईय ॥ ना० ॥ ४ ॥

सप्तदशमी वाजित्र पूजा

॥ दोहा ॥

ततघन सुषिरे आनधे, वाजित्र चउविध वाय ।
भगत भली भगवंतनी, सतरमी ए सुखदाय ॥

॥ गाहा ॥

सुरमद्दल कंसालो, महुरय मद्दल सुवज्जए पणवो ।
सुरनारि नंदि तूरो, पभणेइ तूं नंद जिणनाह ॥

॥ राग मधुमाधवी ॥

तूं नंदिआनदि बोलत नंदी, चरण कमल जसु जगत्रय वंदी । ज्ञान निर्मल बावन मुख वेदी, तिवलि बोले रंग अतिही आनंदी ॥ तूं० ॥ १ ॥ भेरी गयण वाजंती, कुमति त्याजंती ; प्रभु भक्ति पसाये अधिक गाजंती । सेवे जैन जयणावंती, जैनशासन, जयवंत नंदंती । उदय संघ परिपरिय वदन्ती ॥ तूं० ॥२॥ सेवि भविक मधु माधनफेरी, भव नी फेरी नप्पभणंतो, कहे साधु सतरमी पूज वाजित्र सब, मंगल मधुर धुनिकर कहंती ॥ तूं० ॥३॥

॥ कलश ॥

॥ राग धनाश्री ॥

भवि तुं भण गुण जिनके सब दिन, तेज

तरणि मुख राजै । कवित शतक आठ थुणत शक्रस्तव, थुय थुय रंगै हम छाजैं ॥ भ० ॥१। अणहिलपुर शांतिशिव सुखदाई, नवनिधि सिद्धि आवाजै । सतर सुपूज सुविधि श्रावककी भणी मैं भगति हित काजै ॥ भ० ॥ २ ॥ श्री जिन-चन्द्रसूरि खरतर पति, धरम वचन तसु राजै । संवत सोल अढार श्रावण धुरि, पंचमी दिवस समाजै ॥भ०॥३॥ दृयाकलश गुरु अमरमाणिक्य वर, तासु पसाये सुविध हुइ गाजै । कहे साधु-कीरति करत जिन संस्तव, सब लीला सुख साजै ॥ भ० ॥४॥

पण्डित कपूरचन्दजी कृत

बारह व्रतकी पूजा

प्रथम समकित व्रत दृढ़करण जल पूजा

॥ दोहा ॥

व्रत बारे आदर करी, पूजा तेर विधान।
आनन्दादिक संग्रही, सतम अंग प्रधान॥

॥ ढाल ॥

राग मरपठो, चाल—ज्योति सकल जग जागती
हा रे अइयो जा०

ज्योति विमल जग झलहले हां रे अइयो झलहले ए, सासनपति जिनचन्द, त्रिकरण प्रणमन करि नमूं ॥ वीर चरण अरविंद ॥ वि० ॥१॥ न्हवण १ विलेपन २ वासनी ३ हां रे० मालं ४ दीवंच ५ धूवणियं ६ फल ७, सुमंगल ८ तंदुला ९ ए ॥ हां रे० ॥ असलं दप्पणंच १०

जिनजीके न्हवण करणते, भव भय दुखदल दाघ समाई ॥ जि० ॥३॥ द्रव्य भाव विध समकित फरसे, ते नर नरक निगोद न जाई ॥ जि० ॥४॥ याते भविजनके दुख नासे, कपूर कहे सुर होत सहाई ॥ जि० ॥५॥

॥ काव्य ॥

परमलंकृत संस्कृतश्रद्धया । स्नपति योजिनचंद्रमिमंमुदा ॥ भवभयं परिमुच्य सदोदयं भजति सिद्धिपदं सुखसागरं ॥१॥ ॐ ह्रीं श्रीपरमात्मने अनं० जन्म० श्रीमत्समकितव्रत दृढकरणाय जलं यजामहे स्वाहा ॥

दुजी प्राणातिपात विरमणव्रत चंदन केशर विलेपन पूजा ।

॥ दोहा ॥

प्राणातिपात विरमण व्रते, छंडो जंतु विनास ।
इणसुं शिवसुख ना मिले, हिंसा दोष विलास ॥

॥ उल्लालो ॥

तिहां दर्शनाण सुचरण अणसण । धीर

वीरज जानिये ॥ तप इम सकलना सिद्धि गज-वसु, पणतिवार सुठानिये ॥ अतिचार वार निवार इणपर, तुर्य गुणपद मानिये । गुण पंचमी तिम थूल प्रत्या,-ख्यान मान वखाणिये ॥१॥

॥ राग वरवो ॥

चाल---हमकू छाड चले वन माधो, राधा,

भविजन जीवदया व्रत धारो, सम परिणाम संभारो रे ॥ भ० ॥ टेर ॥ अपराधी पिण जीव न हणिये, भाखे जगदाधारो रे । देशविरतधर ने पिण भाख्यो, विन अपराध न मारो रे ॥ भ० ॥१॥ गो गज सेंधव महिसादिकने, बंधन वध न विचारो रे । कीजे न अवयव छेद त्रिकाले, जलचारो नविसारो रे ॥ भ० ॥२॥ कीडी कुंजरने सम गिणिये, सुख दुख जोग विकारो रे । थावर त्रस पंचेंद्रियादिकनो, होय रहिये हितकारो रे ॥ भ० ॥३॥ ए व्रत रत चित जे नर जगमें, सुर नर गण मन प्यारो रे । तेहिज लोभ महाभट

ढकण राहु निटोल रे । शिवपुर नगर पथि शबर सरिखो, अरति व्यापन घोलरे ॥ वाल्हा अर० सु० ॥२॥ निपट कूट कलाप करिने, पर गुपत मत खोल रे । ऋण विधौ धन धान्य निकरै, कपट कूट न तोल रे ॥ वाल्हा कप० सु० ॥३॥ कूट लेख कुसाख भरिने, रचय मा डमडोल रे ॥ अन्य सिरसि कलंक धरिने, चरित छांतु न बोल रे । वाल्हा चरि० सु० ॥४॥ वसु नरेसर वृथा रचिने, लह्यो कुगति कचोल रे । दुतिय व्रत रस राग भैरवी, कुशलसार विमोल रे ॥ वाल्हा कु० सु० ॥५॥

॥ दोहा ॥

जगदाधार जिनेन्द्रने, पूजो वास रसेण ।
शिव वनिता वस कीजिये, पूजा त्रयतमएण ॥

॥ राग गरवो ॥

चाल—भवि चतुरसुजाण परनारीसुँ प्रीतडी कबहु न कीजिये

भवि भाव धरी भव सागर निसतारक जिन

पनि सेवोये ॥ भवि० ॥टेर॥ बावनचन्दन खंडन करिये, तेहमां वलि कुंकम रस भरिये, मृगमद परिमलता अनुसरिये ॥भ०॥१॥ कंकोल सुवासित वलि कीजे. तिम विविध कुसुम रसकस दीजे, ए चूरण विधि निज वस कीजे ॥भ०॥२॥ इम वास रसे जे जिन पूजैं, तिणसे सवि करम सबल धूजे, सुख संपति जाय न घर दूजे ॥भ० ॥३॥ सुर किन्नर नर शासन धारे, विन समर्यां सहु संकट वारे, ए पूजन मन वछित सारे ।भ० ॥ ४ ॥ विमला कमला सबला पावे, जे प्रभु गुणगण भावन भावे, इम चन्दकपूर सुजस गावे ॥ ५ ॥

॥ काव्य ॥

मृगमदांबरघुसृणमिश्रितै, वरवरास सुचंदनसंस्कृतै ॥ विधति यो जिनपूजन मंजसा, स लभते निभृतिं किल वासकैः ॥ ॐ ह्रीं श्रीपर० मृपात्रादत्याग व्रतधारणाय वासक्षेपं यजामहे०

कोटि करम दुख जाला ॥ मैं० को० ॥ सुमति सुरति अनुभव वलि प्रगटे, त्रासे कुमति कुचाला ॥ मैं० त्रा० भवि० ॥४॥ ए विधि संवर द्वार विकासे, पाप सदन मुख ताला ॥ मैं० पा० ॥ कपूर कहे प्रभु चरण सरणमें, मंगलमाल विशाला ॥ मैं० मं० भवि० ॥५॥

॥ काव्य ॥

सरससुद्गर चंपकपाडलै । मरुकमालति केतकीसरकजै ॥ विधिविशुंस्य जिनं परिपूजयेत् स्रजमजस्र मनंत सुखेच्छुकः ॥१॥ ॐ ह्रीं श्री पर० अदत्तादान विरमणव्रत पूजा ॥४॥

पांचमी मैथुन विरमण व्रत दीपक पूजा

॥ दोहा ॥

व्रत चोथे मैथुन तजो, भजो भविक भगवान ।
शीलाराधन योग से, लहिये शम्म वितान ॥

॥ राग सोरठ ॥

चाल---कुंद किरण ससी ऊजलो रे देवा

मन वच काया थिर करी रे वाला, कलुष

पाठान्तर—इणसुं नरक निवास में, लहिये दुख वितान ।

कुशील निवारो रे आछो। ऐह नरक रमणी तणो रे वाल्हा, शोदर अति हितकारो रे आछो ॥१। नृसुर पसु सहु जातनो रे वाल्हा, विषय कलित बहु दोषे रे आछो। ते परिहरीने थिर रहो रे वाल्हा, निज दारा संतोषे रे आछो ॥२॥ लंकापति नरके गयो रे वाल्हा, ए मैथुन रस धारु रे आछो। एहने तजकर केइ लह्या रे वाल्हा, जीव सकल सुख सारु रे आछो ॥३॥ शीलरतन जतने धरो रे वाल्हा, तस दूपण सब छंडी रे आछो। कुशल कला करिने लहो रे वाल्हा, शिवसुख माल प्रचंडी रे आछो ॥४॥

॥ दोहा ॥

दीपक पूजा पंचमी, करे सकल दुख नास।
लोकालोक विलोकने. प्रगटे बोध प्रकाश ॥

॥ राग बरवो देस मे ॥

चाल—केसरियाने जिहाजको लोक तिरायो

भाव धरी दीपक पूज रचावो, याते शिवसुख

॥ दोहा ॥

छठी पूजन धूपकी, धूपो जिनवर अंग।
कुसुरभि करम तणी हरे, दायक शिव सुखचंग।

॥ राग देशाख वा ठुमरी ॥

चाल—प्यारी छिव वरणी न जाय, थांरे मुखडारी हो वारीराज

ऐसी विध पूजन, भाई दिल धार, धूपधूम घनसार धार करी ॥ टेर ॥ याभवभीम वारि सागरमें, तरण तरंडक तरल विचार ॥ धू० ॥१॥ चंदन देवदारु वलि अंबर, मृगमद गंधवटी घन-सार ॥धू० २॥ ऐसे सुरभि द्रव्य बहु मेली, तिण में सेल्हारस न विसार ॥धू० ३॥ मणियुत कंचन धूपदानमें, विमलानलथी करी सुप्रचार ॥धू० ४॥ कपूर करत नुतिया जिनपूजा, भविजन गणकी तारणहार ॥धू० ५॥

॥ काव्य ॥

नानासुगन्ध वसुनिर्मितसारधूपं। चाकर्षितं भ्रमरवृन्दमभिर्हि येन ॥ श्राद्धाश्रये विधिनिवस्य

विशालभक्त्या । धूपेर्जिनाधिपतिनं शिवदंमुदावै ॥१॥ ॐ ह्री श्रीपर० परिग्रहमानव्रतधारणाय धूपं यजामहे स्वाहा ॥

सातमी दिशिपरिमाणव्रत कुसुम पूजा

॥ दोहा ॥

छठ्ठो व्रत दिशमानको, गमनागमन निवार ।
अकुशलता सवि उपसमे, श्रेय संपजे सार ॥

॥ राग गरवो ॥

चाल—सिद्धाचल मडण स्वामीरे,

श्रीशिवसुख संपति वरिये रे, भव भय दुख वारण करिये रे। कर दिसपरमाण जे चरिये ॥ रसीला, भाव विमल दिल धरिये रे, वाला धरिये तो समरस भरिये ॥ र० भा० ॥१॥ अध उर्ध ने तिरछ वखाणो रे, दिशि विदिशिने तेम प्रमाणो रे, ए छे संकट जलधिनो राणो ॥ र० भा० ॥२॥ ऐमां गमनागमन निवारो रे, ओ छे कुमति दुरति भरतारो रे, इक चक्री लह्यो दुख भारो ॥ र० भा० ॥ ए व्रत शिवसाधन चंडो रे,

तुमे भविजन एह न खंडो रे, कहे कुशल कला-
नित मंडो । र० भा० ॥४॥

॥ दोहा ॥

भवियण पूजा सातमी, कीजे भक्ति विशाल ।
ससुरभि नाना जातना, विमल कुसुम भरथाल ॥

॥ राग धन्याश्री ॥

चाल—कबहु में नीके नाथ न ध्यायो,

प्रभुजीकी फूले पूजन सारो, प्र० ॥टेर॥ श्रीजि-
नजीके चरण कमलमें, अलि समता गुण धारो
॥प्र० ॥१॥ चंपक कुंद गुलाब केवडा, पारधि
नाग कलारो ॥ जासु दमण वासंति मोगरा,
पाडल लाल मंदारो ॥ प्र० ॥२॥ इम नानाविध
कुसुम घटाकर, भाव विमलजल भारो, तो
लहिये भविजन ध्रुव करिने, अचिर थकी भव
पारो ॥ प्र० ॥३॥ व्रत धर फूल कलाप रुचिर
ग्रहि, पूजत जे जग तारो ॥ कपूर कहत जिन
चरण शरण लहि, करम सबल दल मारो ॥ प्र० ४ ॥

॥ काव्य ॥

गंधामलादि गुण लक्षणलक्षितैर्वै पुष्पोत्करैर-खिलगुंजित चंचरीकैः । संसेवयेद्विविध जाति समुद्भवैर्यो । जैनेश्वरं व्रजतिसोह्यचिराच्छिवंना ॥१॥ ॐ ह्रीं श्रीपर० दिसिपरिमाण व्रत ग्रहणाय पुष्पं यजामहे स्वाहा ॥

आठमीं भोगोपभोग विरमण व्रत अष्टमगल पूजा ।

॥ दोहा ॥

जगनायक पद कमलमें, धरिये करि मन भृङ्ग ।
भोग अने उपभोगना, ए सहु व्रत गिरिशृङ्ग ॥

॥ ढाल ॥

चाल–सिद्धचक्र पद वदो रे भविका, ए

सकल सचित ने द्रव्य विकृति, वाहन वलि तंबोल । वसन कुसुमदल पानहि तिम वलि, सयण विलेवण घोल रे ॥ भविका, इन व्रतमें मन मंडो, अघनग नें पवि दंडो रे ॥ शिव सुख रयण करंडो रे ॥ भविका इ० ॥१॥ ब्रह्मचर्य

दिशि न्हाण भक्त इम, नियम चतुर्दश माल ॥ प्रतिदिन भाव हृदय धरि करिये, एहनी सार संभाल रे ॥ भ० इ० ॥२॥ तिम ही अभक्ष करोत्तर त्रिंसत, अखिल विपुल महि कंदो । कालक्षीण सहू द्रव्य अजाण्यो, फल निशि भोजन छंडो रे ॥ भ० इ० ॥३॥ विविध अप्पोल दुप्पोल विभेदे, अशनारंभ विसाल* ॥ इंगाला-दिक करण करावण कर्मादान कुचाल रे भ० ॥ ४ ॥ ए[†] छंडे ते शिवसुख मंडे, खंडे कुगति दुकाल । सहजानंद शस्य सुख प्रगटे प्रवदे त्रिजग कृपाल रे ॥ भ० इ० ॥ ५ ॥ इण व्रत करि चित मंदिर भरिये, तरिये भवजल पार । अनुभव चन्द्र सुधा झड मंडे, कुशल कला निरधार रे ॥ भ० इ० ॥६॥

॥ दोहा ॥

मंगल पूजा आठमी, करम दलन असि धार ।
करिये श्रीजिनराजकी, वरिये शर्म्म अगार ॥

* वितान † कर्मादान पंचदश तजिने वरिये विरति विमान

॥ राग ठुमरी ॥

चाल--तुम विन दीनानाथ दयानिध, कोन खबर ले मेरी रे

भविजन भावे श्रीजिनवरको, मंगल पूजा कीजे रे ॥ वाल्हा मं० ॥ टेर ॥ श्लीलायन शरलाशन नंद्या-वर्त्त कुंभ निरमीजे रे। मीन-युगल श्रीवच्छ सरावनो, संपुट स्वस्ति करीजे रे ॥ वाल्हा सं० भ० ॥ १ ॥ ए अडमंगल मंडण कारण, कंचन थाल रचीजे रे। रुचिराखंड विमल गुणधारी, तंदुलसे लिख लीजे रे ॥ वाल्हा तं० भ० ॥ २ ॥ निज मन भक्ति भाव धर भविका, प्रभु सनमुख धर दीजे रे। तो सुखधाम मुक्तिपुट भेदन. निवसन कृत्य लहीजे रे ॥ वाल्हा नि० भ० ॥ ३ ॥ स्वांत गगन सम सूर्योदयथी, कोटि करम तम छीजे रे। प्रगट प्रताप पीन जिन चरणे, चंद कपूर नमीजे रे ॥ वाल्हा चं० भ० ॥ ४ ॥

॥ काव्य ॥

यो सत्कांचन भाजने सुचितरे मण्योत्त-

मैर्मंडिते । श्लीलान्यष्टसुमंगलानि विधिना संड्य प्रभो सन्मुखे॥ भक्तात्मा परिढोकयेद्दुच्चिपरः सोघव्रजंनासयेत् । भित्ते दुर्गति भूधरंच लभते स्वर्गादि मोक्षाश्रयं ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं श्रीपर० भोगोपभोग व्रत उपदेशकाय अष्टमंगलं यजामहे स्वाहा ॥

नवमी अनर्थदंड विरमणव्रत अक्षत पूजा ।

॥ दोहा ॥

भवि ए व्रत अष्टम धरो, अनरथदंड विचार ।
पाप चिरंतन उपसमे, प्रगटे पुन्य प्रचार ॥

॥ ढाल ॥

चाल---सुगुण सनेही साजन श्रीसीमंधरस्वाम

त्रिकरण शुद्ध निसुण भवि अनरथ दंड विचार, समकित सुभटनो गंजन भंजन संवर द्वार । मनमथ बोध विकाशक शास्त्र पठन अधिकार, मुख भ्रू दृग तनुथी करे, भंड कुचेष्टागार ॥ १ ॥ हास्यथकी वलि कुवचन भाषण

मुखर प्रबंध, ऊखल मूसल घरटादय अति धरण दुरंध । स्नान समे जल तेल अधिकतर अप्रतिबंध,[†] विन कारण षट् काय विराधनमें दुखदंध ॥ २ ॥* इंगालादिक करण करावण सकल विधान, उदर भरण पंचोत्तर दसविध कर्मादान । इम सहु अनरथ करम अवर पिण दुखनी खाण, व्यर्थपणो मनमान्या छेदे पुन्य प्रधान ॥ ३ ॥ इणकर पूर्वे केइ गया नर संकट धाम, व्रत ग्रहीने रहिये तब लहिये शिव सुख ठाम । ए व्रत तरणी भवोदधि तारण तरण प्रकाम, कुशल कला नित करतां प्रगटे अभिनव माम ॥ ४ ॥

॥ दोहा ॥

नवमी श्रीजिनराजनी, पूजा परम विलास ।
विमलाक्षत भरि भाजने, भविजन करो प्रकास ॥

† इसके बाद रत्नागर में यह पाठ है —
पाप विधाना देश प्रकाशन दूषण संध । गरग नग्न धृत पात्र मात्र विन छादन दान । धरण करण सुविवेक विकल तिम दाना दान ।

* हिंसा विकथा पर विपरीत विचार विधान । स्नानादिकरण दरशन नीरादिक पान्न यान ।

॥ राग पीलू ॥

चाल—अव तो उधार्यो मोहि चहिये जिनंदराय, राखुं भरो०

श्रीजिनवरजीकी सेवा सारे, सो भवभय दूख दूर निवारे ॥ श्री० ॥ टेर ॥ तंदुल विमल सकल गुण मंडित, खंडित दोषरहित उर धारे। कंचन पात्र भरि जिन आगे, ढोकन बुद्धि प्रवल सुविचारे ॥ श्रीजि० ॥ १ । या पूजन जन तन मन रंजन, गंजन कुगति कुवोध विदारे । सवल करम नग भेदनहारो, सघन भवोदधि पार उतारे ॥ श्रीजि० ॥२॥ सुमति सानुभव आण मिलावे, ते पिण पद शिवशर्म समारे । पीन महोदय धार भाव धरी चन्दकपूर सनूर निहारे ॥ श्रीजि० ॥३॥

॥ काव्य ॥

यो खंडजाति गुणवृन्द समन्वितानि । ना ढोकयेद्विपुल निर्मल तंदुलानि ॥ कर्म्मावलिं झटति छेद्यहिमज्जिनाग्रे । सो वै भजेच्छिवसुखं

सुतरामनन्तं ॥१॥ ॐ ह्रीं श्रीपर० अनर्थदंडस-मूलं मोचनाय अक्षतं यजामहे स्वाहा ॥

दशमी सामायक व्रत पूजा

॥ दोहा ॥

नवमो नवनिधि जाणिये, सामायक व्रत सार ।
सुर जेहनी आसा करे, सुरतरु सम दातार ॥

॥ ढाल ॥

चाल—-आय रहो दिल बागमें, हो प्यारे जिनजी ।

सामायक व्रत पाल रे, भविक जन सामा० ॥ टेर ॥ त्रिकरण त्रिकयोगे इक महुरत, निरतीचारे चाल रे ॥ भ० सा० ॥१॥ गृह व्यापार तजीने सुभ मन, धरि निरवद्य विसाल रे ॥ भ० सा० ॥२॥ मन वच वपु प्रणिधान असेवन स्मृति विहीनता टाल रे ॥ भ० सा० ॥३॥ द्वात्रिंसत दूषण परिहरिने, पंचम गुण घर झाल रे ॥ भ० सा० ॥४॥ इम धनमित्र तणो पर सीझो, कुशल कला परनाल रे ॥ भ० सा० ॥५॥

॥ दोहा ॥

दशमी दर्पण पूजना, कीजे श्रावक शुद्ध।
सुर पादप शम शंकरण, हरण पाप संक्रुद्ध ॥

॥ राग कालिंगडो ॥

चाल—नेम प्रभुजीसुँ कहज्यो जी म्हारा

जिन पूजनमें रहिये रे, म्हारा जि० । मन वंछित फल लहीये रे, म्हा० जि० ॥टेर॥ कंचन मणिरतनेकर जडियो, वर दरपण कर गहीये। जिनवर सनमुख दाखन विधिसें, सकल करम वन दहीये रे, म्हा० जि० ॥१॥ प्रभुजीकी सेवा सब सुखदाई, भाव भक्ति उर चहीये। शिव वनिता तुम प्रेम विलूधे, अपर अधिक किम कहीये रे म्हा० जि० ॥२॥ निजकशरीर प्रमाद वसे करि, भव दल भीति न सहिये। सुभ मन समकित वीर संग ले, चंदकपूर निवहीये रे ॥ म्हा० जि० ॥३॥

॥ काव्य ॥

रुचिर निर्मल दर्पणदर्शनं। विनयभृध्रि-

दयकिलकारये। जिनपतेरचिराद्भवसंगमं* । स च निरस्य भजेच्छिवमंजसा ॥१॥ ॐ ह्रीं पर० सामायकव्रतग्रहण दृढकरणाय दर्प्पणं यजामहे०

इग्यारमी देशावगासीक व्रत नैवेद्य पूजा ।

॥ दोहा ॥

दसमो व्रत हिव भवियणा, धारो धरि वरभाव ।
संसारार्णव गहिरनो, तारण वरनर नाव ॥

॥ ढाल ॥

चाल—सिद्धाचल गिरि भेट्या रे, धन भाग हमारा

श्रद्धा धर मन भाजे रे, घन पाप तिहारा ॥ श्र० ॥ टेर ॥ विमलसकल सुभ विनय धरीने, गुरु मुख वचन हजारा। ए व्रत सुन्दर दिल धरो भविजन, देशावकास विचारा रे ॥ घ० श्र० ॥ १ ॥ द्रव्यानयन प्रेक्ष प्रयोगे, शब्द रूप अनुसारा। पुद्गल प्रेक्षण प्रभृति सकलना, तजिये दूपण धारा रे ॥ घ० श्र० ॥ २ ॥ परमोत्कृष्ट जघन्य प्रकारे, प्रत्याख्यान प्रचारा। सहु

* चिरदेवस

म्हारा लाल ॥ प्र० ॥ टेर ॥ पोसह व्रत चित मांहि, विनय धर धारिये ॥ म्हा० वि० ॥ ते पिण दुविध प्रकार चतुर न विसारिये ॥ म्हा० च० ॥ प्रति वासर प्रति पर्व, सजे तिम सारिये ॥ म्हा० स० ॥ १ ॥ पडिलेहण धुर धार, सकल किरिया करो ॥ म्हा० स० ॥ परिठावण विधि-वाद, सयाधर आदरो ॥ म्हा० म० ॥ खटकाया संघट तजीने संचरो ॥म्हा० त० ॥ अचपल थइ पच्चखाण, विविध मन संभरो । म्हा० वि० ॥२॥ वलि सहु दूषण टालिने, पाप निकंदिये ॥ म्हा० पा० ॥ चौगति च्यार कषाय, करम दल छंदिये ॥ म्हा० क० ॥ भवनिधि तारण तरण, सुगुरु पद वंदिये ॥ म्हा० सु० ॥ कुशल कला दल माल, करी चिरनंदिये ॥ म्हा० क० ॥ ३ ॥

॥ दोहा ॥

द्वादशमी ध्वज पूजमें, घोषण देइ अमार ।
धरिये द्वादश भावना, तरिये भवजल पार ॥

॥ राग देशाख ॥

चाल---कुबजाने जादू डारा ।

प्रभुजीसे प्रीत लाना, करि ध्वज पूजनविधाना हो ॥ प्र० टेर ॥ जोयण सहसमान मणि मंडित कंचन दंड रचाना हो ॥ प्र० ॥१॥ पंच वरण युत वसन पताका, अधिवासित लहकाना हो ॥ प्र० ॥२॥ ढक्कनाद करि तीन प्रदक्षिण, रोहण विधि मन भाना हो ॥ प्र ॥३॥ याविधि सकल करम रिपु दारण, ज्योतिमें ज्योति समाना हो ॥ प्र० ॥४॥ जगतारण श्रीजिन दरसणसे, चन्द-कपूर लुभाना हो ॥ प्र० ॥५॥

॥ काव्य ॥

भव्यार्च्चति ध्वजवरैःससुभैः सलीलें, जैनेश्वरं-कनकदंडयुततैःससोभैः । कर्मारिवृन्दजयछद्म समन्वितैर्यो । वै सो भजैच्छिद्दिवादिसुराज्य लक्ष्मीः ॥१॥ ॐ ह्रीं श्रीपर० पोपध व्रत दृढकरणाय ध्वजं यजामहे स्वाहा ॥

तेरमी अतिथिसंविभाग व्रत पूजा ।

॥ दोहा ॥

द्वादशमो व्रत सुख फलद, साधु दान सनमान ।
अजरामर पद संपजे, सालिभद्र अनुमान ॥

॥ राग कजली ॥

चाल---मेरो मन मोह्यो माई, आनन्द झीले, आ०

साधु दानव्रत भवि हृदय धरो, हृदय धरो रे भाई हृदय ॥सा०॥ व्रत संयमगत परलिंगीने, पडिलाभन मति रिजुन करो ॥ रिजु० भा० सा० ॥१॥ जिनमत मुनिवर चरण नमीजे, असनादिक देइ सुकृति वरो ॥ सु० भा० सा० ॥२॥ वलि पंचातिचार निवारी, परम विरतीना विघन हरो ॥ वि० भा० सा० ॥३॥ श्रीश्रेयांस ने चंदनबाला, अनुमाने पद निर्वृत्ति वरो ॥ नि० भा० सा० ॥४॥ कुशल कला सुविसाल करीने, भवजल सागर झटति तरो ॥ झ० भा० सा० ॥५॥

॥ दोहा ॥

फल दल पूजा तेरमी, भरि भाजन कमनीय ।
भविक रचो भगवंतनी, भव विषधर दमनीय ॥

॥ राग ख्याल ॥

चाल—लोभी नेना रे, लोभी नेना हो द०

लोभी सेणा रे लोभी सेणा हो पूजन के लो० टेर ॥ पूजन विधि प्रभुकी दिल धर ले, थिर कर मन तनु वैणा ॥ हो० पू० ॥ १ ॥ श्रीफल पूंगी बीजपूर वर, आम्र कदली फल लेणा हो पू० ॥ २ ॥ इम नानाफल गहि प्रभु आगे, भरि भाजन धर देणा ॥ हो पू० ॥ ३ ॥ भक्ति विमल सुचितर धर मनमें, प्रभु समरण दिन रेणा ॥ हो पू० ॥ ४ ॥ कपूर कहे प्रभु पद पंकजमें, षट्पद भए युग नेणा ॥ हो० पू० ॥५॥

॥ कलश ॥

हां हो यश धारा, हां हो जस धारा, प्रभुजीका वचन अमृत यशधारा ॥ प्र० ॥टेर॥ सुरनर मुनि तिरियग वन सिंचन, वचन सजल घन भारा । हां हो घ० प्र० ॥ विक्रमपुर श्रीत्रिशला नंदन, जिनवर त्रिभुवन प्यारा । द्वादश व्रत पूजन विधि पभणी, भवियण गण

आचारिज[४] गुण गावो । स्थविर[५] पंचम पद पुन-रुवझाया,[६] तपसि[७] नाण[८] दंसण[९] मन भाया ।१।

॥ ऊलालो ॥

मनभाय विनया[१०] वश्यका[११] मल, शील[१२] किरिया[१३] जाणिये। तप[१४] विविध उत्तम, पात्र[१५] वेया,-वच्च[१६] समाधि[१७] वखाणिये । हित कर अपूरव नाण संग्रह[१८],धरो मन सुजगीश ए। श्रुत भक्ति[१९] पुनि तीरथप्रभावन[२०] एह थानक वीश ए ॥२॥

॥ ढाल ॥

एह थानक वीश जग जयकारा, जपतां लहीये जिनपद सारा । करम निकंदै विसवा वीशे, भाख्या जगतारक जगदीशे ॥३॥

॥ ऊलालो ॥

जगदीश प्रथम, जिणंद जगगुरु, चरम जिनवरजी मुदा। भव तीसरे पद, सकल सेवी, लही जिनपति संपदा॥ बावीश जिनवर, सकल

सुखकर, इन्द्र जसु गुण गाइये। इग दोय त्रिण, सहु पद जपीने, तोर्थपति पद पाइये ॥४॥

॥ दोहा ॥

अरिहंतादिक पद सदा, भजिये तप करि शुद्ध।
अति निर्मल शुभ योगता, करिके तसु गुण लुद्ध ॥
विमल पीठ त्रिक तदुपरे, ठविये जिनवर वीश।
पूजन उपगरण मेलि करी, अर्चीजे सुजगीश ॥
एक एक ए पद तणो, द्रव्य पूज परकार।
पंच अष्टविध जाणिये, सत्तर इगविस सार ॥
अष्ट जातिना कलश करि, विमल जले भरिपूर।
पूजो भवियण सहु मुदा, होय सकल दुख दूर ॥
सोहे सहु परमेष्टिमें, जिनवरपद अभिराम।
वेद[४] निक्षेपे समरिये, वधते शुभ परिणाम ॥

॥ राग देशाख ॥

चाल--पूर्वमुखसावनं, ए देशी।

सकल जगनायकं, परमपद दायकं, लायकं जिनपदं विमलभानं। चतुरधिकतीस[३४] अतिशय

अमल बारगुण[१२] वचन पणतीस[३५] गुणमणिनिधानं ॥ अइयो ॥१॥ सुखकरण जिन चरण पद्मसेवित सदा, भ्रमर सुर असुर नर हृद्यहारी। एह जिनवर तणो आण पूरण सदा, दाम जिम जगतजन शिरसि धारी ॥ अइयो ॥२॥ जिनप पद्दरस, पारस फरसते हुवे, प्रगट निज रूप परिणति विभासं। तजिय बहिरात्म, गिरिसारता भवि लहे, अनुपमं आत्मकांचन प्रकाशं ॥अइयो ॥३॥ हुवइ जिनराज पद्, जाप रवि किरणतें, तुरत बहु दुरित भर तिमिर नाशं। घनचिदानन्द वरकंद्घन भवि लहे, तीर्थंकरचरण कमलाविलासं ॥ अइयो ॥४॥ वर विबुध मणि लही काच लघु शकलकों, ग्रहण करवा कवण कर पसारे। तिम लही जिन चरण, शरण शुभ योगसे, अवर सुरशरण कुण हृद्य धारे ॥ अइयो ॥५॥ प्रभु तणै पंच, कल्याण केरे दिने, प्रगट तिहुं लोकमें हुइ उज़ेरो। भविक देवपाल, श्रेणिक प्रमुख जिन नमी, बांधियौ गोत्र जिनराज केरो ॥ अइयो ॥६॥

जेह त्रिण काल, नित नमें जिन हरखशुं, तेह भवजल तरे जनम त्रीजै। अधिक भव यदि करे, तदपि निश्चय करी, सत वलि अष्टभव करीय सीझे ॥ अइयो ॥७॥

॥ काव्य ॥

णमोणंतविन्नाण सद्दंसणाणं, सयाणंदिया सेस जंतूगणाणं ॥ भवांभोज विच्छेयणे वारणाणं, णमोवोहियाणं वराणं जिणाणं ॥१॥ ॐ ह्रीं श्री अर्हद्भ्यो नमः ॥

द्वितीय श्रीसिद्धपद पूजा।

॥ दोहा ॥

तनु त्रिभागके घटनतें, घन अवगाहन जास।
विमल नाण दंसण कियो, लोकालोक प्रकाश॥
अविनाशी अमृत अचल, पदवासी अविकार।
अगम अगोचर अजर अज,नमो सिद्ध जयकार॥

॥ राग सोरठ ॥

चाल—कुँदकिरण शशि ऊजलो रे देवा

अनुभव परमानन्दशुं रे वाला, परमातम

पद वंदो रे। करम निकंदो वंदीने रे वाला, लहि जिनपद चिरनन्दो रे ॥१॥ गगन पएसंतर वली रे वाला, समयान्तर अणफरसी रे। द्रव्य सगुण परजायना रे वाला, एक समय विध दरसी रे ॥२॥ एक समय ऋजुगति करी रे वाला, भए परमपद रामी रे। भांगे सादि अनंतमा रे वाला निरुपाधिक सुखधामी रे ॥३॥ अखिल करममल परिहरी रे वाला, सिद्ध सकल सुखकारी रे। विमल चिदानन्द घन थया रे वाला, वर इकतिस गुण धारी रे ॥४॥ उत्पन्नता वलि विगमता रे वाला, ध्रुवता त्रिपदी संगे रे। प्रभुमें अनंत चतुष्कता रे वाला, सोहे शमक्रम भंगे रे ॥५॥ पनर भेदे ए सिद्ध थया रे वाला, सहजानंद स्वरूपी रे। परम ज्योतिमें परिणम्यारे वाला, अव्याबाध अरूपी रे ॥६॥ जिणवर पण प्रणमें सदा रे वाला, एहने दिक्षा अवसरे रे। तिण प्रभुपद गुणमालिका रे वाला, कंठे धरिये सुपरे रे ॥७॥ हस्तिपाल भवि भगतिशुं रे वाला,

सिद्ध परमपद भजिने रे। पद श्रीजिनहरखे
लह्यो रे वाला, परगुण परणति तजिने रे ॥८॥

॥ काव्य ॥

लोगग्गभागोपरि संठियाणं, बुद्धाणसिद्धाण
मणिंदियाणं। निस्सेस कम्मक्खय कारगाणं,
णमोसया मंगल धारगाणं ॥१॥ ॐ ह्रीं श्रीसि-
द्धेभ्यो नमः ॥२॥

तृतीय प्रवचनपद पूजा।

॥ दोहा ॥

पद तृतीय प्रवचन नमो, ज्यूं न भमो संसार।
गमो कुमति परिणमनता, दमो करण भयकार ॥
जैसे जलधर वृष्टितें, अखिल फलद विकसाय।
तैसे प्रवचनभक्तिते, शुभ परिणति उलसाय ॥

॥ श्री राग ॥

चाल—जिनगुणगानं श्रुत अमृतं।

प्रवचन ध्यानं सुखकरणं। परिहरिये सहु
विषय विकारं, करिये प्रवचन आदरणं ॥ प्र०
॥१॥ सप्त भंगि भूपित ए प्रवचन, स्याद्वाद

मुद्रासरणं। सप्त नयात्मक गुणमणि आगर, बोधिबीज उतपति करणं॥ प्र० ॥२॥ जैसे अमृत पान करणतें, हुवे सकलविषसंहरणं। तैसे प्रवचन अमृत पाने, कुमति हलाहल प्रविसरणं ॥ प्र०॥३॥ प्रवचनको आधेय ए कहिये, सकलसंघ तसु अधिकरणं। तिण ए संघ चतुर्विध प्रवचन, ए पद अखिल कलुष हरणं॥ प्र० ॥४॥ यदि भविजन तुम ए चाहतु है, मुगति रमणिको वशाकरणं। करण तीन इक करि तद करिये, प्रवचन पद समरण धरणं ॥ प्र० ॥५॥ जिनवरजी पण ए तीरथने, प्रणमे मध्य समवसरणं। भवजल तारण तरणि समानं, ए तीरथ अशरण शरणं ॥ प्र० ॥६॥ जिम भरतेसर संघ भगति करी, लहियो पुण्यफलाचरणं। चक्री पद अनुभवि वलि शिवपद, लीध करिय कर्म निर्जरणं ॥ प्र० ॥७॥ नरपति संभव जिनहरषे करि, आराधी प्रवचन चरणं। करम निकंदि थया जगदीसर, जिनप रमा उर आभरणं ॥ प्र० ॥८॥

॥ काव्य ॥

अणंत संसुद्ध गुणायरस्स, दुरूखंधयारुग्गदिवायरस्स । अणंतजीवाण दयागिहस्स, णमो णमो संघ चउव्विहस्स ॥ १ ॥ ॐ ह्रीँ श्रीप्रवचनाय नमः ॥ ३ ॥

चौथी आचार्य पद पूजा ।

॥ दोहा ॥

पद चतुर्थ नमिये सदा, सूरीसर महाराज ।
सोहम जंबू सारिसा, सकल साधु सिरताज ॥
सारण वारण चोयणा, पडिचोयण करतार ।
प्रवचनकज विकसायवा, सहस किरण अवतार ॥

॥ राग रामगिरी ॥

चाल–गात्र लुहै, ।

आचारिज पद ध्याइयेरे वाला, नास विमल गुण गाइये । पाइये, हांहो रे वाला पाइये । जिनपति पद जगशिर तिलो रे ॥ आ० ॥१॥ जिन शासन अजुवालता रे वाला, सकलजीव प्रतिपालता ॥ पालता हां० ॥ पालता चरण करण मग

चालतां रे ॥ आ० ॥२॥ सूरि सकल गुण सोहता रे वाला, सुरनर जन मन मोहता ॥ मोहता हां हो० ॥ भवियणने पडिबोहता रे ॥ आ० ॥३॥ पंचाचार विराजिता रे वाला, सजल जलद जिम गाजता ॥ गाजता हां हो० ॥ सूरि सकल सिर छाजता रे ॥ आ० ॥४॥ उपदेशामृत वरसता रे वाला, दुरित ताप सहु निरसता ॥ निरसता हां हो० ॥ परमातम पद फरसता रे ॥ आ० ॥ ५ ॥ धरम धुरंधरता धरा रे वाला, जगबांधव जग हितकरा ॥ हितकरा ॥ हां हो० ॥ स्वपर समय विद् गणधरा रे ॥ आ० ॥६॥ पद श्रीजिनहरषे ग्रह्यो रे वाला, सूरीसर पद तप वह्यो । तप वह्यो हां हो० ॥ पुरुषोत्तम नृप शिव लह्यो रे ॥ आ० ॥७॥

॥ काव्य ॥

कुवादि केली तरु सिंधुराणं, सूरीसराणं मुणि-बन्धुराणं । धीरत्तसन्तजिय मंदराणं, णमो सया

मंगलमंदिराणं ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं श्री आचार्येभ्यो नमः ॥४॥

पाचमी स्थविर पद पूजा ।

॥ दोहा ॥

द्विविध थिविर जिनवर कह्या, द्रव्य भाव परकार ।
लौकिक लोकोत्तर वली, सुणिये भेद विचार ॥
जनकादिक लौकिक थिविर, लोकोत्तर अणगार ।
पंचम पदमें जाणियै, द्वितीय थिविर अधिकार ॥

॥ राग सारंग ॥

नित नमिये थविर मुनीसरा । पंच महाव्रत धारक वारक, कुमति जगत जन हितकरा ॥ नि० ॥१॥ संयम योगे सीदत वालक, ग्लानादिक सहु मुनिवरा । एहने उचित सहाय दियण ते, वारे एहना दुःखभरा ॥ नि० ॥२॥ पर्याय वय श्रुत त्रिविध ए थविरा, वीसरु साठ समो परा । वयधर समवायादिक पाठक, एह थविर गुण आगरा ॥ नि० ॥ ३ ॥ त्रीजे अङ्ग कह्या दस

थविरा, रत्नत्रयीना गुणधरा। ते इह निर्मल भावे ग्रहिवा, भविक सरोज दिवाकरा ॥ नि० ॥४॥ क्षीरजलधिसम अतिहि गंभीरा, सुरगिरि गुरु धीरज धरा। शरणागत तारणता धारा, ज्ञान-विमल जल सागरा ॥नि० ॥५॥ श्रुत तप धीरज ध्यान धरणते, द्रव्यादिक ज्ञातावरा। तेह स्वरुप-रमण कह्या थविरा, नहिय धवल केशांकुरा ॥ नि० ॥६॥ एह थविरपद सेवी भगते, पद्मोत्तर वसुधेसरा। पद श्रीजिन हरखे तिण लहियो, मुनिवर कुमुद निशाकरा ॥ नि० ॥७॥

॥ काव्य ॥

सम्मत्तसंयम, पतित भविजन, अतिहि थिर करता भला। अवगुण अदूषित, गुण विभूषित, चंद्रकिरण समुज्जला ॥ अष्टाधिकादश सहस शीलांग, रथ रुचिर धाराधरा। भव सिंधु तारण, प्रवर कारण, नमो थविर मुनीसरा ॥१॥ ॐ ह्रीं श्री स्थविराय नमः ॥५॥

छठी उपाध्याय पद पूजा ।

॥ दोहा ॥

प्रवरनाण दरसण चरण, धारक यतिधर्म सार ।
समितिपंच त्रिण गुप्तिधर, निरुपम धीरज धार ॥
चरणकमल जेहनां नमे, अहोनिश सुर नर राय ।
जड़तागिरिदारण कुलिश, जयजय श्रीउवझाय ॥

॥ राग भैरव ॥

चाल—पंच वरणी अंगी रची, ।

भाव धरी उवझाया वंदो, विजयकारी । श्रीउवझाय परमपद वंदो, लहो जिनपद अतिशय धारी ॥ भा० ॥१॥ कुमति मदतरु भंजन सिंधुर, सुमतिकंद घन अवतारी । अंग दुवादस भणे भणावे, शिष्य भणी चित्त हितधारी ॥ भ० ॥ २॥ सकल सूत्र उपदेश दियणतें, वाचक अति विमलाचारी । भव त्रीजे अमृत सुख पावे, सुर असुरेन्द्र मनोहारी ॥ भा० ॥३॥ हय गय वृष पंचानन सरिखा, करमकंद वर तरवारी । वासुदेव वासव नृप दिनकर, विधु भंडारि तुला धारी

॥ भा० ॥४॥ जंबू सीता नदि कांचनगिरि चरम जलधि ओपम भारी । ए औपम बहुश्रुतनी जाणो, उत्तराध्ययन कही सारो ॥ भा० ॥ ॥५॥ अमल पंचविंशति गुण मणि निधि, सकल भुवन जन उपगारी । संशय तिमिर हरण वासरमणि, पाप ताप आतप वारी ॥ भ० ॥६॥ प्रवर संख पय भरियो सोहे, तिम ए ज्ञान चरण चारो । महेन्द्रपाल पाठकपद सेवी, लहियो जिनपद विजितारी ॥ भ० ॥७॥

॥ काव्य ॥

सव्वोहि बीजांकुर कारणाणं, णमो णमो वायग वारणाणं । कुबोहि दंती हरिणेसराणं विग्घोघ संताव पयोहराणं ॥१॥ ॐ ह्रीं श्रीउपाध्यायेभ्यो नमः ॥६॥

सप्तमी साधुपद पूजा ।

दोहा

जाणे जिनवाणी सरस, स्यादवाद गुणवंत ।
मुनि कहिये शिव पंथने, साधे साधु कहंत ॥

शमता रस जल झीलता, विशदानंद सुरूप।
तिण पाम्ये पद सप्तमे, नमो नमो मुनि भूप॥

॥ राग गुंड मिश्रित भीम मल्हार ॥

चाल—मेघ वरसे भरी पुष्प बादल करी।

भक्ति धरि सातमे, पद भजो मुनिवरा, सुखकरा विजित इंद्रिय विकारा। गुण सतावीश, भूषण करि शोभिता, क्षोभिता विकट क्रम सुभट सारा ॥भ० ॥१॥ चरणसत्तरि परम, करणसत्तरि धरा, शिव करण नाण किरिया प्रधाना। प्रतिदिने दोष, आहारना वरजिता, सप्त चालीश यति धर्म निधाना ॥ भ० ॥ २ ॥ मदन मद भंजता, कुमति जन गंजता, भक्त जन रंजना क्षांति भरिया। सुमति धरिया सदा, चरण परिया जना, तारिया ज्ञान गंभीर दरिया ॥ भ० ॥३॥ तृणमणि सम गिणे. चतुर त्रिध धर्मना, परम उपदेश दायक उदारा। वहिरभ्यंतर भिदा, बारविध अति कठिन, तप तपे सकल जीउ अभयकारा ॥ भ० ॥ ४ ॥ वलि अठावीश,

जयत नरेशो, भये जिन महाराज । भा० । सोहे ज्ञानए त्रिभुवनमें, सहु गुणपरि सिरताज ॥भा॥७

॥ काव्य ॥

छद्दव्व पज्जाय गुणुक्करस्स, सया पयासी करणोद्धुरस्स । मिच्छत्त अन्नाण तमोहरस्स, णमो णमो नाणदिवायरस्स ॥ ८ ॥ ॐ ह्रीं श्रीज्ञानाय नमः ॥

नवम दर्शनपद पूजा ।

॥ दोहा ॥

दरिसण आश्रय धर्म्मनो, एहनां षट् उपमान ।
दरसणविणनहिचरणविद्, उत्तराध्ययनें जाण ॥
जिनदरसण फरस्यो भलो, अंतर मुहुरत मान ।
अर्द्ध पुग्गल परियट रहे, तसु संसार वितान ॥

॥ राग कामोद ॥

चाल—चंपक केतक मालती ए,

जिणदरिसण मुझ मनवस्यो ए, अइयो मन वस्यो ए, उपजत परम आनन्द । जिनदर-

सण दरसण दिये, विमल नाण तरु कंद ॥ दर-
सण मोह रिपु जीतिया ए ॥अ०॥ वर दरसण
उलसंत । दरसण घट परगट हुवा, भवियण
भव न भमंत ॥२॥ जिनवर देव सुगुरु व्रती ए
॥अ०॥ केवलि कथित जिनधर्म । तीन तत्व
परिणति रमे, ते दरसण करे शर्म ॥ ३ ॥ जिन
प्रभु वचनोपरि सदा ए ॥ अ० ॥ थिर सरदहण
धरंन । इण लक्षणते जाणिये, समकितवंत महंत
॥४॥ इग दुग ति चउ शर दस विहा ए, सत्त-
सठि भेदविचार ॥अ०॥ वलि पररीति समकित
भण्यो, द्रव्य भाव परकार ॥५॥ द्रव्ये जिण दर-
सण कह्यो ए ॥ अ० ॥ भावे समकित सार ।
द्रव्यत दरसण भावतो, दरसण कारण धार ॥
६॥ द्रव्य दरस यदिगत वली ए ॥अ०॥ तदपि
उत्तर हितकार । सय्यंभव जिनदरसणे, पायो
दरसण सार ॥७॥ दरसण विण किरिया हता ए
॥अ०॥ अंक विना जिम विंदु । वलि हणियो
विन चन्द्रिका, वासरमे जिम इन्दु ॥ ८ ॥ हरि-

विक्रम नृप सेवतो ए ॥ अ० ॥ दरसण पद अभिराम । पद श्रीजिनहरषे धर्यो, वधते शुभ परिणाम ॥६॥

॥ काव्य ॥

अणंत विन्नाण सुकारणस्स, अणंत संसार विदारणस्स । अणंत कम्मावलि धंसणस्स, णमो णमो निम्मलदंसणस्स ॥१०॥ ॐ ह्रीं श्रीदर्शनाय नमः ॥

दशमी विनयपद पूजा ।

॥ दोहा ॥

विनय भुवन रंजन करे, विनये जस विसतार ।
विनय जीव भूषित करे, विनये जयजयकार ॥
विनय मूल जिनधर्मनो, विनय ज्ञानतरु कंद ।
विनय सकलगुण सेहरो, जयजय विनय समंद ॥

॥ राग सामेरी ॥

चाल--पूजोरी माई, जिनवर अंग सुगंधे,

ध्यावोरी माई, विनय दशम पद ध्यावो ।

पंच भेद दश विध तेरस विध, वावन भेद गणेशे। वासठ भेद कह्या आगममें, विनयतणा सुविशेषे ॥ ध्या० १ ॥ तीर्थंकर सिद्ध कुल गण संघा, किरिया धर्म वरनाणा। नाणी आचारिज मुनि थविरा, पाठक गणि गुण जाणा ॥ध्या०२॥ ए अरिहादिक तेरस पदनो, विनय करे जे भावे। ते तीर्थंकर पद अनुभविने, अमृतपद सुख पावे ॥ध्या० ३॥ जिम कंचनमें मृदुगुण लाभे, नहीय कालिमा पावे। तिण ए सकल धातुमें उत्तम, नाम कल्याण कहावे ॥ ध्या० ४ ॥ तिम-विनयीमें छे मृदुता गुण, कुमति कठिनता नासे। कृष्णादिक लेश्यानी मलिनता, जाये विनय गुण भासे ॥ध्या० ५॥ दोय सहस अरु अधिक चिहुत्तर, देववदन निरधारो। गुरुवंदन विधि चारसे वाणुं, भेद करी उर धारो ॥ ध्या० ६ ॥ तीर्थंकरादिकनो मन रंगे, विनय चरण शुभ ध्यायो। धन नामा भविजन शुभयोगे, पद जिनहर्ष पायो ॥ध्या० ७॥

॥ काव्य ॥

आणंदिया सेसजगज्जणस्स, कुंदिंदु पादा मल-तावणस्स । सुधम्म जुत्तस्स दयासयस्स, णमो णमो श्रीविणयालयस्स ॥८॥ ॐ ह्रीं श्रीविनयाय नमः ॥

एकादशम चारित्रपद पूजा ।

॥ दोहा ॥

इग्यारम पद नित नमुं, देश सरव चारित्र ।
पंक मलिनता दूर करि, चेतन करे पवित्र ॥
एह चरण सेवन करे, रंक थकी सुरराय ।
तीन जगतपति पद दिये, जसु सुर नर गुणगाय ॥

॥ राग सारंग ॥

चाल—हां हो देवा बावन चंदन घसि कु०

चरण सरण मुझ मन हर्यो, सुख करण हरण घन पाप ए ॥हां हो रे वाला॥ एह चरण जलधर हरे, अज्ञान तरुणतर ताप ए ॥ हां १ ॥ आठ कषाय निवारतां, देशविरति प्रगट हुवे

खास ए ॥हां॥ वार कषाय निवारिया, समविरति लहे गुणवास ए ॥हां २॥ इगवासर सेव्यो थको शुद्ध सर्व संवरचारित्र ए ॥ हां ॥ परमानद घन पद दिये, सुरलोक जनित सुखचित्र ए ॥हां ३॥ भवभय तरुगण छेदवा ए संयम निशित कुठार ए ॥हां॥ ज्ञान परंपर करण छे, अमृत पदनो हितकार ए ॥हां ४॥ चरण अनंतर करण छे, निरवाण तणो निरधार ए ॥ हां ॥ सरवविरति शुद्ध चरणसे पामे अरिहंत पद सार ए ॥हां ५॥ वरस चरण परजायमें, अनुत्तर सुख अतिक्रम होय ए ॥ हां ॥ सतर भेद चारित्रना, कहिया जिन आगम जोय ए॥हां ६॥ देशथी सम संयम विषे, उज्जलता अनंत गुण थाय ए ॥हां॥ अरुण देव सेवो चरणने, भये जगगुरु जिन महाराय ए

॥ काव्य ॥

कम्मोघकंतार दवानलस्स, महोदयानन्द लयाजलस्स । विन्नाण पंकेरुहकाणणस्स,नमो चारित्तस्स गुणापणस्स ॥८॥ ॐ ह्रीं श्रीचारित्राय नमः॥११॥

वारमी ब्रह्मचर्यपद पूजा।

॥ दोहा ॥

सुरतरु सुरमणि सुरगवी, काम कलश अवधार।
ब्रह्मचर्य इण सम कह्यो, कामित फलदातार॥
जिम जोतिषियां रजनिकर, सुरगणमें सुरराय।
तिम सहु व्रत शिर सेहरो, ब्रह्मचरिजकहवाय॥

॥ राग काफी जंगलो ॥

चाल—भला प्रभुगुण वाल्हा हो,

भवभयहरणा शिवसुखकरणा, सदा भजो ब्रह्मचारा (मैं वारी जाऊँ सदा०) हो॥ भ०॥ शील विबुध तरु प्रतिपालनकों, कहि जिनवर नववारा हो॥भ०॥ दिव्योदारिक करण करावण, अनुमति विषय प्रकारा हो॥भ०॥१॥ त्रिकरण जोगें ए परिहरियें, भजियें भेद अढारा हो॥ भ०॥ कनक कोडिनो दान दिये नित, कनक चैत्य करतारा हो॥ भ०॥२॥ एहथी ब्रह्मचरज धारकनो, फल अगणित अवधारा हो॥ भ० सहस चोरासी श्रमण दान फल, सम ब्रह्मव्रत-

फल सारा हो ॥ भ० ॥३॥ विजयशेठ विजया शेठाणी, उभय पक्ष ब्रह्मधारा हो ॥ भ० ॥ भये सुदर्शन शेठ शीलसें, मुगतिवधू भरतारा हो ॥भ०॥४॥ सहस अढार शीलांगरथ धारा, धार करो निसतारा हो ॥भ०॥ सिंहादिक वसुभय तरु भंजन, सिंधुर मद मतवारा हो ॥ भ०॥५॥ कलहकारि नारदऋषि सरिखे, तर्या भवजलधि अपारा हो ॥ भ० ॥ पच्चख्खाण विरति नहि एहमें, ए ब्रह्मव्रत उपगारा हो ॥भ०॥६॥ सकल सुरासुर किन्नर नरवर, धरिय भगति हितकारा हो ॥ भ० ॥ ब्रह्मचरज व्रतधर नरवरके, प्रणमे चरण उदारा हो ॥ भ० ॥ ७ ॥ दशमे अंगे भणियो नरवर्मा, नरपति गुण आधारा हो ॥ भ० ॥ ब्रह्मचरज व्रत पाल लह्यो पद, जिनहरषें जयकारा हो ॥ भ० ॥८॥

॥ काव्य ॥

सग्गापवग्गग्ग सुहप्पयस्स, सुनिम्मलाणंत गुणालयस्स । सव्वव्वया भूषण भूसणस्स, णमोहि

सीलस्स अदूसणस्स ॥१॥ ॐ ह्रीं श्री ब्रह्मचर्याय नमः ॥१२॥

अथ तेरमो क्रियापद पूजा ।

॥ दोहा ॥

करम निरज्जरा हेतु हे, प्रवरक्रिया गुण खाण ।
जिनशासननी स्थिति रहि, करियारूपे जाण ॥
भुवनमांहि किरिया मही, सकल शुद्ध विवहार ।
प्रवरनाण दरिसणातणो, शुद्ध किरिया सिणगार ॥

॥ राग मालवो गौडी ॥

चाल—सब अरति मथनमुदार धूपं,

शुभ ध्यान किरिया हृदय धरीने, धर्म सकल उरधार रे । आर्त्त रौद्रनी हेतु किरिया अशुभ पणवीस वार रे ॥ शु० ॥१॥ ज्ञानवंत अशस्त्र भट हे, किरिया शस्त्र वतंस रे । सुभट नाणी क्रियाशस्त्रें, करय कर्म अरिध्वंस रे ॥ शु० ॥२॥ ज्ञानसेति वदे शिव यदि, तेरमे गुणठाण रे । एकनाणें करि जिनेसर, किसु न लहे निरवाण रे ॥ शु० ॥३॥ जिनप शैलेशीकरण करी,

चउदमे गुणठाण रे। सरव संवर चरण करणे, लहे पद निरवाण रे॥ शु० ॥४॥ ए अनंतर अमृत कारण, कह्यो जिनवर भाणु रे। सरव संवर चरण किरिया, न शिव इण विणु जाण रे॥ शु० ॥५॥ एक नाणे इक क्रियामें, न शिव वितरण शक्ति रे। कहे जिनवर उभय योगें, लहे भविजन मुक्ति रे॥ शु० ॥६॥ गरल मिश्रित सरस भोजन अशुभ परिणति धार रे। अमृत संयुत तेह भोजन, रुचिर परिणति कार रे॥ शु० ॥७॥ ज्ञानसहिता तेम किरिया, करि करे निसतार रे। ज्ञान विणु किरिया न दीपै, मनोगत फलसार रे॥ शु० ॥८॥ ज्ञान परिणत रमी किरिया, तेह किरिया सार रे। भयो हरिवाहन जिनेसर, शुद्ध किरिया धार रे॥ शु० ॥९॥

काव्य

विशुद्धसद्धाण विभूसणस्स, सुलद्धि संपत्ति-सुपोसणस्स। णमो सदाणंतगुणप्पदस्स, णमो णमो सुद्धक्रियापदस्स।१। ॐ ह्रीं श्री क्रियायेनमः।

वणस्स । अमंगलानो कुहदुद्दवस्स, णमो णमो निम्मल सत्तवस्स ॥ १० ॥ ॐ ह्रीं श्री तपसे नमः ॥१४॥

सुपात्रदानाधिकारे पंचदशम गौतमपद पूजा

॥ दोहा ॥

गौतम गणधर पनरमे, पद सेवो सुप्रसन्न ।
वलि सहु जिन गणधर नमो, चौदेशे बावन्न ॥
दान सकल जगवश करे, दान हरे दुरितारि ।
मन वांछित सहु सुख दिये, दान धरम हितकारि ॥

॥ राग सोरठ ॥

चाल—तेरी प्रीति पिछानी हो प्रभु, मैं

पनरम पद गुण गाना हो भवि । पनरम०।
भाव धरी करिये मन रंगे, परम सुपात्रे दाना ॥ हो भवि पनरम० १ ॥ पात्र कह्या द्रव्य भाव दुभेदे, द्रव्यलच्छन ए जाना ॥ हो भवि प० ॥ सर्वोत्तम उत्तम हुवे भाजन, रतनकनक रूपानां ॥हो भवि प० २॥ मध्यम पात्र कहीजे एहवा,

ताम्र धातु निपजानां ॥ हो भवि प० ॥ पात्र लोहादिक अपर जातिना, तेह जघन्य कहाना ॥ हो भवि प० ३॥ भावपात्रनो लच्छन कहिये, सुणिये सुगुण सयाना ॥ हो भवि प० ॥ पंचम चरणधरे वलि वरते, क्षीणमोह गुणठाना ॥ हो भवि प० ४॥ रतनपात्र सम ते सर्वोत्तम, पात्र कह्यां जिन भाना ।हो भ०। प्रवर नाण किरियाधर मुनिवर, लाभालाभ समाना ॥ हो भवि प० ५॥ ते कांचन भाजन सम कहिये, भवजल तारन याना ॥हो भवि प०॥ शुद्ध मन द्वादस व्रत दरसन धर, तार-पात्र सम जाना ॥हो भवि प० ६॥ शुद्ध समकितधर श्रेणिक परमुख, रह्या अविरति गुणठाणा ॥हो भवि प० ॥ ताम्रपात्र सम एहने कहिये, भावि गुणमणि खाना ॥हो भवि प० ७॥ अपर सकलजन मिथ्यादृष्टि, लोहादि पात्र गिनाना ॥ हो भवि प० ॥ जिनशासन रंगे रंगाना, वाचंयम सुप्रमाना ॥हो भवि प० ८॥ एहने दान दिया शिव लहिये, एह सुपात्र

अर्ह्य प्रशंसा भारो ॥से०॥७॥ इत्यादिक सोलम-पद उधरे, बहुलभव्य क्रमजारो । तिनसों इन वेथावच्चपद्की, वारि जाउं वार हजारी ॥ से० ॥ ८ ॥ नृप जीमूतकेतु सोलमपद्, सेवी भये दुखवारी । श्रीजिन हर्ष धरी हरिवंदित, शरणागत निसतारी ॥ से० ॥९॥

॥ काव्य ॥

मणुपण सव्वातिसया सयाणं, सुरासुराधीसर वंदियाणं। रविंदु बिंबामल सग्गुणाणं, द्याधणाणं हि नमो जिणाणं॥१०॥ॐ ह्रीं श्रीजिनेभ्यो नमः

सतरहवीं समाधि पद पूजा

॥ दोहा ॥

सतरम पद्में सेविये, सहु सुख करण समाधि ।
जिन सेवनतें भविकनो,गमें व्याधि अरु आधि ॥
ब्रह्मनगर पथि विचरतां, वर पाथेय समान ।
ए समाधि पद जाणिये, सुरमणि किये हैरान ॥

॥ राग कहरवो ॥

बाजै तेरा बिछुआ रे वा०,

मेरो रे समाधि चरण चित वसियो, तसु गुण समरण कियो मनु बसियो ॥ मे० ॥ सकल जगत जन जिनकुं स्तवतुहे, अनुभवरंगे अतिहि विकसियो ॥ मे० ॥१॥ द्रव्यत भावत दुविध समाधि, सुरतरु मानुं नित भुवन विलसियो। असन वसन सलिलादिक भक्ति, करिय संघनी करुणा रसियो ॥ मे० ॥२॥ द्रव्य समाधि प्रथम ए सुणिये, कह्यो जिन लोकालोक दरसियो। सारण वारण चोयण प्रमुखे, पतित सुथिर करे भ्रममें हरसियो ॥ मे० ॥३॥ भाव समाधि द्वितीय ए कहिये, जो करे सो जिन चरणफरसियो। सकल संघको जो उपजावत, दुविध समाधि दुरित तसु नसियो ॥ मे० ॥४॥ सुमति पंच त्रण गुपति धरे नित, सुरगिरिवरनो धीरज करसियो। जगत जंतु अघ तपति हरणकुँ अनुभव अमृत-धार वरसियो ॥म०॥५॥ शुकल अनिल कर्मेन्धन

दाहत, जिनसें परगुण परणति खिसियो । ए मुनितरणि तेज सम दीपत, अमृत सुखामृतपान तिरसियो ।मे०॥६॥ इन पदमें ऐसे मुनिजनके, समरनतें हुय जग अवतंसियो । ए पद सेवी नृपति पुरंदर, भये जगपति जिन हरख उलसियो ॥मे० ॥७॥

॥ काव्य ॥

सव्विंदिया पारविकारदारी, अकारणा सेसजणोवगारी । महाभवातंकगणापहारी, जयो सदा शुद्ध चरित्तधारी ॥८॥ ॐ ह्रीं श्रीचारित्रधारिभ्यो नमः ॥१७॥

अठारमी अपूर्वश्रुत ग्रहणरूप ज्ञान पूजा ।

॥ दोहा ॥

श्रुत अपूर्व ग्रहिवो सदा, अष्टादश पद मांहि ।
इण पद सेवक जन तणा, सहु संकट भय जाहि ॥
जैसी कुमति विशुद्धता, घोर तपे करि होय ।
तत् अनंत गुण शुद्धता, सुज्ञानी की जोय ॥

चाल—दिल्दार यार गबरू, राखु रे घुघटदा पट में

जिनचन्द्र ज्ञान तेरा, महाराज ज्ञान तेरा। हो जीते रे विकट भव भटने। सदपूर्वज्ञान धरणा, वितरे जिनेन्द्र चरणा, करे सर्व कर्म हरणा ॥ जी० १॥ जगमे महोपकारी, भवसिन्धु वारि तारी, कुमतांधता विदारी ॥ जी० २ ॥ सद्दु भावनो प्रकाशी, परम स्वरूप भासी, परमात्म सद्मवासी ॥जी०३॥ विनु हेतु विश्ववन्धु, गुण रत्न राशि सिधू, समता पीयूप अन्धू ॥जी० ४॥ स्याद्वाद् पक्ष गाजे, नयसतसे विराजे, एकान्त पक्ष भाजे ॥ जी० ५ ॥ लहि तीर्थ पाव तारा, इनसे जिनेन्द्र सारा, भविके किया उधारा ॥ जी० ६॥ पद सेवि ए नरिन्दा, भये सागरादि चन्दा, जिनहर्षके समन्दा ॥जी० ७॥

॥ काव्य ॥

सुद्धक्रिया मंडल मंडणस्स, संदेह संदोह विखंडणस्स। मुत्ती उपादाण सुकारणस्स, णमोहि

नाणस्स जसोधणस्स ॥८॥ ॐ ह्रीं श्री ज्ञानाय नमः ॥

एकोनविंशतितम श्रुतपद पूजा

॥ दोहा ॥

पाप ताप संहरण हरि, चंदन सम श्रुत सार।
तत्व रमण कारण करण, अशरण शरण उदार॥
इगुनवीस पदमे भजो, जिनवर श्रुतनी भक्ति।
इनपद वंदनसे लहे, विमलनाण युत मुक्ति॥

॥ ढाल ॥

चाल—व्रजवासी कान तैं मेरी गागर ढोरी रे

भविजन श्रुतभक्ति, चरण शरण उर धरिये रे। ए श्रुतभक्ति सुमंगल माल, विमल केवल कमला वरमाल ॥ भवि० १ ॥ सकल द्रव्यगण गुणपर्याय, प्रगट करण ए श्रुत मन भाय ॥भ०॥ अतुल अनंतकिरण समवाय, धरण तरणिगणसम कहिवाय ॥भ० २॥ ए श्रुत कुमति युवतिने संग अगणित रमणितणो करे भंग ॥ भ० ॥ अरथे

भाख्यो श्रीजिनराज, सूत्रे गणधर मुनि सिर-ताज ॥भ० ३॥ ए श्रुत सागर अगम अपार, अनंत अमल गुणरयणाधार ॥ भ० ॥ भवभय जलनिधि तरण जिहाज, निसुणि मगन भई सकल समाज ॥ भ० ४ ॥ भवकोटी लगे तप करी जीव, अज्ञानी करे जितनी सदीव ॥भ०॥ कर्मनिरजरा तितनी होय, ज्ञानीके इक क्षणमें जोय ॥भ० ५॥ एक सहस कोडि छसयकोडि, चतुरतीस कोडि अक्षर जोडि ॥भ०॥ अडसठि लाखरु सात हजार, अडसय असीय प्रमित चितधार ॥भ० ६॥ इतने वरनसे इक पद होय, एक श्लोकका गणित ए जोय ॥भ०॥ इक पद को परिमाण ए जाण, इण पदसे आगम परि-माण ॥भ० ७॥ तीन कोडिअरु अडसठि लाख, सहस वैयालिस ए पद भाख ॥भ०॥ इतने पदसे अंग इग्यार, केरी गणना भवि चित्त धार ॥ भ० ८॥ वारम दृष्टिवादको मान, असंख्यात पदको पहिचान ॥ भ० ॥ इनको चौदपूरव इक

देश, इसको पार लह्यो हे गणेश । भ० ९॥ एह दुवालस अंग उदार, एहनी जइये नित बलिहार ॥भ०॥ एहनी द्रव्यभाव वहु भक्ति, करिये धरिये जिनपद्युक्ति ॥ भ० १० ॥ रत्नचूड नृप सुखमा धार, जिनश्रुत भक्ति करी हितकार ।भ०। भये जिन हरष परमपद दाय, जिनके सुर नरपति गुन गाय ॥भ० ११ ।

॥ काव्य ॥

अन्नाणवल्ली वणवारणस्स, सुबोहिबीजांकुरकारणस्स । अणंतसंसुद्ध गुणालयस्स, णमो दयामंदिर सत्थुयस्स ॥१२॥ ॐ ह्रीं श्रीश्रुताय नमः ॥१९॥

विंशति श्रीतीर्थपद पूजा ।

॥ दोहा ॥

प्रावचनी अरु धर्मकथी, वादि निमित्ती जाण ।
तपसी विद्या सिद्ध पुनि, कवि एह मुनित्राण ॥
भाव तीर्थ प्रभुजो कह्या, प्रभाविक ए अष्ट ।
तीर्थ प्रभावन जे करे, ते फल लहे विशिष्ट ॥

॥ ढाल राग धन्याश्री ॥

तेज तरण मुख राजै पद्दनी ।

तीरथ परभावन जयकारा ॥ ती० जिनसे भव सागर जल तरिये, ते तीरथ गुण धारा ॥ ती० ॥१॥ जिनके गणधर तीरथ कहिये, वलि सहु संघ सुखकारा । एह महा तीरथ पहिचानो, वंदि लहो भवपारा ॥ ती० ॥२॥ अडसठ लौकिक तीरथ तजि करि, भज लोकोत्तर सारा। द्रव्यभाव दोय भेद लोकोत्तर, स्थिर जंगम भयहारा ॥ ती० ॥३॥ पुण्डरीक परमुख पंच तीरथ, चैत्य पंच परकारा । एह वर तीरथ थावर कहिये, दोठां दुरित विदारा ॥ ती० ॥४॥ श्रीसीमंधर प्रमुख वीश जिन, विहरमान भवतारा । दोय कोडि केवलि विचरंता, जंगम तीर्थ उदारा ॥ती०॥५॥ संघ चतुर्विध जंगम तीरथ, जिन शासन उजियारा । वर अनंत गुण भूषण भूपित, जिनको नमन जिनसारा ॥ ती० ॥६॥ ए तीरथ परभावन करिये, शुभ भावन आधारा । शिव कज जल

विंशतितम पदकी, जाऊँ प्रतिदिन बलिहारा ॥ ती० ॥७॥ ए तीरथ परभावन करतो, मेरुप्रभ अविकारा । पद जिनहर्ष लहीने तरीया, भवभय जलधि अपारा ॥ ती० ॥८॥

॥ काव्य ॥

महा महानन्दपद प्रदाय, जगत्रयाधीश्वर वंदिताय । जिनश्रुत ज्ञान पयोनदाय, नमोस्तु तीर्थाय, शुभंददाय ॥ ९ ॥ ॐ ह्रीं श्रीतीर्थाय नमः ॥

विंशतिपद स्तुति ।

॥ राग गरबो ॥

सुणि चतुर सुजाण परनारी प्रीतड़ी० ॥

चित हरख धरी, अनुभव रंगे बीस परमपद वंदिये । शिवरमणि वरी, केवल सखिय सहाय, करी चिरनंदिये (आं०) ए बीस चरण अशरण शरणा, चिर संचित दुरित तिमिर हरणा । नित चित ए पद समरण धरणा ॥१॥ ए पद समरण जिण चित धरिया, तरिया तरसै तरै भव दरिया,

सदनंत भविक सहु भयहरिया ॥ चि० ॥२॥ ए पद गुण सागर मनुहारा, वर्णन तरणी ए वहु-हारा। इन्द्रादिक सुर न लह्यो पारा ॥ चि० ॥ ३ ॥ ए पद अतिशय महिमा धारा, अमृत पद कमला भरतारा। जिनचन्द्रानंदघन पद कारा ॥ चि० ॥ ४ ॥ जिनहर्षसूरिन्दके शिव करणा, चन्द्रामल गुणविंशति करणा। हुयज्यो प्रभु अरज ए अवधरणा चि० ॥५॥

॥ कलश ॥

ए वीशथानक भुवन नंदन अघ निकंदन जानिये। विबुधेन्द्र चन्द्र नरेन्द्र वंदित, पद जिनेन्द्र वखानिये। ए वीश पद भव जलधि तारण, तरण गुण पहिचानिये ॥ इम जाणि भविजन कुशल कारण, वीश पद उर आणिये ॥१॥ इह वरस चन्द्र दिनेन्द्र हरिमुख, विधि नयन छिति मिति धरू। तिह मास भादव धवलदल

आरती, जे नितचित उलसाय रे। ते लही पंच चिदानन्दघनता, अचल अमर पदपाय रे॥ ॥ पि० ॥ ५ ॥ पंच प्रदीप अखंडित ज्योते, दुर्मति तिमिर विलाय रे। एह आरती तुरत तारती, भवजल निपतित धाय रे॥ पि० ॥६॥ पद जिनहरष तणी ए करणी, मनहरणी कहिवाय रे। चन्द्रविमल शिव सिधिनिधि धरणी, वरणी किण विध जाय रे॥ पि० ॥७।

श्रीजिनहर्षसूरि कृत ।

ऋषि-मण्डल पूजा ।

प्रथम जल पूजा

दोहा

प्रणमी श्रीपारस विमल, चरण कमल चितलाय ।
ऋषिमंडल पूजन रचूं, वरविधि-युत सुखदाय ॥
नंदीश्वर मंदिर गिरि, शाश्वत जिन महाराज ।
अरचै अठ विध पूजसे, जिमि समस्त सुरराज ॥
तिम चितजिनपतिगुणधरी, श्रावकसमकितधार ।
विरचे जिन चौवीसकी, अठविधि पूज उदार ॥

गाथा

सलिल सुचन्दन, कुसुमभरं, दीवगकरणं च धूवनाणं च । वर अक्षत, नैवेद्यं, शुभ फलं, पूजाय अट्ठ विहा ॥१॥

॥ दोहा ॥

यह अठविधि पूजा करण, सुनिये सूत्र संस्कार ।
जे भवि विरचे प्रभुतणी, ते पामें भवपार ॥

प्रथम जिनेश्वर तिम प्रथम, योगीश्वर नरराय ।
प्रथम भये युग आदिमें, सकल जीव सुखदाय ॥

॥ राग देसाख ॥

चाल—पूर्व मुख सावनं, करि दशन पावनं

विमलगिरि उदयगिरिराजशिखरो परै । तरुण तर तेज दीपत दिणिन्दा । युगल धर्म-वार करी धरम उद्योत किये, विमल इक्ष्वाकु कुल जलधिचन्दा ॥ १ ॥ मातमरुदेवी वर उदर दरी हरिवरा । पसकल नृप मुकुट मणि नाभि-नन्दा । अखिल जगनायका, सुगति सुखदायका । विमलवर नाण गुण मणि समंदा ॥ २ ॥ वृषभ लांछन धरा, सकल भव भयहरा अमर वरगीत गुणाकुशल कन्दा, गहिर संसार सागर तरणि समधरा, नमत शिव चन्द प्रभु चरण बंदा ॥३॥

काव्य

सलिल चन्दन पुष्प फलब्रजैः सुविमलाक्षत दीप सुधूपकैः विविध नव्य मधु प्रवरान्नकै

ज्जिनममीभोरहं वसुभिर्य्यजे ॥१॥ ॐ ह्रीं श्रीपरमात्मनेऽनंतानंत ज्ञानशक्तये । जन्म जरा-मृत्यु निवारणाय । श्रीमत् ऋषभ जिनेन्द्राय जलं चन्दनं पुष्पं धूपं दीपं नैवेद्यं फलं वस्त्रं यजामहे स्वाहा ॥

श्रीअजित जिन पूजा

॥ दोहा ॥

जयजिणंद दिणंद सम, लखि भविकज विकसात।
परमानन्द सुकंद जल, विजयामात सुजात ॥

॥ ढाल ॥

चाल—आय रहो दिल बागमें प्यारे जिनजी इस ख्यालकी

एक अरज अवधारियै, अजित जिन एक अरज अवधारियै ॥आंकणी॥ अजित जिनेसर, जग अलवेसर । कूरम निजर निहारियै (अजित जिन एक०) तारणतरण विरुद सुणि तेरो । आयो शरण तिहारियै ॥ अजित० एक० १॥ चरम सिधु भवभय जल निपतित। चरण पतित

मोहे तारियै ॥अजित० एक०॥ परमानन्द घन शिववनितानन । कंज मधुपान सुकारियै ॥ अजित० एक० २ ॥ चिर संचित घन दुरित तिमिर हर । तुम जिन भये तिमिरारियै ॥ अजित० ॥ कहै शिवचन्द्र अजित प्रभु मेरे । एह अरज न विसारियैं ॥३॥

॥ काव्य ॥

सलिल चंदन० ॥ ॐ ह्रीं श्रीमते अजितजिनेन्द्राय वसु द्रव्यं यजा० ॥

तृतीय श्रीसंभव जिन पूजा

॥ दोहा ॥

जय जितार संभव सदा, श्रीसंभव जिनराज ।
सकल लोक जिण जीतलिय, जीतो मोह समाज ।

ढाल

चाल—गंधवटी घनसार केसर, मृगमदारस मेलीयै

अपरिमित वर शिखर सागर, धार संभव कार ए। जिनराज संभव पाय वंदो, लहो भव जल पार ए । वलि जलधि जात सुजात कुंजर,

कुंभ भंजन जानियै॥ तसु जनक नाम समान नामा, भए जिन उर आनिये॥१॥जसु चरण पंकज मधुर मधुरस, पान लय लागी रह्यो। मिल करि सुरासुर खचर व्यंतर, भमर नित चित्त ऊमह्या॥ जसु चरण कमले प्लवग लांछन, कनक सुवरन काय ए। सहु भुवन नायक सुमति दायक, जननि सेना जाय ए॥ २॥ जसु मधुर वाणी जग वखाणी, तीस ग्नर गुण धारिणी। संसार सागर भय भराभर, पतित पार उतारिणी। स्याद्वादपक्ष कुठार धारा, कुमति मद तरुदारिणी। प्रभु वाणि नित शिवचंदगणि के, हुवो मंगल कारिणी॥३॥

॥ काव्य ॥

सलिलचंदन० ॐ ह्रीं श्रीप० श्रीसत्संभवजिने०

चतुर्थ श्रीअभिनन्दन जिन पूजा।

॥ दोहा ॥

श्री चतुर्थ जिनवर सदा, पूजो भविचित लाय।
भक्ति युक्ति संकट हरण, करण तीन सुधथाय॥

॥ राग सोरठ ॥

चाल— कुँद किरण शशि ऊजलो रे देवा

संवर नंदन जिनवरु रे व्हाला, अभिनंदन हितकामी रे। जगदभिनंदन जयकरु रे व्हाला, दुरित निकंदन स्वामी रे ॥१॥ लोकालोक प्रकाशता रे व्हाला, करता अविचल धामी रे। अव्याबाध अरूपिता रे व्हाला, विमल चिदानंद रामी रे ॥२॥ वंछित पूरण सुरमणि रे व्हाला, ए प्रभु अंतरजामी रे। एसे जिन महाराज नै रे व्हाला, चंद नमै सिर नामी रे ॥३॥

॥ काव्य ॥

सलिल० ॐ ह्रीं श्री प० श्रीमदभिनन्दन जिने०

पंचमी श्रीसुमति जिन पूजा।

॥ दोहा ॥

पंचमजिन नायक नमूँ, पंचमी गति दातार।
पंचनाणवर विमल कज, वन विकसन दिनकार ॥

॥ राग कैरवो ॥

चाल—वंशी तेरी वैरिणी वाजै रे,

सुद्धभाव चित्तथिर धरिके रे ॥ चित्त० ॥ पूजो सुमति जिणंद ॥ सुधभाव० ॥ जिन भक्ति-करण रसीला, लहो परमानंद ॥१॥ सुध भाव० ॥ जिनराज सुमति समंद, करै कुमति निकंद ॥ सुध० ॥ प्रभुना चरण अरविन्द, वंदे असुर सुरिन्द ॥२॥ सु० ॥ कनकाभ तनु द्युति सोहे, प्रभु सुमंगलानंद ॥ सुध० ॥ करुणोपशम रस भरिया, वंदे नित शिवचंद ॥ सुध० ॥३॥

॥ काव्य ॥

सलिलचंदन० ॐ ह्रीं श्रीमत्सुमति जिनेन्द्राय वसु द्रव्यं० ॥

छट्ठी पद्मप्रभु जिन पूजा ।

॥ दोहा ॥

हिव पद्मम जिनवर तणी, पूजन करो उदार ।
भविचित भक्ति धरी करी, सुख संपति करतार ॥

॥ राग गुंड मिश्रित भीम मल्हार ॥

चाल—मेघ बरसै भरी कुसुम बादल करी,

परमपद पूर्व गिरिराज परि उदय लहि, विजित परचन्द्र दिनकर अनन्ता । चन्द्रप्रभु चन्द्रिका विमल केवल कला, कलित शोभित सदा जिन महन्ता ॥१॥ परम० ॥ कुमतिमत तिमिर भर हरिय पुन भूरि भवि, कुमुद सुख करिय गुणरयण दरिया । गहिर भवसिंधु तारण तरणि गुण, धारि भव तारि जिनराज तरिया ॥ परम पद० ॥२॥ राखिये आज मोहि लाज जिनराज प्रभु, करण सुख चरण जिन शरण परीया । परम शिवचंद्र पदपद्म मकरंद रस, पान नित करण तत्पर भरिया ॥३॥ परम पद० ॥

॥ काव्य ॥

सलि० ॐ ह्रीं श्रीमच्चन्द्रप्रभु जिने० वसु० ॥

नवमी श्रीसुविधि जिन पूजा ।

॥ दोहा ॥

सुविधि २ समरण थकी, कामित फल प्रगटाय ।
अतिगहन संसार वन, बहुल अटन मिट जाय ॥

॥ राग कामोद ॥

चाल—चपक केतकि मालती,

सुविधि चरणकज वंदिये ए ॥ अइयो वं० ॥ नंदिये अति चिरकाल । शिव तरवारि निकंदिये ए, विघन कंद तत्काल ॥१॥ आज जन्म सफलो भयो ॥ हां ए स० ॥ दीठो प्रभु दीदार । तनु मन दृग विकसित भये, जिम कज लखि दिनकार ॥२॥ अमृत जलधर वरसियो ॥ हां ए अइयो व० ॥ भवि उरक्षेत्र मझार । दर्शन सुरतरु ऊगियो, शिव फलनो दातार ॥३॥

॥ काव्य ॥

सलिल० ॐ ह्रीं श्रीमत्सुविधि जिनें० वसु० ॥

दशमी श्रीशीतल जिन पूजा ।

॥ दोहा ॥

मुझ तनु मन शीतल करो, श्रीशीतल जिनराय ।
तुम समरण जलधारसे, अंतर तपत पलाय ॥

॥ राग घाटो ॥

चाल-दादा कुशल सुरिन्द०

मेरे दीनदयाल, तुम भये सकल लोक प्रतिपाल। सुणि शीतल जिनवर महाराज, चरण शरण धर्यों प्रभुनो आज ॥ मेरे दीन० ॥ न नमूं सहु सविकारी देव, करसुं चरण कमलनी सेव ॥ मे० ॥१॥ जैसे सुरमणि करतल पाय, कुण ल्यै काच सकल उलसाय ॥ मे० ॥ तुम सम सुरवर अवर न कोय, हेर २ जग निरख्यो जोय ॥ मे० ॥२॥ प्रभु दर्शन जलधर घनघोर, लखिय नृत्य करै भविजन मोर ॥ मे० ॥ पद शिवचन्द्र विमल भरतार, अरज एह उर धरिये सार ॥ मे० ॥३॥

॥ काव्य ॥

सलिल० ॐ ह्रीं श्रीमच्छीतल जिनेन्द्राय वसु० ॥

इग्यारमी श्रीश्रेयांस जिन पूजा ।

दोहा

श्रीश्रेयांस जिनेन्द्र पद, नद द्युति सलिलाधार ।
जे नेत्रे मज्जन करे, ते शुचि हुई विधुतार ॥

॥ राग ॥

चाल–सोहम सुरपति वृषभ रुप करि न्हवण,०

श्रीश्रेयांस जिनेश्वर जगगुरु, इन्द्रियसदन सभंद हे । जसु वसु विध पूजनसे अरचो, उर धरि परमानन्द हे । ए समकित धर श्रावक करणी, हरिणो भवीमन रग हे । विजय देव जिन प्रतिमा पूजी, जीवाभिगम उवंग हे ॥ श्री० ॥ १ ॥ सुरियाभ प्रभु पूजन करियो, रायपसेणी उपांग हे । ज्ञाता अंगे द्रोपदी श्राविका, पूज्या जिन प्रतिविम्ब हे । जे निन्हव कुमती जिन पूजन उथपै तेह अनंत हे । काल अनंत भमसी भव वनमें, मंदमती भय भ्रान्त हे ॥ श्री० ॥ २ ॥ विष्णु मात तनु जात विष्णु नृप, विमल कुलंवर हंस हे । सकल पुरन्दर अमर असुरगण, शिरोवरि प्रभु अवतंस हे । इम सुरवरनी परे-श्रावक जे, पूजे जिन उछरंग हे । ते शिवचन्द्र परम पद लहिस्ये, निश्चै करि भव भंग हे ॥ ३ ॥ श्री० ॥

॥ काव्य ॥

सलिल० ॐ ह्रीं श्रीश्रेयांस जिनेन्द्राय० ॥

वारसी श्रीवासुपूज्य जिन पूजा ।

॥ दोहा ॥

हिव वारम जिनवरतणी, पूजन करिये सार ।
भाव भक्ति युत भवि सदा, द्रव्य भक्ति चितधार ॥

राग मालवी गौड़ी

चाल—नव वाड़ सेती शील पालौ०,

सकल जगजन करत वंदन, जया नंदन सामि रे ॥ देवा० ॥ दुरित ताप निकंद चंदन, परम शिवपद गामि रे ॥१॥ नृपति वर वसुपुज्य नृप कुल, विपिन नंदन जात रे ॥ देवा० ॥ सुहरि चंदन नंद नंदन, नंद मदकिय घात रे ॥ देवा० ॥ स० ॥ २ ॥ वासुपुज्य जिनेन्द्र पूजो सकल जन महाराज रे ॥ देवा० ॥ करत नुति शिवचन्द्र प्रभु ए, निखिल सुर सिरताज रे ॥ देवा० ॥ ३ ॥ स० ॥

॥ काव्य ॥

सलिल० ॐ ह्रीं श्रीमद्वासुपूज्य जिनेन्द्राय वसु० ।

तेरमी श्रीविमल जिन पूजा ।

दोहा

विमल विमल प्रभु कर मुझे, मलिन कर्म करो दूर ।
तेरम प्रभु रमिये सदा, मुझ उरमझि गुणपूर ॥

ढाल

चाल—सिद्धचक्र पद वंदो रे ॥ भ०

विमल चरण कज वंदो रे ॥ भविजन वि० ॥ वंदनसे आनन्दो रे ॥ भवि० वि० ॥ जसु गणधर मुनिवर गण मधुकर, सेवत पद अरविन्दो । श्यामा उदर सुकति मुक्ताफल, कृतवर्मा नृप नंदो रे ॥ भवि० ॥ १ ॥ सहुजग मंडल विमल करणकुं, जिन शासन नभ चंदो । उदय भयो भवि कुमुद विकसवा, वर गुण रयण समंदो रे ॥ भवि० ॥ २ ॥ यदि भव वंध हरण भवि चाहो, प्रभु वंदी चिरनंदो । विमल

चिदानंद घन मय रूपी, नित वंदत शिवचंदो रे ॥ भवि० ॥ ३ ॥

काव्य

सलिल० ॐ ह्रीं० श्री मल्लिमल० जिने० ॥

चौदमी श्रीअनंत पूजा ।

॥ दोहा ॥

हिव चवदम जिन पूजता, हरिये विषय विकार ।
भो भवियण सुणिये सदा, ए प्रभु सरणाधार ॥

ढाल भैरवी

चाल–पंचवर्णी अंगी रची०,

पूज करणी प्रभुनी दुरित निवारी ॥ दुरित० ॥ प्रा० ॥ अनंत तरणी हिम किरण तरुण तर, किरण निकर जीता है भारी । अनंत नाणवर दर्शन तेजे, प्रभु सुयशोदर है अवतारी ॥ पू० ॥ १ ॥ लोकालोक अनंत द्रव्य गुण, पर्याय प्रकट करण हारी । तातें अन्वय युत जिन धरियो, अनंत नाम अति मनुहारी ॥ पू० ॥ २ ॥ सिंह-सेन नृप नंदन वंदन, करते इन्द्रचन्द्र सुखकारी ।

सादि अनंत भंग स्थिति धरियो, पद शिवचन्द्र विजयधारी ॥ पू० ॥ ३ ॥

॥ काव्य ॥

सलिल० ॐ ह्रीं० श्रीमदनंत जिने० वसु० ॥

पंचदशम श्रीधर्म जिन पूजा ।

॥ दोहा ॥

भानुभूप कुल भानुकर, पनरम जिनसुर सार ।
शोभितसद्गुजगविपिनजन, हरखफलदजलधार ॥

॥ ढाल ॥

चाल—धार समीरे जमुना तीरे वसति बने वनमाली रे

धर्म जिनेश्वर धरम धुरंधर, जग बंधव जगवाला ॥मैं वारि०॥ सुव्रता नंदन पाप निकंदन, प्रभु भये दीनदयाला ॥ मैं वारि० धर्म० ॥१॥ प्रभु धीरज गुण निरखि अमरगिरि, लजि लीनो अचला धारा ॥ मैं वा० ॥ जिन गंभीरता चरम सिंधु लखि. किय लोकांत विहारा ॥ मैं धर्म०॥ ॥ २ ॥ ए जिनचंद्र चरण अरचननें, लहि जिन.

पति अवतारा ॥ मैं० ॥ करम वैरि दल करि
भवि लहिस्यो, पद शिवचंद्र उदारा ॥ मैं वारि०
धर्म० ॥ ३ ॥

॥ काव्य ॥

सलिल० ॐ ह्रीं श्रीमद्धर्म जिने० वसु० ॥

सोलहमी श्रीशान्ति जिन पूजा ।

॥ दोहा ॥

अचिरा उदरे अवतरी, शांति करी सुखकार ।
मारि विकार मिटायके, नाम धर्यो शांति सार ॥

॥ राग विभास ॥

चाल—भावधरि धन्य दिन आज सफलो गणुं,

शान्ति जिन चंद्र निज चरण कज शरण गत, तरणि गुणधारि, भववारि तारी । कुमति जन विपिन जनि, कुमति घन वृतिनि तति, छितिनि शितधार तरवार वारी ॥१। शां॥ एक भव पद उभय चक्रधर तीर्थंकर, धारिया वारिया विघनसारा । सकल मद मारिया, विमलगुण

धारिया, सारिया भक्त वंछित अपारा ॥ शां० ॥ २ ॥ हरिण लंछन धरा, वर्ण सुवरण करा, सुरवरा हित धरा गत विकारा । मोहभट धरणिधरगण हरण वज्रधर, कुमुद शिवचन्द्र पद रजनिकारा ॥ ३ ॥ शां० ॥

॥ काव्य ॥

सलिल० ॐ ह्रीं श्रोप० शान्ति जिने० ॥

सतरहमी श्रीकुंथु जिन पूजा ।

॥ दोहा ॥

सतरम जिनवर दीवसम, मझि भवसागर जाण ।
भक्ति युक्ति नितपूजिये, लहिये अमल विनाण ॥

॥ ढाल ॥

चाल—अरिहन्त पद नित ध्याइयें,

कुंथु जिणंद गुण गाइये ॥ वारि० ॥ मन वंछित फल पाइये रे । प्रभु समरण लय लाइये ॥ वारि० ॥ भविभव तजि शिव जाइये रे ॥ कुंथु० ॥१॥ भव जलगत निज आतमा ॥वा०॥ करुणा उर धरि ताइये रे । चरणकरण उप-

योगिता ॥ वा० ॥ ग्रहण करण कुं ध्याइये रे ॥ वा० ॥ कुं० ॥२॥ ए प्रभु दर्शन जीवने ॥वा०॥ अनुभव रसनौ दाइये रे। वर शिवचन्द्र विमल वधे, दिन दिन शोभ सवाइये रे ॥ कुं० ॥३॥
सलिल० चं० ॐ ह्रीं श्री प० कुंथु जिने० वसु० ॥

अठारमी श्रीअरनाथ जिन पूजा।

॥ दोहा ॥

जिन अठारमो ध्याइये, भविजन चित्त मझार।
करण तीन इकक्कर मुदा, प्रतिदिन जय जयकार॥

॥ राग वसन्त ॥

चाल—संग लागोही आवे, कुण खेले तोसुं होरी रे,

निज विमल भक्तिसे, अर जिनसे नित रमिये रे ॥ निज० ॥ निजगुण जिन गुण तुल्य करणकुं, चंचल चित हय दमिये रे ॥ नि० ॥ १ ॥ सुमति युवति संयम उर धरिके, कुमति नारि संग गमिये रे ॥ नि० ॥ अनुभव अमृत पान करणते, विषय विकृति विष वमिये रे ॥ निज० ॥ २ ॥ जिनवर संग रमण दव अनलै,

पंक सघन वन धमिये रे। कहे शिवचन्द्र जिनेन्द्र रमणसे, भवरणमें नहि भमिये रे ॥ नि० ॥३॥

॥ काव्य ॥

सलिल० ॐ ह्रीं श्रीमदष्टादश अर जिने० ॥

उन्नीसमीं श्री मल्लिजिन पूजा ।

॥ दोहा ॥

उगणीसम जिन चरणकज, भमरहोय लयलाय ।
सेवे तसु भवि भमरता, अगणित दुरित विलाय ॥

॥ ढाल ॥

चाल—सम्भव जिन सुखकारी रे वा०

मल्लिजिणंद उपकारी रे ॥ व्हाला मल्लि० ॥ हां रे हो रे वा०. वारी जाऊं वार हजारी रे ॥ व्हा० मल्लि० ॥ कुंभ नरेश्वर गगनांगणमें सहसकिरण अवतारी रे ॥ व्हा० म० ॥ १ ॥ पूर्व भव पद्मित्र नरिन्द्र प्रति, बोधिसिन्धु भवनारी रे व्हा० । वेदत्रयी विरही ननु भार्या, सकल संघ सुखकारी रे ॥ व्हा० मल्लि० ॥ २ ॥ सकल कुशल हरि चंदन नरवर, नंदन वन अनुकारी

रे व्हा० । संघ चतुर्विध भूरि खचरगण, प्रणत चन्द्र अनुहारी रे ॥ व्हा० मल्लि० ॥ ४ ॥

॥ काव्य ॥

सलिलचं० ॐ ह्रीं श्रीमल्लि जिने० ॥

॥ दोहा ॥

वीसवीं श्रीमुनिसुव्रत जिन पूजा ।

पद्मोत्तर वर पद्मनद, गत पर पद्म समान ।
विंशतितम जिन पूजिये, केवल लच्छी निधान ॥

॥ राग गरबो ॥

चाल—सुण चतुर सुजाण, परनारीसुप्रीति कबहु नहीं कीजिये

मुनिसुव्रत जिनेन्द्र सुनिजर धरी मुझपर वर दर्शन दीजिये । प्रभु दरश प्रीति निरुपाधिकता, करिये लहिये शिव साधकता । तब तुरत मिटे शिव बाधकता ॥ १ ॥ मु० ॥ अमृतमें साध्य पणो विलसै, प्रभु दर्शन साधनता उलसै । तद मुझमें साधकता मिलसै ॥२॥मु०॥ भिन्नादि करणता यदि विघटै, एकाधिकरणता यदि सुघटै । तद मुझ शिव साधकता प्रकटै

॥ मु० ॥ ३ ॥ एकाधिकरणता मुझ करियै भिन्नाधिकरणता परिहरियै । शिवचंद्र विमल पद तव वरियै ॥ मु० ॥ ४ ॥

॥ काव्य ॥

सलिलचं०, ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रत जिने० वसु० ॥

इक्कीसवीं श्रीनमि जिन पूजा ।

॥ दोहा ॥

अंतर वैरि नमाविया, तव लहियो नमि नाम ।
भविजन ए प्रभु पूजसें, सरीयें वंछित काम ॥

॥ ढाल ॥

चाल–हम आये हैं शरण तिहारे, तुम प्रभु शरणागत तारे,

श्रीनमि जिनवर चरण कमलमें, नयन भमर युग धरिये रे । तिण किय गुण मकरंद पानसे चेतन मद मत करिये रे ॥वारि चेतन०॥ श्री नमि० ॥ १ ॥ एह चरण कज अहनिश विकसै, परकज निसि कुमलावै रे ॥ वा० प० ॥ ए न वलै वलि तुहिन अनलसे, अपर कमल वल जावे रे ॥ वा० प्र० ॥ २ ॥ ए पद कज

गुण मधुरस पीवत, जीव अमरता पावे रे ॥ वारि० ॥ अवर कमल रस लोभो मधुकर, कज-गत गज गिल जावे रे ॥ वा० श्र० ॥ ३ ॥ पर-कज निजगुण लच्छिपात्र है, पदकज संपद देवे रे। तातें पद शिवचंद जिणिंदके, अहनिशि सुरनर सेवे रे ॥ वा० श्री० ॥ ४ ॥

॥ काव्य ॥

सलिल० ॐ ह्रीं श्रीं प० श्रीनमि जिने० वसु०॥

वाईसवीं श्रीनेमि जिन पूजा।

॥ दोहा ॥

बावीसम जिन जगगुरु, ब्रह्मचारी विख्यात।
इण वंदन चन्दन रसे, पाप ताप मिट जात ॥

॥ राग रामगिरी ॥

चाल—गात्र लहै जिन मन रंगसु रे देवा

नेमि जिणंद उर धारिये रे ॥ व्हाला० ॥ विषय कषाय निवारिये रे ॥ व्हा० ॥ वारिये हां रे व्हाला वारिये। ए जिनने न विसारिये रे ॥ १ ॥ जलधर जिम प्रभु गरजता रे ॥व्हा०॥

देशना अमृत वरसता रे ॥ व्हा० ॥ देस० ॥ वरसता हां रे व्हाला वरसता, भविक मोर सुनि उलसता रे ॥ २ ॥ समवसरण गिरि परिवह्या रे ॥ व्हा० ॥ भामंडल चपला वह्यारे ॥ व्हाला चपला वह्या ॥ हां रे च० ॥ सुरनर चातक उमह्या रे ॥ ३ ॥ बोधबीज उपजावियो रे ॥व्हा०॥ भवि उरक्षेत्र वधावियो हां रे ॥ व्हा० धावियो ॥ भविक मुगति फल पावियो रे ॥४॥

॥ काव्य ॥

सलिल चं०ॐ ह्रीं मन्नेमि जिने० वसु० ॥

तेईसवीं श्रीमत्पार्श्व जिन पूजा ।

॥ दोहा ॥

अश्वसेन नंदन सदा, वामोदर खनि हीर ।
लोक शिखर शोभे प्रभु, विजित कर्म वड़वीर ॥

॥ राग कहरवो ॥

चाल—बाजे तेरा बिछुआ बाजे,

पास जिणदा प्रभु मेरे मन वसीया ॥पा०॥ मेरे मन० ॥ गिरिकमलानन कमल विमल

कल, तर मकरंद पान अति रसिया ॥पास जि० ॥ १ ॥ वामानन्दन मोहनि मूरत, सकल लोक जनमन किय वसीया ॥पास जि०॥ परम ज्योति मुख चन्द विलोकित। सुरनर निकर चकोर हरसिया ॥ चकोर ह० ॥ पास जि० ॥ २ ॥ अंजनगिरि तनु दुति जिन जलधर, देशना अमृतधार वरसिया ॥ धार० ॥ पास जि० ॥३॥ पीय करि भवि चिरकाल तिरसिया। मुगति युवति तनु तुरत फरसिया ॥ पास जि० ॥ कुमुद सुपद शिवचन्द्र जिणंदनी। वारीजाउं मन मेरो अति ह उलसिया ॥ पास जि० ॥४॥

॥ काव्य ॥

सलिल० ॐ ह्रीं श्रीमत्पार्श्व जिने० वसु० ॥

चौबीसवीं श्रीमद्वीर जिन पूजा

॥ दोहा ॥

वर इक्ष्वाकु कुल केतु सम, त्रिसलोदर अवतार।
ए प्रभुनी नित कीजिये, विविध भक्ति सुखकार॥

॥ राग धन्याश्री ॥

चाल—तेज तरण मुख राजे

चरम वीर जिनराया ॥ हां रे० ॥ जिनराया। मेरे प्रभु चरम वीर जिनराया। सिद्धारथ कुल मंदिर ध्वज सम, त्रिशला जननी जाया। निरुपम सुन्दर प्रभु दर्शन तें, सकल लोक सुख पाया ॥ मेरे० ॥ १ ॥ वाम चरण अंगुष्ट फरसतें सुरगिरिवर कंपाया। इन्द्रभूति-गणधर मुख मुनिजन, सुरपति वंदत पाया ॥ हां रे मेरे० ॥ २ ॥ वर्तमान शासन सुखदाया, चिदानंद घनकाया। चन्द्र किरण गुण विमल रुचिर धर, शिवचन्द्र गणि गुण गाया ॥ हां मे० प्र० ॥३॥ वरसनंद मुनि नाग धरणि मित, द्वितियाश्विन मनभाया। धवल पक्ष पंचमि तिथि शनियुत, पुरजय नगर सुहाया ॥ मे० ॥ ४ ॥ श्रीजिनहर्ष सूरीश्वर साहिब, वर खरतर गच्छराया। क्षेमकीर्ति साखा भूषण मणि, रूपचन्द्र उवझाया ॥ मे० ॥ ५ ॥ महापूर्वजसु

अरिहंत पद पूजा करो, सेवत सदा सुरेश ॥
अष्ट द्रव्य लेई करी, पूजो अरिहंत देव ।
पूजत अनुभव रस मिले, पावो सुख नितमेव ॥
प्रथम पद ओंकार है, अतिसय जास अनंत ।
तीन लोकना राजवी, सेवे सुर नर संत ॥

॥ ढाल होलीरी ॥

बलिहारी सुखकर जिनवरकी । सब देवन में देव नगीनो, महिमा अधिकी मुनिवरकी ॥ ब० ॥१॥ कोई ध्यावे हरि हर ब्रह्मा, कोई कहि मेरे वाला जी ॥ ब ॥ कोई कहे मेरे चण्डी माता कोई कहै भैरू कालाजी ॥ब०॥२॥ कोई नरसिंघ देव कुं ध्यावे, कोई कहे मेरे ज्वाला जी ॥ ब० ॥ मेरे परसन तुम ही आए, वीतराग गुण वाला जी ॥ब०॥३॥ अवर देव सब काच कथीरा, तुम हो अमोलक हीरा जी ॥ब० राग द्वेष तुम पास नहीं हैं, बाइस परिसह धीरा जी ॥ ब० ॥४॥ तेरी सुरतकी बलिहारी, क्या कहुं अजब अमीरा जी ॥ ब० ॥ कोड

देवता हाजर रहता, अणहुंते वडवीरा जीं ॥व०५॥ जगजीवन जगलोचन कहिये, तुम सम अवर न धीरा जी ॥ व० ॥ तेरे गुणको पार न पायो, सुरनर राय वजीरा जी ॥व०६॥ वारै गुण प्रभु ऊपर सोहे, वृक्ष अशोक उदारा जी ॥व०। तीन छत्र भासंडल पूठै, ध्वजा फुरक रही सारा जी ॥व०॥७॥ पृथ्वी पीठ सिंहासन ऊपर, राजत हो वडवीरा जी ॥ व० ॥ पान फूल करके वहु सोभित, राजत हो गुण पूरा जी ॥ व० ॥ ८ ॥ सहस जोजननो इंद्रध्वजा, प्रभु आगल चालत सारा जी ॥ व० ॥ महा गोप महामाहण कहिये, निर्यामिक सथवारा जी ॥व॥९॥ ऐसे अरिहंत पदकी महिमा, सुणियो तुम सव प्यारा जी ॥ व० ॥ तीनलोकमें इनका झंडा, पूजत है इकतारा जी ॥व०॥१०॥ अष्टद्रव्य से पूजा करतां, सदा हुवे जयकारा जी ॥ व० ॥ धरमविशाल दयाल पसाये, सुमति कहे गुण सारा जी ॥ व० ॥११॥ ॐ ह्रीं पर-

आत्मने पंचपरमेष्टीमहामन्त्रराजाय अरिहंतपदे अष्टद्रव्यं यजामहे स्वाहा ॥

अथ बीजी सिद्धपद पूजा ।

॥ दोहा ॥

दूजी पूजा सिद्धकी, करो भविक गुणवंत ।
धजा चढावो भावसुं, लाल वरण मतिवंत ॥
गुण इकतीस विराजता, तीनलोक सिर छत्र ।
अनंत चतुष्टय धारता, जगजीवन जगमित्र ॥

॥ ढाल ॥

चाल—भवि पनरम पद गुण गाना हो

भवि सिद्धिपदके गुण गाना हो ॥ भ० ॥ पनरे भेदे सिद्ध विराजै, भवि तुम चित्तमें लाना हो ॥भ०॥सि०॥ जिन जिन तीरथ अतीरथ कहीयै, अन्य सलिंग कहाना हो ॥ भ० सि० ॥१॥ स्त्री पुरुषादिक लिंगे जाये कृत्य नपुंसक गाना हो ॥भ० सि० ॥ प्रत्येकबुद्ध ने सहसंबुद्धा, बुद्ध बोधित सुप्रमाना हो ॥भ०सि० ॥२॥ एक अनेक कह्या एक समये, गुरु मुखथी सुद्ध पाना

हो ॥ भ० सि० ॥ अष्ट सिद्धि नवनिधिके दाता तुम हो देव निधाना हो ॥ भ० सि० ॥३॥ सादी अनंत तुम सुखके भोगी, जोगीसर लय लाना हो ॥ भ० सि० ॥ शव्द रूप रस गंध फरसकुँ, जीत भए मुनी भाना हो ॥ भ० सि० ॥४॥ अव्यावाध सुखके तुम रसिये, भव्य सकल सुख दाना हो ॥भ० सि० ॥ घाति अघाति दूर करीने, जोतमें जोत समाना हो ॥भ० सि० ५। पेतालीस लख जोजन शिल्ला, उज्जल वरण कहाना हो ॥भ० सि०॥ ऊपर जोजन भाग चोइसमें, सिद्ध प्रभु ठहराना हो ॥भ० सि० ६॥ तिहां श्रीसिद्ध सदा जयवंता, परम गुरु परधाना हो ॥भ० सि०॥ अनंत गुणाकर ज्ञान दिवाकर इनके गुण नित गाना हो ॥भ० सि० ७॥ लवधि रिद्धि सव सिद्धिके दाता, परम इष्ट सुखदाना हो ॥भ० सि०॥ धरमविशाल दयाल पसाये, सुमति कहे वुधवाना हो ॥भ० सि० ८॥ ॐ ह्रीं परमात्मने सिद्धपदे अष्टद्रव्यं यजामहे स्वाहा।

तीजी अचार्य पद पूजा।

॥ दोहा ॥

तीजे पदकुं नित नमुं, आचारज गुणवान।
गुण छत्तीस विराजता, जिनवरके परधान॥
प्रतिरूपादिक गुण करी, राजे सूर समान।
जातिवंत कुलवंत हे, नहि विकथा नही मान॥
भव्य सकलकुं तारवा, दे साचो उपदेश।
कुमति सदा दूरे करे, सुमति पाले हमेश।
ऋद्धि सिद्धि कारण पूजिये, पीले रंग प्रधान।
गणधारक गुरु गच्छपति, जुगप्रधान सुजान॥

॥ ढाल ॥

चाल—मल्ली जिनंद सुखकारी रे वाला

आचारज सुखकारी रे, रे, वाला ॥आ०॥
गुण छत्तीस विराजै जेहना, परम परम उपगारी रे।वा०आ०।१। पंचाचार विराजत जगमणि, सहस किरण अवतारी रे ॥वा० आ०॥ प्रतिरूपादिक गुण जसु छाजै, मोह माया परिहारी रे ॥वा० आ० २॥ राग द्वेषकुं दूर निवारे, समता रस

भंडारी रे ॥वा० आ० ॥ क्रोध मान माया नहि जिनके, विकथा दूर निवारी रे ॥ वा० आ० २ ॥ तेज करी सूरज सम सोभित. मिथ्यातमके वारी रे ॥ वा० आ० ॥ क्षमा अधिक जगमें जसु राजै, विषय विकार निवारी रे ॥ वा० आ० ॥ ३ ॥ हृदय गंभीर महायश निरमल, रूपाधिक मनुहारी रे ॥ वा० आ० ॥ देस जात कुल उत्तम जिनके,मोह्या सब नर-नारी रे ॥ वा० आ० ॥ ४ ॥ सुरवर नरवर सेव करत है, जय जय तुम सुखकारी रे ॥ वा० आ० ॥ मीठी अमृत वाणी बोले, सुणतां हरष अपारी रे ॥ वा० आ० ॥ ॥ ६ ॥ पूरव चवद भण्या श्रुतसागर, लब्धि अठाइस धारी रे ॥ वा० आ० ॥ द्रव्यानुजोगी चरणानुजोगी, करणानुजोगके धारी रे ॥ वा० आ० ॥ ७ ॥ गणतानुजोगरू धरमानुजोगी. जाणे आगम सारी रे ॥ वा० आ० ॥ धर्म प्रभावक एह कहीजे, सूरि मंत्रके धारी रे ॥ व० आ० ॥ ८ ॥ गणधारी गछभार धुरंधर, सारण

वारणकारी रे ॥ वा० आ० ॥ ज्ञान उजागर विद्यासागर वारी जाऊं वार हजारी रे ॥ वा० आ० ॥ ६ ॥ धरमविशाल दयाल पसाये, सुमति कहे जयकारी रे ॥ वा० आ० ॥ ऐसे गौतमस्वामी कहिये, पूजो कर इकतारी रे ॥ वा० आ० ॥ १० ॥ ॐ ह्रीं परमात्मने आचार्य-पदे अष्टद्रव्यं यजामहे स्वाहा ॥ ३ ॥

चौथी श्रीउवज्झाय पद पूजा ।

॥ दोहा ॥

श्री उवज्झाया वंदिये, प्रेम धरी मन रंग ।
चोथे पदमें सोभता, पूजो धर उछरंग ॥
नील वरण ध्वज सुन्दरु, धर लावो शुभ थाल ।
अष्ट द्रव्य लेई करी, सेवो दीन दयाल ॥

॥ ढाल ॥

चाल—जिन गुण गाना श्रुत अमृतं,

श्री उवज्झाया भयहरणं, भयहरणं रे देवा भयहरणं ॥ श्री० ॥ परिहर विषय विकार प्रकारं, ए गुरु है असरण सरणं ॥ श्री० ॥ १ ॥

गुण पच्चीस विराजत सुन्दर, देखत सबको मन हरणं ॥ श्री० ॥ तेज पुंज रवि शशि सम दीपत, मिथ्या तम दूरे करणं ॥ श्री० ॥ २ ॥ सूत्र अर्थ दाता जगमांहे, मुनि मानसमें जय करणं ॥ श्री० ॥ सारण वायण चोयण करता, पडिचोयण वलि आचरणं ॥ श्री० ॥ ३ ॥ द्वादश अंग पढ्या श्रुतसागर, सुमतीधर कुमती हरणं ॥श्री०॥ अनिसय विद्या चूरण जोगे, जिन शासन उन्नति करणं ॥ श्री० ॥ ४ ॥ धरम प्रभावक है उपगारी, ऐसे गुरु तारण तरणं ॥ श्री० ॥ तप जप आदिकनी खप करता भव्य सकलकुं निसतरणं ॥ श्री० ॥५॥ नवविध ब्रह्मचर्य्यके धारक, दसविध विनय सदा करणं ॥ श्री० ॥ माया ममता दूर निवारी, द्वादस भेदे तप धरणं ॥ श्री० ॥ ६ ॥ शिष्य वरगकुं ज्ञान दान दै, मूरख थी पंडित करणं ॥श्री०॥ जगजीवनके हो प्रतिपालक, तुम विन अवर न आभरणं ॥ श्री० ॥७॥ विन कारण जगमे उपगारी, धन धनतुमरी

आचरणं ॥ श्री० ॥ पंच परमेष्टी महामंत्रको, इष्ट सदा दिलमें धरणं ॥ श्री० ॥ ८ ॥ धरम-विशाल दयाल पसाये, सुमति करे तुम नित वरणं ॥ श्री० ॥ नवनिध अडसिध मंगलमाला पूजत जगमें जस वरणं ॥ श्री० ॥ ९ ॥ ॐ ह्रीं परमात्मने सकल पाठकराजाय अष्टद्रव्यं यजा० ।

अथ साधुपद पूजा ।

॥ दोहा ॥

पंचम पदमें सोभता, साधु सकल गुणवंत ।
गुण सतवीस विराजता, महिमावंत महंत ॥
स्याम वरण मुनिवर कह्या, तप करवा अति सूर ।
भविक कमल प्रतिबोधता धरता निरमल नूर ॥

॥ ढाल ॥

चाल—सदा सहाई कुसलसू०,

सदा सहाई वीर पटोधर, सुणियो भविक उदार ॥ भलाजो गुरु, सु० ॥ सुधरमस्वामी अंतरजामी, तसु नंदन सुखकार ॥ भ० ॥ जंबू

आदिक गुण के सागर, ते प्रणमुं हितकार ॥ भ० ॥ स० ॥१॥ प्रभवादिक सय पांच उदारा, प्रतिबोध्या सुखकार ॥ भ० ॥ सिज्जंभव आदिक जे सूरी, तेहना शिष्य सुविचार ॥भ० स० ॥२॥ थूलभद्र मोटो ब्रह्मचारी, दुक्कर दुक्करकार ॥भ०॥ सिंह गुफा वासी जै मुनिवर, भाखे दुक्कर कार ॥भ०॥ स० ।३॥ वज्रकुमार वड़े उपगारी, प्रतिबोध्या नर नार ॥भ०॥ श्रीसिद्धसेन दिवाकर स्वामी, राखो जगमें कार ॥ भ० स० ॥ ४ ॥ विक्रम आदिक नृप अठारें, प्रतिबोध्या सुखकार ॥ भ० ॥ एक तीरथकुं परगट करके, गुरु चरणां व्रतधार ॥भ० स० ॥५॥ वलि जिनभद्र खमासण कहिये, चूर्णी कारक जेह ॥भ० स०॥ पन्नवणा वलि सूत्र ना कारक, श्यामाचारज तेह ॥भ० स० ॥६॥ देवर्द्धिगणी ए सबमें मोटा, राख्यो ज्ञानज सार ॥भ०॥ सूत्र ताडपत्रे धर राख्या, जेसलमेर मझार ॥ भ० स० ॥७॥ अभयदेवसूरी उपगारी, नव अंग टीकाकार ॥भ०॥ हेमाचारज है वडभागी

जिण कीनो हेमनो भार ॥ भ० स० ॥ ८ ॥ कुमारपालने जिण प्रतिबोध्यो, साखी धरमनो राख ॥ भ० ॥ श्रीजिनदत्तसुरीसर मोटा, श्रावक किया सवा लाख ॥ भ० स० ॥९॥ रतनप्रभसूरी उपगारी, ओस्यानगर मझार ॥ भ० ॥ जिहांथी जैन धरम विसतरियो, मोटो कियो उपगार ॥ भ० स० ॥९॥ इत्यादिक गुणगणके दरिया, सेवो भविक उदार ॥ भ० ॥ ढंढण आदिक महा तपसूरा, नाम लियां जयकार ॥ भ० स० ॥१०॥ गजसुकमाल महामुनि वंदूं, भाव करी इकतार ॥ भ० ॥ धन धन्ना अरू सालभद्रजी, कीनी करणीसार ॥ भ० स० ॥ ११ ॥ खंधकसूरिना शिष्य पांचसै, सूरवीर व्रतधार ॥ भ० ॥ पंचम पदमें ए मुनि पूजो, सदा हुवे सुखकार ॥ भ० स० ॥ १२ ॥ पंचम आरै छेहडे होसी, दुपसह सूर दयाल ॥ भ० ॥ इत्यादिक ए द्वीप अढोमें बंदूं साधु कृपाल ॥ भ० ॥ स० ॥ १३ ॥ धरम विशाल दयाल पसाये, पूज रची सुखदाय ॥ भ० ॥

सुमति कहै ए पंच परमेष्टी, कामधेनु कहवाय ॥भ० स० ॥ १४ ॥

॥ ढाल दूजी ॥

चाल—पणिहारीकी

सुण प्याराजी, सुणतां आसीस्वाद ॥प्याराजी, धरम सनेही साधुजी ।'सु०॥ करता पर उपगार ॥प्या०॥ लालच लोभ न जेहने, सु०। नही राखे द्वेष लगार ॥ प्या० ॥ ममता माया छोड़ीने, सु० । धारे व्रत सुखकार ॥ प्या० ॥ १ ॥ गाम नगर पुर पाटणे, सु० । करता धरम व्यापार ॥ प्या० ॥ राग द्वेष मुनिराजने, सु० । नहीं कोई विषय विकार ॥प्या० ॥२ ॥ उपगारी सिर सेहरो सु० । कुमति करे परिहार ॥प्या०॥ विन कारण मुनिराजजी, सु० । भव्य जीव हितकार ॥ प्या० ॥ ३ ॥ ज्ञानी ध्यानी सूरमा, सु० । महिमा करत नरेस ॥ प्या० ॥ वाणी अमृत सारसी, सु० । सुणतां हरप हमेस ॥ प्या० ॥ ४ ॥ अनेक जीव प्रतिबूझिया, सु० । धरम तणा

परधान ॥प्या०॥ माया न करे साधुजी, सु० । नहीं विकथा नहीं मान ॥ प्या० ॥ ५ ॥ पंच महाव्रत धारता, सु० । पटकाया प्रतिपाल ॥ प्या० ॥ दोष बयांलीस टालता, । सु० । ऐसे दीन दयाल ॥ प्या० ॥ सुमति धारक पांच छै, सु० । गुपतीना रखवाल ॥ प्या० ॥ ६ ॥ उद्देशक आदे करी सु० । कृतकड़ने वलि दूत ॥ प्या० ॥ सिज्यातर राय पिंडकुं, सु० । नहीं धारे अवधूत ॥ प्या० ॥७॥ वासी विदल ने टालता सु० । न लगावै कोई दोष ॥ सु० प्या० ॥ कुवचन केहनो सांभली, सु० । न धरे मनमें रोष ॥ प्या० ॥ ८ ॥ मधुकरनी परे मालता सु० । ऊंच नीच कुलमांह ॥ प्या० ॥ इर्यासमिति सोधता सु० । लेता धर्म नो लाह ॥ प्या० ॥९॥ जयणा कर कर चालता, लेवे निरस आहार प्या० ॥ लाधे भाडो दै देहने, सु० । अणलाधे तपधार ॥प्या० ॥१०॥ ओसर मोसर देखने, सु० । रस लंपट नहीं होय ॥ प्या० ॥ किरिया करता

साधुजी, सु० । आलस न करे कोय ॥ प्या० ॥ ११ ॥ परिसह जीते आकरा, सु० । करम हुवे सब दूर ॥ प्या० ॥ मुनिवर मधुकर सम कह्या सु० । दिन दिन वधते नूर ॥ प्या० ॥ १२ ॥ जंगम तीरथ सारखा, सु० । धरम तणा आधार ॥ प्या० ॥ एहवा मुनिवर पूजतां, सु० ॥ पावे वंछित सार ॥ प्या० ॥ १३ ॥ धरमविशाल दयालनो, सु० । सुमति कहे करजोड़ ॥ प्या० ॥ एहवा श्रीमुनिराजजी, सु० । मुझ माथेका मोड ॥ प्या० ॥ १४ ॥ ॐ ह्रीं परमात्मने सर्व साधुभ्यो अष्ट द्रव्यं यजामहे स्वाहा ॥

॥ कलश ॥

॥ दोहा ॥

अब है पूजा कलसकी, सुणीयो तुम नरनार ।
सांभलतां सुख पामसो, सफल हुसी अवतार ॥
ऐसी डाभ मोहनी, सभा सहु हरखाय ।
सेवो जगतकी मोहनी, ए जग सार कहाय ॥
मंत्र मांह सिरदार है, पंचपरमेष्टी एह ।

सरवारथ सिद्धी कह्यौ, गणधर गौतम जेह ॥
जेहने एहनी आसता, तेहने एह सहाय ।
भागहीन निरबुद्धिकुं, होत नहीं फल दाय ॥

॥ ढाल प्रश्न तथा उत्तर ॥

चंगीमें चंगी कोन जगतकी मोहनी, चंगीमें चंगी जांन जिणंदपद मोहनी ॥ १ ॥ सुखा जगतमें कोन कहो मन भावना, सुखी वो ही संसार परमपद भावना ॥ २ ॥ सब देवनमें देव बडो कुण जाणना। सब देवनमें देव बडो जिन जाणना ॥ ३ ॥ सबमें मोटो कौन कहो मेरो साजना । सबमें मोटो होय क्षमा गुण साजना ॥ ४ ॥ सबमें मोटो ध्यान कहो कोन साजना। सबमें मोटो ध्यान सुकल तुम जाणना ॥ ५ ॥ धरम बड़ो जग मांहि कहो कुण जाणना । दया धरम जगमांय बडो हे साजना ॥ ६ ॥ सब रसमें रससार कहो कुण साजना । सब रसमें वैराग वड़ो तुम जाणना ॥७॥ सब रमणीमें सार कहो कुण साजना । शिव रमणी है सार सुनो मेरे

साजना ॥ ८ ॥ दान वडो कुण होय कहो मेरे साजना, अभयदान सिरदार सुनो मेरे साजना ॥ ९ ॥ शिवरमणीको नाथ कहो कुंण साजना, शिव रमणीको नाथ सरव सिद्ध जाणना ॥१०॥ धरममें मोटो कौण कहो मेरे साजना, धरम मांह सुभ भाव सुणो मेरे साजना ॥११॥ दाता कहिये कोन कहो मन भावना, गुरु वड़े दातार धरम धन पावना ॥ १२ ॥ मीठो जगमें कोन कहो मन भावना, मीठी जिनकी वाण धरो चित चाहना ॥ १३ ॥ मीठो दाख खजूरके मीठी चाहनी, जिणसे अधिकी होय वाणी जिनरायनी ॥ १४ ॥ सब व्रतमें कुण सार कहो मेरे साजना, सब व्रतमें व्रत सार चोथो व्रत जाणना ॥ १५ ॥ खरतर गच्छपति चंद सूरीश्वर सोहता, सकल विमल गुण गेह भविक मन मोहता ॥ १६ ॥ प्रीतसागर गणि सीस सकल गुण राजता, अमृतधर्म उदार वाचक छाजता ॥ १७ ॥ पाठकमें परधान क्षमा गुण सारता । तसु सुत धरम

विशाल सुनिव्रत धारता ॥१८॥ सुमति कहे गुण सार भविक मन सोहता। बीकानेर मझार सकल मन सोहता ॥१९॥ संघ सकल सुखदाय सेवो प्रभु भावसुं। पूज रची चित लाय अधिक चित चावसुं ॥ २० ॥ संवत सय उगणीसके तेपन जाणीये, माहा सुद चवदस वार मंगल मन आणिये ॥ २१ ॥ भणतां गुणतां एह सदा सुख पामसे, घरघर मंगल माल हुवे जिन नामसे ॥२२॥ इति पंचपरमेष्टी पूजा संपूर्णम् ॥

मुनि चतुरसागर कृत

श्री शासनपति पूजा

प्रथम जल पूजा

सरस्वती जगदीश्वरी, श्रुत देवी सुखदाय ।
जिन मुख उद्भव भारती, नमो शारदा माय ॥१॥
वर्धमान जिनवर नमूं, जिन शासन सरदार ।
विघ्न हरण मंगल करण, नमूं मंत्र नवकार ॥२॥
तू दायक सोवन गुरू, वाकूं करू प्रणाम ।
दीवाली पूजन रचूं, वीर जिनेश्वर नाम ॥३॥
पूजा शिव सुखदायिनी, कहसूं सूत्र प्रमाण ।
शासनपति महावीर के, पूजो छह कल्याण ॥४॥

॥ सोरठा ॥

जल चन्दन वरफूल, धूप दीप अक्षत महा ।
नैवेद्य फल पटकूल, ध्वजा अर्घ आरात्रिका ॥५॥

॥ दोहा ॥

उत्तम जल कलशा भरी, पूजो त्रिशलानंद ।
निर्मल होवे आतमा, दिन दिन होत आनंद ॥६॥

॥ कव्वाली ॥

(राम कहने का मजा जिसकी जबां पर आ गया)

आज मैं आया शरण में, नाथ करुणा कीजिये ।
कठिन कर्मों में पड़े को, लाज अब रख लीजिये ॥
जातिकी एक ब्राह्मणी थी, देवानंदा नाम था ।
ऋषभदत्तकी वो वधू थी, विप्रकुल उजला दिया॥७॥
शुक्ल छट्ठ आसाढ़ की, रात्रि पटल से छा रही ।
देवानंदा ब्राह्मणी ने, अल्प निद्रा ले लई ॥८॥
माता बनाई आपने, उसके उदर अवतार ले ।
दिवस व्यासी रहे उनके, मनोरथ सब फल चले॥९॥
इन्द्र के आदेश से, हरनेगमेषी आप रे ।
उस ब्राह्मणीकी कोखसे, सिद्धार्थके घरमें धरे॥१०॥
शास्त्र इसको गर्भहर, कल्याण कह अपना लिया ।
आपने उस ब्राह्मणीका, नाम अजरामर किया॥११॥

चाल—किससे करिये प्यार यार खुदगरज जमाना है ।

महावीर जिनचंद नंद सिद्धारथ राजा के ।
प्राणत स्वर्ग लोक से आए, क्षत्रीकुंड नगर मन भाए । त्रिशला उदर अवतार लियो,

नंदन महाराजा के ॥१२॥ आश्विन वदि तेरस दिन आए, माता उदर गर्भ कहलाए। धनद देव भंडार भरे, ततक्षण महाराजा के ॥१३॥ स्वपन चतुर्दश मात निहारी, सचराचर सब भए सुखारी। घर घर मंगलमाल होत, दिन दिन महाराजा के ॥१४॥ चैत्र सुदी तेरस दिन आया, तीन लोक में आनंद छाया। जन्म लीन महाराज घरे, सिद्धारथ राजा के ॥१५॥ सकल भुवन में कर उजियारे, दास चतुर के कारज सारे। करे जन्म अभिषेक सुरासुर, पति महाराजा के ॥१६॥

(चाल इन्द्रसभा)

पाप कर्म सवि धोवन कारण, शुद्ध चेतन परकास। जल पूजन कर शासनपति की निर्मल आतम भास ॥१७॥

(रागिनी भैरवी त्रिताल)

प्रभुजी को सुरपति स्नात्र करावे, सुर नर सवि सुख पावे ॥ उत्तम कलश सुवर्ण रजत के,

नीर सुगंध भरावे। क्षीरोदक गंगोदक आने, सर्वौषधि जल लावे ॥१८॥ तीर्थोदक वर पद्मद्रोहक जल अभिषेक करावे। कल्याणक अभिषेक करे जो, दास चतुरगुण गावे ॥ १६ ॥

॥ श्लोक ॥

वीरः सर्व सुरा सुरेन्द्र महितो, वीरंबुधाः संश्रिताः। वीरेणाभिहतः स्वकर्म निचयो वीराय नित्यं नमः ॥ वीरात्तीर्थमिदं प्रवृत्तमतुलं वीरस्य घोरं तपः। वीरे श्री धृति कीर्ति कान्ति निचयः श्री वीरभद्रंदिशाः ॥२०॥

ॐ ह्रीं परमपरमात्मने अनन्तानन्तज्ञान शक्तये जन्म जरा मृत्यु निवारणाय श्रीमन्महावीर जिनेन्द्राय जलं यजामहे स्वाहा।

द्वितीय चन्दन पूजा

॥ दोहा ॥

केशर चन्दन मृगमदा, अंबर और बरास।
लेई पूजी सिद्धार्थ सूं, महावीर हरि रास ॥

(कितनीक दूर तेरी काशी रे पाडे)

शासनपति महावीर रसीले, शासनपति महावीर रसीले। छप्पन दिक्कुमारी गुण गावे, आवे जिनवर तीर रसीले। चौसठ सुरपति पांडुक वन में, पूजे जिनवर वीर रसीले॥ २॥ ताल मृदंग दुंदुभि वाजे, सरनाई गंभीर रसीले। ताथेई तान करतसूं वनिता, तोर करे प्रभु तीर रसीले॥३॥ देव सकल सुरनाथ हुकुम से, लावे तीरथ नीर रसीले। घसि चन्दन घनसार विलेपन, लावे सुरवर धीर रसीले॥४॥ शक्र इन्द्र पड़ गये संशय मे, देखा बाल शरीर रसीले। संशय मोचन चरण परस से, मेरु चलायो धीर रसीले॥५॥ थरर कांप गये सुरपति सुर देखि अतुल बलवीर रसीले। दास चतुर अब प्रभुकूं पूजे, कुंकुम चंदन सीर रसीले॥६॥

(चाल इन्द्रसभा)

शुद्धातम चंदन करि घिसिये, ज्ञानादिक गुण साथ। सौरभ प्रगटे सकल लोक के, होय निरंजन नाथ॥ ७॥

(रागिनी त्रिताल)

भक्ति वाले! शासन नायक, सेव अब पूज निरंजन देव। केशर चंदन मृगमद भेली, और बरास मिलेव। क्रमजानूं कर कंधशीसभाल गल, नव अंग पूजन भेव ॥८॥ मेरो साहिब प्राण पियारो, जो है देवाधिदेव। याके अंग परस सुख उपजे, वो मुख कहि न सकेव ॥९॥ प्रभु गतरागी अद्भुत रागी, यह आश्चर्य कहेव। हे अनियारे अखियन वारे, दास चतुर सुखदेव ॥ १० ॥

॥ श्लोक ॥

वीरः सर्व० ॐ ह्रीं परस परमात्मने अनन्तानन्त ज्ञान शक्तये जन्म-जरा-मृत्यु निवारणाय श्रीमन्महावीर जिनेन्द्राय चंदनं यजामहे स्वाहा।

तृतीय पुष्प पूजा

॥ दोहा ॥

अपतित भूमि सुगन्ध शुभ, धौत प्रमार्जित फूल।
पंच वरण भाजन भरी; पूजन समकित मूल ॥

(दिलदार यार गबरू राखू घूंघट का पट में)

सुनिये विनय हमारी; महावीर नाम वारे ।
हम वाल मित्र आये; आज्ञा पिता की पाए ।
खेलन कूं जीव जाहे; महावीर नाम वारे ॥१॥
आछी असोक वारी; उसमें खिली है क्यारी ।
फूलन वहार न्यारी; महावीर नाम वारे ॥२॥
चाले सखा बुलाए; वनवाटिका में आये ।
फूलन के हार पाए; महावीर नाम वारे ॥३॥
अज्ञान का पठाया, सुर एक मूर्ख आया ।
करि नाग रूप धाया; महावीर नाम वाले ॥४॥
आके सखा पुकारा; आता है नाग कारा ।
सुनके उछार डारा; महावीर नाम वारे ॥५॥
पुनि कीन दुष्ट माया; प्रभु ने उसे दवाया ।
अव दास शिर नमाया; महावीर नाम वारे ॥६॥

(इन्द्र सभा)

हृदय कमल स्थित परमेश्वर; चिदानंद भगवान ।
वाके गुण कुसुमावली करके; पूज सकल सुख दान ॥७॥

(राग मालवी गौडी)

पूज हो कल्याण प्रभु का; सकल सुर सुख दाय ये देवा। पंच सायक दुःख दायक; नाश तसु हो जाय ये देवा; नाश० ।८। मालती मचकुंद दमणो; केतकी सरसाय ये देवा; केतकी० । पडल चंपक मोगरा सिती; बोलश्री वरलाय ये देवा; बोल० ।६। पांच वरण प्रमोददायक; कुसुम घन वरसाय ये देवा; कुसुम० । भक्ति भाव प्रमोद करिके; सरस दाम बनाय ये देवा; सरस० ।१०। नाम मेरो प्राण जीवन; देख मन हुलसाय ये देवा; देख० । चतुरसागर दास ने अब; लियो हृदय लगाय ये देवा; लियो० ॥११॥

॥ श्लोक ॥

वीरः सर्व० ॐ ह्रीं परम परमात्मने अनन्तानन्त ज्ञानशक्तये जन्मजरामृत्यु निवारणाय श्रीमन् महावीर जिनेन्द्राय पुष्पं यजामहे स्वाहा।

चतुर्थ धूप पूजा

॥ दोहा ॥

शुद्धौषध चूरन करी; द्रव्य सुगन्ध मिलाय।
प्रभु सन्मुख करिये हवन; कर्म समिध जल जाय।

(उद्धवजी कब दर्शन देंगे बंशी को बजाने वाले)

साइयां अब कब मिलना होगा; कहे नंदीवर्धन भाई ॥ तुम संयम मारग में जाते; हम ऊपर दया न लाते। अब काह करें हम नाथजी; ना रहे पिता अरु माई ॥२॥ मिगसर वदी दशमी आई; इन्द्रादिक इन्हें वधाई। अब संयम लेते सांइयां सब जीव को सुखदाई ॥३॥ यह संयम मारग वंका; नहीं इसमें कुछ भी शंका। यह नही सोवनी लंका; कई कष्ट परे दुखदाई ॥४॥ संसार सकल दुख खानी; कई मरे जा रहे प्राणी। यह सांची विधि तुम जानी; इस कारण चले दूराई ॥५॥ प्रभु संयम लेकर भारी, सबि कर्म समिध कूं जारी। कहे दास चतुर वलिहारी; कर जोरि वीर जिनराई॥६॥

॥ इन्द्र सभा ॥

अष्ट कर्म वनदाह करन घन, है तप अग्नि समान। पिंड पात्र करि धूप करे सो; पावे निर्मल ज्ञान ॥ ७ ॥

(रागनी एमन कल्याण; धीमे त्रिताले की ठुमरी)

तू ईश्वर प्राणपति मेरा; और न कोई सहायक मेरा। तू ही जगतारक दुःख निवारक; असरन जनको सरन है तेरा ॥ कृष्णागुरु अरु मृगमद अंबर; लेई घनसार लोवान सुगहेरा ॥८॥ धूप करों प्रभु सन्मुख तोरे; सरस सुगंध अति सुख देरा। दास चतुर कूं पार उतारो; मैं हूं प्रभु शरणागत तेरा ॥ ६ ॥

॥ श्लोक ॥

वीरः सर्व० ॐ ह्रीं परम परमात्मने अनन्तानन्त ज्ञान शक्तये जन्मजरामृत्यु निवारणाय श्री मन्महावीर जिनेन्द्राय धूपं यजामहे स्वाहा।

पंचम दीप पूजा

॥ दोहा ॥

शुद्ध हवी शुभ पात्र में, शुद्ध वर्तिका जोय।
करि दीपक पूजे प्रभू, मोह तिमिर क्षय होय ॥

(रागनी मांड)

महावीर प्रभू ने तप संयम दीपाया हैजी।

वाह वाह वाह जी हो हो हो हो महावीर प्रभु ने ॥ चंडकौशिक फणी आयके, दियो आपके डंक । महाराज उसको अष्टम स्वर्ग पठाया है जी वाह ॥२॥ शूल हस्त धर है दैत्य ने, दिये कष्ट अति घोर । बलिहारी उसको सिद्धारथ समझाया है जी वाह ॥३॥ संगम सुर एक नीच ने दिये घोर उपसर्ग । सुरराज उसको मुग्दर मार भगाया है जी वाह ॥४॥ कानो में कील दई, गवली नीच अजान । जिनराज उस पर शान्त भाव दरसाया है जी वाह ॥५॥ तप दीपक दीपाय के, मोह तिमिर क्षय कीन । महावोर प्रभु के दास चतुर, गुण गाया है जी वाह ॥ ६ ॥

(इन्द्र सभा)

चेतन पात्र सुकर्म वर्तिका, दुखद कर्म हवि होय । ज्ञान ज्योति प्रगटे तनु भीतर, तम अज्ञान को खोय ॥७॥

(रागनी भैरवी)

प्राण मेरे ल्यो सुप्रदीपक आज, साहेब गरीब

निवाज ॥ तू परमेश्वर जगदीश्वर, तू ही सुधारन काज । तेरी अखियन पर मैं वारो, जाऊं हूं महाराज ॥८॥ तुमसे मेरा प्रेम देख के, होय कर्म को लाज । अब जो साहेब प्रेम मिटा दो, तो मुझ होय अकाज ॥९॥ दीख पड्यो अब रूप तुम्हारो, इस दीपक के साज । दास चतुर के वांछित फल गए, रंक निपायो राज ॥१०॥

॥ श्लोक ॥

वीरः सर्व० ॐ ह्रीं परमपरमात्मने अनन्तानन्त-ज्ञान शक्तये जन्म जरा मृत्यु निवारणाय श्रीमन्महावीर जिनेन्द्राय दीपं यजामहेस्वाहा ।

पष्ट अक्षत पूजा

॥ दोहा ॥

पंच वर्ण अक्षत सरस, भरि कंचन के थाल ।
अक्षत प्रभु गुण गायके, पूजो दीन दयाल ॥१॥

(कृष्ण घर नंद के आये, सितारा हो तो ऐसा हो)

वीर सिद्धार्थ के नंदन, जिनेश्वर हो तो ऐसा हो ॥ शुदी बैसाख को दशमी, मिला है ज्ञान

जिनवर को । कटे है फंद कर्मों के, महावीर हो तो ऐसे हों ॥२॥ मिला एक आय अभिमानी, इन्द्रभूति ब्राह्मण था । बनाया शिष्य अरु गणधर गणेश्वर हो तो ऐसे हो ॥३॥ दधिवाहन नरेश्वर की, धीया चंदन सुबाला थी । किया परवर्तिनी उसको, दयावर हों तो ऐसे हों ॥५॥ मंखली पुत्र क्रोधी ने, जलाये दोय मुनीवर को । किया नहीं क्रोध कुछ उस पर, क्षमाधर हों तो ऐसे हों ॥५॥ जमाली दुष्ट निन्हव को, दिया सुर-लोक रहने को । चतुरसागर मुनी जन के, महेश्वर हों तो ऐसे हों ॥ ६ ॥

(इन्द्र सभा)

अक्षत द्रव्य मोक्ष सुख अक्षत, अक्षत केवलज्ञान । अक्षत तत्व योनि पुनि अक्षत, पांचो अक्षत जान ॥ ७ ॥

(रागनी आशावरी)

नाथ तेरे अक्षत सुख से यारी, मैंने कर लई है सुखकारी ॥ तेरे घर में भूख न प्यासा,

जन्म नहिं नहिं मारी । रोग न शोक न वृद्ध न बाल न, ये सब अचरजकारी ॥८॥ स्वामी शिव वनिता को रसियो, जाने सब संसारी । क्षण भर अक्षत सुख नहिं छोड़े, लोक कहे ब्रह्मचारी ॥९॥ तू नहीं हमरी ओर निहारे; हमने काह विगारी । तेरे हैं कारण पियारे; हम तरसत हैं भारी ॥१०॥ तेरे कारण वन वन भटकी; खाक बदन में डारी । दास चतुर को ओर न देखे अब क्या मरजी तिहारी ॥११॥

॥ श्लोक ॥

वीरः सर्व० ॐ ह्रीं परमपरमात्मने अनन्तानन्त ज्ञान शक्तये जन्म जरा मृत्यु निवारणाय श्री मन्महावीर जिनेन्द्राय अक्षतं यजामहेस्वाहा ।

सप्तम नैवेद्य पूजा

॥ दोहा ॥

सरस शची पक्वान्न ले, भरि नैवेद्य के थाल ।
शासनपति महावीर के, आगे धरों रसाल ॥१॥

(तर्ज वनजारे की)

महावीर जिनेश्वर ज्ञानी, सुखदायक बोले वानी ॥ करि समवशरण सुरराजा, गढ़ कांगुर ओ दरवाजा। विचरल पीठिका जानी; महा०॥२॥ असोक वृक्ष की छाया, शिर चामर छत्र धराया। सुर दुंदुंभिनाद बखानी ; महा० ॥३॥ तहां बैठि परपदा बॉरा, भामंडल का उजियारा। सभी देखत जिनवर कानी ; महा० ॥४॥ पशु पक्षी सुर नर सारे, भिन भिन देसावर वारे। सभि समझ परे जिनवानी ; महा०॥५॥ वाणी अमृतरस बरसे, सुनि सकल परपदा हरसे। कहे दास चतुर सुख खानी ; महा० ॥६॥

(इन्द्र सभा)

पांच सुमति पंचेद्रियनिग्रह, सोहि सरस पक्वान्न।
रस अनंत युत मिष्ट पदारथ, ले पूजों भगवान ॥७॥

(रागनी कांगड़ा प्रभाती)

मेरे प्रभु को मीठो दर्शन; कहो किसको नहीं भावें जी ॥ कामी क्रोधी कपटी धुतारे, उनको नहीं सुहावेंजी। द्वेषी अज्ञ पापीजन प्रभुकूं; देखि देखि जल जावेंजी ॥८॥ सज्जन मित्र भले मन वारे; इसके ही गुण गावेंजी। दुष्ट कर्म को मारण हारे; वे इसके ढिग आवें जी ॥९॥ गुड़ भी मीठो शाकर मीठी; मीठी चकिया मावें जी। अन्न भी मीठो अमृत मीठो; नहीं दर्शन के दावेंजी ॥१०॥ भरि नैवेद्य थाल कंचन के; प्रभु के सम्मुख ठावें जी। दास चतुर अब मीठो दर्शन; जन्म जन्म विच पावेंजी ॥११॥

॥ श्लोक ॥

वीरः सर्व० ॐ ह्रीं परम परमात्मने अनन्तानन्त ज्ञानशक्तये जन्म - जरा - मृत्यु निवारणाय श्रीमन्महावीर जिनेन्द्राय नैवेद्यं यजामहे स्वाहा।

अष्टम फल पूजा

॥ दोहा ॥

फल पूजन महाराज की, करे भविक धरि प्रेम।
विन प्रयास पावे सही, शिवफल निश्चय नेम।१।

चाल—तुम विन दीनानाथ दयानिधि कौन खबर ले मेरी रे।

शासनपति महावीर जिनेश्वर; अविचल शिवसुख पायो रे। पावापुरि में करि चउमासो; सांचो धर्म दिपायो रे। हस्तिपाल राजा प्रभु पूजे; तन मन धन हुलसायो रे ॥२॥ कइयक श्रावक कइयक राजा, कइयक मुनि मन भायो रे। कइयक देव अमरपति कइयक, प्रभु चरणन चित्त लायो रे ॥३॥ पुण्यपाल राजा करजोरी; प्रभु चरणा शिर नायो रे। पूछो इस कलियुग की रचना; जिनवर भेद बतायो रे। ॥४॥ गुरू गौतम कूं आज्ञा दीनी; देवदत्त घर जावो रे। नास्तिक मत का पूरा पंडित; उस कूं तुम समझावो रे ॥५॥ सोहम गणधर को समझा के, सूत्र विपाक सुनायो रे। कृपा धर्म को उत्तर सास्तर; दास चतुर सुन पायो रे ॥६॥

॥ रागनी पीलू धन्याश्री ॥

फल पूजन फलदायक प्रभु की; करत सुजन भव पार लगेगा। शुद्ध अभक्षित सटित गलित नहिं; पतित न भूमि सुधोत कहेगा। श्रीफल पुंगी वदाम छुहारे; द्राक्षादिक फल भेद कहेगा ॥७॥ पात्र रजत भरि मधुर फलनि से; प्रभु के सम्मुख लाय ठवेगा। मुख से करि जिनवर गुण गायन; ताल मृदंग धुनि युत रहेगा ॥८॥ प्रेम सुलाय नयन जल भरि करि; अशुभ करम क्षण मांहि दहेगा। हम प्रभु को इन फलसे पूजें; प्रभु शिवफल हमहो कूं चहेगा ॥९॥ दास चतुरको फिर का चहिये; तीन भुवन जय जय लहेगा। फल पूजन फलदायक प्रभु की; करत सुजन भवपार लहेगा ॥१०॥

॥ श्लोक ॥

वीरः सर्व० ॐ ह्रीं परम परमात्मने अनन्तानन्त ज्ञान शक्तये जन्मजरा मृत्यु निवारणाय श्री मन्महावीर जिनेन्द्राय फलं यजामहे स्वाहा।

नवम वस्त्र पूजा

॥ दोहा ॥

देव दिव्य युग वस्त्र से; पूजो दीन दयाल।
विना वस्त्र निर्वाह नहीं; इस पंचम कलिकाल ॥

(इन्द्र सभा)

द्वादश अंग सुतन्तु सूत्र सम; गणधर वुनक समान। देवदुष्य श्रुत निर्मल प्रगट्यो; सो पटधार सुजान ॥२॥

चाल—हम दया का डंका वजाय जायेंगे

प्रभु अरजी हमारी अवश्य सुनो। दुष्ट अधर्मी लोक जगत में, पाखंड पूजन होसि घनो ॥३॥ तीन वरण के नर पाखंडो, होवेगे सभि आप जनो। शुद्ध सनातन जैन धर्मको कर देवगे वे कनो कनों ॥ ४ ॥ थोडा आयुष्य और वढ़ा लो, इन दुष्टन के मान हनो। शासन नायक वीर जिनेश्वर, वोले सुर नर सभी सुनो ॥५॥ भावी भाव कूं कोई न टारे, सत्य मंत्र तुम यही भनो। दास चतुर की अर्जी न गुजरी, हो गयो सुरपति ऊनमनो ॥६॥

॥ राग श्री ॥

पट युगल वसन में बलिहारी, बलिहारी मैं तेरी बलिहारी। सुन्दर वेल लगी है तो में, फूलन की छबि है न्यारी। झीनी झीनी पतियां झलके, नीको लागत है क्यारी ॥७॥ भार अल्प और मूल्य घनो है, मोतियन को झालर सारी। जिन गुणी जन ने तुझे बनाया, उसकी पन में हूं वारी ॥ ८ ॥ अब मैं भेंट करूँ हूं तेरी, इन साहिव के सुखकारी। दास चतुर के नाथ पियारो, जो है निरंजन अविकारी ॥ ९ ॥

श्लोक

वीरः सर्व० ॐ ह्रीं परमपरमात्मने अनन्तानन्त ज्ञानशक्तये जन्मजरामृत्यु निवारणाय श्रीमन्महावीर जिनेन्द्राय वस्त्रं यजामहे स्वाहा।

दशम ध्वज पूजा

दोहा

दंड मनोहर लायके, सुन्दर ध्वजा बनाय।
करो चैत्य महावीर के, उत्सव ध्वजा चढ़ाय ॥

(राजुल पुकारे नेम पिया)

गौतम पुकारे प्राणनाथ क्या दगा किया। मुझे छोड़ के अकेले आप, मोक्ष चल दिया ॥ गर आपकी न राय थी, मोक्ष ले चलें। तो अंत का मिलाप मुझसे क्यों हटा लिया ॥२॥ हर वखत आप मुझको, गौतम कह बोलावते। एक आज का ही दिन हुवा, बिलकुल भुला दिया ॥३॥ जो होती बात कुछ भी, फौरन पूछ आपसे। करता दलील आपसे, उस दम बता दिया ॥४॥ कहां जाय के विचार अब किसको सुनाऊँगा। आज इस दुविधा में मेरा दिल दुखा दिया ॥५॥ सूरत पियारी आपको, कब देख पाऊंगा। यह दास की पुकार जो थी, सब सुना दिया ॥६॥

॥ कोयल कुहुक रही मधुवन में ॥

मैं बलिहारी पावापूरि की, पावापूरि के, जल मंदिर को मैं बलिहारी०। कार्तिक वदी अमावश राते, भीड़ मची इन्द्र सुरवर की ॥७॥

शासननायक मोक्ष सिधारे, आज्ञा ले सुरवर इन्दुर की ॥८॥ चंदन चय बिच दाह करि के, रत्न पीठिका कर जिनवर की ॥६॥ चरण पीठि का स्थापन करि के, पूजा करत सकल ईश्वर की ॥१०॥ नंदीवर्धन आदिक राजा, कीन्हीं यात्रा पावापूरि की ॥११॥ ध्वज पूजन जिनवर की करके, आसा पूरण दास चतुर की ॥१२॥

वीरः सर्व० ॐ ह्रीं परम परमात्मने अनन्तानन्तज्ञानशक्तये जन्म-जरामृत्युनिवारणाय श्रीमन्महावीर जिनेन्द्राय ध्वजां यजामहे स्वाहा।

एकादश अर्घ पूजा

॥ दोहा ॥

आठों कर्म खपाय के; मोक्ष गये महाराज।
पूजों अर्घ चढ़ाय के, दीवाली दिन आज ॥१॥

राग मांड (जरा टुक जोवो तो सही)

नाथ मोहि तारो तो सही, मैं कहो दोहि कर जोरी॥ मैं अज्ञानी कछु ना समझूं सांचो मूढ़ भई। इन कर्मनि में मेरो रहवो, आछो है

नहीं ॥२॥ भूल पर्यो में नाथ तुम्हारो, भटक्यो चार गई। दीनवन्धु अब राह बताओ, दीना-नाथ दई ॥३॥ पापी लंपट और धुतारे, मेरे साथ रहो। मोरे मन को वे भरमावें, संपति लूट लई ॥४॥ जो अब अरजी नहीं सुनोगे, तो मैं आज कही। दास चतुर अब इन दुष्टन से, बचने को नहीं ॥५॥

॥ जोगिया आसावरी ॥

नाथ तेरे चरण कमल पर वारी, तेरी यात्रा करे नर नारी ॥ खरतर गण नभ मंडल सूरज, आचारज पदधारी। जिन कृपाचन्द्र सूरीश्वर राजे, महिमा अजव अपारी ॥६॥ जय सुख राज विवेक मुनीवर, कीना वलि सुखकारी। संयम तप कृपा गुण वाले, दीप रहो उजियारी ॥७॥ पर गन गत जो मिथ्यावादी, कर्दम सम गुण-धारी। सूख गए नय मारग खेती, वा अब पक गई सारी ॥८॥ चार वीस शत वर्ष पचासे, गांव तलने मझारी। कार्तिक वदी चउदस शनिवारे

दीवाली दिन जुहारी ॥ ६ ॥ दास चतुरसागर अनुयोगी, कीन्हीं पूजा तैयारी। भूल परी जो इस पूजन में, माफ करो अधिकारी ॥१०॥

वीरः सर्व० ॐ ह्रीं परम परमात्मने अनन्तानन्तज्ञानशक्तये जन्म जरामृत्युनिवारणाय श्रीमन्महावीर जिनेन्द्राय अर्घं यजामहे स्वाहा।

॥ शासन पति आरती ॥

हां करो आरती प्रभु की रस में ॥ हां करो ॥ वीस स्थानक तप कर तीजे भव, हुए तीरथपति सुसमें ॥ १ ॥ स्वप्न चतुर्दस मात निहारे, देव देवेन्द्र हुल्लस में। जिन अभिमुख हुय शक्रस्तव करि, सुरवर सबहि हरष में ॥२॥ इन्द्र हुकुम से धनद देवता, भरत खजाने ठस में। तीन भुवन में हरष भयो है, रोम रोम नस नसमें ॥३॥ सरव कल्याणक आरती करके, किये कर्म कूं नष्ट में। दास चतुर के वंछित फल गये, अब नहीं संशय इसमें ॥४॥

महो० विनयसागर कृत

महावीर-षट्-कल्याणक-पूजा

प्रथम च्यवन कल्याणक पूजा

दोहा

सिद्ध-बुद्ध शिवकर विभो; सर्व हितावह देव ।
श्रमण तीर्थपति हे प्रभो, महावीर जिन देव ॥
वर्धमान जितरिपु नमुं, वर्धमान गण देव ।
सुमतिसिन्धु गुरु गणि-मणि, करों प्रणति सह सेव
श्रुत देवी प्रणमूँ सदा, वीणा धारिणी देवि ।
षट् कल्याणक पूजना, वर्णन करूँ चित सेवि ॥

(राग-सिद्धचक्र पद वन्दो)

कल्याणक गुणधारी वन्दों महावीर अवतारी । वार वार बलिहारी वन्दों महावीर अवतारी ॥टेर॥ पहिले भव नयसार विवेकी, साधु सेवा भावे । समकित गुण पावें भव गिनती; तब ही से प्रभु पावें ॥वन्दों० १॥ मरिचि भव में चक्री वन्दन, वाणी सुने अभिमाने । नीच

गोत्र करमदल बांधे, वीर भवे क्षय ठाने ॥ ॥वन्दों० २॥ नंदन भव में मासखमण से, लाख वरस तप योगी । वीस स्थानक आराधन से, तीर्थंकर पद भोगी ॥ वन्दों० ३॥ प्राणत देव-लोक से च्यवकर, सत्तावीसम भव में। प्रभु पधारे शासन स्वामी, कल्याणक जीवन में ॥वन्दों०४॥ ब्राह्मणकुंड ऋषभदत्त ब्राह्मण, देवी देवानंदा । चौद सुपन देखे तब तन-मन में होवे पर-मानंदा ॥वन्दों० ५॥ जागृत हर्षित देवानंदा, प्रियतम पास पधारी । स्वामी ! सुपने देखे मैंने, क्या फल हो हितकारी ? ॥ वन्दों० ६ ॥ वेद पुराण ब्राह्मण परिव्राजक, मत शासन विज्ञानी। होगा पुत्र मनोहर तेरे, जग जीवन कल्याणी॥ वन्दों० ७॥ श्रवण मनन कर मन हर्षानी, देवा-नन्द सयानी । च्यवन कल्याणक प्रभु की पूजा, करते विनय विधानी ॥वन्दों० ८॥

॥ श्लोक ॥

सार्वीयमीश्वरमनन्तहितावहं श्री–सिद्धार्थ-

वंशगगनाङ्गणपूर्णचन्द्रम्। सर्वज्ञ–देव–त्रिशला-त्मज—–वर्धमानं सद्द्रव्यभावविधिना सततं यजेऽहम्। ॐ ह्री परमात्मने अनन्तानन्तज्ञानशक्तये जन्म-जरामृत्युनिवारणाय श्री मज्जिनेन्द्राय महावीरपट्कल्याणकपूजायां प्रथम च्यवनकल्याणके अष्टद्रव्यं निर्वपामिते स्वाहा।

द्वितीय गर्भापहार कल्याणक पूजा

॥ दोहा ॥

देवानन्दा कुक्षि में, देख विभु को इन्द्र।
मन मे सशय होत है, राहु देखि जिम चंद्र।१।
नीच गोत्र विपाक से, यह आश्चर्य अयोग।
ममाचार है, क्यों न करूँ ? प्राप्त पुण्य संयोग॥

(लय–जादूगर सैयाँ छोड मेरी बइया)

इन्द्र आज्ञा से, मृगनैगमेपी, आकर मर्त्य-लोक गर्भसंहरण किया। देवाका रत्न त्रिशला कुक्षि में, त्रिशला का देवा कुक्षि गर्भसंक्रमण किया। आश्विन कृष्णा त्रयोदशी, मध्य रात्रि

के मांहि। दिवस तिरासीवें आये विभुवर, त्रिशला कुक्षि मांहि ॥ यह आश्चर्य महान् ।गर्भ० १॥ चउदह सुपने देखे माता, जीताचार हुआ है। इसीलिये यह द्वितीय कल्याणक, मंगलकारी कहा है ॥ अपहरण है मंगलधाम ॥गर्भ०॥ २॥ कतिपय विज्ञ गर्भहरण को, कहते अमंगलरूप हैं। वे विज्ञ नहीं पर विज्ञंमन्य हैं, शास्त्रदृष्टि से दूर हैं ॥ संकीर्ण वृत्ति गंभीर ॥गर्भ०३। आचार, स्थान, समवाय, कल्प–आदि सूत्र दर्शाते। गणधर, श्रुतधर, पूर्वाचार्य, कल्याण रूप बतलाते ॥ मंगलकारी महान् ॥गर्भ० ४॥

॥ दोहा ॥

ज्योतिषी गण दैवज्ञ गणो, भूपति लीन्ह बुलाय।
स्वप्न गुणन फल पुत्र सुनि, हर्षन हृदय समाय।१।
सिद्धि अभिवृद्धि सकल, नित नव प्रकटे जोत।
त्रिशला श्री सिद्धार्थके, सफल मनोरथ होत।२।
अष्ट सिद्धि नवनिधि सब, प्रकटे क्षण-क्षण माहिं।
पुण्य नगर महाराजगृह, आनन्द नहीं समाहिं।३।

पूर्ण मनोरथ जब हुए, तवहि विचारे भूप।
वर्धमान प्रिय राखि हौं, तथा नाम गुण रूप।४।

(गजल–उठ जाग मुसाफिर भोर भयो)

प्रभु देखि उदर दुख जननी के, झट निश्चलता अपनाते हैं। माँ को आशंका होती है, संशय चिहुं दिशि मँडराते हैं ॥१॥ क्या देव हुए प्रतिकूल मेरे, क्यों झंझावात वहाते हैं। मेरो शान्ति की दुनिया में, विक्षोभ-अग्नि सु-लगाते है ॥२॥ क्या पूर्व-जन्म के कृत कर्म से, प्रतिकार खड़ा वदला लेने। हे देव ! आज क्यों रूठ गये, संसार लगा है दुख देने ॥३॥ देवों ने छीना क्यों मुझसे, अपहरण हुआ सब कुछ मेरा। पलटी प्रभुता इक पल-छिन में, झट चंचल रूप बनाते हैं ॥४॥ जननी की आकुलता विलोकि, प्रभु चेतन-गति दर्शाते हैं। ममता-मयि की ममता लखकर, कर्त्तव्यरूढ़ हो जाते हैं ॥५॥ प्रण किया प्रभु ने है जब तक, पितु मातु हमारे दुनिया में। दीक्षा नहीं ग्रहण करूँ

तब तक, दृढ़ टेक रेख बन जाते हैं ॥६॥ माता मन हर्षित प्रेम पुलक, सुख रोम-रोम छा जाता है। आनन्द रूप प्रभु का प्रतिदिन, प्रति पल आनन्द बढ़ाता है ॥७॥

॥ श्लोक ॥

सार्वीयमीश्वर–मनन्त–हितावहं श्री—सिद्धार्थवंश गगनांगण पूर्णचन्द्रम् । सर्वज्ञदेव त्रिशलात्मज—वर्धमानं सद्‌द्रव्य–भावविधिना सततं यजेऽहम् । ॐ ह्रीं परमात्मने अनन्तानन्त ज्ञानशक्तये जन्मजरामृत्युनिवारणाय श्रीमज्जिनेन्द्राय महावीरषट्कल्याणकपूजायां द्वितीय-गर्भापहार-कल्याणके अष्टद्रव्यं निर्वपामिते स्वाहा ।

तृतीय जन्म कल्याणक पूजा

॥ दोहा ॥

चैत्र शुक्ल तेरस तिथि, मधु ऋतु आधी रात।
नवें मास जिन अवतरे, शुभ दिन साढ़े सात ।१।

हस्तोत्तर नक्षत्र था, नव वसन्त लहरात।
जग विभोर था प्रेम में, प्रभुता प्रभु विकसात।२।

(लय—मधुर-मधुर बाजे धुनि)

नगर-नगर, डगर-डगर, बाजती वधाइयाँ। देव देवलोक छोड़ि, देवरानि धाइयाँ ॥नगर० १॥ आज क्षत्रि कुण्ड ग्राम, पुण्य धाम पाइयाँ। दिग्कुमारि देवियों ने, सूतिक्रम रचाइयाँ ॥ नगर० २ ॥ देवराज अहो भाग्य, मेरु शैल आइयाँ। ले गये प्रभु उठाय, महोत्सव मनाइयाँ ॥ नगर० ३ ॥ सुनत ही वधाई वेगि, नृप उछाह पाइयाँ। धन्य-धन्य भाग्य मेरे, ऐसो सुत जाइयाँ ॥ नगर० ॥ कौस्तुभ, वैडूर्य पीत, नील मणि लुटाइयाँ। स्वर्ण-रजत कौन कहे, इच्छा भर पाइयाँ ॥ नगर० ५ ॥ दिवस दसों दिशि आज, आनन्द वधाइयाँ। मंत्र मुग्ध जननि-जनक, स्वर्गिक छवि छाइयाँ ॥ नगर० ६ ॥ ज्ञात जन बुलाय लीन्ह, पट् रस जिमाइयाँ। वर्धमान नाम राखि, हृदय से लगाइयाँ ॥नगर०७॥

॥ दोहा ॥

चन्द्र कला सों अहर्निश, वर्धित श्री वर्धमान।
आमलिकी क्रीड़ा करत, शीश मुष्टि दे तान ।१।
छली देव को छल किया, जाने जब भगवान।
महावीर तव नाम कहि, पायो समकित दान ।२।

(लय—ओ पंछी बावरिया)

नन्दीवर्धन वन्धु, वहिन श्री सुदर्शना। तरुणकेलि रसवेलि, एक संग खेलना ॥ समरवीर की पुत्री यशोदा, कुँवर प्राप्त कर हुई प्रमोदा। जीवन अर्पण करके, करे तव सेवना ॥ नं० १ ॥ सुख के दिन बीते मंगलमय, प्रेम प्रवाह थाह नहीं निश्चय। जनमी शक्ति अनूप—रूप प्रियदर्शना ॥ नं० २ ॥ मात-पिता स्वर्गस्थ हुए जब, पूर्ण प्रतिज्ञा जान प्रभू तव। आये बन्धु के पास, करें यह याचना ॥ नं० ३ ॥ भाई अब आज्ञा दो मुझ को, धारण करलूँ संयम व्रत को। विश्व तारक बन जाऊँ—यही मम भावना ॥ नं० ४ ॥ ज्येष्ठ बन्धु द्रवीभूत हो

बोले, पलक मूँद् मनके दृग खोले। भैया त्याग न जाओ—रहो मम कामना ॥ नं० ५ ॥ भूला नहीं दुख मात-पिताका, तोड़ रहे क्यों मुझ से नाता। जख्म नये पर नये—नमक नहीं डारना ॥ नं० ६ ॥ करो निवास वर्ष दो प्रियवर, अनुमति दो तुम हर्षित होकर। दया की भीख मैं चाहूं—बन्धुवर याचना ॥ नं० ७ ॥ वर्धन की ममता को निरखकर, अनुमति दी अपना प्रण खोकर। स्नेह निभाऊँ तुम्हारा—वर्ष दो चाहना ॥ नं० ८ ॥ दर्शन, ज्ञान, चरित की धारा, बहे त्रिपथगामिनि अविकारा। गृह में भी रहे तपस्वी—यह कैसी साधना ॥ नं० ९ ॥

॥ श्लोक ॥

सार्वीय-मीश्वर-मनन्त-हितावहं श्री—सिद्धार्थवंशगगनांगणपूर्णचन्द्रम्। सर्वज्ञ-देव-त्रिशलात्मज-वर्धमानं सद्द्रव्यभावविधिना सततं यजेऽहम्। ॐ ह्रीं परमात्मने अनन्तानन्त ज्ञानशक्तये जन्मजरामृत्युनिवारणाय श्री महा-

नेन्द्राय महावीरषट्कल्याणकपूजायां तृतीय जन्म कल्याणके अष्टद्रव्यं निर्वपामिते स्वाहा।

चतुर्थ दीक्षा कल्याणक पूजा

॥ दोहा ॥

अनायास प्रकटे पुनि, श्री लोकान्तिक देव।
प्रभु से बोले विनत हो, सहज कृपालु सदैव ॥१॥
एक वर्ष अब बीत चुका, प्रभु कीजे तत्काल।
धर्म-चक्र प्रवर्तना, मिटे जगत जंजाल ॥२॥
नीति निभाने के लिये, पहुंच यशोदा पास।
कहा वीर ने हे प्रिये, विदा करो सोल्लास ॥३॥
प्रिय मुख से यह बात सुन, बोली वह मम प्राण!।
जाओ! जाओ!! प्रेम से, करो विश्व कल्याण ।४।

(लय—सुनो सुनो हे दुनिया वालो)

चले प्रभु धन धाम छोड़कर, संयम-व्रत के हो अनुरागी। वर्षी दान देकर के विभुवर, आज बने हैं स्वयं विरागी ॥ इन्द्र-इन्द्राणि नगर नर नारी, उत्सब खूब मनाते हैं। पूजन-अर्चन

करके प्रभु का, प्रेम-पुष्प वरसाते हैं ॥ चन्द्र-प्रभा शिविका में वैठकर, ज्ञात खण्ड मे आते हैं। अशोक तरु तर त्यागे सब कुछ, शिव स्वरूप वन जाते हैं ॥ मिगसर शुदी दसमी को प्रभुवर, संयम-पथ अपनाते हैं। अपनाकर वन पूर्ण यमी वे, मनपर्यव वर पाते हैं ॥ च० १॥ भूपति वर्धन की अनुमति से, वीर वहांसे निकल पड़े। सन्ध्या समय वृक्ष के नीचे, ध्यानावस्थित रहे खड़े ॥ उसी समय ग्वाला इक आकर, वैल सौंपकर उन्हे चला। जव लौटा तव वैल नही थे, क्रोध अग्नि में भुना जला ॥ रस्सी लेकर चला मारने, इन्द्र ने आकर रोक लिया। शिक्षा उसको देकर उसने, वीतराग से अर्ज किया ॥ विभो। आपके हर संकट में, आज्ञा हो तो साथ रहूं। अंगीकार न किया वीर ने, कहा स्वयं निज वाँह गहूं ॥ चले० २ ॥ मोराक सन्निवेशाश्रम में विभु, दूइज्जन्त के पास गये। सुहृद्-पुत्र को भेंटा ऋषि ने, वीर प्रेम

में मग्न भये ॥ पन्द्रह दिवस बिताकर विभु वर, अस्थिग्राम में आते हैं। शूलपाणि सुर के मन्दिर में, भी इक रात बिताते हैं ॥ उसी रात में शूलपाणि सुर, ऊधम बहुत मचाता है। आखिर थम कर हार-हार कर, क्षमा माँगकर जाता है ॥ चले० ३ ॥

॥ दोहा ॥

सोमभट्ट पितु-मीत जब, पहुंचा दीन शरीर।
माँगा तब प्रभु ने दिया, देवदुष्य निज चीर।१।
चंडकोशिया साँप ने, डसा वीर-पद एक।
शिक्षा पाई, तन तजा, यों गति पाइ नेक ॥२॥

(लय—अम्बिका विरुद बखाने : मात्रा—७)

महिमा को न पिछाने, प्रभु तव महिमा को न पिछाने। गोशालक था महा पातकी, अवरणवादी तुम्हारा। तेजोलेश्या से जलते बचाया, पर दुर्जन कब माने ॥ प्रभु० १ ॥
संगम देव महा अपकारी, नीच उपद्रवकारी।

इक यामिनी में वीस उपद्रव, अतिहु भयंकर कीने ॥प्रभु० २॥ स्थान-स्थान पर अपमानित कर, तस्कर दोप लगाये। अशन पान से वंचित करके, छः महीने दुख दीने ॥प्रभु० ३॥ आखिर में हत हार मान कर, चरणन गिरा तुम्हारे। ऐसे निर्दय पापी प्रलोभी, क्षमा प्रदान की तुमने ॥प्रभु० ४॥ वैशाली लोहकार शाला में, रहे अटल प्रभु ध्याने। लोहकार ने अशुभ मानकर, लौह घन बरसाने ॥प्रभु० ५॥ एक गोपालक महा कृतघ्नी, वैर पूर्व भव ठाने। श्रवण-रन्ध्रों में कील ठोंक कर, अति पीड़ा पहुँचाने ॥ प्रभु० ६ ॥ खरक वैद्य ने कील काढ़ कर, स्वस्थ किया क्षण मांहि। व्यंतरी इक कटपूतना नामा, शीतोपसर्ग कीने ॥प्रभु० ७॥ अपकारी पर भी उपकारी, चेतोदार मनस्वी। समकित स्वर्ग मुक्ति के दाता, गौरव कौन वखाने ॥ प्र०८ ॥

॥ दोहा ॥

कर्म निर्जरा के लिये, विचरे म्लेच्छ प्रदेश ।
महा भयंकर कष्ट सहि, दहे कर्म अनिमेष ॥१॥
श्रमण तपस्वी ने किया, उग्र अभिग्रह एक ।
पूर्ण न हो तब तक सदा; निराहार रहुं टेक ॥२॥

(लय—गजल : झिंझोटी)

अति सुकुमारी राजकुमारी, कारागार निवासी हो ॥ टेर० ॥ सिर मुण्डित पग में हो वेड़ी, दिवस तीन उपवासी हो । रुदन करत हो ठाढ़ि देहली, दान बाकुला राशी हो ॥अति० १॥ बीते पाँच मास दिन पच्चिस, कौशाम्बी प्रभु आते हैं । धनश्रेष्ठी के ठौर दधि सुता, चन्दनबाला पाते हैं ॥अति० २॥ हुई प्रतिज्ञा पूर्ण वीर की, देव पुष्प बरसाते हैं । पञ्चादिव्य कर धूमधाम से, महिमा अधिक बढ़ाते हैं ॥अति० ३॥ दो छमासी, अरु नौ चौमासी, दो त्रिमासि, दो अढ़ि मासी । छै दो मासी, डेढ़ मासी दो, पक्ष बहत्तर तप

राशी ॥अति० ४॥ साढ़े वारह वरस पक्ष भर, छद्मस्थ काल विताते है। उग्र तपस्वी तप वल द्वारा, कर्म नाश कर पाते हैं ॥अति० ५॥

॥ श्लोक ॥

सार्वीयमीश्वर-मनन्त-हितावहं श्री-सिद्धार्थवंश-गगनाङ्गण-पूर्णचन्द्रम्। सर्वज्ञदेव-त्रिशलात्मज-वर्धमानं, सद्द्रव्य-भावविधिना सततं यजेऽहम्। ॐ ह्रीं परमात्मने अनन्तानन्त-ज्ञानशक्तये जन्म जरामृत्युनिवारणाय श्रीम-ज्जिनेन्द्राय महावीरपट्कल्याणकपूजायां चतुर्थ-दीक्षाकल्याणके अष्टद्रव्यं निवपामिते स्वाहा।

पचम केवल-ज्ञान कल्याणक पूजा

॥ दोहा ॥

नदी तीर ऋजुवालुका, शाल तरुतर आन।
शुदि दसमी वेसाख मह, पायो केवलज्ञान ॥१॥
घन घाती चौकर्म का, क्षय कर हे सरताज।
सर्वदर्शी सर्वज्ञ तुम, आज वने जिनराज ॥२॥

नेन्द्राय महावीरषट्कल्याणकपूजायां पंचमकेवल-ज्ञान-कल्याणके अष्टद्रव्यं निर्वपामिते स्वाहा ।

षष्ठ निर्वाण कल्याणक पूजा

दोहा

तीस वर्ष गृहवास के, संयम बैंतालीस ।
पूर्ण आयु प्रभु पार करि, मुक्ति लहे जगदीश ।१।
अस्थिग्राम इक जानिये, चम्पानगरी तीन ।
वैशाली वाणिज्य में, बार चउमासी कीन ॥२॥
चउदह नालन्दा किये, छः मिथिला में जान ।
द्वय चउमासी भद्रिका, आलम्भिका इक मान ।३।
श्रीवस्ती अरु म्लेच्छ भूमि;इक-इक चउमासीठाय
मध्यम पापा अन्त में, आये श्री जिनराय ॥४॥

(लय—झट जावो चन्दन हार लावो····)

जिन स्वामी, महावीर नामी, परम पद पाते हैं ।
करि कर्मों का अंत, चले मुक्ति के पंथ, मन भाते हैं

(साखी)

निर्वाण-समय जिन जानकर, अखण्ड

देशना देत। गौतम को करके पृथक, देखो सिद्धि-वधू वर लेत रे—अमर वन जाते हैं ॥ जिन० १ ॥ कार्तिक कृष्ण अमावस स्वाति नखत में प्राण। देह त्याग त्यागी चले कर विश्व-जीवन कल्याण रे—अक्षय कहलाते हैं ॥ जिन० २ ॥ अचल अरुज, अविनश्वर; ज्योति स्वरूप अनन्त। अनन्तज्ञानी दर्शनी; मङ्गल रूप सुसन्त रे—मुक्ति पद पाते हे ॥ जिन० ३ ॥ देख छठे कल्याण को; दुखी हुए सब देव। कौन हरे तम-पुंज अब; कहन लगे तब देव रे—अश्रु बरसाते हैं ॥ जिन० ४ ॥ सुनकर मुख से देव के, महावीर—निर्वाण। दुखित हुए गौतम तभी, कर वीर प्रभु का ध्यान रे—मन में बसाते हैं ॥ जिन० ५ ॥ तज संकल्प-विकल्प सब, गुण-श्रेणी चढ़ि जायँ। कर्मों को निर्मूल कर, केवल्य ज्ञान को पायँ रे—देव हर्षाते हैं ॥ जिन० ६ ॥

॥ श्लोक ॥

सार्वीय-मीश्वर-मनन्त-हितावहं श्री—सिद्धार्थवंशगगनाङ्गणपूर्णचन्द्रम् । सर्वज्ञ–देव–त्रिशलात्मज—वर्धमानं, सद्द्रव्यभावविधिना सततं यजेऽहम् । ॐ ह्रीं परमात्मने अनन्तानन्त-ज्ञानशक्तये जन्म-जरामृत्युनिवारणाय श्री मज्जिनेन्द्राय महावीरषट्कल्याणकपूजायां षष्ठ-निर्वाण कल्याणके अष्टद्रव्यं निर्वपामिते स्वाहा ।

॥ कलश ॥

(लय—सरोता कहां भूल आये····)

महावीर जिनवर की पूजा है सुखकारी । दर्शन की बलिहारी ॥ टेर ॥ वीर विभु के षट्कल्याणक, शास्त्र सिद्ध हैं भाई । परम पवित्र परम फलदायक, जगके मङ्गलकारी ॥ पूजा० १ ॥ शासन के महास्तम्भ गणों में, खरतरगच्छ आचारी । सुखसागर भगवानसागरजी, हुए परम उपकारी ॥ पूजा० २ ॥ सुमतिसिन्धु सम दादा गुरुवर, महोपाध्याय पद-

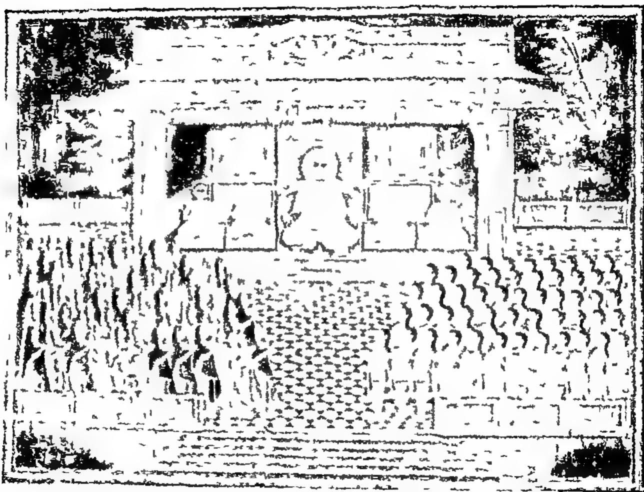
धारी। तासु पट्टधर विशद यशस्वी शास्त्र धुरन्धर भारी ॥ पूजा० ३ ॥ 'कल्याणक' 'पर्युषण' 'साध्वी' व्याख्यान निर्णयकारी। सूरिवर श्री जिनमणिसागर, गण के परमाधारी ॥पूजा०४॥ तत्पदरेणु महोपाध्याय, साहित्याचार्य कहाये। श्यामासूनु विनयोदधि ने, पूजा रची मनुहारी ॥ पूजा० ५ ॥ हिन्द संवत्सर आठ, इन्दु दिन, पन्द्रह अगस्त मँझारी। दो हजार द्वादस भादो की, कृष्ण त्रयोदशी सारी ॥ पूजा० ६ ॥ महासमुन्द नगर अति सुन्दर, जहँ श्री शान्ति विराजै। संघ चतुर्विध शासन सेवी, वर्ते जय जयकारी ॥ पूजा० ७ ॥

* आरती *

ॐ जय महावीर विभो।

शरणागत के रक्षक, तारक भव सिन्धो ॥ १ ॥ पावापुरी है तीर्थधाम प्रभु, जैसलमेर मंडन। कन्नाणा साँचोर नाँदिया, उपकेशपुर भूषण॥ ॐ० २ ॥ च्युति गर्भ हरण जन्म अरु

दीक्षा, केवल निर्वाणी। षट्कल्याणक वीर तुम्हारे, यह आगम वाणी ॥ॐ० ३ ॥ श्री श्री-मेघराजजी, महासमुन्दर वासी। प्रेरक हैं प्रिय इस आरती के, हे घट-घट वासी ॥ ॐ० ४ ॥ आरती जो यह गावें भवि जन, वंछित फल पावें। स्वर्ग मोक्ष फल पाकर के वे, धन-धन हो जावें ॥ ॐ० ५ ॥



युगप्रधान दादागुरुदेव श्री जिनदत्त सूरिजी, बावनवीर एवं चौंसठ योगिनियाँ

❀ ॐ ❀

दादा गुरुदेव की पूजा

(पहले स्थापना करके नीचे लिखा आह्वान् का श्लोक पढे)

काव्य

सकलगुणगरीष्ठान्सत्तपोभिर्वरिष्ठान् ॥
शम दमयमयुष्टांचारूचारित्रनिष्टान् ॥
निखिल जगत पीठे दर्शितात्म प्रभावान् ॥
मुनिपकुशल* सूरीन्स्थापयाम्यत्रपीठे ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं श्रीं श्रीजिनदत्त श्रीमणिधर जिनचन्द्र श्री जिनकुशल श्री जिनचन्द्रसूरि गुरो अत्रावतरावतर स्वाहाः ॥ ॐ ह्रीं श्रीं श्री जिनदत्त श्री श्री मणिधर जिनचन्द्र श्री जिन कुशल श्री जिनचन्द्रसूरिः अत्र तिष्ठः ठः ठः ठः स्वाहा ॥ इति प्रतिष्ठापनं ॥२॥

ॐ ह्रीं श्रीं जिनदत्त श्री मणिधर जिनचन्द्र श्री जिनकुशल श्री जिनचन्द्रसूरि गुरो अत्र मम सन्निहितो भववषट् (इति संनिधि करणं) ॥३॥

---

* दत्त

कमलनी बलिहारी, गु० ॥ १ ॥ *संवत इग्यारे बार शशि, बत्तीसे जनम्या शुभ दिवसो। श्रावक कुल हुम्बड ने हुलसी, गु० ॥ २ ॥ जसु वाछगसा पितु नाम भणे, बाहडदे माता हर्ष घणे। इकतालीसे दीक्षा पभणे, गु० ॥ ३ ॥ गुणहत्तरे वल्लभ पाटधरी, गुरु माया बीजनो जाप करी। गुरु जग में प्रगट्या तरण तरी, गु० ॥ ४ ॥ मणिधारी जिनचन्द उपगारी, जिनदत्त सुरिंद के पटधारी। भये दादा दूजा सुखकारी, गु० ॥ ५ ॥ राशल पितु देल्हणदे माता, श्रीमाल गोत्र बोधन शाता। दिल्लीपति शाह सुगुण गाता, गु० ॥ ६ ॥ जसु चौथे पाट उद्योतकरी, जिनकुशलसुरिंद अति हर्ष भरी। ×तेरे सैंतीसे जनम धरी, गु० ॥ ७ ॥ जसु जिल्ला जनक जगत्र जियो, वर जैतश्री शुभ स्वप्न लियो। छाजेहड गोत्र उद्धार कियो, गु० ॥ ८ ॥ yधन सैंतालीसे दीक्षा धरी; जिनचन्द

* ११३२ चंद्रवार × ११३७ y १३४७

सुरीश्वर पाट वरी। गुणहतरे सूरि मन्त्र जापकरी गु० ॥ ९ ॥ सेवा में बावन वीर खरा, जोगनियाँ चौसठ हुक्म धरा। गुरु जग में कई उपकार करा, गु० ॥ १० ॥ माणिकसूरीश्वर पद छाजै, जिनचन्द्रसूरि जग मे गाजे। भये दादा चौथा सुखकाजे, गु० ॥ ११ ॥ जिन चाँद उगायो उजियालो, अम्मावस की पूनम चालो। सब श्रावक मिल पूजन चालो; गु० ॥ १२ ॥ जिन अकबर कों परचा दीना, काजी की टोपी वस कीना। बकरी का भेद कहा तीना, गु० ॥ १३ ॥ गधोदकसुरभि कलश भरी, प्रक्षालन सद्गुरु चरण परी, या पूजन कवि 'ऋद्धिसार' करी, गु० ॥ १४ ॥

॥ श्लोक ॥

सुरनदीजलनिर्मल धारकैः ॥ प्रबलदुष्कृतदाघनिवारकैः ॥ सकल मङ्गलवांच्छितदायक ॥ कुशलसूरिगुरोश्चरणोयजे ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं श्रीं परमपुरुषाय। परमगुरुदेवाय। भगवतेश्री जिनशासनोद्दीपकाय। श्रीजिनदत्त-सूरीश्वराय। मणिमण्डित भालस्थल श्री जिन-चन्द्रसूरीश्वराय। श्री जिनकुशल सूरीश्वराय। अकबर असुरत्राणप्रतिबोधकाय श्री जिनचन्द्र-सूरीश्वराय। जलं निर्वपामिते स्वाहा ॥

२—अथ केशर चन्दन पूजा

॥ दोहा ॥

केशर चन्दन मृगमदा, कर घनसार मिलाप।
परचा जिनदत्तसूरि का, पूज्यां छूटे पाप ॥१॥

(चाल बीन बाजे की)

दीन के दयाल राज सार सार तूं ॥ टेर ॥
आये भरुअच्छनग्र धाम धूम धूं। बाजते निशान ठौर, हर्ष रंग हूं ॥ १ ॥ मुसलमान मुगलपूत, फौज मौज मूं। फौत मौत हो गया, हाय कार सूं ॥ २ ॥ सघ्न विघ्न देख आप, हुक्म दीन यूं। लाओ मेरे पास आस जीव दान दूँ ॥३॥ मृतक पूत मंत्र से उठाय दीन तूं। देख के अचंभ रंग

दास खास कूँ ॥४॥ करत सेव भाव पूर, तुरक राज जूं । छोड़ के अभक्ष खाण, हाजरी भरूं ।५। वीज खीज के पड़ी, प्रतिक्रमण के मूं । हाथ से उठाय पात्र ढांक दीन छूं ॥ ६ ॥ दामनी अमोल बोल, सिद्ध राज तूं । देऊँ वरदान छोड़, वन्द कीन क्यूं ॥७॥ दत्त नाम जपत जाप, करत नाहिं चूं। फेर में पड़ूंगी नांहि छोड़दीन फूं ।८। करोगे निहाल आप, पात्र पलक नूं । राम ऋद्धि-सार दास, चरण छाँह लूं ॥ ९ ॥

॥ श्लोक ॥

मलयचन्दनकेशरवारिणाः निखिलजाड्य रुजातपहारिणा ॥ सकलमङ्गलवाँच्छितदायकं । कुशलसूरिगुरोश्चरणोयजे ॥१॥

ॐ ह्रीं श्रीं परमपुरुषाय । परमगुरुदेवाय । भगवतेश्री जिनशासनोद्दीपकाय । श्रीजिनदत्त-सूरीश्वराय । मणिमण्डित भालस्थल श्री जिन-चन्द्रसूरीश्वराय । श्री जिनकुशल सूरीश्वराय ।

अकबर असुरत्राणप्रतिबोधकाय श्री जिनचन्द्र-सूरीश्वराय । केशरचन्दनंनिर्विपामिते स्वाहा ।२।

३–अथ पुष्प पूजा

॥ दोहा ॥

चंपा चमेली मालती, मरुआ और मचकुन्द ।
जो चाढ़े गुरुचरण पर, तिन घर होय आनन्द ।१।

राग माड

(चाल–नींद तो गई रे बादीला म्हारी)

गुरु परतिक सुरतरु रूप सुगुरुसम दूजो तो नहीं । दूजो तो नहीं, म्हारा चेतन दूजो तो नहीं । गुरुपरतिखसुरतरुरूप, सुगुरुनं पूजो तो सही ॥टेर॥ चित्तौड़ नगरी वज्र खम्भ में, विद्या पोथी रही । मन्त्र यन्त्र विद्यासे पूरी, गुरुनिज हाथ ग्रही ॥ १ ॥ पुर उज्जयनी महाकालके, मन्दिर थम्भ कही । सिद्धसेन दिनकर की पोथी, विद्या सर्व लही ॥ २ ॥ उज्जयनी व्याख्यान बीच में श्राविका रूप ग्रही । जोगनियाँ छलने कूं आई, सबकूं कोल दई ॥ ३ ॥ दीन

होय जोगनियाँ चौसठ गुरु की दास भई। सात दिया वरदान हरष से, पसर्या सुयश मही ॥ ४ ॥ पुष्प-माल गुरु गुण की गूंथी, चाढ़ो चित्त चही। कहे 'राम ऋद्धिसार' सुयश की, बूंटी आप दई ॥ ५ ॥

॥ श्लोक ॥

कमल चम्पक केतकी पुष्पकैं ॥ परिमला-हृतषट्पदवृन्दकैं ॥ सकलमंगलवांछितदायकं ॥ कुशलसूरिगुरोश्चरणौयजे ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं श्री परमपुरुषायपरमगुरुदेवाय भगवते श्रीजिनशासनोद्दीपकाय श्रीजिनदत्तसूरीश्वराय मणिमण्डित भालस्थल श्रीजिनचन्द्रसूरीश्वराय श्रीजिनकुशल सूरीश्वराय अकबर असुर त्राणप्रतिबोधकाय श्री जिनचन्द्रसूरीश्वराय पुष्पंनिर्विपामिते स्वाहा ॥३॥

४-अथ धूप पूजा

धूप पूज कर सुगुरु की, पसरे परिमल पूर।
यश सुगन्ध जग में बढ़े, चढै सवाया नूर ॥१॥

राग सोरठा

(चाल—कुवजाने जादू डारा)

अम्बिका विरुद् बखाने, गुरुतेरो अम्बिका विरुद् बखाने। तुम युगप्रधान नहीं छाने, गुरु तेरो ॥ टेक० ॥ गढ़ गिरनारपे अम्बड श्रावक, ऐसो नियम चित्त ठाने। युगप्रधान इस युग में कोई, देखूं जन्म प्रमाने ॥ गु० १ ॥ कर उपवास तीन दिन बीते, प्रगटी अम्बा ज्ञाने। प्रगट होय कर में लिख दीना, सुवरण अक्षर दाने ॥ २ ॥ या गुण संयुत अक्षर बाँचे, ताकूँ युगवर जाने। अम्बड मुलक मुलक में फिरता, सूरि सकल पतियाने ॥ ३ ॥ आया पास तुम्हारे सद्गुरु, कर पसार दिखलाने। वासक्षेप कर ऊपर डाला, चेला बाँच सुनाने ॥ ४ ॥ सर्व देव हैं दास जिन्होंके, मरुधर कल्प प्रमाने। युगप्रधान जिनदत्तसूरीश्वर, अम्बड शीश भुकाने ॥ ५ ॥ उद्योतनसूरीने निज हाथ, चौरासी गच्छ ठानें। वह सब

तुमरी सेवा सारें, आन तुम्हारी मानै ॥ ६ ॥ भद्रबाहु स्वामी तुम कीर्तन, कीनी ग्रंथ प्रमाने। युगप्रधान प्रकीर्ण गंडिका, गणधर-पद-वृत्ति म्याने ॥ ७ ॥ जो जन तुमको भक्ति से पूजें, हों उनके मन माने। कहे 'राम ऋद्धिसार' गुरु की, पूजा धूप कराने ॥ ८ ॥

॥ श्लोक ॥

अगरचन्दन धूपदशांगजै ॥ प्रशरिताखिल-दिक्षुसुधूम्रकै ॥ सकलमंगलवाँच्छित दायकं ॥ कुशलसूरिगुरोश्चरणौयजे ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं श्रीं परमपुरुषाय परमगुरुदेवाय भगवतेश्री जिनशासनोद्दीपकाय श्रीजिनदत्त-सूरीश्वराय मणिमण्डितभालस्थल श्री जिन-चन्द्रसूरीश्वराय श्री जिनकुशलसूरीश्वराय अ-कबर असुर त्राणप्रतिबोधकाय श्री जिनचन्द्र-सूरीश्वराय धूपंनिर्वपामिते स्वाहा ॥४॥

५—अथ दीप पूजा

दोहा

दीप पूजकर सुगुण नर, नित २ मंगल होत।
उजियालो जग में जुगत, रहे अखंडित जोत ।१।

(राग—कालिंगड़ा)

पूजन कीजोजी नर नारी, गुरु महाराज का हो ॥ टेर ॥ सिंधु देश में पंच नदी पर, साधे पाँचो पीर। लोई ऊपर पुरुष तिराये, ऐसे गुरु सधीर ॥ १ ॥ प्रकट होय कर पांच पीर ने, सात दिये वरदान। सिंधु देश में खरतर श्रावक, होवेगा धनवान ॥ २ ॥ सिंधु देश मुलतान नगर में, बड़ा महोत्सव देख। अम्बड और गच्छ का श्रावक, गुरु से कीना द्वेष ॥३॥ अणहिलपुर पत्तन में आओ, तो मैं जानूं सच्चा। धर्म ध्वजा फहराते आवें, देख लीजियो बच्चा ॥ ४ ॥ पत्तन बीच पधारे दादा, डंका धर्म बजाया। निर्धन अम्बड़ सन्मुख आया, अहं-कार फल पाया ॥ ५ ॥ मन में कपट किया

अंबड़ ने, खरतर महिमाधारी । जहर दिया उन अशन पान में, गुरु विधि जानी सारी ॥ ६ ॥ भणसाली मुखबर श्रावक से, निर्विप मुंद्री मंगाई । जहर उतारा तब लोगों मे, अम्बड़ निन्दा पाई ॥ ७ ॥ मरकर व्यंतर हुआ वो अम्बड़, रजोहरण हर लीना । भनशाली व्यंतर वचनों से, गोत्र उतारा कीना ॥ ८ ॥ सज्ज होय गुरु ओघा लेकर, गोत्र बचाया सारा । 'ऋद्धिसार' महिमा सद्गुरु की, दीपक का उजियारा ॥ ९ ॥

॥ श्लोक ॥

अतिसुदीप्तमयैखलुदीपकैः ॥ विमलकंचन भाजनसंस्थितै ॥ सकलमङ्गलवॉच्छितदायकं ॥ कुशलसूरिगुरोश्चरणौयजे ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं श्री परमपुरुषाय । परमगुरुदेवाय । भगवतेश्री जिनशासनोद्दीपकाय । श्रीजिनदत्तसूरीश्वराय मणिमण्डितभालस्थल श्री जिनचन्द्रसूरीश्वराय श्री जिनकुशलसूरीश्वराय । अकबर असुर त्रा-

णप्रतिबोधकाय श्रीजिनचन्द्रसूरीश्वराय दीपंनिर्विपामिते स्वाहा ॥ ५ ॥

६---अथ अक्षत पूजा

॥ दोहा ॥

अक्षत पूजा गुरुतणीं, करो महाशय रङ्ग।
क्षति न होवे अंग में, पाओ सुक्ख अभंग ॥

(राग–आसावरी)

रतन अमोलक पायो; सुगुरु सम रतन०। गुरु संकट सब ही मिटायो ॥ टेर ॥ विक्रमपुर नगरी लोकन को, हैजा रोग सतायो । बहुत उपाय किया शांति का, जरा फरक नहिं आयो ॥ १ ॥ योगो जंगम ब्रह्म सन्यासी, देवी देव मनायो । फरक नहीं किनही ने कीना, हाहाकार मचायो ॥ २ ॥ रतन चिंतामणि सारिखो साहिब, विक्रमपुर में आयो । जैन संघ का कष्ट दूर कर, जय जयकार करायो ॥ ३ ॥ महिमा सुन माहेश्वर ब्राह्मण, सब ही शीस नमायो । जीवितदान करो महाराजा,

गुरु तव यों फरमायो ॥ ४ ॥ जो तुम समकित व्रत को धारो, अबही करदूं उपायो। तहत्त वचन कर रोग मिटायो, आनन्द हर्ष वधायो ॥ ५ ॥ जो कोई श्रावकव्रत को न धार्यो; पुत्री पुत्र चढ़ायो। साधु पाँचसौ दीक्षित कीना, साधवियाँ समुदायो ॥ ६ ॥ मंत्र कला गुरुअतिशय धारी, एसो धर्म्म दिपायो। 'ऋद्धिसार' पर कृपा कीनी, सांचो पथ बतलायो ॥ ७ ॥

॥ श्लोक ॥

सरल तंदुलकैरति निर्मलै। प्रवरमौक्तिक पुञ्जवदुज्ज्वलैः ॥ सकलमङ्गलवाँच्छितदायकं। कुशलसूरिगुरोश्चरणौयजेः ॥१॥ ॐ ह्रीं श्रीं परमपुरुषाय। परमगुरुदेवाय। भगवतेश्री जिनशासनोद्दीपकाय। श्री जिनदत्तसूरीश्वराय। मणिमण्डितभालस्थल श्री जिनचन्द्रसूरीश्वराय। श्री जिनकुशलसूरीश्वराय। अकवर असुर त्राणप्रतिबोधकाय श्रीजिनचन्द्रसूरीश्वराय अक्षतं निर्विपामिते स्वाहा ॥६॥

राग–ठुमरी

(चाल–रथ चढ़ यदुनन्दन आवत हैं)

चलो संघ सब पूजन को, गुरूसमर्या सन्मुख आवत हैं ॥ टेर ॥ आनन्दपुर पट्टन को राजा, गुरू महिमा सुन पावत हैं। भेजा निज प्रधान बुलाने, नृप अरदास सुनावत हैं ॥ १ ॥ लाभ जान गुरू नगर पधारे, भूपत आय बधावत हैं। राजकुमार को कुष्ट मिटायो, अचरज तुरत दिखावत हैं ॥ २ ॥ दश हजार कुटम्ब संग नृप को, श्रावक धर्म धरावत हैं। प्रतापगढ़ को पमार राजा, पुर में गुरू पधरावत हैं ॥ ३ ॥ दया मूल आज्ञा जिनवर की, बारह व्रत उचरावत हैं। चौहान भाटी पमार ईंदा, पुन राठौड़ सुहावत हैं ॥ ४ ॥ शिशोदिया सोलंकी नरवर, महाजन पदवी पावत हैं। ऐसे सात राज समकित धर, खरतर संघ बनावत हैं ॥ ५ ॥ कुष्ट जलन्धर क्षयन भगन्दर, कइ एक लोक जीवावत हैं। ब्राह्मण क्षत्री अरू

माहेश्वर, ओसवंश पसरावत हैं ॥ ६ ॥ तीस हजार एक लख श्रावक, खरतर संघ रचावत हैं ॥ कहत 'राम ऋद्धिसार' गुरुकी, फल पूजा फल पावत हैं ॥ ७ ॥

॥ श्लोक ॥

पनस मोचसदाफलकर्कटैः । सुसुखदैकिलश्रीफलचिर्भटैः ॥ सकलमङ्गलवाँच्छितदायकं ॥ कुशलसूरिगुरोश्चरणौयजे ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं परमपुरुषाय । परमगुरुदेवाय भगवतेश्री जिनशासनोद्दीपकाय । श्रीजिनदत्तसूरीश्वराय । मणिमण्डितभालस्थल श्री जिनचन्द्रसूरीश्वराय । श्री जिनकुशलसूरीश्वराय । अकबर असुर त्राणप्रतिबोधकाय श्री जिनचन्द्रसूरीश्वराय फलं निर्विपामिते स्वाहाः ॥ ८ ॥

९—अथ वस्त्र इत्र पूजा

॥ दोहा ॥

वस्त्र इत्र गुरु पूजना, चोवा चन्दन चम्पेल।
दुश्मन सब सज्जन हुए, करं सुरंगा खेल । १॥

देशी

(चाल—मनडो किमही न बाजे)

लक्ष्मी लीला पावेरे सुन्दर, ल० । जे ... वस्त्र चढ़ावेरे सुन्दर, ल० ॥ सुयश अतर महकावेरे सुन्दर, ल० । दुश्मन शीस नमावेरे सुन्दर, ल० ॥टेर॥ दरिया बीच जहाज श्रावक की, डूबन खतरे आवे। साचे मन सुमरे सद्‌गुरुको, दुःख की टेर सुनावेरे सुन्दर ॥ १ ॥ वाचंताँ व्याख्यान सूरीश्वर, पँखीरूपे थावे। जाय समुद्र में जहाज तिरायो, फिर पीछा जब आवेरे सुन्दर ॥ २ ॥ पूछे संघ अचरज में भरिया, गुरु सब बात सुनावे । ऐसे दादा दत्त कुशल गुरु, परचा प्रगट दिखावेरे सुन्दर ॥ ३ ॥ बोथरा गूजरमल श्रावक को, दादा कुशल तिरावे । सुखसूरि गुरु समयसुन्दर का, जहाज अलोप दिखावेरे ॥ ४ ॥ बारह सौइग्यारे [1]दत्त सूरि, अजमेर अणसण ठावे । उपज्या सौधर्मा

[1] १२११ सम्वत विक्रमीय आषाढ़ शुक्ला ११

देवलोके, श्रीमंधर फरमावे रे सुन्दर ॥ ५ ॥ इक अवतारी कारज सारी, मुक्ति नगर में जावे। ऐसे दादा दत्त सूरीश्वर, तारण तरण कहावे रे सुन्दर ॥ ६ ॥ मणिधारी दिल्ली में पूज्यां, संकट सपने न आवे। रथी उठी नहीं[1] देख नरेश्वर, वांही चरण पधरावेरे सुन्दर ॥ ७ ॥ कुशलसूरी देराउर नगरे, भुवनपति सुरथावे। [2]फागुन वदि अम्मावस सीधा, पूनम दरश दिखावेरे सुन्दर ।८। जल चन्दन फल फूल मनोहर, आठों द्रव्य चढावे। वस्त्र इतर पूजा सद्गुरु की. ऋद्धि सार मन भावे रे सुन्दर ॥ ९ ॥

॥ श्लोक ॥

अखिल हीर शुचिः नवचीरकं। प्रवर प्रावरणं खलु गंधतः। सकलमङ्गलवांच्छितदायकं। कुशलसूरिगुरोश्चरणौयजे ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं परमपुरुषाय परमगुरुदेवाय भगवतश्री जिन-

[1]भाद्रव कृष्णा १४ वि० सं० १२२३

[2]वि० सं० १३८९ फागुन कृष्णा ३०

शासनोद्दीपकाय । श्रीजिनदत्तसूरीश्वराय मणि-खण्डितभालस्थल श्री जिनचन्द्रसूरीश्वराय। श्री जिनकुशलसूरीश्वराय। अकबर असुर त्राण-प्रतिबोधकाय श्रीजिनचन्द्रसूरीश्वराय वस्त्रं चोवा चन्दनं पुष्पं फलं निर्विपामिते स्वाहा ॥९॥

१०—अथ ध्वज पूजा

॥ दोहा ॥

ध्वज पूजा गुरूराज की, लहके पवन प्रचार।
तीन लोक के शिखर पर, सो पहुँचे नर नार ॥१॥

॥ श्री राग ॥

चाल–जिनगुणगानं श्रुति अमृतं

ध्वज्ज पूजन कर हरष भरी रे, ध्वज० ।टेर।
सज सोलह शृङ्गार सहेल्यां, श्री सद्गुरु के द्वार खड़ी रे। अपछर रूप सुतन सुकलोनी, ठम-ठम पग झणकार करी रे ॥ १ ॥ गावत मंगल देत प्रदक्षिणा, धन-धन आनन्द आज घड़ी रे। निर्धनको लक्ष्मी बखसावत, पुत्र बिना जाके पुत्र करी रे ॥२॥ ज़ो जो परतिख परचा देखा

सुणो भविक चित चाव धरीरे। फतहमल्ल भड़गतिया श्रावक, पहली शंका जोर करीरे।३। देखूं परतिख तव मैं जानूं, प्रगट्या तत्क्षण तरण तरीरे। पुष्पमाल सिर केशर टीका, अधर श्वेत पोशाक करीरे॥४॥ 'मांग मांग वर' बोले वानी, फरक बताओ गुरु मेघ झरीरे। फरक उगायो दोय लाख पर, तेरी महिमा नित्य हरीरे॥ ५॥ ज्ञानचन्द गोलेच्छा को गुरु, प्रत्यक्ष दीना दरस फरीरे। बीकानेर में थुंभ तुम्हारा, चित्र करावत सुरसुन्दरीरे॥६॥ थानमल्ल लूनियाँ पर किरपा, लक्ष्मी लीला सहज वरीरे। लक्ष्मीपति दूगड़ की साहिब, हुण्डी को भुगतान करीरे।७। जो उपकार करा तुम मेरा, दीनी सन्मुख अमृत जड़ीरे। तेरी कृपा से सिद्धि पाई, जागे यश अरु भागे मरीरे॥ ८॥ भूखा भोजन तिसियाँ पानी, भरत हाजरी देव परीरे। विषम समय पर सहाय हमारे, 'ऋद्धिसार' की गरज सरीरे॥६॥

॥ श्लोक ॥

मृदु मधुर ध्वनि किङ्कणी नादकैः, ध्वज विचित्रितविस्तृतवासकैः । सकलमङ्गलवाँच्छित-दायक, कुशलसूरिगुरोश्चरणौयजे ॥१॥ ॐ ह्रीं श्रीं परमपुरुषाय । परमगुरुदेवाय । भगवतेश्री जिनशासनोद्दीपकाय । श्रीजिनदत्तसूरीश्वराय । मणिमण्डित भालस्थल श्रीजिनचन्द्रसूरीश्वराय । श्री जिनकुशलसूरीश्वराय । अकब्बर असुरत्राण-प्रतिबोधकाय श्रीजिनचन्द्रसूरीश्वराय शिखरोपरि ध्वजां आरोपयामि स्वाहा ॥१०॥

११—अथ अर्घ पूजा

॥ दोहा ॥

भट्टारक पदवी मिली, जीते वादी वृन्द ।
कंठ विराजे सरस्वती, जग में श्रीजिनचन्द ।१।

(राग आसावरी तथा धन्याश्री)

पूजन जग सुखकारी सुगुरु तेरी पू० ।
तेरे चरन कमल बलिहारी सुगुरु० ॥ टेर ॥

साह सलेम दिल्ली को वादशाह, सुनी है शोभा तिहारी। भट्ट हरायो चर्चा करके, भट्टारक पद्-धारी ॥ १ ॥ अम्मावस की पूनम कीनी, चन्द उगायो भारी। चढके गगन करी है चर्चा, सूरज से तपधारी ॥ २ ॥ *उगणीसौ चौदह संवत में, लखनऊ नगर मझारी। गोरा फिरंगी टोपी वाला, दिल में ये वात विचारी ॥ ३ ॥ जैन श्वेताम्बर देव जो सच्चा, पूरे मनसा हमारी। वाणी निकली सौ वर्षों तक, होवेगा अधिकारी ॥ ४ ॥ अंधे की खोली आँख सूरत में, पूजे सब नरनारी। कहाँ लग गुण वरनूं मैं तेरा, तू सुरतरु जयकारी ॥ ५ ॥ उगणीं सौ संवत्सर त्रेपन, मॅगसिर मास मंझारी। शुक्ल दूज जिनचन्दसूरीश्वर, खरतर गच्छ आचारी।६। कुशलसूरिके निज संतानी, क्षेमकीर्त्ति मनुहारी। प्रतिवोध्या जिन क्षत्री पाँचसौ, ज्ञान सहित अणगारी॥७॥ क्षेमधाड शाखा जब प्रगटी, जग

*वि० सं० १९१४ (सन् १८५७ ईस्वी)

चौसठ योगिन साधी, सूरिमंत्र कर सुर आराधी ॥ जय० ४॥ इण विध सातआरती कीजे, मनवंछित सुख संपति लीजे ॥ जय० ॥ जैन लाभ खरतर गणधारी, सद्गुरु चरण कमल बलिहारी ॥ जैजै० ॥ ५ ॥

मङ्गल दीपक

मंगल दीपक गुरु का कीजे, मन वंछित फल कारज सीझे ॥मं० टेर॥ मंगल दीप मंगल अडभासे, घर घर मंगल भाव प्रकाशे ॥ मं० २॥ करे करावे मङ्गल माला, अन धन लक्ष्मी लहे सुविशाला ॥ मं० ३ ॥ अलिय विघ्न हर मंगल दीवो, ऋद्धिसार भविजन चिरंजीवो ॥ मं० ४ ।

गुरुदेव की स्तुति

श्री विलसे ऋद्धि समृद्धि मिली, शुभयोगे पुण्य दशा सफली । जिनकुशलसूरि गुरु अतुल बली, मन वाञ्छित आपे दादो रङ्गरली ॥१॥ मङ्गल लील समय विपुला, नव नवे महोत्सव राजेला । सुपसाय गुरु चढ़ती कला, सुकलीनी

पुत्रवती महिला ॥ २ ॥ सबही दिन थाये सबला, सद्वास कपूर तने कुरला। हय गय रथ पायक वहुला, कल्लोल करे मन्दिर कमला ॥ २ ॥ वीजे चमर निशान घुरे, निर्भय दरबार खड़ा पहुरे। जय जय कर जोड़ी उचरे, सानिद्ध गुरु सब काज सरे ॥ ३ ॥ सरसा भोजन पान सदा, दुख रोग दुकाल न होय कदा। अविचल ऊलट अङ्ग मुदा, गुरु पूरण दृष्टि प्रसन्न सदा ॥ ४ ॥ घम घम मादल नाद घुमे, बत्तीसे नाटक रंग रमें। प्रगट्यो पुण्य प्रताप हमें, सबला अरियण ते आय नमे ॥ ५ ॥ तन सुख मन सुख चीर तने, पहिरे वेलाउल होय रने। ध्यावो ध्यावो कुशल गुरु एक मने, जृम्भक सुर मन्दिर भरे धने ॥ ६ ॥ ततखिन घन खेंचो आवे, करि श्याम घटा मेह वर्षावे। तिसियां तोय तुरत पावे, जल दाता त्रिजग सुयश गावे ॥ ७ ॥ लहर्यां जल कल्लोल करें, प्रवहण भव सायर मज्झि डरे। बूड़ंता वाहन

जै समरे, ते आपद निश्चय थी उबरे ॥ ८ ॥ खड़ खड़ खड़ग प्रहार वहे, सो दामिनि जिम समसेल सहे । कुशल कुशल गुरु नाम कहे, ते क्षेम कुशल रण मध्य लहे ॥ ९ ॥ थुम्भ सकल परचा पूरे, श्री नागपुरे संकट चूरे । मंगलौर अधिके नूरे, देराउर भय टालें दूरे ॥ १० ॥ बीरमपुर वाने सुधरे, खंभाइतपुर विक्रम नयरे । जिनचन्द्रसूरि पाटे पवरे, जसु कीरति महिम-पडल पसरे ॥ ११ ॥ पूरब पश्चिम दक्षिण आगे, उत्तर गुरु दीपे सौभागे । दश दिशि जन सेवा मांगे, श्री खरतर गच्छनी महिमा जागे ॥ १२ ॥ पुर पट्टण जन पद ठामे, गाईजे कुशल नयर ग्रामे । पूजे जै नर हित कामे, ते चक्रवर्ति पदवी पामे ॥ १३ ॥ श्री जिनकुशलसूरि साखे, सेवक जन ने सुखिया राखें । समर्यां गुरु दरशन दाखे, श्री साधुकीरत पाठक भाखें ॥ १४ ॥

द्वितीय खण्ड

श्रीमद्विजयानन्दसूरि कृत

॥ सत्तरभेदी पूजा ॥

—※—

॥ दोहा ॥

सकल जिनंद मुनींदकी, पूजा सतर प्रकार।
श्रावक शुद्ध भावे करे, पामे भवको पार ॥ १ ॥
ज्ञाता अंगे द्रौपदी, पूजे श्री जिनराज।
रायपसेणी उपांगमें, हित सुख शिवफल ताज॥२॥
न्हवण विलेपन वस्त्रयुग, वास फूल वर माल।
वर्ण चुन्न ध्वज शोभती, रत्नाभरण रसाल ॥३॥
सुमनगृह अति शोभतुं, पुष्पपगर मंगलीक।
धूप गीत नृत नादसुं, करत मिटे सब भीक ॥४॥

॥ प्रथमा स्नपनपूजा ॥

॥ दोहा ॥

शुचि तनु वदन वसन धरी, भरी सुगंध विशाल
कनक कलश गंधोदकें, आनी भाव विशाल॥१॥
नमत प्रथम जिनराजको, मुख बांधी मुखकोप।
भक्ति युक्तिसे पूजतां, रहे न रंचक दोप ॥ २ ॥

(खमाच—ताल पंजाबी ठेको)

मान मद मनसे परिहरता, करी न्हवण जगदीश ॥ मा० अं० ॥ समकितकी करनी दुःख हरनी, जिन पखाल मनमें धरता । अंग उपांग जिनेश्वर भाखी, पाप पडल जरता ॥ मा० १ ॥ कंचन कलश भरो अति सुंदर, प्रभुस्नान भवि-जन करता। नरक वैतरणी कुमति नासे महानंद वरता ॥ मा० २ ॥ काम क्रोधकी तपत मिटावे, मुक्तिपंथ सुख पग धरता । धर्म कल्पतरु कंद सींचता, अमृत घन झरता ॥मा०३॥ जन्म मरण का पंक पखारी, पुण्य दशा उदये करता। मंजरी संपद तरु वर्द्धनकी, अक्षय निधि भरता मा० ॥ ४ ॥ मनकी तप्त मिटि सब मेरी, पदकज ध्यान हिये धरता । आतम अनुभव रसमें भीनो, भव समुद्र तरता ॥ मा० ५ ॥

[मंत्रः] ॐ ह्रीं श्रीं परमपुरुषाय परमेश्वराय जन्मजरामृत्युनिवारणाय श्रीमते जिनेन्द्राय स्नपनं यजामहे स्वाहा ॥ १ ॥

॥ द्वितीया विलेपन पूजा ॥

॥ दोहा ॥

गात्र लुही मन रंगसुं, महके अतिहि सुवास ।
गंधकषायी वसनसुं, सकल फले मन आस ॥१॥
चंदन मृगमद् कुंकुमे, भेली मांहि वरास ।
रतन जडित कचोलीये , करी कुमतिको नास॥२॥
पग[1] जानु[2] कर[3] खंध[4] में, मस्तक[5] जिनवर अङ्ग ।
भाल[6] कंठ[7] उर[8] उदर[9] में, करे तिलक अति चंग ।३।
पूजक जन निज अंगमें, रचे तिलक शुभ चार ।
भाल[1] कंठ[2] उर[3] उदर[4] में, तप्त मिटावनहार ॥४॥

(ठुमरी–पजाबी ठेको-मधुवनमें मेरे सावरीया-देशी)

करी विलेपन जिनवर अंगे, जन्म सफल भविजन माने ॥क० १॥ मृगमद् चंदन कुंकुम घोली, नव अंग तिलक करी थाने ॥ क० २ ॥ चक्री नव निधि संपद् प्रगटे करम भरम सब क्षय जाने ॥ क० ३ ॥ मन तनु शीतल सब अघ टारी, जिनभक्ति मन तनु ठाने ॥क० ॥४॥ चौसठ सुरपति सुरगिरि रंगे, करी विलेपन

धन माने ॥ क० ५ ॥ जागी भाग्य दशा अब मेरी, जिनवर वचन हिये ठाने ॥क० ६॥ परम शिशिरता प्रभु तन करतां, चित सुख अधिके प्रगटाने ॥ क० ७ ॥ आतमानंदी जिन-वर पूजा, शुद्ध स्वरूप निज घट आने ॥क० ८॥ [मंत्रः पूर्ववत्] विलेपनं यजामहे स्वाहा ॥२॥

॥ तृतीया वस्त्रयुगल पूजा ॥

वसनयुगल अति उज्ज्वलें, निर्मल अतिही अभंग।
नेत्रयुगल सूरि कहे, यही मतांतर संग ॥ १ ॥
कोमल चंदन चरचिये, कनक खचित वर चंग।
सह पल्लव शुचि प्रभु शिरें, पहिरावे मनरंग॥२॥
द्रौपदी शक्र सुरियाभने, पूजें जिम जिनचंद।
श्रावक तिम पूजन करे, प्रगटे परमानंद ॥ ३ ॥
पाप लूहण अंग लूहणां, दीजे पूजन काज।
सकल करम मल क्षय करी, पामे अविचल राज॥४॥

(सोरठ—पंजाबी ठेको-कुबजाने जादुडारा-देशी)

जिनदर्शन मोहनगारा, जिने पाप कलंक पखारा ॥जि०॥अंचली॥ पूजा वस्त्र युगल शुचि

संगे, भावना मनमें विचारा । निश्चय व्यवहारी तुम धर्मे, वरनुं आनंदकारा ॥जि० ॥ १ ॥ ज्ञान क्रिया शुद्ध अनुभव रंगे, करूं विवेचन सारा । स्वपर सत्ता धरुं हरुं सब,कर्म कलंक पहारा॥जि०॥ ॥२॥ केवल युगल वसन अचिंतसे,मांगत हुं निर-धारा। कल्पतरु तुं वंछित पूरे, चूरे करम कठारा ॥ जि० ३ ॥ भवोदधि तारण पोत मिला तुं चिद्घन मंगलकारा। श्री जिनचंद जिनेश्वर मेरे, चरण शरण तुम धारा ।जि० ४। अजर अमर अज अलख निरंजन, भंजन करम पहारा। आत्मानंदी पाप निकंदी, जीवन प्राण आधारा ॥ जि० ५ ॥ [मंत्रः पूर्ववत्] वस्त्रयुगलं यजामहे स्वाहा ॥३॥

॥ चतुर्थी गंधपूजा ॥

॥ दोहा ॥

चोथी पूजा वासकी, वासित चेतन रूप ।
कुमति कुगंधी मिट गइ, प्रगटे आतमरूप ॥१॥
सुमति अति हर्षित भइ, लागी अनुभव वास ।
वास सुगंधे पूजतां, मोह सुभटको नास ॥ २ ॥

कुंकुम चंदन मृगमदा, कुसुम चूर्ण घनसार ॥
जिनवर अंगें पूजतां, लहियें लाभ अपार ॥३॥

(राग–जंगलो-अब मोहे डागरीया देशी)

अब मोहे पार उतार जिनंदजी अब मोहे पार उतार ॥ चिदानन्द घन अंतरजामी,अब मोहे पार उतार ॥अंचलि॥ वासखेपसे पूजन करतां, जनम मरण दुःख टार । जि० । निजगुण गंध सुगंधी महके, दहे कुमति मद मार । जि० ॥१॥ जिन पूजत ही अति मन रंगे, भंगे भरम अपार । । जि० । पुद्गल संगी दुर्गंध नाठो, वरते जय जयकार । जि० २ । कुंकुम चंदन मृगमद मेली, कुसुम गंध घनसार । जि० । जिनवर पूजन रंगे राचें, कुमति संग सब छार ॥जि० ३॥ विजय देवता जिनवर पूजे, जीवाभिगम मझार ।जि०। श्रावक तिम जिन वासे पूजे, गृहस्थ धर्मको सार ॥जि० ४ ॥ समकितकी करणी शुभ वरणी, जिन गणधर हितकार । जि० । आतम अनुभव रंग रंगीला, वास यजनका सार ॥ ५ ॥

[मंत्रः पूर्ववत्] गंधं यजामहे स्वाहा ॥ जि० ४ ॥

॥ पचमी पुष्पारोहण पूजा ॥

॥ दोहा ॥

मन विकसे जिन देखतां, विकसित फूल अपार।
जिन पूजा ए पंचमी, पंचमो गति दातार ॥१॥
पंच वरणके फूलसें, पूजे त्रिभुवन नाथ।
पंच विघन भवि क्षयकरी, साधे शिवपुर साथ।२।

(कहेरवा–ठुमरी-पास जिनदा प्रभु मेरे मन वसीया–देशी)

अर्हन् जिनंदा प्रभु मेरे मन वसीया ॥अं०॥
मोगर लाल गुलाव मालतो, चंपक केतकी निरख हरसीया ॥ अ० १ ॥ कुंद प्रियंगु वेलि मचकुंदा, वोलसिरी जाइ अधिक दरसीया ॥ अ० २ ॥ जल थल कुसुम सुगंधी महके, जिनवर पूजन जिम हरि रसिया ॥ अ० ३ ॥ पच वाण पीड़े नही मुजको, जव प्रभु चरणे फूल फरसीया। ॥ अ० ४ ॥ जडता दूर गई सव मेरी, पांच आवरण उखार धरसीया ॥ अ० ५ ॥ अवर देवको आक धतूरा, तुमरे पंच रंग फूल वरसीया ॥ अ० ६ ॥ जिन चरणे सहु तपत मिटत है,

आतम अनुभव मेघ वरसीया ॥ अ० ७ ॥
[मंत्रः पूर्ववत्] पुष्पारोहणं यजामहे स्वाहा ॥५॥

॥ षष्ठी पुष्पमालापूजा ॥

॥ दोहा ॥

छट्ठी पूजा जिन तणी, गूंथी कुसुमकी माल ।
जिन कंठे थापो करी, टालियें दुःख जंजाल ॥१॥
पंच वरण कुसुमें करी, गुन्थो जिन गुण माल ।
वरमाला ए मुक्तिकी, वरे भक्त सुविशाल ॥२॥

(राग–जंगलो ताल दीपचंदी)

कुसुममालसे जो जिन पूजे, करम कलंक नसे भवि तेरे ॥अं चलि॥ नाग पुन्नाग प्रियंगु केतकी चंपक द्मनक कुसुम घनेरे । मल्लिका नवमल्लिका शुद्ध जाति, तिलक वसंतिक सब रंग हे रे ।कु०। ॥ १ ॥ कल्प अशोक कबुल मगदंती, पाडल मरुक मालती लेरे । गुन्थी पंच वरणकी माला पाप पंक सब दूर टरे रे ॥ कु० २ ॥ भाव विचारी निजगुण माला प्रभु से मांगे अरज करे रे । सर्व मंगलकी माला रोपे, विघन सकल सब

साथ जरे रे ॥ कु० ३ ॥ आतमानंदी जगगुरु पूजो, कुमति फंद सब दूर भगे रे । पूरण पुण्ये जिनवर पूजे, आनंदरूप अनूप जगेरे ॥कु० ४॥ [मंत्रः पूर्ववत्] पुष्पमालां यजामहे स्वाहा ॥६॥

॥ सप्तमी अगरचना पूजा ॥

॥ दोहा ॥

पांच वरणके फूलकी, पूजा सातमी मान ।
प्रभु अङ्ग अङ्गी रची, लहिये केवलज्ञान ॥ १ ॥
मुक्तिवधूकी पत्रिका, वरीण श्री जिनदेव ।
सुधि तत्त्व समजे सही. मूढ न जाणे भेव ॥ २ ॥

(तुम दीनके नाथ दयाल लाल यह देशी)

तुम चिद्घन चंद आनंद लाल, तोरे दर्शन की वलिहारी ॥ अंचली ॥ पंचवरण फूलोंसे अंगीयां. विकसे ज्यूं केसर क्यारी ॥ तु० १ ॥ कुँद गुलाव मरुक अरविंदो, चंपक जाति मंदारा ॥ तु० २॥ सोवन जाती दमनक सोहे, मन तनु तजित विकारी ॥ तु० ३ ॥ अलख निरंजन ज्योति प्रकासे, पुद्गल संग निवारी ॥ तु० ४ ॥

सम्यग् दर्शन ज्ञानस्वरूपी, पूर्णानंद विहारी ॥ तु० ५ ॥ आतम सत्ता जबही प्रगटे, तबही लहे भवपारी ॥ ६ ॥

[मंत्रः पूर्ववत्] अंगरचनां यजामहे स्वाहा ॥७॥

॥ अष्टमी चूर्णपूजा ॥

॥ श्लोक ॥

जिनपति पूजा आठमी; अगर भला घनसार ।
सेलारस मृगमद करी, चूरण करी अपार ॥ १ ॥
चुन्नारोहण पूजना, सुमति मन आनन्द ।
कुमति जन खोजे अति भाग्यहीन मतिमंद ।२।

(जोगीयों-नाथ मैनु छडके गढ गिरनार गयो री, देशी

करम कलंक दह्यो री, नाथ जिन जजके ॥करम० अं० ॥ अगर सेलारस मृगमद चूरी, अति घनसार मह्यो री ॥ ना० १ ॥ तीर्थंकर पद शांति जिनेश्वर, जिन पूजी ने ग्रह्यो री ॥ ना० ॥ २ ॥ अष्ट करम दल उदभट चूरी, तत्वरमणको लह्यो री ॥ ना० ३ ॥ आठो ही प्रवचन पालन शूरा, दृष्टि आठ लह्यो री ॥ना०

॥४॥ श्रद्धा भासन रमणता प्रगटे, श्री जिन-राज कह्यो री ॥ ना० ५ ॥ आतम सहजानंद हमारा, आठमी पूजा चह्यो री ॥ ना० ६ ॥ [मंत्रः पूर्ववत्] चूर्णं यजामहे स्वाहा ॥ ८ ॥

॥ नवमी ध्वजपूजा ॥

॥ दोहा ॥

पचवरण ध्वज शोभती, घूंघरिको घमकार ।
हेम दंड मन मोहनी, लघु पताका सार ॥ १ ॥
रणझण करती नाचती, शोभित जिनघर श्रृंग ।
लहके पवन झकोरसे, वाजत नाद अभंग ॥२॥
इंद्राणी मस्तक लई, करे प्रदक्षिणा सार ।
सधवा तिम विधि साचवे, पाप निवारणहार ॥३॥

(ठुमरी–पजाबी ठेको आई इन्द्र नार देशी)

आई सुन्दर नार, कर कर सिंगार, ठाडी चैत्य द्वार, मन मोदधार, प्रभु गुण विथार, अघ सव क्षय कीनो ॥आ० १॥ जोजन उतंग, अति सहस चंग, गइ गगन लंघ, भवि हरख संग। सव जग उतंग, पद छिनकमें लीनो ॥आ० २॥ अव

भीनोरे ॥अंचलि॥ राय बेल नव मालिका कुँद, मोगर तिलक जाति मचकुँद । केतकी दमनक सरस रंग, चंपक रस भीनो रे ॥चं० १॥ इत्या-दिक शुभ फूल रसाल, घर विरचे मन रंजन लाल जाली झरोखा चितरी शाल, सुर मंडप कीनोरे ॥चं० २॥ गुच्छ झूमखां लंबां सार, चन्द्रुआ तोरण मनोहार। इन्द्रभुवनको रंग धार, भवपातक छीनोरे ॥चं०३॥ कुसुमायुधके मारन काज, फूल-घरे थापे जिनराज । जिम लहिये शिवपुरको राज, सब पातक खीनोरे ॥ चं० ४॥ आतम अनुभव रससें रंग, कारण कारज समझ तु चंग। दूरकरो तुम कुगुरु संग, नरभव फल लीनोरे॥ चं०५॥ (मंत्रःपूर्ववत्) पुष्पगृहं यजामहे स्वाहा ॥११॥

॥ द्वादशी पुष्पवर्षणपूजा ॥

॥ दोहा ॥

बादल करी वर्षा करे, पंचवरण सुर फूल।
हरे ताप सब जगतको, जानुदघन अमूल ॥१॥

अडिल छन्द

फूल पगर अति चंग, रग वादर करी,
परिमल अति महकंत, मिले नर मधुकरी ।
जानुदघन अति सरस. विकच अधो वीट है,
वरसे वाधा रहित रचे जिम छींट है ॥ १ ॥

(वसत—दीपचढी—साचा साहिव मेरा चिन्तामणी स्वामी देशी)

मंगल जिन नामे, आनंद भविको घनेरा ॥अं०॥ फूल पगर वदरी भरीरे, हेठ वीट जिनकेरा ॥मं० १॥ पीडा रहित डिग मधुकर गुंजे, गावत जिन गुण तेरा ॥ मं० २ ॥ ताप हरे तिहुं लोकका रे, जिन चरणे जस डेरा ।मं० ॥३॥ अशुभ करम दलदूर भगे रे, श्री जिन नाम रटेरा ॥ मं० ४ ॥ आतम निर्मल भाव करीने, पूजे मिटत अंधेरा ॥ मं० ५ ॥

(मंत्रः पूर्ववत्) पुष्पवर्षणं यजामहे स्वाहा ॥१२॥

॥ त्रयोदशी अष्टमगलपूजा ॥

॥ दोहा ॥

स्वस्तिक दर्पण कुंभ हे, भद्रासन वर्धमान।
श्रीवछ नंदावर्त्त है, मीनयुगल सुविधान ॥ १ ॥

अतुल विमल खंडित नहीं, पंच वरण के साल।
चंद्र किरण सम उज्जलैं, युवती रचे विशाल ॥२॥
अति सलक्षण तंदुले, लेखी मंगल आठ ।
जिनवर अंगे पूजतां, आनंद मंगल ठाठ ॥ ३ ॥

(श्रीराग–जिन गुण गानं श्रुति अमृतं देशी)

मंगलपूजा सुरतरुकंद ॥ अंचलि ॥ सिद्ध आठ आनंद प्रपंचे, आठ करमका काटे फंद ॥मं० ।१। आठो मद भये छिनकमें दूरे, पूरे अड गुण गये सब धंद ॥ मं० २ ॥ जो जन आठ मङ्गल सुँ पूजे, तस घर कमला केलि करंद ॥मं० ३ ॥ आठप्रवचन सुधा रस प्रगटे, सूरि संपदा अतिही लहंद ॥ मं० ४ ॥ आतम अठ गुण चिद्घन राशि, सहज विलासी आतम चन्द ॥ मं० ५ ॥ (मंत्रः पूर्ववत्) अष्टमङ्गलं यजामहे स्वाहा ॥१३॥

॥ चतुर्दशी धूपपूजा ॥

॥ दोहा ॥

मृगमद अगर सेलारस, गंधवट्टी घनसार ।
कृष्णागर शुद्ध कुँदरु, चन्दन अम्बर भार ॥१॥

सुरभि द्रव्य मिलायके, करे दशांगज धूप।
धूपदानमें ले करी, पूजे त्रिभुवन भूप॥ २॥

(राग–पीलु, ताल–दीपचन्दी)

मेरे जिनंदकी धूपसे पूजा, कुमति कुगधी दूर हरी रे ॥मेरे०॥ रोग हरे करे निजगुण गधी, दहे जजीर कुगुरुकी वधी, निर्मल भाव धरे जब धदी, मुझे उतारो पार, मेरे करतार, के अघ सब दूर करीरे ॥ मे० १॥ ऊर्ध्व गति सूचक भवि केरी, परम ब्रह्म तुम नाम जपेरी, मिथ्यावास दुखरास भरे री, करो निरजन नाथ, मुक्तिका साथ, के ममता मूर जरीरे।मे०। ॥ २॥ धूपसे पूजा जिनवर केरी, मुक्ति वधू भइ छिनकमें चेरी, अब तो क्यो प्रभु कीनी ढेरी. तुमही निरंजन रूप, त्रिलोकी भूप. के विपदा दूर करी रे॥ मे० ३॥ आतम मङ्गल आनंद कारी, तुमरे चरण सरण अब धारी, पुजे जिम हरि तेम आगारी, मङ्गल कमला कद, शरदका चन्द, के तामस दूर हरीरे । मे० ४॥

(मंत्रः पूर्ववत्) धूपं यजामहे स्वाहा ॥ १४ ॥

॥ पंचदशी गीतपूजा ॥

॥ दोहा ॥

ग्राम भले आलापिने, गावे जिनगुण गीत ।
भावे सुधी भावना जाचे परम पुनीत ॥ १ ॥
फल अनंत पंचाशके भाखे श्री जगदीश ।
गीत नृत्य शुध नादसे, जो पुजै जिन ईश ॥२॥
तीन ग्राम स्वर सातसे, मूरछना इकवीस ।
जिन गुण गावें भक्तिसुँ, तार तीस उगणीस ॥३॥

(राग—श्रीराग, ठेको पंजावी

जिन गुण गावत सुरसुन्दरी ॥ अंचलि ॥
चंपक वरणी सुर मनहरणी, चंद्रमुखी शृंगार धरी ॥ जि० १ ॥ ताल मृदंग बंसरी मंडल, वेणु उपांग धुनि मधुरी ॥जि० २॥ देव कुमार कुमारी आलापे, जिनगुण गावे भक्ति भरी ॥ जि० ३ ॥ नकुल मुकुंद वीण अति चंगी, ताल छंद अयति सिमरी ॥ जि० ४ ॥ अलख निरंजन ज्योति प्रकाशी, चिदानन्द सतरूप धरी ॥ जि० ५ ॥

अजर अमर प्रभु ईश शिवंकर, सर्व भयंकर दूर
हरी ॥जि० ६॥ आतम रूप आनंद्घन संगी,
रंगी निज गुण गीत करी ॥ जि० ७ ॥
(मंत्रः पूर्ववत्) गीतं यजामहे स्वाहा ॥.१५ ॥

॥ षोडशी नाटकपूजा ॥

॥ दोहा ॥

नाटक पूजा सोलमो, सजी सोल शृंगार ।
नाचे प्रभुके आगले, भव नाटक सब टार ॥१॥
देव कुमर कुमरी मिली, नाचे इक शत आठ ।
रचे संगीत सुहावना, वत्तिस विधका नाट ॥२॥
रावण ने मंदोदरी, प्रभावती सुरियाभ ।
द्रौपदी ज्ञाता अङ्गमें, लियो जन्मको लाभ ॥३॥
टारो भव नाटक सभी, हे जिन दीन दयाल ।
मिल कर सुर नाटक करे, सुघर वजावे ताल ॥४॥

(राग—कल्याण, ताल दादरो)

नाचत सुर वृन्द छंद मंगल गुण गारी ।
॥अ०॥ कुमर कुमरी कर संकेत, आठ सत मिल
भ्रमरी देत । मन्द्र तार रण रणाट, घुंघुरु पग धारी

॥ना० १॥ बाजत जिहां मृदंग ताल, धप मप धुधुम किट धमाल। रंग चंग ढ्रंग ढ्रंग, त्रौं त्रौं त्रिक तारी ॥ना० २॥ तता थेइ थेइ तान लेत, सुरज राग रंग देत। ताल मान गान जान, किट नट धुनि धारी ॥ना० ३॥ तुं जिनन्द शिशिर चन्द, मुनिजन सब तार वृन्द। मंगल आनंद कंद जय जय शिवचारी ॥ना० ४॥ रावण अष्टापद गिरिंद, नाच्यो सब साज संग। बांध्यो जिन पद उलंग, आतम हितकारी ॥ ना० ५ ॥

(मन्त्रः पूर्ववत्) नाटकं यजामहे स्वाहा ॥१६॥

॥ सप्तदशी वाद्यपूजा ॥

॥ दोहा ॥

तत वितत घन झूसरे, वाद्य भेद ए चार।
विविध ध्वनि कर शोभती, पूजा सतरमी सार ।१।
समवसरणमें वाजिया, नाद तणा झंकार।
ढोल दमामा दुंदुभी, भेरी पणव उदार ॥ २ ॥
वेणू वीणा किंकिणी, षड् झ्रासरी मरदंग।
झल्लरी भंभा नादसुं, शरणाई मुरजंग ॥ ३ ॥

पच शब्द बाजे करी, पूजे श्री अरिहत ।
मनवांछितफल पामिये, लहियें लाभ अनंत ।४।

(जगलो—मन मोह्या जगलकी हरणीने, यह देशी)

भवि नन्दो जिनन्द जस वरणीने ॥अं०॥ वीण कहे जग तुं चिरनन्दी, धन धन जग तुम करणीने ॥ भ० १ ॥ तुँ जग नन्दी आनन्द कन्दी. तवली कहे गुण वरणोने ॥भ० २॥ निर्मल ज्ञान वचन मुख साचे, तूण कहे दुःख हरणीने ॥भ०॥ ॥३॥ कुमति पन्थ सब छिनमे नासे, जिनशासन उदे धरणीने ॥ भ० ४ ॥ मङ्गल दीपक आरति करतां, आतम चित शुभ भरणीने ॥ भ० ५ ॥ (मन्त्रः पूर्ववत्) वाद्य यजामहे स्वाहा ॥ १७ ॥

॥ कलश ॥

(रेखता)

जिनद जस आज में गायो, गयो अघ दूर मो मनको । शत अठ काव्य हूं करके, थुणे सब देव देवनको ॥जि० १ ॥ तप गच्छ गगन रवि

रूपा, हुआ विजयसिंह[1] गुरु भूपा । सत्य[2] कपूर[3] विजय राजा, क्षमा[4] जिन[5] उत्तमा[6] ताजा ॥जि०॥ ॥२॥ पद्म[7] गुरु रूप[8] गुण भाजा, कीर्ति[9] कस्तूर[10] जग छाजा । मणि[11] बुद्धि[12] जगतमें गाजा, मुक्ति गणि संप्रति राजा ॥ जि० ॥ विजय आनंद[13] लघु नंदा, निधि शिखी अङ्क है चंदा (१९३९)। अंबाले नगरमें गायो, निजातमरूप हूं पायो॥जि४

श्री विजयवल्लभसूरि विरचित

निन्यानवें प्रकारी सिद्धाचल पूजा

प्रथम पूजा

॥ दोहा ॥

श्री शंखेश्वर पासजी, प्रणमो शुभ गुरु पाय ।
विमलाचल गुण गाइसुं, सिमरी सारद माय ॥१॥
प्राये यह गिरि शाश्वता, महिमा का नहि पार ।
प्रथम जिनंद समोसरे, पूर्व निन्यानवें वार ॥२॥
अढाइ द्वीपमें इण समा, तीरथ नहीं फलदाय ।
कलयुग कल्पतरु मिला, मुक्ताफल से वधाय ॥३॥

यात्रा निन्यानवें जो करे, उत्कृष्टे परिणाम ।
पूजा निन्यानवें भेदसे, करते अविचल धाम ॥४॥
नव कलशे अभिषेक नव, इम एकादश वार ।
पूजा पूजा फूल फल, आदि निन्यानवे सार ॥५॥

(तलग, कहरवा, चाल—दहींवाली का तौर दिखाना)

करिए यात्रा निन्यानवें वारी, नमिए प्रभु प्रभु सुखकारी ॥ करिए यात्रा० अंचली ॥ लख नवकारका जाप जपीजे. दो तेले सत वेले । रथयात्रा की शोभा सारी, नमिए प्रभु प्रभु सुखकारी ॥१॥ परिकरमा पूजा करने से शुभ भावे सुख पावे । जपे वार प्रभुको हजारी, नमिए प्रभु प्रभु सुखकारी ॥२॥ न्हवण विलेपन धूप दीप फल, फूल खरे भूल टरे । अक्षत नैवेद्यकी विधि सारी, नमिए प्रभु प्रभु सुखकारी ॥ ३ ॥ आठ अधिक शत टुंक मनोहर, मोटी अति देवे रति । मिल सत दश ऊपर चारी, नमिए प्रभु प्रभु सुखकारी ॥४॥ शत्रुंजयगिरि नाम पहेली, टुंक भली रग रली । सेवे निशदिन मिल नर नारा, नमिए प्रभु

प्रभु सुखकारी ॥५॥ सहस अधिक अठ मुनिवर साथे, बाहुवली कर्मदली। शुभवीर विजय बलिहारी, नमिए प्रभु प्रभु सुखकारी ॥६॥

(ताल, कवाली, चाल—मुजरा नितकरना नितकरना)

यात्रा नित करिए नित करिए। प्रभु आदि जिनंद अनुसरिए ॥ यात्रा० १ ॥ बाहुबली टुँक नाम है दूजा। मरुदेवो नाम सिमरिए ॥ ॥यात्रा० २॥ पुँडरिक गिरि पांच कोडि मुनिवर, सिद्धि वधु जिहां वरिए ॥ यात्रा० ३ ॥ पांचमी टुँक रैवतगिरि नामे। विमलाचल दिल धरिए ॥ यात्रा० ४ ॥ सिद्धराज भगीरथ प्रणमी। सिद्धक्षेत्र पग परिए ॥ यात्रा० ५ ॥ छः री पाली इण गिरि आकर। जनम पवित्तर करिए ॥ यात्रा० ६ ॥ पूजा करी निज कारज साधी। वीरविजय पद वरिए ॥ यात्रा० ७ ॥

गिरिवरं विमलाचलनामकं, ऋषभमुख्य-जिनांघ्रिपवित्रितम्। हृदि निवेश्य जलैर्जिन-पूजनं, विमलमाप्य करोमि निजात्मकम् ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं श्रीं परमपुरुषाय परमेश्वराय जन्म-

जरामृत्युनिवारणाय श्रीमते जिनेंद्राय जलादिकं यजामहे स्वाहा ।

॥ द्वितीया पूजा ॥

॥ दोहा ॥

कदम कदम शुभ भावसे, गिरि सनमुख उजमाल
कोडी सहस भवके किए, पाप कटें ततकाल।१।

(कवाली, गजल, चाल—आशक तो हो चुका हूं)

गिरिराज दर्श पावे, जग पुण्यवंत प्रानी ॥ अं०॥ ऋषभदेव पूजा करिए, संचित कर्म हरिए। गिरि नाम गुणखानी ॥ जग पुण्य० १ ॥ सहस्र कमल सोहे, मुक्ति निलय मोहे। सिद्धाचल सिद्धठानी ॥ जग पुण्य० २ ॥ शतकूट ढंक कहिए, कदंब छाह रहिए, कोडी निवास मानी ॥ ॥जग पुण्य० ३ ॥ लोहित तालध्वज ले, ढंकादि पांच भज ले । सुर नर मुनी कहानी ॥ जग पुण्य० ४॥ रतन खान चूंटी, रस कूंपिका अखूटी गुरुराज मुख वखानो ॥ जग पुण्य० ५ ॥ पुण्यवंत प्रानी पावे, पूजे प्रभुको भावे। शुभ वीरविजय वानी ॥ जग पुण्य० ६ ॥

(सोहनी-कहरवा चाल—भक्ति से मुक्ति पावोगे)

सिद्धगिरि तीरथपर जानाजी, जानाजी सुख पानाजी सिद्धगिरि ॥अंचली॥ दश कोटी श्रावक को जिमावे । जैन तीरथ कर आनाजी ॥ सि० ॥१॥ इससे अधिक फल सिद्धाचल पर । एक मुनि दिए दानाजी ॥ सि० २ ॥ चंद्रशेखर सम पापी प्रानी । इण गिरि पाप खपानाजी ॥ ॥सि० ३॥ कार्तिक चैतर पूनम यात्रा, तप जप ध्यान लगानाजी ॥ सि० ४ ॥ ऋषभसेन जिन आदि असंखा। तीर्थंकर सुख पानाजी ॥ सि० ५ ॥ शिव बहु वरने का ए मंडप । श्री शुभ वीरका गानाजी । सि० ६ ॥

[काव्यं मंत्रश्च पूर्ववत्]

॥ तृतीया पूजा ॥

॥ दोहा ॥

नेमि विना तेइस प्रभु, आए विमल गिरिंद ।
भावि चौवीसी आवसी, पद्मनाभादि जिनंद ।१।

(खमाच चाल—मानमदमनसे परिहरता)

सिद्धगिरि दर्शन भवि करता, करी करम चकचूर सिद्धगिरि दर्शन भवि करना ॥अंचली॥ काम क्रोधको तपत मिटावे, अमृत घन झरता। नरक वैतरणी कुमती नासे, दुर्गति नहीं गिरता ॥करी०१॥ पुण्यराशि महाबल गिरिधारी, दृढ-शक्ति भरता। शतपत्तर विजयानंद सेवी. भव समुद्र तरता ॥ करी० २ ॥ भद्रंकर महापीठ कहावे, सुरगिरि मन हरता। महागिरि महापुण्य जोर. नजरे मुझको परता ॥ करी० ३ ॥ अस्सी योजन मान पहिले, आरे में धरता। सित्तेर साठ पचास योजन अब, बार योजन फिरता।करी०। ॥४॥ छट्ठे आरे सात हाथका. मान धारण करता। पांचमें आरे पायेके दुर्लभ, निज आतम ठरता। ॥ करी० ५ ॥ रत्न चितामणि नरभव पाकर, जनम सफल भविजन करता। पुण्य उदय मन सुमति आके, वीरको अनुसरता ॥ करी० ६ ॥

(सींधडा-कहरवा-चाल-तेरी भक्तिछोड सदगुरु)

सिद्धगिरि तीरथ जैसा और नहीं धाम है। और नहीं धाम है, और नहीं धाम है। सिद्ध० अ० ॥ अनादि अनंत वीता, काल नहीं काम जीता। अब तो तूं चेत प्राणी, यही तेरा काम है ॥सिर० १॥ तनिक तमीज करना, क्रोध लोभ दूर हरना। मान माया त्याग तेरा, मुक्तिमें मुकाम है ॥ सि० २ ॥ रातने दिवस पूरे, किए रहे काम अधूरे। मनले अब कहना तारक, देवगुरु नाम है ॥ सि० ३ ॥ जीवाजून लाख चार, अस्सी फिर्‍यो वारवार। महापुण्य उदय पायो, नर भव नहीं दाम है ॥ ४ ॥ हार नहीं जीती बाजी, चाहता है रहना राजी। राग द्वेष काट प्यारे, तुंही आतमराम है ॥ सि० ५ ॥ जब मिले कारण निमित्त, शुद्ध होवे कारज चित्त। जीवमान तीरथ शुभ, वीरपद ठाम है ॥सि०६॥

[काव्यं मंत्रश्च पूर्ववत्]

॥ चतुर्थी पूजा ॥

॥ दोहा ॥

शत्रुंजय नदी न्हायके, मुख बांधी मुखकोस।
देव युगादि पूजिये, लाकर मन संतोस ॥ १ ॥

(चाल नाटक-तोरेगमका तराना दादग)

विमलाचल धारा, मल हरनारा, ऋषभ देव भगवान। प्रभु सुख करनारा, दुःखहरनारा, सब जग प्यारा ऋषभ० ॥ अंचली ॥ इस अवसर्पिणी काल मेंरे, किया प्रथम उद्धार। भरत चक्री दूजा कियारे, दंडवीर्य सुखकार। प्रभु सुख करनारा, दुःख हरनारा, सब जग प्यारा ऋषभदेव भगवान ॥१॥ सीमधर वचने सुनीरे, तीजा किया उद्धार। ईशान इन्द्रने सुख लियारे, पाया भवजल पार। प्रभु सुख करनारा, दुःख हरनारा, सब जग प्यारा ऋषभदेव भगवान।२। कोडि सागरके अंतरे रे, उद्धार चौथा करन्त। माहिंदर देवलोक का रे, स्वामी पुण्य भरत। प्रभु सुख करनारा, दुःख हरनारा, सब जग

प्यारा ऋषभदेव भगवान॥३॥ पंचम पंचम शची-पति रे, किया उद्धार आनंद। सागर दस कोडि पीछे रे, पामिया आनंद कंद। प्रभु सुख करनारा, दुःख हरनारा, सब जग प्यारा ऋषभदेवभगवान ॥४॥ एक लाख कोडि गए रे, सागर छट्ठा उद्धार। चमरेंद्रने किया आवसे रे, निज आतम लिया तार। प्रभु सुख करनारा, दुःख हरनारा, सब जग प्यारा ऋषभदेव भगवान ॥५॥ उद्धार किया सातमा रे, चक्री सगर नरेंद्र। तीर्थ अपूरव सेविए रे, श्रीशुभ वीरजिनेंद्र। प्रभु सुख कर-नारा, दुःख हरनारा, सब जग प्यारा ऋषभदेव भगवान ॥ ६ ॥

(जंगला, ठेका पंजाबी, चाल—आज वधाई प्यारे)

विमलगिरि ध्यावो प्यारे, विमलगिरि ध्यावो प्यारे, ध्यानसे शिव सुख फल पावो विमल०। अंचलो०। आठमा व्यंतरेंद्रने कीना, शिवरमणी वधूमें चित्त दीना। धर्ममें भीना, प्यारे ध्यानसें शिव० ॥१॥ किया श्रीचन्द्रप्रभुके

वारे, चन्द्रजसा नृपने दुःखटारे । चैत्य समारे, प्यारे ध्यानसे शिव० ॥२॥ पुत्र श्रीशांति जिनंद्का जानो, दशमा उद्धार किया तस मानो । हर्ष दिल आनो, प्यारे ध्यानसे शिव० ॥ ३ ॥ ग्यारमा रामचन्द्रने कीना, बारमा पांडवने चित दीना । शिव सुख लीना, प्यारे ध्यानसे शिव० ॥४॥ महानन्द कर्मसूदन कैलासा, पुष्पदंत जयंत आनन्द्वासा, पूर मन आसा, प्यारे ध्यानसे शिव० ॥५॥ श्रीपद् हस्तगिरि मन लावो, शाश्वतसुख परमपद पावो, वीर गुण गावो, प्यारे ध्यानसे शिव० ॥ ६ ॥

[काव्य मंत्रश्च पूर्ववत्]

॥ पञ्चमी पूजा ॥

॥ दोहा ॥

चौथे आरे ए हुए, सब मोहटे उद्धार ।
छोटे विच विचमे हुए, जिनका नही है पार ।१।

(इमनकल्याण, कहरवा, चाल—होई आनन्द बहार)

तीरथ जग जयकार रे, भवि भेटो प्रभुको

॥ तीं० अंचली ॥ प्रभु दर्शनसे पाप पणासे, फिरना मिटे संसार रे ॥भवि १॥ संवत इकसौ आठसें कीना, जावड शाहने उद्धार रे ॥भवि२॥ बारसौ तेरां विक्रम संवत, वंश श्रीमाली साररे । । भवि ३ । चौदमा वाहड मंत्रिने कीना, लीना नरभव सार रे ॥ भवि ४ ॥ इन्दु[1] ऋषि[7] शिखि[3] चन्द्र[1] के वर्षे, समराशाह ओसवार रे ॥भवि ५॥ पंद्रमा उद्धार करीने, निज आतम लिया तार रे ॥ भवि ६ ॥ ऋषि[7] वसु[8] बाण[5] इन्दु[1] शुभवर्षे, कर्माशाह उद्धार रे ॥भवि ७॥ वर्त्तमान शासन जयवंता, वीर वचन जयकार रे ॥ भवि ८ ॥

(असाउरी-कहरवा, चाल-करुं मैं क्या तुझबिन बागवहार)

ऋषभ प्रभु भवजल पार उतार ॥ ऋ० अंचली ॥ आप प्रतापे गिरवर दीपे, झगमग ज्योति सार ॥ ऋ० १ ॥ श्रीजिन वीर शासन जयवंतु, वर्ष इक्कीस हजार ॥ ऋ० २ ॥ उदय तेइसमें होंगे सूरीसर, श्रीदुप्पसह अनगार ॥ ऋ० ३ ॥ उनका उपदेशामृत पीके, विमल-

वाहन भूपार ॥ ऋ० ४ ॥ करावेगा शुभ भावसे गि.रेका, आखिरका उद्धार ॥ऋ० ५॥ भव्यगिरि सिद्धशेखर महाजस, मालवंत सिरीकार ॥ऋ०६॥ पृथ्वीपीठ दुखहर गिरिमुक्ति, राजमणिकंत मनोहार ॥ ऋ० ७ ॥ मेरु महीधर नाम सिमरिए, वीर वचन सुखकार ॥ ऋ० ८ ॥

[काव्यं मन्त्रश्च पूर्ववत्]

॥ षष्ठी पूजा ॥

॥ दोहा ॥

सिद्धाचल सिद्धि वरे, गृही मुनि भेष अनंत ।
आगे अनंता सीझसी, पूजो भवि भगवंत ॥१॥

(सोहनी, कवाली, चाल—राना मेरा किथेनी गया)

ढूंढ फिरा जग सारा जग सारा सिद्धगिरि सानी ना मिला। अंचली। दिल दर्शनको चाह रहा है। देख देख मन मोह रहा है। किए दर्शन सुखकारा सुखकारा ॥ सि० १ ॥ ऋषभ जिनंदकी पडिमा सोहनी। भरत बनाइ मानो मतर मोहनी। रतन मान चमकारा चमकारा ॥सि०२॥

चक्री सगर सुर दिलमें धारी। दुषम कालमें भावी विचारी। बिंब गुफामें जा पधारा जा पधारा ॥ सि० ३ ॥ देव देवी पूजनको आते। ठाठ बना सांइ गुण गाते। जय-जय शब्द उच्चारा उच्चारा ॥ सि० ४ ॥ देव देवी मिल नाटक करते। गीत गात कर पापको हरते। वीर वचन हितकारा हितकारा ॥ सि० ५ ॥

(जंगला—कहरवा, चाल, मनमोह्या जंगलकी हरणीने)

भवि पूजो प्रभु जग तरणिने, भ० ॥अंचली॥ जिन गुण अमृत पानको करके, जन्म सफल निज करणीने ॥भवि० १॥ या रीति भक्ति मगन सुर संघा, जनम जनम दुःख हरणीने ॥भवि०२॥ देव मदद नर दरस करे जो, भव तीजे शिव वरणीने ॥भवि० ३॥ पश्चिम दिशि सुवर्ण गुफा में, कंचनगिरि नाम धरणिने ॥भवि० ४॥ आनंदघर पुण्यकंद जयानंद, पातालमूल विहरणीने ॥ भवि० ५ ॥ विभास विशाल जगतारण अकलंक, तीरथ पार उतरणीने ॥ भवि० ६ ॥ ज्ञान

विवेकसे प्रभुको पिछानी, वीर वचन अनुसरणीने ॥ भवि० ७ ॥

[काव्य मंत्रश्च पूर्ववत्]

॥ सप्तमी पूजा ॥

॥ दोहा ॥

नमि विनमी विद्याधरा, दोय कोडि मुनिराय।
साथ हि सिद्धिवधू वरे, शत्रुंजय सुपसाय ॥१॥

(लावणी, कहरवा, चाल-पार्वतीका पति)

सर्व तीरथमें मोहटा तीरथ, श्रीशत्रुंजय प्यारा रे। शुद्ध मन वच कायासे सेवे, सो पावे निस्तारा रे ॥ सर्व० १ ॥ आशा धरि आवे भवि प्राणी, सो पावे सुख भारा रे। दूरभवी अभवी नही आवे, शुभ भावे धिक्कारा रे॥ सर्व० २ ॥ चौसठ नमि खेचर पुत्री मिल ऋषभ चरण चित्त धारारे। हाथ जोड विनवे प्रभु आगे, सुन्दर वचन उचारा रे ॥ सर्व० ३ ॥ नमि विनमि जे पुत्र तुमारे, जिन जाने जग सारारे। दीन दयाल दया कर दीना, राज्य भाग हितकारारे ॥सर्व०४॥

वाह्य राज्य भोगी प्रभु पासे, आकर काज सुधारा रे। हम भी तातजो साधसुँ कारज, लेकर आप सहारा रे ॥ सर्व० ५ ॥ इम कहती सिद्धगिरि पर चढ़ती, त्यागा सब ही आहारा रे। वीर विजय मिल ज्योति में ज्योति, आवागमन निवारारे ॥ सर्व० ६ ॥

(भैरवी, कहरवा, या कवाली, चाल-अबतो प्रभुजीकालेलोसरन)

ए है तीरथ जग तारन तारन ॥ अंचली ॥
ऋषभ जिनेश्वर जग परमेश्वर, पूजा करो मिटे जनम मरन ॥ ए० १ ॥ एक अवगाहने सिद्ध अनंता, ज्ञान दरस दो क्षायक धरन ॥ए० २॥ अकर्मक महातीरथ हिमगिरि, अनंतशक्ति प्रभु पूजक वरन ॥ ए० ३ ॥ पुरुषोत्तम और पर्वत राजा, ज्योतिरूप भवि जीव करन ॥ ए० ४ ॥ विलास-भद्र और सभद्र नामा, सुन सुन मन भवि जीव ठरन ॥ ए० ५ ॥ श्री शुभ वीर प्रभु अभिषेके, पाप पुंज सब दूर हरन ॥ ए० ६ ॥

[काव्यं मन्त्रश्च पूर्ववत्]

॥ अष्टमी पूजा ॥

॥ दोहा ॥

द्रविड वारिखिल्लजी, दसकोडि अणगार ।
साथ हि सिद्धि वधू वरे, वंदो वारं वार ॥ १ ॥

(भैरवी-चाल नाटक-हेजी तेरे दरदे हिजरने सताया,)

सिद्धगिरि दर्शनको जिया ललचाया, प्यारा तुही, सुखकारा तुहीं, जगतारा तुही, जिनराया ॥ अं० ॥ भरत के पाटे भूपति, सिद्धि वरे इस ठाम । असंख्याता इस कारणे सिद्धध क्षेत्र जग नाम । हेजी हुए अजित जिनेश्वर राया प्यारा० ॥ १ ॥ जिम जिम ये गिरि सेविये, तिम तिम पाप पलाय । अजित जिनेश्वर साहिवा, रहे चौमासा आय । हेजी सिद्धगिरि तीरथ सुखदाया ॥ प्यारा० २॥ सागर मुनि इक कोडिसुं, तोडी कर्म के पास । पांच कोडि मुनिराजसुं, भरत लिया शिव वास । हेजी धन्य धन्य ऐसे मुनिराया ॥ प्यारा० ३ ॥ आदीश्वर उपगार से, दस सत कोडि साथ । अजितसेन विमलाचले, पकडा शिव वधु हाथ । हेजी प्रभु

चरण कमल मन लाया ॥ प्यारा० ४ ॥ अजित नाथ मुनि चैत्रकी, पूनम दश हजार। आदित्य-यशा मुक्ति गये, एक लाख अणगार। हेजी शुभ वीरविजय गुण गाया ॥ प्यारा० ५ ॥

(चाल अंग्रजी बाजेकी ताल दादरो—रागणी पीलो)

तीरथ सिद्धगिरि जग सार सार सार। निमित्त शुद्ध भाव का पियार सुखकार ॥ १ ॥ आदि जिनंद चंद पद धार धार धार। सेवत सूर चंद इंद वृन्द नर नार ॥२॥ अजरामर नाम जप वार वार वार। क्षेमंकर अमरकेत गुणकंद भवतार ॥३॥ सहस्र पत्र डाल गले हार हार हार। शिवंकरु जनम मरण दुःखको निवार ॥४॥ कर्मक्षय तमोकंद यार यार यार। राजराज ईश्वर है नाम मंगलकार ॥ ५ ॥ गिरिवर धूर शिर चार चार चार। चक्रवर्ती भूप वार वार बलिहार॥ ६ ॥ आदि देव पूज कर्म जार जार जार। शुभवीर साहिबा तूं हो आनंद केदातार ॥७॥

[काव्यं मंत्रश्च पूर्ववत्]

॥ नवमी पूजा ॥

॥ दोहा ॥

राम भरत त्रय कोडिसुं, कोडि मुनि श्रीसार।
कोडि साढे आठ शिववरे, शांवप्रद्युम्नकुमार ।१।

(वरवा, ताल कहरवा—चाल—मजा देते हैं क्या)

धनधन वो जगमें नरनार, विमलाचलके जानेवाले ॥ धनधन० अंचलि ॥ सिद्धाचल शिखर निहार, आदीश्वर प्रभुको जुहार । मानो दर्शन अमृत धार, भवि मुक्तिके जानेवाले ॥ ध० १ ॥ शिव सोमजसाके लार, तेरां कोटि मुनि परिवार। हुए शिवसुन्दरी भरतार. प्रभुके ध्यान लगानेवाले ॥ ध० २ ॥ लाख एकानवे साथ, भए नारदजो शिर नाथ । लंघे भटपट भवजलपाथ, सदा प्रभुगुणके गानेवाले ॥ध०३॥ वसुदेव भूपकी नार, हुई सिद्ध पतीस हजार । दिया आवागमन निवार, सदा शिवफलके पानेवाले । ध०४ ॥ एक कोडी बावन लाख,

सहस पचावन उपर आख । सातसौ सतत्तर ले दाख, नहीं धोखाके खानेवाले ॥ ध० ५ ॥ किया शांतिनाथ चौमास, हुए तव ए सव शिव वास । शुभ वीरविजय कहे खास, प्रभु हैं पार लगानेवाले ॥ ध० ६ ॥

(सोरठा–चाल–कुवजाने जादु डारा)

सिद्धगिरिने जादू डारा । मेरा मोह लिया तनमन सारा ॥ सि० अं० ॥ आदिजिनेसर आदिनरेसर, आदिमुनीसर प्यारा । नाभिनंदन भवदुःख भंजन, रंजन भवि सुखकारा ॥सि०१॥ चउदां सहस दमितारि संगे, शिवरमणो भरतारा। प्रद्युम्न प्रिया अचंभो राणी, पहुंची मोक्ष मझारा ॥ सि० २ ॥ चौतालीससो साथ वैदरभी, थावच्चापुत्र हजारा । शुक्र परिव्राजक सेलग पणसय, सुभद्र सातसौ धारा ॥सि० ३॥ भवतारण तिस कारण नाम है, भवतारण उच्चारा। गजचन्द्र महोदय सूरकांत अरु, अचल अभिनंद तारा ॥सि० ४॥ सुमतिश्रेष्ठ अभयकंद मानो,

सरधा विन नहीं चारा। वीरविजय प्रभु हुकमसे होवे, भवोदधि पार उतारा ॥ सि० ५ ॥

[काव्य मंत्रश्च पूर्ववत्]

॥ दशमी पूजा ॥

॥ दोहा ॥

कदंब गणधर कोडीसुं, और संप्रति जिनराज।
थावच्चा तस गणधरु, सहस्रसुं सोधे काज॥१॥

(जोग ठेका चाल अरे नर तरने को तेरे धर्मनेडा बनाया है)

तीरथ सिद्धगिरिके दर्शन, नसीवां वर भवि पावे। तीरथ० ॥ शरत जो दर्श को जावे, नरक तिरियंच नहीं थावे। भवी वो जानो निश्चयसे, धनेसरसूरि फरमावे ॥ ती० १ ॥ गए मुक्ति केइ साधु, जिनों के नाम जग गावे। मयालि जालो उपजालो, परमपद मोक्षको पावे ॥ ती० २ ॥ नन्दन छ देवकी माइ, निजातम शुद्ध मन ध्यावे। करी क्षय कर्म उजियारा. हुआ ब्रह्मज्ञान शिव जावे ॥ ती० ३ ॥ उज्जलगिरि महापद्म जानो. विश्वआनंद जग पावे। विजय-

भद्र इन्द्र परकासो, कपर्दि मान गढ ढावे ॥ती०४॥ निकेतन मुक्ति केवलदा, चर्च गिरि तीर्थ गुण गावे। अटल अज रूपको साधे, कहे शुभवीर शुद्ध भावे ॥ ती० ५ ॥

(रागणी—कलींगडा-ताल—कहरवा)

क्यों रुलता संसार तीर्थ है तरे तरने को ॥ क्यों० ॥अंचली॥ तन मन धनसे कर प्रभु पूजा, क्रिया एक कर ज्ञान है दूजा। रात दिवस ले पकड चरन प्रभु पार उतरने को ॥ क्यों० १ ॥ शुकराजा निज राज विलासी, ध्यान धरे जाकर छै मासी। द्रव्य सेवन से चंदराज मिट गयो भय मरनेको ॥ क्यों० २ ॥ ध्याता ध्यांता ध्यान ध्येयपद होवे, भावसे त्रिपदी शिवफल ढोवे। डाल छोड लग ब्रह्म जाण नर शिवपुर चरनेको ॥ क्यों० ३ ॥ मूल उरध अध शाखा चारो, छन्द पूराणको मनमें विचारो ॥ इन्द्रिय डाल पात विषयों के उद्यम छरनेको ॥ क्यों० ४ ॥ अनुभव अमृत ध्यान की धारा, जिनशासन

जग में जयकारा। चार दोष किरिया को त्यागो योगके करने को ॥ क्यों० ५॥ निर्जरतो गुण श्रेणि चढकर, ध्यानांतर पावे तव जाकर। श्रीशुभ वीर वचन सिद्धगिरि शिवसुंदरी वरने को ॥ क्यों० ६ ॥

[काव्यं मन्त्रश्च पूर्ववत्]

॥ एकादशी पूजा ॥

॥ दोहा ॥

शत्रुंजय गिरि मंडनो, मरुदेवाको नंद।
युगलाधर्म निवारको, नमो नमो आदिजिनंद ।१।

(रागणी–जंगला–ताल–ठेका)

सिद्धगिरि तीरथ प्यारा, तुंहि जग हित करतारा। चरणोंमें मस्तक धारा, सहस आठ वारजी ॥सि० १॥ तीरथ वे अदवी वारी, भक्ति कर सूत्रानुसारी। झटपट होवे पारी, छुटदा संसारजी ॥ सि० २॥ तेरी जो वे अदवी करता, नरक निगोद परता। दुःख का भंडार भरता, छुटना दुशवारजी ॥ सि० ३ ॥ आशा-

तना से धन हानि, भूखा न मिले अन्नपानी। देह सारी रोग भरानी, जावे जनम हारजी ॥ सि० ४ ॥ परभव परमाधामी, हाथ सेती दुःख पामी। नहीं कोई रहतो स्वामी, कौन मद्-दगारजी ॥ सि० ५ ॥ आशातना त्यागो प्यारे, चरणकमल सुखकारे। जिन आज्ञा सीस धारे, होवे भव पारजी ॥ सि० ६ ॥ सिद्धगिरि तीरथ जावे, शुद्ध मन गुण गावे। आतम आनंद थावे, कहे वीर सारजी ॥ सि० ७ ॥

(इमन कल्याण—चाव—दिल किसुसे लगा चुके हैं)

उत्तम तीरथ सिद्धगिरि जावो। छिनमें कठिन करम खपावो ॥ उ० ॥ इस तीरथ की महिमा भारी, कथन करत नहिं आवे पारी। सुर नर मुनिपति सब गए हारी, मान तजो भवि सीस नमावो ॥उ० १॥ पूर्व निन्यानवे नाथजी आए, साधु बहुत यहां मोक्ष सिधाए। श्रावक भी शुभ भावसे पाए, मोक्ष भजी गिरि नाम समावो ॥ उ० २ ॥ अष्टोत्तर शत कूट सुधामा,

सौंदर्य यशोधर नामा। प्रीति मंडन शुभ कामुक कामा, सहजानंद सहज गुण गावो ॥ उ० ३ ॥ महेंद्रध्वजा सर्वारथ सिद्धा, प्रियंकर जग नाम प्रसिद्धा। गिरि शीतल छांह कारज कीधा, ध्यान धरी शिवपुर को धावो ॥ उ० ४ ॥ पूजा निन्यानवे भेदसे कीजे मनुष्य जन्मका लाहा लीजे। दान सुपात्तर में नित दीजे, आतम शुभ परिणाम चढावो ॥ उ० ५॥ तीर्थ सेवासे शिव सुख थावे, आतम लक्ष्मी हर्ष धरि पावे। कमल कांति वल्लभ मनभावे, वीरशरण अपनेमनलावो ।उ०६।

[काव्य मन्त्रश्च पूर्ववत]

॥ कलश ॥

(रागणी पहाड ताल अढाइ)

आज वधाइयां गावोजी श्री श्री सिद्धाचल दरबार–आज वधाइयां ॥अं०॥ विमलाचल वडा। गावोजी तीरथ मेरु शैल मझार। आज वधाइयां ॥ १ ॥ जिनवर मानीये, गावोजी मुनिगण संघमें सरकार। आज वधाइयां ॥ २॥

निन्यानवे जे करे, गावोजी यात्रा पावे भवोदधि पार। आज वधाइयां ॥ ३ ॥ अठारां चोरासिए, गावोजी कीना वीरविजय विस्तार। आज वधाइयां ॥ ४ ॥ जन हित कारणे, गावोजी हिंदी भाषा मांही प्रचार। आज वधाइयां ॥ ५ ॥ तपगच्छ दिनमणी, गावोजी विजयानंद सूरि उपकार। आज वधाइयां ॥ ६ ॥ तिनके पाटपर, गावोजी सूरि कमलविजय सरदार। आज वधाइयां ॥ ७ ॥ उपाध्याय दीपते, गावोजी श्रीमुनि वीरविजय उदार। आज वधाइयां ॥ ८ ॥ प्रवर्तक पद धरे, गावोजी श्रीमुनि कांतिविजय श्रीकार। आज वधाइयाँ ॥ ९ ॥ इनके राज्यमें, गावोजी रचना बनी मंगलकार। आज वधाइयाँ ॥ १० ॥ इन्दु[1] शिखी[3] युग[4] युगल[2], गावोजी संवत् वीरजिन जयकार। आज वधाइयां ॥ ११ ॥ आतम मानिए, गोवोजी संवत दश विक्रम धार। आज वधाइयां ॥ १२ ॥ उन्नीसौ बासठा,

गावोजी आश्विनमास सुदि शुभकार । आज वधाइयां ॥ १३ ॥ तिथि शुभ पूर्णिमा, गावोजी रचना पूर्ण हुई कविवार। आज वधाइयां ॥१४॥ श्रीविजयानंदसूरि, गावोजी श्रीलक्ष्मीविजय अणगार । आज वधाइयां ॥ १५ ॥ तस शिष्य जानिए, गावोजी हर्षविजय हर्ष दातार । आज वधाइयां ॥ १६ ॥ तस लघु शिष्यने, गावोजी वल्लभविजय किया उद्धार । आज वधाइयां ॥ १७ ॥ जीरा नगरमें, गावोजी साधु नव रहे मास चार । आज वधाइयां ॥ १८ ॥ चिंतामणि पासजी, गावोजी मुखसे बोलो जयजयकार । आज वधाइयां ॥ १९ ॥

॥ श्रीमद्विजयवल्लभसूरि कृत ॥

श्रीपार्श्वनाथ पंचकल्याणक पूजा

॥ च्यवनकल्याणके प्रथमा पुष्पपूजा ॥

॥ दोहा ॥

चिंतामणि पारस प्रभु, सुरतरु सम अवदात ।
पुरिसादाणी जगत में, षट् दर्शन विख्यात ॥१॥
प्राणी आरे पांचमें, सिमरे ऊठी प्रभात ।
मन वांछित पूरण करें, दुःख दोहग नस जात॥२॥
अवसरपिणी तेईसमें, पार्श्वनाथ भगवंत ।
तस गणधर पद पायके, होगा शिववधू कंत ॥३॥
दामोदर जिनसे सुनी, निज आतम उद्धार ।
तब आषाढी श्रावके, मूर्ति बनाइ सार ॥ ४ ॥
अंजनशलाका करायके, सुविहित आचारज पास
पांच कल्याणक सावसे, करी ओच्छव फलीआस५
सिद्ध स्वरूपसु रमणको, नूतन पडिमा सार ।
थापी पांच कल्याणके, पूजे धन नर नार ॥ ६ ॥
कल्याणक ओच्छव करी, सुर गण आनंद काज ।
जो नन्दीश्वर पूजते, शाश्वत श्रीजिनराज ॥७॥

कल्याणक पूजन सहित, रचना करशुं तेम।
दुर्जन विषधर हालसी, सज्जन मन अतिप्रेम ॥८॥
कुसुम[1] फल[2] अक्षत[3] सही. जल[4] चंदन[5] मनोहार।
धूप[6] दीप[7] नैवेद्य[8] से, पूजा अष्ट प्रकार ॥ ६ ॥

(भैरवी, चाल–अपतो प्रभुजी का लेलो सरन)

पूजा प्रभुकी भवसिंधु तरी–पूजा० अंचली। झगमग झगमग वेदी सोहे, प्रभु पारस तिहां थापी करी ॥ पूजा० १ ॥ रतन रकेबी नरनारी लेइ, पांच वर्ण के फूलो भरी ॥ पूजा० २ ॥ तीर्थंकर शुभनाम करम बंध, कनकबाहुके भवमें धरी ॥ पूजा० ३ ॥ दशमे देवलोकमें पहुंचे, सकल देवसे तेजी खरी ॥ पूजा० ४ ॥ वीस सागर उत्कृष्टी आयु, सुख विलसे दु:ख नाम टरी ॥ पूजा० ५ ॥ पांच कल्याणक श्री जिन-वरके, ओच्छव करे सुरसंग चरी ॥ पूजा० ६ ॥ अग्रेसरी हो शाश्वत जिनकी, करे पूजा तन मनको हरी ॥ पूजा० ७ ॥ आतम आनंद प्रभु पूजासे, जग वल्लभ पद वीर वरी ॥ पूजा० ८ ॥

॥ दोहा ॥

च्यवन चिन्ह जिन समयमें, कहे देवके अनेक ।
श्रीजिनवरके जीवको, उनमें से नहीं एक ॥१॥

(सोहनी चाल—भक्तिसे मुक्ति पावोगे)

नंदीश्वरतीरथ जावेजी, जावेजी शुभ भावे जो ॥ नं० अंचली ॥ मुगतिपुरी मारगमें शीतल, छाया तीरथ थावेजी ॥ नं० १ ॥ गंगाजल आदि शुभ जलसे, जिनवरको नवरावेजी ।नं०२। सुकृत तरु सींची बहु भविजन, शाश्वत शिव-सुख पावेजी ॥ नं० ३ ॥ काशी देश बनारस नगरी, अश्वसेन नृप ठावेजी ॥ नं० ४ ॥ सती-शिरोमणि वामाराणी, जिनमत जस मन भावेजी ॥नं० ५॥ तस घर सुर जिनवरका चेतन, बालक रूपें आवेजी ॥नं० ६॥ आतम आनंद हर्ष वधाई, वल्लभ वीर की गावेजी ॥नं० ७॥

॥ श्लोक ॥

तीर्थंकराणां जगदुत्तमानां, सुरासुराधीश-निषेवितानाम् । कल्याणकानां प्रकरोमि पूजां,

निजात्मसिद्ध्यै शिवदां भवेत्सा ॥१॥ ॐ ह्रीं श्रीं परमपुरुषाय परमेश्वराय जन्मजरामृत्युनिवारणाय श्रीमते जिनेंद्राय पुष्पाणि यजामहे स्वाहा ॥ १ ॥

॥ च्यवनकल्याणके द्वितीया फल पूजा ॥

॥ दोहा ॥

चैतर वदि दिन चौथको, पूरण करी सुर आय।
वाता माता उदरमें, अवतरिया जिनराय ॥१॥
सुपन चतुर्दश तिण समय, माता देखे सार।
सुखशय्या विसरामसे, निजगृह रजनी मझार।२।

(चाल —पणिहारीकी)

फूल्यो मास वसंतको मारा व्हालाजी, रायण ने सहकार व्हालाजी। केतकी जाइ मालती मारा व्हालाजी, भ्रमर करे झंकार व्हालाजी ॥ १ ॥ कोयल मदभर बोलती मारा व्हालाजी। वैठी आंबा डाल व्हालाजी। हंस युगल जल खेलते मारा व्हालाजी, विमल सरोवर पाल व्हालाजी ॥ २ ॥ मद पवन की लहरमें मारा व्हालाजी, माता सुपन निहाल

व्हालाजी। सुखदायक सब जीवको मारा व्हालाजी, प्रसरे सुजस विलास व्हालाजी ॥३॥ देखा प्रथम गज[1] उज्जला मारा व्हालाजी, दूजे वृषभ[2] गुणवंत व्हालाजी। तीजे सिंहज[3] केसरी मारा व्हालाजी। चोथे श्रीदेवी[4] सोहंत व्हालाजी ॥४॥ पुष्पमाल[5] शुभ पांचमें मारा व्हालाजी, छट्ठे शशि[6] मनोहार व्हालाजी। सातमे तरणि[7] दीपतो मारा व्हालाजी, अष्टम ध्वज[8] पट सार व्हालाजी ॥ ५ ॥ कुंभ कलश[9] नवमे भलो मारा व्हालाजी, दशमे पद्मसर[10] जान व्हालाजी। क्षीरसमुद्र[11] एकादशे मारा व्हालाजी, बारमे देवविमान[12] व्हालाजी ॥ ६ ॥ रत्नराशि[13] शुभ तेरमे मारा व्हालाजी, चौदमे अग्नि[14] वखान व्हालाजी। वीर वचन सुखकारिया मारा व्हालाजी, आतम वल्लभ मान व्हालाजी ॥७॥

॥ दोहा ॥

उतरते आकाशसे, वदन प्रवेश करंत।
देखी माता जागियां, आनन्दका नहीं अंत ॥१॥

(लावणी चाल—पार्वती का पति)

च्यवन कल्याणक ओच्छव करके, भवि-जनने सुख पाया रे । जैन शास्त्रमें पांच प्रकार का, शुभ फल है फरमायारे ॥ अंचली ॥ अवधि ज्ञानसे देखी शचीपति, मनमें अति हर्षाया रे । शक्रस्तव करी वांदे प्रभुको, अर्ध नमाकर काया रे ॥ च्य० १ ॥ अपना कर्तव्य जानी मघवा, नगर बनारस आया रे । चउद सुपनका अर्थ सुनाकर, नमे जिनेसर माया रे ॥ च्य० २ ॥ रत्न कूख धारिणी सुन माता, त्रिभुवन राज तैं पायारे । ओच्छव कारण श्री जिनवरके, च्यवन कल्याणक आयारे ॥ च्य० ३ ॥ नंदीसर मिल करके चउसठ, इन्द्र महोच्छव ठाया रे । चार प्रकारके देवी देवता, प्रभु भक्ति चित्त लाया रे ॥ च्य० ४ ॥ विधिसे प्रभुका पूजन करके, कर नाटक गुण गाया रे । जय जयकार करी निज सदने, सुरवर गये मन भाया रे ॥ च्य० ५ ॥ आतम आनंद कारण समकित, इस विध सुर

चमकाया रे। प्रभु पूजा विन वल्लभ नहीं शुभ वीरविजयने गाया रे ॥ च्य० ६ ॥

[काव्यं मंत्रश्च पूर्ववत्]

श्रीमते जिनेंद्राय फलानि यजामहे स्वाहा ॥२॥

॥ जन्मकल्याणके तृतीया अक्षतपूजा ॥

॥ दोहा ॥

सुपन पाठक बोलाविया, रवि उदय घर भूप।
सुन फल सुपन विदा किये, देई दान अनुरूप ।१।
तीन ज्ञान सुं ऊपने, तेवीसमे अरिहंत।
वास उर सर हंसलो, दिन दिन वृद्धि लहंत ॥२॥
भूपति पूरे दोहला, सहियां वृन्द समेत।
प्रभु पूजे अक्षत धरी, चामर पंखा लेत ॥ ३ ॥

(चाल—तुम चिद्घन चंद आनन्द लाल तोरे दर्शन)

प्रभु पारसनाथ जिनंदचंद, तोरे जनमतणी बलिहारी, नाथ तोरे० अंचली ॥ लील विलासे पूरण मासे, दशमी पोष बदि सारी ॥नाथ०॥१॥ वनवासी पशु पंखी प्राणी, उनको सुख समकारी ॥नाथ०॥२॥ इण रजनी घर-घरमें

चमकाया रे। प्रभु पूजा विन वल्लभ नहीं शुभ, वीर विजयने गाया रे ॥ च्य० ६ ॥

[काव्य मन्त्रश्च पूर्ववत्]

श्रीमते जिनेंद्राय फलानि यजामहे स्वाहा ॥२॥

॥ जन्मकल्याणके तृतीया अक्षतपूजा ॥

॥ दोहा ॥

सुपन पाठक बोलाविया, रवि उदय घर भूप।
सुन फल सुपन विदा किये, देई दान अनुरूप ॥१॥
तीन ज्ञान सुं ऊपने, तवोसमे अरिहंत।
वाम उर सर हंसलो, दिन दिन वृद्धि लहंत ॥२॥
भूपति पूरे दोहला, सहियां वृन्द समेत।
प्रभु पूजे अक्षत धरी, चामर पंखा लेत ॥ ३ ॥

(चाल—तुम चिदघन चंद आनन्द लाल तोरे दर्शन)

प्रभु पारसनाथ जिनंदचंद। तोरे जनम-तणी वलिहारी, नाथ तोरे० अंचली ॥ लील विलासे पूरण मासे, दशमी पोष वदि सारी ॥ नाथ० १ ॥ वनवासी पशु पंखी प्राणी, उनको सुख समकारी ॥ नाथ० २ ॥ इण रजनी घर

घरमें ओच्छव, जगमें सुखी नर नारी ॥नाथ०३॥ उत्तम ग्रह विशाखा जोगे, जनमें प्रभु जयकारी ॥ नाथ० ४ ॥ सातों नरकमें चांदनां होया, थावरको सुखकारी ॥ नाथ० ५ ॥ मात नमी आठों दिक्कुमरी, अधोलोक वसनारी ॥नाथ०३॥ सूती घर ईशाने करती, योजन अशुचि टारी ॥ नाथ० ७ ॥ आतम लक्ष्मी शिव साधन को, वल्लभ वीर विचारी ॥ नाथ० ८ ॥

॥ दोहा ॥

कुमरी आठ ऊर्ध्व लोकको, वरसावे जल फूल ।
आतम निर्मल निज करे, मिटे जन्मको भूल ।१।

(ठुमरी, चाल—गिरनारी की पहाडी पर कैसे गुजरी)

करे ओच्छव मिल कुमरी सारी ॥अंचली॥
पूर्वरुचक अठ दर्पण धरती, दक्षिण की अठ कलशाली ॥ करे० १ ॥ पंखा धरती अठ पश्चिमकी, आठ उत्तर चामरधारी ॥करे० २॥ दीप धरंती चार विदिशिकी, रुचक द्वीप देवी चारी ॥ करे० ३ ॥ कदलीघर करके तिग

उत्तम, मर्दन स्नान अलंकारी ॥ करे० ४ ॥ रक्षापोटली बांधके दोनों, मेले निज गृह शृङ्गारी ॥ करे० ५ ॥ प्रभुमाता तूं जगतकी माता, जगदीपक की धरनारी ॥ करे० ६॥ माता तुझ नंदन बहु जीवो, उत्तम जीवके उपकारी ॥करे० ७॥ छप्पन दिक्कुमरी गुण गातीं, वीर वचन के अनुसारी ॥ करे० ८ ॥ आतम आनंद हर्ष धरंती, वल्लभ प्रभु की बलिहारी ॥करे० ९॥

[काव्यं मंत्रश्च पूर्ववत्]

श्रीमते जिनेन्द्राय अक्षतान् यजामहे स्वाहा ॥३॥

॥ जन्मकल्याणके चतुर्थी जलपूजा ॥

॥ दोहा ॥

सोहमपति आसन चल्यो, रची विमान विशाल।
प्रभु जन्मोच्छव करणे, आवंता तत्काल ॥ १ ॥

(पहाडी, चाल–महाराजा कवडीया खोल)

मिल देव देवी परिवार, जिन जन्म ओच्छव करे ॥ अंचली ॥ शक्र सुघोषा घंटा वजावे, देव देवी सब मिल कर आवे। पालक सुर विमान

बनावे, पालक नाम प्रचार॥ जिन० १ ॥ पार्श्व-प्रभु मुख कमलको जोवा, भव भव के निज पातक खोवा। सुर निज निज गण पावन होवा, मुख बोले जयकार ॥ जिन० २॥ सिंहासन बैठा हरि चलिया, देव देवी गणसुँ परिवरिया। नारी मित्र प्रेर्या केई चलिया, केइ निज भाव विचार ॥ जिन० ३ ॥ केइ हुकम केइ भक्ति भावे, सुख्य धरम निज मनमें मनावे। केइक कौतुक जोवा आवे, फल भावों अनुसार ॥ जिन० ४॥ हय कासर हरि नाग निवासा, गरुड छाग चित्रा पर वासा। वाहन नेक विमान आकासा, संकीरण उपचार ॥ जिन० ५ ॥ कोइ बोले वहां बोल करारा, सांकडा भाइ ए पर्व दहारा। इम वरजे केइ ज्ञान विचारा, आनंद मंगलाचार ॥ जिन० ६ ॥ आए बनारस सर्व आनंदे, जिन-वर जननी को हरि वंदे। आतम चिद्घन शिवसुख कंदे, वल्लभ वीर आधार ॥जिन०७॥

॥ दोहा ॥

पांच रूप हरि निज करी, प्रभु ग्रही निज हाथ।
एक रूप छत्तर करे, मस्तक श्री जगनाथ ॥१॥
दो पासे चामर करे, दो रूपे सुरराज।
वज्र लइ आगे चले, सर्व श्रेयके काज ॥ २ ॥

(चाल–तन मन धन बिन फन डस लेगी परनारी नागनी)

तन मन धन सुख संपत करनी प्रभु पूजा है खरी॥
अहो दुखहारी सुखहारी प्रभुकी पूजा है खरी।
मिटे जनममरन का रोग प्रभुकी पूजा है खरी॥१॥
धन धन जग वो नर नार करे प्रभु पूजा जो खरी।
भव भव सुख संपत फल पावे प्रभु पूजा है खरी ॥२॥
हित सुख अरु जोग कहे फल मुगति पूजासे खरी।
भव भवमें साथ चले फल पूजा पूजा है खरी ॥३॥
चउसठ इन्द्र सुरगिरि मिल करते पूजा है खरी।
खीरोदक गंगापाणी निर्मल पूजा है खरी ॥४॥
अठजाति कलशे भरके प्रभु की पूजा है खरी
अभिषेक अढाईसो करते प्रभु पूजा है खरी ॥५॥

आरती मंगल दीवा चंदन से पूजा है खरी।
फूलें पूजे वाजींतर वाजे पूजा है खरी ॥ ६ ॥
अठ मंगल आदि ओच्छव करते पूजा है खरी।
जा माता पासे प्रभु को धरते पूजा है खरी ॥७॥
कुंडल युग वस्त्र दडो गेडी प्रभु पूजा है खरी।
द्वात्रिंशत् कोटो रत्न वरसिया पूज है खरी ॥८॥
प्रभु माता से धरे खेद प्रभु की पूजा है खरी।
तस मस्तक थासे छेद प्रभुजी पूजा है खरी ।९।
अंगुष्ठामृत नंदीसर ओच्छव पूजा है खरी। करे
राजा वधाइ ओच्छव दश दिन पूजा है खरी ।१०।
प्रभु पारस नाम अनुपम वल्लभ पूजा है खरी।
आतम शिवसाधन वीर कहे प्रभु पूजा है खरी।११।

[काव्यं मन्त्रश्च पूर्ववत्]

श्रीमते जिनेंद्राय जलं यजामहे स्वाहा ॥ ४ ॥

॥ जन्मकल्याणके पंचमी चन्दनपूजा ॥

॥ दोहा ॥

अमृत पानसे ऊछरे, श्री श्री पार्श्वकुमार।
अहिलंछन नवकर तनु, वरते अतिशय चार ॥१॥

यौवन वय पामे थके मात पिता धरी नेह ।
परिणावे नृप पुत्रिका प्रभावती गुण गेह ॥ २ ॥
चंदन घसी घनसारसे, निजघर चैत्य विशाल ।
पूजोपगरण मेलके, पूजे जगत दयाल ॥ ३ ॥

(चाल-सनमें ज्ञानवन्त वडवीर)

श्रीश्रीपार्श्वनाथ भगवान। प्रभु हैं सर्व गुणों की खान ॥ श्री० अंचली ॥ एक दिन क्रीडाकर प्रभु पैठे, अपने महलमें सुखसे बैठे, करते नगर तनी पैछान ॥ श्री० १ ॥ देखे लोक नगरके जाते, पूजोपगरण आनंद थाते, लेकर के संगमे खान पान ॥ श्री० २ ॥ पूछा प्रभुने उत्तर मलीया, तापस वंदनको सव चलीया, उठी लोक सवेरे जान ॥ श्री० ३ ॥ योगी कमठ तपस्या धरता, अग्नि पंचकी सेवा करता, मनमें तपसो के अति मान ॥ श्री० ४॥ पासकुमर देखन को जावे, तपसी पास प्रभु चल आवे, देखे तव जिन अवधिज्ञान ॥ श्री० ५ ॥ कहे प्रभु सुन तापस सुखकारण, तेरा जाप योग नहीं

तारण, अग्नि वीच जले अज्ञान ॥ श्री० ६ ॥
कहे सुन राजकुमर तुम जानो, अश्व खिलाना
योग न मानो, योगी का है दूर मकान ।श्री०७।
तुझको किसने योग धराया, केवल कष्ट शरीर
बताया, कीना नहि धर्म ओलखान ॥श्री० ८॥
आतम आनंद लक्ष्मी दाता, धर्म तना प्रभु पारस
ज्ञाता, वल्लभ श्री शुभ वीर वखान ॥ श्री० ९ ॥

॥ दोहा ॥

कमठ कहे धर्मी गुरु, हम नहीं कौडी पास ।
भूल गये दुनिया दशा, करते वनमें वास ॥ १ ॥

(सोरठ—चाल-कुबजाने जादु डारा)

प्रभु पारस मोहनगारा, जिन्हें मोह लिया जग सारा ॥ प्र० अंचली ॥ कहे प्रभु वनवासी पशु पंखी, तुम ऐसे निरधारा । योगी नहीं पिण भोगी कहिए, संगत है संसारा ॥ प्र० १ ॥ जान बुरा संसार कोछोडा, सुन हो राजकुमारा । जोगी जंगल सेवत प्यारे, लेकर धर्म आधारा ॥ प्र० २ ॥ दया धर्म का मूल कहा है, जानत

नाहीं गमारा । जीवदया विन जगमें होवे, तप जप निष्फल सारा ॥ प्र० ३ ॥ वात दयाकी हमको सुनावो, माफ कसूर हमारा । वार वार क्या कहना प्यारे, ऐसा सोच विचारा ॥प्र०४॥ प्रभु हुकमसे काष्ठ सेवकने. फाडके नाग निकारा । सेवक मुख नवकार सुनाके, धरणेन्द्र नागकुमारा ॥ प्र० ५ ॥ राणी साथ वसंत में वनमें, वैठे महल सुखारा । राजीमतिको छोडके संयम लीना नेमकुमारा ॥ प्र० ६ ॥ चित्रामण जिन निरखत भीना, रस वैरागे भारा । लोकांतिक सुर आकर वोले, संजम अवसर थारा ॥ प्र० ७ ॥ मात पिताकी आज्ञा लेकर, वरसीदान दातारा । दीनातम कीने सुखी वल्लभ, वीर वचन हित-कारा ॥ प्र० ८ ॥

[काव्य मन्त्रश्च पूर्ववत्]

श्रीमते जिनेंद्राय चंदनं यजामहे स्वाहा ॥ ५ ॥

॥ दीक्षाकल्याणके षष्ठी धूपपूजा ॥

॥ दोहा ॥

अवसर वरसी दानके, भव्य जीव लिये दान ।
रोग हरे षट मास का, हो तनु सुंदर वान ॥१॥
धूपघटी धरी हाथ में, दीक्षा अवसर जान ।
देव असंख मिला तिहां, मानो संजम ठान ॥२॥

(श्रीराग, चाल—मंगल पूजा सुरतरु कंद)

दीक्षा कल्याण शिव सुख कंद ॥ दी० ॥
अंचली ॥ तीस वरस गृहवासे वसीया सुख भर वामाजीके नंद । संजम रसिया जानके आए, मिलकर सुरगण चउसठ इन्द ॥ दीक्षा० १ ॥ तीर्थोदक वर औषधि लाके, आठ जातिके कलशे भरंद । अश्वसेन नृप आदिसें पीछे, सुरपति जिन अभिषेक करंद ॥ दीक्षा० २ ॥ कल्पवृक्ष सम प्रभु अलंकारी, विशाला शिबिका अभिनंद । सिंहासन बैठे प्रभु सोहे, उडुगणमें सोहे जिम चंद ॥दीक्षा० ३॥ पट शाटक लेइ दक्षिण पासे, बैठी कुल महत्तरिका छंद । वाम पासे अंबधात्री बैठी, यौवना पाछल छत्र धरंद ॥ दीक्षा० ४ ॥

फल लेइ ईशान कून में, अग्नि कूण एक पंखा लहद् । चलत पालखी गीत गावती, साथे सर्व सहेली वृन्द ॥ दीक्षा० ॥ शक्र ईशान इन्द्र करे चामर, वाजिंत्रका नही पार गहंद । अष्ट मंगल चलते प्रभु आगे, इन्द्रध्वजा चले आगे जिनद ॥ दीक्षा० ६ ॥ देव देवी नर नारी झुक झुक, वार वार प्रणाम करंद । आतम अनुभव आनंद मंगल, वल्लभ वीर वचन विकसंद ॥दीक्षा०७॥

॥ दोहा ॥

दीठा जिन जिनराजको, सफल जन्म है तास ।
अनुमोदन कर प्राणिया, सफल मनावे आस ॥१॥

(चाल—आशक तो हो चुका हूं)

दीक्षा प्रभुकी जोवे, जग पुण्यवंत प्रानी ॥ अं० ॥ जय वामाजीके नंदा, कटो जन्म जन्म फंदा । कुलवृद्धा बोले वानी, जग पुण्यवंत प्रानी ॥दी०॥ चकचूर मोह करियो, दालिद्र दूर हरियो । जिम होए वरसी दानी, जग पुण्यवंत प्रानी ॥ दी० २ ॥ पहुंचे वहिर नगरिया, वरघोडे से

उतरिया। आश्रमपद उद्यानी, जग पुण्यवंत प्रानी ॥दी० ३॥ अशोकवृक्ष हेठे, भूषण तजके वैठे। अट्ठम तप मानी, जग पुण्यवंत प्रानी ॥दी० ४॥ महाव्रत चार उच्चरे, वदि पोष मास शुचरे। एकादशी सुहानी, जग पुण्यवंत प्रानी ॥दी०५॥ परिवार शत तीनो, देवदूष्य इन्द्र दीनो। प्रभु होए तुर्य ज्ञानी, जग पुण्यवंत प्रानी ॥दी० ६॥ नंदीसरे सुर जावे, माता पिता घर आवे। काउ-सग निज ध्यानी, जग पुण्यवंत प्रानी ॥दी०७॥ आतम आनंद दाता, पारस प्रभु है त्राता। वल्लभ वीर जानी, जग पुण्यवंत प्रानी ॥ दी० ८ ॥

[काव्यं मंत्रश्च पूर्ववत्]

श्रीमते जिनेन्द्राय धूपं यजामहे स्वाहा ॥ ६ ॥

॥ केवलज्ञानकल्याणके सप्तमी दीपकपूजा ॥

॥ दोहा ॥

धन सारथी घर पारणा, किया प्रथम भगवान।
पांच दिव्य परगट हुए, तास मुक्ति सुखखान ।१।
जगदीपक प्रकटाववा, तप तपता उद्यान।
तिण दीपककी पूजना, करते केवल ज्ञान ॥२॥

(दरबारी कानडा—ताल तीन)

प्रभु पार्श्वनाथ जिनवर का कर दरस फरस मन हरस भयो ॥ प्र० अं० ॥ नीलवर्ण तनु पार्श्व सुहावे, कादंबरी अटवी प्रभु आवे। कुंड सरोवर नाम कहावे, शोभे पदम सुजर का ॥ प्रभु० १ ॥ काउसग मुद्रामें प्रभु ठावे, हाथी तहां एक वनसे आवे। सूंढ भरी जलसे नवरावे, ऐसे नजर कमर का ॥ प्रभु० २ ॥ तीरथ तहां कलिकुंड ही थावे, हाथी गति देवनकी पावे। कौसुंभ वन धरणींद्र आवे, वांदे चरण अजर का ॥ प्रभु० ३ ॥ तीन दिवस फणी छत्र धरावे, अहिछत्रा नगरी को वसावे। तापस घर पीछे प्रभु आवे, स्वामी अजर अमर का ॥ प्रभु० ४ ॥ वडके नीचे ध्यान लगाया, कमठ मरी मेघ माली थाया। देख विभंगे अरि वन आया, लगा पसर तिमर का ॥प्रभु०५॥ वहुजाति उपसर्ग ही दीना, नहीं चलिया प्रभु ध्यानमें लीना। आतम वल्लभ वीर नगीना, पाया विजय समर का ॥प्रभु० ६॥

॥ दोहा ॥

जल भरी बादल बरसिया, गाजे तडित चमकार।
नासाग्रे प्रभु आईया, जल नहीं लागी वार ॥१॥
धरणींद्र तब आईया, लेई प्रियाको साथ।
हरो उपसर्ग पूजे प्रभु, मोक्ष मार्ग के पाथ ॥२॥
तब धूजो निज पापसे, मेघमाली सुर आप।
प्रभु भक्ति समकित लही, धोए अपने पाप ॥३॥

(पीलु-चाल—तोरी सुरतकी जाऊं बलिहारी)

प्रभु सुरत कीजाऊं बलिहारी, केवल कल्याणक छब न्यारी ॥प्र० अंचली ॥ आए काशी उद्याने स्वामी, काउसग मुद्रा ध्यान की धारी, वीर्य अपूरव अति उल्लासे, नाश किये धन घाती चारी ॥प्रभु० १॥ चउरासी दिन छद्मस्थ रहिया चैत्र वदि तिथि चौथ ही सारी। अट्ठम तप तरु धातकी नीचे, केवलज्ञान भयो उजयारी ॥प्र० २॥ मिल सुर चउसठ इन्द्रे कीनी, समवसरण रचना मनोहारी। सिंहासन पारस प्रभु सोहे, करे नाटक सुर आनंद भारी ॥प्र० ३॥ त्रौं

त्रौं त्रिक त्रिक वीणा वाजे, धौं धौं धप मप धुन ढक्कारी। दगडदउं दगडदउं दुंदुभि गाजे, ता थेइ ता थेइ जय जयकारी ॥प्र० ४। चौतीस अतिशय पैंतीस वाणी, प्रकटे अरिहंत के गुण वारी। स्याद्वाद उपदेश करीने, संघ तीर्थ थापे जिन चारी ॥प्र० ५॥ वनपाल ने भूपाल वधाई, दान देई नृप आवे शृंगारी। मात पिता प्रभावतीराणी, जिन वाणी सुन हुए अनगारी ॥प्र० ६॥ संघ गणि पद ज्ञान महोत्सव, देव करे मिल चार प्रकारी। आतम आनंद निज गुण दाता, वल्लभ वीर वचन हितकारी ॥प्र० ७॥

[काव्य मंत्रश्च पूर्ववत्]

श्रीमते जिनेंद्राय दीपकं यजामहे स्वाहा ॥७॥

॥ निर्वाणकल्याणके अष्टमी नैवेद्यपूजा ॥

॥ दोहा ॥

शुभ आदि दश गणधरा, साधु सोल हजार।
सहस आठ तीस साधवी, चार महाव्रत धार।१।

एक लाख चौसठ हजार, श्रावकका परिवार ।
सहस सत्तावीस श्राविका, तिग लख ऊपरधार ।२।
देशविरतिधर ए सहू, पूजे जिन तिग काल ।
प्रभु प्रतिमा आगल धरे, नित नैवेद्यका थाल ।३।

जयजयवन्ती

पार्श्वप्रभु का दर्श सुहंदा, प्रभु दर्शन से होत आनंदा ॥पा० अंचली॥ वेधक वेधकता को जाने, और नहीं तस स्वाद लहंदा । तिस प्रभु दर्शन का फल जाने दर्शक भवी नहीं अभवी गहंदा ॥ पा० १ ॥ पर उपकारी जग हितकारी, जिनवर केवलज्ञान दिनंदा । विचरंता परिवार सहित प्रभु कनक कमल पर पाय ठवंदा ॥पा०॥ २॥ सुर जल बुंद कुसुम वरसावे, चामर सिर पर छत्र धरंदा । तरु मारगमें जातां नमता, तारण भवि उपदेश करंदा ॥ पा० ॥ ३ ॥ पैंतीस गुण वाणी प्रभुधारी, नर नारी सुर अपछर वृन्दा । प्रभु आगल नाटक करे सुंदर, अवनीतल पावन जिनचंदा ॥पा०४॥

आये कारण अंत चउमासा, तीर्थ शिखर सम्मेद गिरिंदा। श्रावण सुदि आठम करी अनसन, एक मास संग तेती मुनींदा ॥ पा० ॥ ५ ॥ काउसग मुद्रा शिव सुख पाये, सादि अनंत अज अचर जिनंदा। आतम आनंद चिदघन राशि, वल्लभ वीर वचन सुखकंदा ॥ पा० ॥६॥

॥ दोहा ॥

समय कहे दृष्टांत चउ. कर्म रहित अशरीर।
एक समय सम श्रेणिसे, ऊर्ध्वगति घन थीर ॥१॥

(जंगलो—ठुमरी चाल—मन मोहा जगल्की हरणी ने)

भवि नंदो पार्श्व शिव वरणी ने। भवि०॥ अंचलि ॥ पार्श्व प्रभु निर्वाण को जानी, सुरपति सब आए धरणी ने ॥ भ० ॥१॥ क्षीरोदधि आदि सब जल से, स्नान विलेपन करणी ने ॥भ० ॥२॥ भूषण वसन शरीरे धारी, शोभा करे मन हरणी ने ॥ भ० ॥३॥ चंदन चयमें सुर परजाले, भक्ति शोक विचरणी ने ॥ भ० ॥ ४ ॥ थूभ करे ते ऊपर सुंदर, जिन शासन अनुसरणी ने ॥ भ०

॥ ५ ॥ दाढां लई दीवाली सुर करी, अस्त हुए भाव तरणि ने ॥ भ० ॥ ६ ॥ नंदीसर निर्वाण महोच्छव, करी गए सुर निज घरणी ने ॥ भ० ॥७॥ वल्लभ अन्तर वीर अढी सौ, आतम शिव वधू परणी ने ॥ भ० ॥ ८ ॥

(हरिगीत छंद)

इस पांच कल्याणक तणी पूजा प्रभु पारसतणी,
शत वर्ष जीवी सुख अक्षय पामे निःकर्मा बनी।
प्रभुपाद सेवा मुक्ति लेवा पूजा निज शक्ति भणी।
वंछित मन फल आस पूरे पास श्रीचिंतामणि ॥१

[काव्यं मंत्रश्च पूर्ववत्]

श्रीमते जिनेंद्राय नैवेद्यं यजामहे स्वाहा ॥८॥

॥ कलश ॥

धन दिन आज कल्याणक गाया ॥ ध० ॥ अंचली० ॥ पार्श्वनाथ जग अंतरजामी, पुरिसा, दानी कहाया। पांचकल्याणक ओच्छव करते, घर घर मंगल भाया ॥ ध० ॥ १ ॥ तपगच्छ गगनमें तरणि सोहे, विजयानंदसूरि राया। लक्ष्मीविजय

तस हर्षविजय तस. शिष्य वल्लभ लघु थाया ॥ ध० ॥२॥ संवत वीर चौवीसौ तेतीस, आत्म एकादश भाया। विक्रम उन्नीसो त्रेसठमें, महीना माघ सुहाया ॥ध० । ।३ ॥ विजयकमलसूरीश्वर राजे, वीरविजय उवज्झाया। कांतिविजय प्रवर्तक दीपे, नमु नित्य तिनके पाया ॥ध० ॥४॥ आत्मानन्दी जैनसभाकी, प्रेरणा हर्ष सवाया। शक्ति नहीं पिण भक्ति तणे वस, जीरा नगर गुण गाया ॥ ध० ॥५॥ श्री शुभवीर वचन अनुसारे, पांचकल्याणक गाया। भूल चूक मिच्छामि दुक्कड, वल्लभ सीस नमाया ॥ ध० ॥ ६ ॥

श्री विजयवल्लभसूरि विरचिता ।

श्री चारित्र (ब्रह्मचर्यव्रत) पूजा

॥ दोहा ॥

जगवल्लभ पारस प्रभु, प्रणमी सद्गुरु पाय ।
नमन करी पूजा रचूं, सिमरी सारद माय ॥१॥
पूजा श्री ब्रह्मचर्यकी, ब्रह्मस्वरूप निदान ।
प्रेरक मंगल दास है, पूजा मंगल खान ॥२॥
मूल गुणोंमें है वडो, गुण ब्रह्मचर्य प्रधान ।
शुभ भावे पालन करे, होवे कोटि कल्यान ॥३॥
सम्यग दर्शन ज्ञान है, सम्यग चरण उदार ।
तीनों क्षायिक भावसे, करते भवजल पार ॥४॥
पूजा दर्शन ज्ञानकी, कीनी विन विस्तार ।
तिम संक्षेपे कीजिये, पूजा चरण विचार ॥५॥
गुणिसे गुण नहि भिन्न है, तिन पूजा गुणवान ।
गुणि पूजा गुण देत है, पूर्ण गुणी भगवान ॥६॥
पूजा पूजा जानिये, अष्ट द्रव्य विस्तार ।
यथाशक्ति पूजा करे, भावे भवि नरनार ॥७॥

(सारग—कहरवा)

(हमे दम देके सोतन घर जाना । यह चाल)

चारित्र आतम शिव सुख दाना । अ० । जिन शासनमें सार चरण है । पांच भेद तस मूल वखाना ॥ चारित्र० ॥१॥ सामायिक छेदोपस्थापनी । परिहार विशुद्धि जिन फरमाना ॥चारित्र० ॥२॥ चौथा सूक्ष्मसंपराय कहिये । यथाख्यात जस फल निरवाना । चारित्र० ॥३॥ मुख्य भेद सामायिक सबमें । बिन सामायिक चरण न माना ॥ चारित्र० ॥४॥ समकित श्रुत अरु देश विरति है। सर्व विरति सामायिक गाना ॥चारित्र० ॥५॥ समकित दर्शन ज्ञान कहा श्रुत । देशविरत श्रावक व्रत माना ॥चारित्र० ॥ ६ ॥ आतम लक्ष्मी हर्ष अनुपम । वल्लभ सर्वविरति फल पाना ॥ चारित्र० ॥ ७ ॥

॥ दोहा ॥

सर्व विरति मुनि धर्म है, भाषे त्रिभुवन भूप ।
त्रिविध त्रिविधसे जानिये, पंच महाव्रत रूप ॥१॥

प्रथम अहिंसा दूसरा, झूठ बोलना त्याग ।
त्याग अदत्तादानका, मैथुन चौथे त्याग ॥२॥
त्याग परिग्रह पंचमे, ये हैं सब गुण मूल ।
चरण करण अनुयोगसे, जिनवर वचन अमूल ॥३॥
लोकसार जिन धर्म है, धर्म सार शुभ नाण ।
ज्ञानसार संयम कहा, संयमसे निर्वाण ॥४॥
संयम सतरां भेदसे, दश यति धर्म पुनीत ।
सबमें आदर शीलको, श्रीजिन शासन रीत ॥५॥

(चाल—गिरिवर दर्शन विरला पावे)

चारित्र उत्तम जिन फरमावे ॥ अंचली ॥

ज्ञानवान पिण चरण विहीना । पंगू सम नहीं इष्टको पावे ॥चारित्र० ॥१॥ चय सो अष्ट करमको संचय । खाली करना रिक्त कहावे ॥ चारित्र० ॥ ॥२॥ चारित्र नाम निरुक्तें भाष्यो । चरणानंतर मोक्ष सधावे ॥चारित्र० ॥३॥ पुद्गलरूप रमणता त्यागी । रमण स्वरूपे चरण बनावे ॥चारित्र०॥४॥ आतम लक्ष्मी चरण प्रतापे । हर्ष धरी वल्लभ गुण गावे ॥ चारित्र० ॥ ५ ॥

॥ काव्य ॥

शीलं प्राणभृतां कुलोदयकरं शीलं वपुर्भूषणं,
शीलं शौचकरं विपद्भयहरं दौर्गत्यदुःखापहम् ।
शीलं दुर्भगतादिकन्ददहनं चिन्तामणिः प्रार्थिते,
व्याघ्रव्यालजलानलादिशमनं स्वर्गापवर्गप्रदम् ।१।

[मंत्रः] ॐ ह्रीँ श्रीँ परमपुरुषाय परमेश्वराय जन्मजरामृत्युनिवारणाय श्रीमते चारित्रिणे ब्रह्मचर्यगुणयुताय देवाधिदेवाय श्रीजिनेंद्राय जलादिकं यजामहे स्वाहा ॥१॥

॥ पूजा दूसरी ॥

॥ दोहा ॥

पांच महाव्रत साथमें, निशि भोजन परिहार ।
व्रत षट मन वच कायसे, पाले श्री अनगार ॥१॥
ना मिल वरतन पापको, सदाचार सहयोग ।
सो चारित्र सदा जयो, आतम निजगुण भोग ॥२॥
चरना चारित्र मानिये, विध विध कर्म समाज ।
इहभव परभवके किये, संचय अपचय काज ॥३॥

सेवित थानक, सेवे नहीं अनगार, सोलवें उत्तरा-ध्ययन सूत्रमें ब्रह्मसमाधि विचार ॥भ० २॥ जिम कुर्कट सूषक अरु सोरा मार्जारी संगकार । सहे दुःख तिम व्रतधारी संग, नारी होत खुवार ॥भ० ३ ॥ सिंहगुफा वासी मुनि कोशा, वेश्याके दरबार । तुरत गिरा गया देश नेपाले, दीना निज व्रतहार ॥भ०४॥ अज्ञानी पशु केलि निरखत, होवे चित विकार । लखमण जिम साधवी वस मोहे, बहुत रुली संसार ॥ भ० ५ ॥ पंडक चंचल चित्त कहावे, वेद नपुंसक धार। चेष्टा विधविध देख है संभव, होवे तुच्छ विचार ॥भ० ६ ॥ वाड प्रथम परकासी प्रभुने, जगजीवन हितकार । आतम लक्ष्मी प्रभुको पूजी, वल्लभ हर्ष अपार ॥भ०॥७॥

[काव्यं मंत्रश्च पूर्ववत्]

॥ पूजा तीसरी ॥

॥ दोहा ॥

पंचाश्रवको त्यागके, कर निज संवर रूप ।
निज आतम गुण संपदा, होवे आतम भूप ॥१॥

वो ऋषि वो मुनि संयमी, वो साधु अनगार ।
भिक्षु ब्राह्मण वो सही, पाले ब्रह्म उदार ॥२॥
जिन वचनामृत पानसे अजरामर पद धार ।
भव्य जीव इस कारणे, पूजे जिनवर सार ॥३॥
दीनदयाल जिनेश्वरु, करुणा रस भंडार ।
जगजीवन करुणा करो, भाख्यो यह आचार ॥४॥
रक्षा खातिर ब्रह्मकी, दूजो वाड विचार ।
स्त्री संबंधी टारिये, विकथा चार प्रकार ॥५॥

माढ–(मोरे गमका तराना)

जिनवर ब्रह्मचारी-आनंदकारी-भवजल तारन-हार । प्रभु जगहितकारी–अति उपकारी–जाउं बलिहारी, भवजल तारनहार ॥अं०॥ स्त्री पर्षद् में बैठकेरे, धर्म कथा परिहार । नारी कथा फुन कामकीरे, दीजे शुद्ध मन टार ॥ प्रभु० ॥ १ ॥ जाति रूप कुल देशकीरे, नारी वात विसार । मोह वधे स्थिर नाही रहेरे, तुच्छमति अनगार ॥प्रभु० २॥ चंद्रवदन मृगलोचनारे, वेणी भुजंग प्रकार । दीपशिखा जिम नाशिकारे, रंग अधर

बिंबसार ॥ प्रभु० ३ ॥ वाणी कोयल सारखीरे, कुच कुंभ वारण धार । हंसगमन कृश हरि कटीरे कर युग कमल उदार ॥प्र० ४॥ रूप रमणी इम दाखवेरे, विषय धरी मन रंग । मुग्ध लोकको रीझवेरे, वाधे अंग अनंग ॥ प्र० ५ ॥ आतम लक्ष्मी नाशिनीरे, नारी कथा शृङ्गार । त्यागो भवि जिन उपदिशेरे, होवे हर्ष अपार ॥प्रभु०६॥

॥ दोहा ॥

अपवित्र मलकोठरी, कलह कदाग्रह ठाम ।
ग्यारां स्रोत वहें सदा, चर्महृति जस नाम ॥१॥
देह उदारिक कारमो, क्षणमें भंगुर होय ।
सप्त धातु रोगाकुली, सार नहीं कुछ जोय ॥२॥
चक्री चौथा जानिये, देखन सुरवर आय ।
वोभी क्षणमें क्षतहुओ, रूप न नित्य कहाय ॥३॥
नारीकथा विकथा कही, जिनवर तीजे अंग ।
सप्तम अंगे सूचना, दंड अनर्थ प्रसंग ॥४॥
धन्य जिनेश्वर देवको, वीतराग भगवंत ।
उपकारी विन कारणे, जग उपदेश करंत ॥५॥

(बरवा—कहरवा, चाल—धन धन वो जगमें नरनार)

धन धन वीर जिनंद भगवान भविभवपार लगाने वाले ॥ अं० ॥पंचम देवाधिदेव. करे सुर सुरपति जस सेव । फल पुण्य अपूरव लेव, परमपद् अन्तिम पानेवाले ॥ धन १ ॥ भाखे हित भवि नरनार, व्रतमें ब्रह्म जिम शशी तार । आद्रसे मनमें धार, करो सेवन शिव जानेवाले ॥ ॥ धन० २ ॥ नरनार विषयकीवात, करे आतम व्रतकी घात । जिम वात तरुवर पात. तजो हृदि ज्ञान धरानेवाले ॥ धन० ३ ॥ जिम नींबु खटाई नाम, मुख छूटे जल अविराम । चित विणसे छोरो काम, वचन जिनवरके गानेवाले ॥ धन० ॥४॥ आतम लक्ष्मी महाराज, शुद्धालंबन जिनराज । वल्लभ हर्षे शुद्ध काज, काज प्रभु गिरतेको बचानेवाले ॥ धन० ५ ॥

[काव्यं मंत्रश्च पूर्ववत]

॥ पूजा चौथी ॥

॥ दोहा ॥

तप सयम और ब्रह्मका, मैथुन नाश करंत ।
निशदिन शंकित मन रहे, करे कुशलका अत ॥१॥

ध्यानी मौनी वल्कली, मुंड तपस्वी जान ।
ब्रह्मा भी ब्रह्महीन हो, तनिक न पावे मान ॥२॥
पढा गुना जाना सभी, सफल कहावे तास ।
अनुचित करणी करनकी, कभी करे नहिआस ॥३॥
ब्रह्मचर्यने जगत में, अतिशय पुण्य प्रभाव ।
व्रत में गुरु पदवी लही, साधी आतम स्वभाव ॥४॥
सर्व पापके तुल्य है, मदिरा मांसाहार ।
चार वेदके तुल्य है, ब्रह्मचर्य जग सार ॥५॥

(चाल–सोहनी–सिद्धाचल तीरथ जानाजी)

भविब्रह्मचर्य गुणगानाजी । गानाजी सुख पानाजी ॥भवि० अंचली ॥ वाड तीसरी जिनवर भाखी । एक आसन नहीं ठानाजी ॥१॥ जिम पावक लोहेको गाले । तिम स्त्री संग पिछानाजी ॥२॥ जिस आसन बैठी हो नारी । काल घडी दो मानाजी ॥३॥ योगी यति ब्रह्मचारी न बैठे । उस आसन जिन आनाजी ॥ ४ ॥ आसन भेद अनेक प्रकारे । दशमे अंग फरमानाजी ॥ ५ ॥ आतम लक्ष्मीब्रह्मस्वरूपी, वल्लभ हर्ष अमानाजी॥६

॥ दोहा ॥

श्रमणधर्म[१०] व्रत[५] संयमा[१७], वेयावच्च[१०] मिलाय ।
ज्ञान[३] गुप्ति[९] तप[१२] मूल हैं, निग्रह चार कसाय॥१॥
पिंडविसोही[४] भावना[१२], समिई[५] इंद्रिय[५] रोध ।
प्रतिमा[१२] गुप्ति[३] अभिग्रहा[४], पडिलेहण[२५] गुण बोध
चरण करण गुण ए सही, एकसय अरु चालीस ।
सबमें उत्तम दाखियो, ब्रह्मचर्य जगदीश ॥३॥
सेवे मैथुन होयके, दीक्षित जो नर नार ।
विष्ठाका कीडा बने, हायन साठ हजार ॥४॥
इत्यादि ब्रह्मचर्यको, जैनेतर भी मान ।
देते हैं निज शास्त्रमें, जानो चतुर सुजान ॥५॥

(चाल–न छेरो गारी दू गीरे भरनेदो मोहे नीर)

बैठे नहीं आसन नारीके, ब्रह्मचारी धीर वीर ॥ अंचली० ॥ प्रभु वीर जिनंद फरमाया, पाले ब्रह्म मन वच काया । होवे उत्तम तस आयारे ॥ ब्रह्मचारी धीर वीर ॥ बै० ॥ १ ॥ संसर्गज दोष कहावे, अनुभवमें सबके आवे । वैज्ञानिक भी इम गावेरे ॥ ब्रह्मचारी धीर वीर ॥बै० ॥२॥ इम बैठे

आसंग थावे, आसंगे तन फरसावे । फरसे तस रस ललचावेरे ॥ ब्रह्मचारी धीर वीर ॥ वै० ॥३॥ संभूत मुनि चित्त दीनो, फरसे तप निष्फल कीनो । चक्रीपद मांगके लीनोरे॥ब्रह्मचारी धीर वीर वै० ॥४॥ भ्राता चित्रे समझायो, चारित्र उदय नहीं आयो । दुख सातमी नरके पायोरे ॥ ब्रह्मचारी धीर वीर ॥वै० ॥५॥ आतम लक्ष्मी हित खानी, पूजा प्रभु वीर बखानी । वल्लभ हर्षें मन मानीरे ब्रह्मचारी धीर वीर ॥ वै० ॥ ६ ॥

[काव्यं मंत्रश्च पूर्ववत्]

॥ पांचमी पूजा ॥

॥ दोहा ॥

भगवती वीर बखानियो, मैथुन पाप सरूप ।
जानी ब्रह्मचारी रहें, पावे आतम रूप ॥१॥
नरनारी संयोगमें, गर्भज नव लख जान ।
जीव समूर्च्छिम ऊपजे, संख्या नहि तस मान ॥२॥
दो पण इंद्रिय जीवकी, हिंसा अपरंपार ।
तंदुल वैचारिक सुनी, ब्रह्मचर्य भवि धार ॥३॥

धन धन जिनवर देवको, धन गौतम गणधार ।
दीनो रक्षण ब्रह्मको, जग जीवन हितकार ॥४॥
पूजन ब्रह्मचारी प्रभु, ब्रह्मचर्यके हेत ।
गुणि पूजन गुण पूजना, होवे निश्चय लेत ॥५॥

राग--कल्याण [चाल--नाचत सुर इंद]

पूजत सुर इंद विंद मंगल ब्रह्मचारी, पूजत सुर इंद विंद अ० ॥ ब्रह्मचर्य शुद्ध जेह, परम पूत तास देह। देवसेव करत नेह, जय जय ब्रह्मचारी ॥पूजत०॥१॥ ब्रह्मचर्य सेत हेत, खेत न नार नयन देत। काम राग कर संकेत, परिहर नर नारी ॥पूजत०॥२॥ लिखित चित्रकार नार, नगन या श्रृङ्गार सार। करत त्याग नजर धार, ऋषि मुनि अनगारी॥पूजत०॥३॥ नारी रूप रुप्पो राय, नारी वेद आप पाय। भाव लाख भव भमाय, त्याग तुरीय वारी ॥ पूजत० ॥४॥ आनम लक्ष्मी नाथ माथ, नमत करत सेव हाथ। वल्लभ हर्ष धरत साथ, पग पर ब्रह्मचारी ॥ ५ ॥

॥ दोहा ॥

चौथी वाड कही प्रभु, नयन विकासी रूप ।
रमणीको देखे नहीं, मुनि गुण आतम भूप॥१॥
निरखत दिनकर सामने, नयन घटे जिस तेज ।
तिम तरुणी देखत घटे, शील न लागे जेज॥२॥
हसित भणित चेष्टित गति,क्रीडित गीत विलास
ईक्षित वादित आकृति, यौवन वर्ण विकास॥३॥
अधर पयोधर देहके, अन्य गुह्य अवकाश ।
वसन विभूषा रागसे, देखत शील विनाश॥४॥
इस कारण हित कारणे, वार वार उपदेश ।
नारी दर्शन त्यागना, चौथी वाड जिनेश ॥५॥

[चाल—केसरिया थांसु प्रीत करीरे]

ब्रह्मचारी जिनवर पूजाकरेरे भवि भावसे॥ अंचलो०॥ चौथी वाड कहे प्रभुरे, श्रीजिन दीन-दयाल । मनहर दर्शन नारीकोरे, मन वच काया टालरे॥ब्रह्म०॥१॥दीपक नारी रूपमेंरे,कामी पुरुष पतंग । झिपलावे सुख कारणेरे, जल जावे निज अंगरे॥ब्रह्म०॥२॥मनगमता रमतां हियेरे,उर कुच

वदन सुरंग । नहर अहर भोगी डस्योरे, देखतां व्रत भंगरे ॥ ब्रह्म० ॥३॥ कामणगारी कामिनीरे, जीता सकल संसार। आंख अणी नहींको रेह्योरे। सुर नर सब गये हाररे॥ब्रह्म०॥४॥हाथ पांव छेदे हुएरे कान नाक भी जेह । बूढी सौ वरसां तणीरे, ब्रह्मचारी तजे तेहरे ॥ब्रह्म०॥५॥ रुपे रंभा सारी-खोरे, मीठा बोलो नार । तो किम देखे एहवीरे भर जोवन व्रतधाररे ॥ब्रह्म०॥६॥ देखकर अबला इंद्रिकोरे, वस होवे मन प्रेम । राजीमती देखी करीरे, तुरत डिग्यो रहनेमरे ॥ ब्रह्म० ॥७॥ आ-तम लक्ष्मी कारणेरे, चेते चतुर सुजान । नारी खारी परिहरेरे,वल्लभ हर्ष अमानरे ॥ब्रह्म०॥८॥

[काव्य मंत्रश्च पूर्ववत]

॥ छट्ठी पूजा ॥

॥ दोहा ॥

व्रत पट पालक साधुजी, पट काया रखवाल ।
भेद अठारां त्यागते, अब्रह्म दीन दयाल ॥१॥
औदारिक वैक्रिय कहा, मन वच काय प्रकार ।
कृत कारित अनुमोदना, अब्रह्म भेद अठार॥२॥

रागी दुखिया नित्य है, नित्य सुखी नीराग ।
वीतराग सम जानिये; ब्रह्मचारी नीराग ॥ ३ ॥

उत्तम गुण ब्रह्मचर्यकी, रक्षा कारण खास ।
थानक मुनि सेवे नहीं, कामोद्दीपक पास ॥४॥

उपकारी अरिहंतकी, पूजा का विस्तार ।
रायपसेणी सूत्रमें, शिव सुख फल दातार ॥५॥

[ठुमरी—पंजाबी ठेको । रागिणी सरपरदा]

[चाल—गोपाल मेरी करुणा क्यों नहीं आवे]

जिनंदा मोरा मुखसे यूं फरमावे ॥अंच०॥
मुनि कुटच्यन्तर वसना त्यागेरे, पंचमी वाड कहावे ॥१॥ क्रीडा करती कामिनी रागेरे, स्वर सुननेमें आवे ॥२॥ हाव भाव हाँसि स्त्री रोनारे, यहभी संभव थावे ॥३॥ शील रत्न को लांछन लागेरे,मनमें मन्मथ भावे॥४॥जिम भाजनमें अग्नि पासेरे,लाख मोम ढल जावे ॥५॥ इस कारण साधु ब्रह्मचारीरे, ऐसे स्थान न ठावे ॥ ६ ॥ आतम लक्ष्मी ब्रह्म प्रभावेरे, वल्लभ हर्ष मनावे ॥७॥

॥ दोहा ॥

द्रव्य क्षेत्र अरु कालसे, भाव भेद इम चार ।
व्रत षट मन वच कायसे, आराधे अनगार ॥१॥
धरम सुकल दो ध्यानके, अधिकारी ऋषिराज ।
तप कर काया सोसवे, काटे कर्म समाज ॥२॥
परिषह दो अरु वीसको, जीत कहे उपसर्ग ।
सोलां पिण विन ब्रह्मके, पावे नहि अपवर्ग ॥३॥
रक्षण निजगुण ब्रह्मका, सब किरियाका मूल ।
योगी ब्रह्म प्रतापसे, पावे भवजल कूल ॥४॥
पंचम वाड कही प्रभु, ब्रह्मचारीके हेत ।
संजोगी नर नारके, निकट रहे न निकेत ॥५॥

[चाल-चिंतामणि स्वामीरे]

ब्रह्मचर्य धारीरे, जग उपकारी रे, भावे भवि सेविये होजी । ब्रह्मचारीकी सेवा शिव सुख देत, सेवा करके सेवक शिव सुख लेत । ब्रह्मचर्य धारीरे, जग उपकारीरे, भावे भवि सेविये होजी ॥ अंचली० ॥ संयोगी पासे रहे, ब्रह्मचारी निस दीस । कुशल न उसके ब्रह्मको, टूटे विसवा वीस ।

ठहरे नहीं मुनिजन ऐसे थान ॥ ब्रह्म० ॥ १ ॥
निकट ही भीतके अंतरे, नारी रहे जहां रात।
केलि करे निज कंतसे, विरह मरोडे गात। विरहा-
कुल हो हीन दीन वदे वान ॥ ब्रह्म० ॥ २ ॥
कोयल जिम टहुका करे, गावे मीठे साद। मद-
माती राती अति, सुरत करत उन्माद। कामा-
वेशे हस हस करत गुमान ॥ ब्रह्म० ॥३॥ मोरा
नाचे भूतले, गगन सुनी गरजार। मन नाचे
ब्रह्मचारीका, शब्द सुनी शृंगार। त्यागे साधु रस-
शृंगार पिछान ॥ब्रह्म० ॥४॥ पांचमी वाड आरा-
धिये, ब्रह्मचर्य व्रत धार। आतम लक्ष्मी पामिये,
वल्लभ हर्ष अपार। समझो ऐसे भाखे श्रीभग-
वान ॥ ब्रह्म० ॥ ५ ॥

[काव्यं मंत्रश्च पूर्ववत्]

॥ सातमी पूजा ॥

॥ दोहा ॥

ब्रह्मचर्य दो भेद हैं, सर्व देशसे जास।
जिन गणधर वर्णन करे, आतम रूप विकास॥१॥

सर्व ब्रह्म अनगारको, देश गृही अधिकार।
मुख्य गौणके भेदसे, लौकिकमे परचार ॥ २ ॥
पर परिणतिका त्यागना, निश्चय ब्रह्म कहाय।
नर नारीके मिथुनका, नय व्यवहार गिनाय॥३॥
निश्चय सिद्धिके लिये,आवश्यक व्यवहार।
व्यवहारे नव वाड है, नरनारी हितकार ॥ ४ ॥
आत्मवली नहि कैद है तस नहि वाड विचार।
स्थूलभद्र जंबू मुनि, विजय सेठ अधिकार ॥५॥

(मालकोश-त्रिताल)

प्रभु वीतराग उपदेश सार. सुन संघ चतुर-विध हृदय धार ॥ प्र० अ० ॥ दोष अविरतिपन जो कीने, कामविषय बहुविध चित्त दीने। ब्रह्म-चारी दे उसे विसार॥ प्रभु वीतराग०॥१॥मणि-धर जिम कञ्चुक को उतारी इच्छे नहीं फिर दूसरी वारी ॥ तिम मुनि मनसे भोग छार ॥ प्रभु वीत-राग० ॥ २ ॥ नाम अगंधन कुलका कहावे, पीवे न वमन किया जलजावे। मुनि ऐसे मन लेवे धार॥ ॥ प्रभु वीतराग० ॥ ३ ॥ पूरव क्रीडित मन नवि

लावे, ज्ञान ध्यान मन भावना भावे। उत्तम ब्रह्मचारी आचार ॥ प्रभु वीतराग० ॥४॥ आतम लक्ष्मी संपद् पावे,वल्लभ मनमें अति हर्षावे। छट्ठी शुद्ध मन पार वार ॥ प्रभु वीतराग० ॥ ५ ॥

॥ दोहा ॥

ब्रह्म नाम है ज्ञानका, ब्रह्म नाम है जीव।
सदाचार ब्रह्म नाम है, रक्षा वीर्य सदीव ॥१॥
जिस लोकोत्तर शास्त्रमें, ब्रह्मचर्य परधान।
तिम लौकिकमें जानिये, सर्व गुणोंकी खान॥२॥
ब्रह्मचर्य तपसे मिले, मोक्ष परमपद् धाम।
चतुराश्रममें मुख्य है, ब्रह्मचर्य का नाम ॥३॥
तत्त्वारथमें ब्रह्मको, गुरुकुलवास वखाण।
आशय सबका एक है, निज आतम कल्याण॥४॥
आतम निजगुण पूजना, पूजा श्री भगवान।
तिण कारण पूजा प्रभु, कीजे विविध भगवान ॥५॥

राग–वसंत (चाल–होइ आनंद बहाररे)

ब्रह्मचारी भगवानरे, भवि सेवो हृदयसे ॥अंचली॥भर यौवन रामा घरेरे, धनकाभी नहीं

मानरे॥भवि०॥१॥ श्वसुर पक्ष पितृगृहेरे, मिलता था वहुमानरे ॥भवि०॥२॥ हाव भाव शृङ्गारमेरे, रहते थे गलतानरे ॥भवि०॥३॥ इत्यादि स्मृति गोचरेरे,हानि ब्रह्मनिधानरे॥भवि॥४॥ जिनरक्षित जिनपालकारे, ज्ञाता सूत्र वखानरे ॥भवि०॥५॥ विराधक होवे दुखीरे, जिनरक्षितके समानरे ॥ भवि०॥६॥ इसकारण दिल धारियेरे, छट्ठी वाड प्रमानरे ॥ भवि०॥७॥ आतम लक्ष्मी पामियेरे, वल्लभ हर्ष अमानरे ॥ भवि० ॥ ८ ॥

[काव्य मन्त्रश्च पूर्ववत्]

॥ आठमी पूजा ॥

॥ दोहा ॥

ब्रह्मचर्य रक्षा करे, मर्यादित नरनार ।
चाहे हो अनगार हो, चाहे हो सागार ॥ १ ॥
मुख्य धर्म अनगारका, पाले पूरण वार ।
आदरसे गृही पालते, शक्तिके अनुसार ॥ २ ॥
वाल वृद्ध विधवा लगन, मर्यादासे वहार।
उत्तम नर नारी नहीं, देवें जग सतकार ॥ ३ ॥

लक्ष समय सिद्धांतमें, यौवन वय परमान ।
देहातम अरु ब्रह्मकी, रक्षा कारण जान ॥ ४ ॥
सातमी वाड कही प्रभु, ब्रह्मचारीके हेत ।
भोजन सरस न कीजिये,जानी काम निकेत॥५॥

(दरबारी कानडा)

और न देवाजी और न देवा, श्रीजिनवरकी करो भवि सेवा । और न देवाजी और न देवा ॥अं०॥सेवा प्रभुकी शुभ मन कीजे, जनम जनम का लाहा लीजे। ब्रह्मचारी प्रभु आप कहावे, रक्षा ब्रह्मचारीकी बतावे ॥ और० ॥१॥ पुष्टिकारक आहार न खावे,विगय अधिकमें मन न लगावे। गलत स्नेह बिंदु मुनि राया, त्यागे भोजन मन वच काया ॥ और० २ ॥ रसना वस जो सरस आहारी, चउगति दुख पावे वो भारी । दूध दही पकवानको चावे, पापश्रमण जिन आगम गावे ॥ और० ॥ मादक आहारसे मन्मथ जागे, इस कारण ब्रह्मचारी त्यागे । रसनाजोपक गृही अनगारी, नमन करत जगमें नरनारी ॥ और० ४ ॥

नीरस भोजनसे तनु पोषे, धर्म साधन मानो संतोषे। आतम लक्ष्मी प्रभु ब्रह्मचारी. वल्लभ हर्ष नमे सय वारी ॥ और० ॥

॥ दोहा ॥

त्यागी नर परनारका, त्यागे परनर नार।
संतोषी निज निज प्रति. ब्रह्मचारी सागार ॥१॥
पर्व तिथि व्रत पालते, नरनारी महाभाग।
उनको भी नव वाडका. होता है अनुराग ॥२॥
व्रत-रक्षाके कारणे, मादक सरस आहार।
न करें भावें भावना, धन साधु अनगार ॥३॥
आतम वल निर्बल करे. उदय करमका जोर।
ज्ञानी जन निर्लेप हो. पावे शिवपुर ठोर ॥४॥
वाड कही जिन सातमी, आतम निर्मल काज।
तिण उपकारी जगतके, पूजे भवि जिनराज॥५॥

राग—मोहनी [चाल—ढूंढ फिरा जग सारा]

तीर्थंकर हितकारी, ब्रह्मचारी, भविजन कीजे अर्चना ॥ तीर्थं० अं० ॥ त्यागो रसना जिन फरमावे. रसना वस जग अति दुःख पावे। जावे नर भव हारी. ब्रह्मचारी, भविजन कीजे अर्चना

॥ ती० १ ॥ रसना स्वादे धनको लुटावे, खातिर नाकके पापी थावे। होवे खाना खुवारी, ब्रह्मचारी, भविजन कीजे अर्चना ॥ती० २॥ सरस रसोई चक्री स्वादे, ब्राह्मण दुखियो हुओ बकवादे। पायो विटम्बना भारी, ब्रह्मचारी, भविजन कीजे अर्चना ॥ती० ३॥ रसना लंपट मंगु आचारज, शिथिल हुओ छोरी मुनि कारज। गयो दुर्गति गुण हारी, ब्रह्मचारी, भविजन कीजे अर्चना ॥ ती० ४ ॥ सेलकसूरि सुत राजधानी, चारित्र चूकी हुओ मदपानी। रसवती सरस आहारी, ब्रह्मचारी, भविजन कीजे अर्चना ॥ती० ५॥ आतम लक्ष्मी निज हित जानी, रसना जीतो हे भवि प्रानी। वल्लभ हर्ष अपारी, ब्रह्मचारी, भविजन कीजे अर्चना ॥ ती० ६ ॥

[काव्यं मंत्रश्च पूर्ववत्]

॥ पूजा नवमी ॥

॥ दोहा ॥

मद्य विषय विकथा सही, निद्रा और कषाय।
भवसागरमें डारते, पांच प्रमाद मिलाय ॥ १ ॥

शत्रु त्याग प्रमादको, हो करके हुशियार।
आतम सत्ता पामिये, होवे जय जय कार ॥२॥
जीत अपूरव जगतमें, ब्रह्मचर्य परभाव।
तिस कारण है आठमी, वाड कही जिनराव॥३॥
संयम पर जो प्रेम है, ब्रह्मचारी अनगार।
अति मात्रा भोजन तजे, होवे भव दधि पार॥४॥
अति मात्रा आहारसे, आवे ऊंघ अपार।
संभव शील विराधना, होवे स्वप्न मझार ॥५॥

[चाल—तुम दीनके नाथ दयाल लाल—]

तुम चिद्घन रूप जिनंद चंद तोरे ब्रह्मकी जाउं बलिहारी। देव जगतमें जेते देखे, सबही काम भिखारी ॥१॥ काम बलीको है प्रभु तुमने, दीनो जडसे उखारी ॥२॥ कामके जीतनको उपकारी, मंत्र दियो अति भारी ॥ ३ ॥ कम खाना अरु गमका खाना, होवे सुखी ब्रह्मचारी ॥ ४ ॥ आतम लक्ष्मी ब्रह्म प्रभावे, वल्लभ हर्ष अपारी॥५॥

॥ दोहा ॥

संजमका निरवाह हो, भोजनका परिमान।
अधिका खाना ब्रह्मको, करता है नुकसान ॥१॥

खाटा खारा चरचरा, मीठा विविध प्रकार ।
रस लालच अधिका भखे, होव रोग प्रचार ॥२॥
सेर मापकी हांडिमें, देवे अधिका डार ।
या फूटे या नाश हो, देखो सोच विचार ॥३॥
ऐसे अधिका खानसे, होवे रोग विकार ।
या होवे ब्रह्मचर्यका, नाश किसी परकार ॥४॥
ब्रह्मचारी हित कारणे, यह जिनवर उपदेश ।
भावे भवि जिन पूजिये, जावे सकल कलेश॥५॥

राग–धन्याश्री, चाल–क्यांथी आ संभलाय मधुरधुनी

पूजन करो जिनचंद, भविक जन पूजन करो जिनचंद । पूरण ब्रह्मचारी प्रभु पूजन, शिवसुख सुरतरु कंद॥भ० १॥ ऊनोदरता तपमें कहावे,तप जप करम निकंद ॥भ०२॥ नरनारी ब्रह्मचर्य व्रत-धारी, भोजन अधिक तजंद॥भ०३॥ सहस वरस कीनो तप भारी, कंडरीक मुनिमति मंद॥भ०४॥ विधविध जाति अधिक भोजनसे,नाश कियो ब्रह्म इन्द॥भ०५॥ अपध्यानी कामातुर मरके, सतम

तल उपजंद ॥भ०६॥ आतम लक्ष्मी ब्रह्म प्रभावे,
वल्लभ हर्ष असद ॥ भ० ७ ॥

[काव्यं मन्त्रश्च पूर्ववत्]

॥ पूजा दशमी ॥

॥ दोहा ॥

नवमी वाड कही प्रभु, साधु तजे शृंगार ।
अवनीतल शोभे नहीं, शृंगारी अनगार ॥ १ ॥
स्नान विलेपन वासना. उत्तम वस्त्र अपार ।
उद्भट वेश न धारीये, तेल तंबोल निवार ॥२॥
दांतन स्नान निवारना, मौन नियम तप धार ।
केश लोच आदि क्रिया, ब्रह्मचर्य हितकार ॥३॥
चमक दमक अति ऊजला, वस्त्र धरे नहीं अंग ।
बहुमोला अति पातला, सभव होत अनंग ॥४॥
जिम धोयो धरणी धरयो, हारयो रत्न कुंभार ।
शील रत्न मुनि हारते, करते जो शृंगार ॥ ५ ॥

[श्याम कल्याण]

कीजे भवि पूजन प्रभु ब्रह्मचारी । अंचली ।
पूरण ब्रह्मचारी सब होवे तीर्थंकर पदधारी ॥

कीजे० ॥१॥ ऋषि मुनि तापस यति संन्यासी होवत सब ब्रह्मचारी ॥की०२॥ वेश पृथक गृहीसे साधारण, ब्रह्मचर्य हितकारी ॥की०३॥ देह वसन आभूषण शोभा,संजोगी नरनारी ॥की०४॥ ब्रह्मचारीको योग्य नहीं है.फिरना बन शृंगारी॥की०५॥ काम दीपावन भूषण दूषण, अंग विभूषण टारी ॥की०॥६॥ नाटक चेटक रास सिनेमा, देखे नहीं ब्रह्मचारी ॥की०॥७॥ सैर सपाटा रौनक ठौनक, त्यागे धन्य सदाचारी ॥की०॥८॥ आतम लक्ष्मी ब्रह्म अनुपम वल्लभ हर्ष अपारी ॥ की० ॥९॥

॥ दोहा ॥

पांच निग्रंठा आगमे, जिनगणधर फरमान ।
अंतिम दो निर्वेद हैं, तीन सवेद पिछान ॥१॥
निर्वेदी जब होत है, आतम क्षायिक भाव ।
पूरण ब्रह्म स्वरूपही, प्रगटे आतम भाव ॥२॥
जबलग वेदी जीव है, तबलग शुभ व्यवहार ।
वाड सहित किरिया करे, ब्रह्मचारी अनगार ॥३॥
यह उपदेश ही खास है, षट पंचम गुणठाण ।
साधु श्रावक सबसे, देशसे जिनवर वाण ॥४॥

जो चाहे शुभ भावसे, निज आतम कल्यान ।
तीन सुधारे प्रेमसे. खान पान परिहान ॥५॥

॥ देश-त्रिताल-लावणी ॥

(चाल-कर पकर प्रीतयुत बोल्त नार सयानी)

ब्रह्मचारी तीरथनाथ नमो भवि प्रानी ।
आतम हितखानि मानो जिनेश्वर वानी ॥अं०॥
जो होय अरिहंत देव तीरथके स्वामि, पूरण ब्रह्मचारि जानो नहीं कोई खामी । तोभी श्रीनेमिनाथ वाल ब्रह्मचारी, जिनशासनमें अतिमान पावे जयकारी । व्रतब्रह्मचर्य परभाव वढे महाज्ञानी ॥ आतम० १॥ नरनारी शुभ आचार सभी अधिकारी, किंतु व्रत लेवे धार वही ब्रह्मचारी । आचार विचार आहार विहार ये चारी, हैं मर्यादित जस धन्य जगत नरनारी । वोही उत्तमकुलवंश उत्तमखानदानी ॥आ० २॥ जिम उदभट वेश न साधु साधवी धारे, तिम नरनारी सागारभी कुल अनुसारे । धारे नहीं उदभट वेश ब्रह्म व्रत पारे, नरनारी परस्पर दोष समान निवारे । सुंदर मर्यादा

धारो पूर्वज मानी ॥आतम० ३ ॥ विधान परिवर्त्तन वेश जगतमें जानो, रक्षा ब्रह्मचर्य पतिव्रत धर्मकी मानो। सादे कपड़े पहने भूषण नवि धारे कुल दोनों अपने पितृश्वसुर उजियारे। धारो दिल अपने गूढ रहस्य वखानी ॥ आ० ४ ॥ साधु पेथड भाग्यवान गृही ब्रह्मचारी, छोटी वय वर्ष बत्तीस अवस्था धारी। खातिर ब्रह्मपालन सादा वेश विहारी, त्यागा तांबुल सुकृतसागर उच्चारी इंद्रियगण अति बलवान न करो नादानी ॥आ० ५ ॥ महाभाग पालो ब्रह्मचर्य प्रगटे तुम नूरा, बलवीर्यपराक्रम फोर बनो अतिसूरा। वर्त्तमान अवस्था देशकी दिलमें विचारो, बल देहके कारण ब्रह्मचर्य अवधारो। तजो कायरता अवलंबन लो ब्रह्मज्ञानी ॥आ० ६॥ अवलंबन पूजा पूज्य परम ब्रह्मज्ञानी, पूजक पावे फल आप होवे तस सानी। मनवचकाया शुद्ध धार अध्यातम मानो, आतम लक्ष्मी प्रभु आप अनुपम ज्ञानी। वल्लभ हर्षे ब्रह्मचर्यगुणे मस्तानी ॥ आतम० ७ ॥

[काव्यं मन्त्रश्च पूर्ववत्]

॥ कलश ॥

(चाल—भवि नंदो जिनंद जस वरणीने)

भवि वंदो गुणी ब्रह्मचारीने ॥भवि० अं०॥ पूजन ब्रह्मचर्य सुखकारी, करे भवि निज हित धारीने ॥भवि० १॥ अपुनरावृत्ति फल पावे, भावे शीलको पारीने ॥भवि० २॥ नूतन श्रीजिन चैत्य वनावे, कोटि निष्क दान कारीने ॥ भवि० ३॥ होवे नहीं ब्रह्मचर्य बराबर, आगम पाठ उच्चारीने ॥भवि० ४ ॥ ब्रह्मचर्यसे चारित्र दीपे, विना ब्रह्म सब हारीने ॥ भवि० ॥ जिन गणधर सुर गुरु गुण गावे, आवे न पार अपारीने ॥ भवि० ६ ॥ मैं मतिहीन कथुं भक्तिवश, निजशक्ति अनुसारीने ॥ भवि० ७ ॥ राजनगर श्रावक श्रद्धालु. तारा-चंद सुत धारीने ॥भवि० ८॥ भोगीलाल ओस-वाल झवेरी. 'मंगल' उपपद धारीने ॥भवि० ९॥ इनके कथनसे रचना कीनी, पूर्वाचार्य आधारीने ॥भ० १०॥ संवत निधि युग वेद युगल में, मोक्ष वीर अवधारीने ॥भवि० ११ ॥ आतम वसु कर

विक्रम कहिये, वींस कमी दो हजारीने ॥भवि० १२॥ श्रावणसुदि पंचमी प्रभुनेमि, जन्म दिवस ब्रह्मचारीने ॥ भवि० १३ ॥ मंगल रचना पूरण होई, विजय मुहूर्त्त कविवारीने ॥ भवि० १४॥ विजयानंदसूरि महाराया, तपगच्छ आनन्द-कारीने ॥ भवि० १५ ॥ लक्ष्मीविजयजी हर्ष-विजयजी, वल्लभ गुरु वलिहारीने ॥भवि० ॥१६॥ कीनी रचना हुशियार पुरमें,वासुपूज्य दिल धारीने ॥भ० १७॥ बालकक्रीडा सज्जन गुणीजन, लीजो भूल सुधारीने ॥ भवि० १८ ॥ मिथ्या-दुष्कृत आतम लक्ष्मी वल्लभ हर्ष अपारीने ॥भवि० १९॥
